CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्य कहौं लिख कागद कोरे

(अपना जिनगी के कहानी, अपने जुबानी)

प्राध्यापक अचल

सम्पादन

गोपाल कृष्ण राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्य कहौं लिखि कागद कोरे

लेखक :

प्राध्यापक अचल

सम्पादन :

गोपाल कृष्ण राय

प्रकाशक :

बामदेव मेमोरियल ट्रस्ट, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्य कहौं लिखि कागद कोरे

Satya Kahaun Likhi Kagad Kore

© कापी राइट, सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है

सहयोग राशि : ₹ 200/- (रुपये दो सौ मात्र)

संस्करण : प्रथम, 2012

प्रकाशक :
बामदेव मेमोरियल ट्रस्ट
एस. 26/294 क-ख-1, गांधी नगर
मीरापुर बसहीं, वाराणसी - 221002
फोन : 0542-2500780, मोबाइल : 9839067661

शब्द संयोजक एवं मुद्रक -
गोल्डेन कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स
एस. 26/1, मीरापुर बसहीं (सिन्धोरा रोड), वाराणसी
सम्पर्क : 9838706367

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रम

1. दो शब्द 1
2. भूमिका 3

खण्ड – प्रथम : श्री गुरवे नमः

1. श्री गुरवे नमः 11
2. कनियाँ क ले कुन्ती कर्ण समीप गई गंगा के तट पर 15
3. हमरा तकली क टूटे न तार 17
4. बंदौ गुरू-पद-कंज 19
5. रहे सामने जन्म की जो मही है 20
6. बचवा जीयऽ लाख बरीस 22
7. प्रभु चेती सब होत 26
8. नर हो न निराश करो मन को 27
9. दई दई का करत है 29
10. चहिअ अमिय जग जुरै न छाछी 31
11. मन! तूँ वृक्षन से मत ले 35
12. किती न औगुन जग करै, बय नइ चढ़ती बार 39
13. जर संडा बाबा जटाधारी 43
14. करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान 47
15. थाकलि देहिँ गोन भइलिभारी 49
16. करिअ बियाह सुता अनुरूपा 53
17. बचपन का वह जमाना 57

खण्ड – द्वितीय : जहवाँ चाह तहवाँ राह

1. बूँद लौं कुछ और ही देता है कर 62
2. यह तो कोई तूफान नहीं है 65
3. मूरख मनहिं न चेत 70
4. जहवाँ चाह तहवाँ राह 74
5. कलियुगे संघे शक्ति 76
6. खत क मजमून बाटे जबून 78
7. अनइच्छित आवे बरियाई 81

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

8. जो घर जारे आपना चले हमारे साथ 86
9. परहित सरिस धर्म नहिं भाई 88
10. राम लछुमन क जोड़ी बरवा बन्धु 92
11. सुरुवाँ मरदन क तीर्थ–स्थान, चित्तौड़ गढ़ 96
12. तेहि फल कर फल दरस तुम्हारा 98
13. बात करीं जान के, पानी पिहीं छान के 102
14. अतिथि देवो भव 106
15. घर हमने ले लिया है तेरे दर के सामने 109
16. म्हारो शेखावाटी देश म्हानो प्यारो लागो जी 113

खण्ड – तृतीय : सोरह भइँसि क सोरह चभक्का

1. गुन ना हिरानो गुन गाहक हिराना है। 119
2. होवहि सो जु राम रचि राखा 122
3. भेंट को सके कुअंक भाल के 124
4. कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः 127
5. रहिमन रहिला की भली जो परसे मनलाय 130
6. पाथत बानऽ गोहरा 137
7. सोमरस क मीठ माहुर 141
8. निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल 146
9. अगिली खेती आगे आगे 152
10. अउरी बदे राजा साहब हमरा बदे बाबा 157
11. सोरह भइंसि क सोरह चभक्का 168

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो शब्द

विन्ध्याचल राय 'अचल' जी को प्राध्यापक 'अचल' के नाम से अपने जीवन में ख्याति मिली। वे इसी नाम से अपनी पहचान रखना चाहते थे। ऐसा उन्होंने मुझे कई बार कहा भी था। वास्तव में इस युग में रहते हुये भी 'अचल' जी इस युग से परे थे। उनकी प्रतिभाएं असाधारण थी और मनोबल अतुलनीय। निकट परिस्थितियों में रास्ता बनाना उन्हें खूब आता था और कभी भी किसी भी प्रतिकूल स्थिति या संघर्ष में उनके झुकने की तो कल्पना की ही नहीं जा सकती थी।

कुल मिलाकर 'अचल' जी असामान्य व असाधारण प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपने जीवन के खट्टे-मीठे अनुभवों को स्वयं लिपिबद्ध भी कर रक्खा था। मैं उन सौभाग्यशाली लोगों में से एक हूँ जिन्हें उस महान पुरुष का सानिध्य प्राप्त होता रहा। अपने अंतिम दिनों में उन्होंने मुझे अपनी हस्तलिपि में अपने जीवन के अनुभव सौंपे और इच्छा व्यक्त की कि उनके ये अनुभव एक पुस्तक के रुप में समाज तक पहुँचे। मैंने उनकी इस इच्छा के अनुरुप उनके सुपुत्र डा. अचलानन्द राय व उनके निकटतम शिष्य प्रो. अवधेश प्रधान के सहयोग से प्रयास प्रारम्भ किया जिसका परिणाम "**सत्य कहौं लिखि कागद कोरे**" पुस्तक के रुप में आपके हाथों में है। प्राध्यापक 'अचल' जी ने अत्यन्त ईमानदारी से रोचक भोजपुरी भाषा में अपने अनुभव व मनोभावों को इस पुस्तक में संकलित किया है जो उनकी इच्छा के अनुरुप आपको समर्पित है।

इस पुस्तक के प्रकाशन के संदर्भ में हमें डा. अचलानन्द राय (बाचा जी) द्वारा जो सहयोग प्राप्त हुआ उसके लिये हम हृदय से उनके आभारी हैं। इस पुनीत कार्य में प्रो. अवधेश प्रधान के प्रेरणादायक शब्दों ने कार्य को आगे बढ़ाने में संजीवनी का कार्य किया। इस पुस्तक के प्रकाशन में कभी भी और कहीं भी किसी प्रकार की अड़चन आने पर जब भी प्रो. प्रधान को मैंने आवाज दी तो उन्हें सदैव अपने निकट ही पाया। इसके लिये वे कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं और मैं सदैव उनका आभारी रहूँगा।

मुझे विश्वास है कि आपको इस पुस्तक में प्राध्यापक अचल का जीवन दर्शन समझने का पूरा अवसर प्राप्त होगा। सम्पादन के क्रम में भी हमने उनके मूल लेख में कोई परिवर्तन नहीं किया है तथा मूलरुप से उनका लिखा हुआ आपको सप्रेम समर्पित है।

गोपाल कृष्ण राय

अक्षय तृतीया, सं. 2069

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

प्राध्यापक 'अचल' – हिन्दी और भोजपुरी के सिद्ध, साहित्यकार, गाजीपुर में युसुफपुर मुहम्मदाबाद के प्रसिद्ध इण्टर कालेज के विद्वान् और लोकप्रिय अध्यापक, मेरे गुरु थे। कागज, सनद और रजिस्टर में उनका नाम विन्ध्याचल राय था लेकिन पूरे अंचल में वे 'कवि जी' नाम से मशहूर थे। बेहद सरल और अत्यन्त छात्र–वत्सल। निजी और सार्वजनिक जीवन में स्वाभिमान के प्रति अत्यन्त सावधान लेकिन सबके प्रति स्नेह से भरपूर। अमीर–गरीब, छात्र–अध्यापक, किसान–मजदूर, व्यापारी या राहगीर, नौकर–चाकर या कोई भी जरुरतमंद उनसे मिलता तो उनका स्नेहिल हृदय उमड़ने लगता। शिष्टाचार–जनित या कृत्रिम स्नेह प्रदर्शन में चटक–मटक चाहे जितनी हो वह सच्चे स्नेह का स्थान कभी नहीं ले सकता। उनका उच्छल स्नेह उनके चेहरे से, आँखों से, हँसी से, बातों से, उनके रोम–रोम से फूट–फूट पड़ता था। उनकी बातों में इतना रस होता और वह रस इतना प्रगाढ़ होता कि कान सुनते अघाते न थे। पता नहीं चलता था कि कब सुबह दुपहर हो गई और दुपहर शाम में ढल गई। कई बार रात का अंधेरा घिर आता। वे रस–मूर्ति थे, प्रेम के विग्रह थे, स्नेह के पुण्य सरोवर थे। छल और कपट उन्हें छू तक नहीं गया था। उनके मुँह से ओछी बात कभी नहीं सुनी। झूठ उनके पास फटक नहीं सकता था। सादगी उनके स्वभाव में थी मगर वे खूसट नहीं थे। नैतिक उदात्रता का क्या कहना? लेकिन आमतौर पर नैतिकता की बहुत बात करने वाले बड़े संकीर्णमना और कठोर हो जाते हैं। उनकी वेशभूषा और रहन–सहन में सादगी के साथ सौन्दर्य का ऐसा सामंजस्य था जैसे सोने में सुगंध। मझोला कद, गोरा रंग, हँसता चेहरा, कठी हुई काठी पर फेंटवा धोती, सफेद, क्रीम या पीले–गेरुए रंग का बिना कॉलर का कुर्ता, कंधे पर चादर। साइकिल से या पैदल चलते हुए कभी जल्दी में नहीं दिखते थे। उनका ठाट किसानी था लेकिन उसमें ग्राम्यता या भदेसपन नाममात्र को न था। आदर्श उनका गांधीवादी था लेकिन वे कठमुल्ला नहीं थे। साहित्य के विशेषत: कविता के साधक थे, कवियों के प्रेमी थे लेकिन उनमें दिनचर्या की, आदत की या किसी किस्म कदी अराजकता नहीं थी। सुर्ती–बीड़ी–सिगरेट तो दूर, मैंने उन्हें कभी पान भी खाते नहीं देखा। उनका चरित्र एक अनुकरणीय आदर्श की तरह था लेकिन वे कभी इसकी डींग नहीं हाँकते थे। उनका राजनेताओं से भी परिचय था लेकिन मैंने कभी उनको किसी दल के छोटे–बड़े राजनेता के आगे–पीछे घूमते नहीं देखा। खेत में हों या कॉलेज में, अपने दरवाजे पर हों या बाजार में, कवि सम्मेलन में हों या कक्षा में, गाय को सानी–पानी कर रहे हों या कविता सुना रहे हों–मैंने हमेशा उन्हें खरे सोने की तरह दमकते हुए देखा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका जन्म प्रमाणपत्रीय कागजात के अनुसार एक जनवरी 1925 को गाजीपुर जिले के सुप्रसिद्ध रेवतीपुर गाँव में भूमिहार वंश के एक खाते-पीते प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। आरम्भिक शिक्षा गाँव में पूरी करने के बाद शेष शिक्षा उन्होंने राजस्थान में ग्रहण की और आजीवका के रूप में उन्होंने शिक्षक की वृत्ति अपनाई लेकिन भीतर से किसानी की सहज प्रवृत्ति बनी रहीं। बाद में मुहम्मदाबाद इण्टर कॉलेज में पढ़ाते हुए भी उन्होंने अपनी पढ़ाई और किसानी दोनों जारी रखी। उनका जीवन-धारा जैसे गंगा नहीं हो जो शिक्षा और कृषि रूपी दोनों कगाऐं को आलावित करती हुई बहती रही। गंगा के दक्षिणी तट पर उनका जन्म ग्राम-रेवतीपुर और गंगा के उत्तरी तट पर उनका वास ग्राम हरिहरपुर। हरिहरपुर में उन्होंने जमीन खरीदी, मकान बनाया, गाएं पालीं और खेती-बारी के साथ अपनी गृहस्थी की नैय्या खेते हुए शिक्षण और साहित्य सेवा करते रहे। स्वाध्याय और लेखन की बात उन्होंने कभी नहीं छोड़ी। पढ़ाते हुए ही उन्होंने साहित्यरत्न और एम.ए. की शिक्षा पूरी की। साथ ही कविता और कहानी तथा समीक्षा में कलम चलाते रहे। उन्होंने अभिमन्यु के चरित्र को लेकर 'सौभद्र' नाम का खण्डकाव्य लिखा और अपने आसपास के जीवन के चित्रों और चरित्रों को लेकर 'विधाता की मूरतें' की रचना की। उनका यह कहानी संग्रह 1961 में आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। कहानियों में अनुभूत जीवन की सच्चाई तो है ही, उनको आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की प्रेमचन्द वाली शैली की सादगी भी मिलती है। उनकी कविता द्विवेदीयुग नैतिकता की राह पर चलती है जिस पर गांधीजी के जीवनादर्श और मैथिलीशरण गुप्त के काव्यादर्श की छाप है। 'विधाता की मूरतें' की भूमिका लिखते हुए 'सिद्धेश' जी ने कहा था, "सभी पात्र समाज के चिर-परिचित व्यक्ति जान पड़ते हैं। अनेक ऐसे हैं जिनके द्वारा मानव-हृदय स्वार्थ और संकीर्णता के निम्न स्तर से उठकर उदार और विशाल बन जाएगा। लेखक की भाषा शैली बड़ी सुबोध और आकर्षक है – उनमें सजीवता और साहित्य बिखरा पड़ा है।..... स्वांतः सुखाय लिखी जाने पर भी ये लोकरंजनीय होने के साथ ही आदर्शपूर्ण तथा उपदेशात्मक भी हैं।"

उन्होंने 'क्रान्तिकारी कबीर' नाम की एक समीक्षा भी लिखी थी। बाद में सुमित्रानंदन पन्त पर भी एक निबंध-पुस्तिका प्रकाशित की थी। उनकी इन पुस्तिकाओं और रचनाओं से न जाने कितने छात्रों और युवकों ने साहित्य-समीक्षा की दृष्टि प्राप्त की थी। मुझे याद आता है कि एक निबंध-पुस्तिका उन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास पर भी लिखी थी।

वे कविता करते थे और समूचे मुहम्मदाबाद अंचल में 'कवि जी' नाम से जाने-पहचाने जाते थे। लेकिन कवियों की तरह निरे कल्पना-लोक में रहने वाले व्यक्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं थे। वे आसपास की सामाजिक गतिविधियों में भी रुचि लेते थे और उन्हें रचनात्मक मोड़ देते रहते थे। 18 अगस्त 1942 को आजादी की लड़ाई में मुहम्मदाबाद तहसील पर तिरंगा झंडा फहराने की राष्ट्रीय उमंग में शेरपुर के आठ युवक शहीद हो गए थे। 'अचल' जी ने 18 अगस्त की याद में तहसील पर हर साल शहीद मेला लगाने का आन्दोलन चलाया। बड़े पण्डाल में दिन भर नेताओं के भाषण, छात्रों के गीत और कवियों का काव्यपाठ होता। फिर उस अवसर पर उन्होंने 'देशभक्त' नाम से एक पत्रिका भी निकालनी शुरु की जो कस्बे के ही व्यापारियों, शिक्षकों, नौकरीपेशा लोगों आदि के चंदे से निकाली जाती और वितरित की जाती। मेरी पहली कविता 'देशभक्त' में ही छपी थी। दो-तीन साल में भी उसके प्रकाशन-सम्पादन-वितरण आदि में जुड़ा रहा। वह मेरे लिए पत्रकारिता का पहला-पहला रोमांचक अनुभव रहा। उसमें श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश', रामवृक्ष राय 'विधुर', जगदंबा प्रसाद सिंह, रामचन्द्र केसरी, रामविलास गुप्त, जितेन्द्रनाथ पाठक, विक्रमादित्य तिवारी, अनिल कुमार राय 'आंजनेय', रामप्रवेश शास्त्री आदि की रचनाएं रहतीं।

उन्होंने लक्ष्य किया कि कस्बे में उर्दू के मुशायरे तो होते हैं लेकिन हिन्दी का कवि सम्मेलन नहीं होता। उन्होंने पहली बार मुहम्मदाबाद में कवि सम्मेलन का आयोजन किया और उसे आन्दोलन का रूप दिया और उसका प्रसार गाँवों तक में किया। मैंने उनका प्रथम साक्षात्कार 1966-67 की सर्दियों में एक कवि सम्मेलन में ही किया था जो गौसपुर के बाबू जिउतबंधन सिंह के दरवाजे पर रात को आयोजित हुआ था। उसी कवि सम्मेलन में मैने उनके मुँह से उनकी प्रसिद्ध कविता सुनी थी – पुलिस-हमारे भाई हैं। यह कविता 18 अगस्त की पुण्य स्मृति में लिखी गई थी जिसमें विद्रोह के नायक डा. शिवपूजन राय पुलिस पर हमला करने से भीड़ को रोकते हैं। मैं तब गौसपुर के मिडिल स्कूल में पढ़ता था और थोड़ा-बहुत छंद-वंद व तुक वगैरह जोड़ने लगा था। 1966 की जुलाई में मुहम्मदाबाद इण्टर कालेज में कक्षा नौ में नाम लिखाने के साथ ही उनसे स्नेह का सम्बन्ध जुड़ गया जो साहित्य से शुरु होकर जीवन और परिवार के हर स्तर पर प्रगाढ़ होता गया।

वे मेरी कविताएं बड़े चाव से पढ़ते, सुनते, सराहते, सुधारते और प्रोत्साहन देते। किताबें पढ़ने को देते। जब स्कूल से उनके साथ लौटता तो वे अपने घर जरुर ले जाते। वहाँ दाना-पानी नाश्ता कर लेने के बाद ही वापस आने देते। कभी-कभी मेरी जेबों में चूड़ा और मिठाई भर देते और प्यार से कहते-खाते चल जा। कभी शाम का अंधेरा हो जाता या रात हो जाती तो मुझे पहुंचाने अलावलपुर या दिलावरपुर तक आ जाते। यह सिलसिला 1969 में हाईस्कूल पास करके मेरे बनारस आ जाने के बाद भी जारी रहा। छुट्टियों में बनारस से गाँव जाने पर मैं उनसे मिलने जरुर जाता और वे मुझे खिलाए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिना वापस न आने देते। कभी-कभी तो घर के किसी सदस्य से मेरा आना जानकर वे ही घर आ जाते। मेरे घर में मेरे बाबा, पिताजी, चाचा, भैया और घर के बच्चों तक से उनका प्रगाढ़ सम्बन्ध हो गया था। बनारस आते तो हॉस्टल में मुझसे मिलने जरुर आते, मेरी साहित्यिक-शैक्षिक प्रगति का हाल जानते और मेरे साथ बनारस के साहित्यकारों से मिलने जाते। उनके साथ मैं सीताराम चतुर्वेदी, जगन्नाथ शर्मा, विक्रमादित्य राय, चन्द्रशेखर मिश्र, शरद कुमार साधक आदि से मिलने गया। मैंने उन्हें त्रिलोचन शास्त्री से मिलाया। उन्होंने एक बार अपने यहां कवि सम्मेलन किया जिसमें स्वामी विमलानंद सरस्वती, परमचंद 'आनंद', चन्द्रशेखर मिश्र आदि को लेकर जाने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी।

सत्तर के दशक में उनका झुकाव स्वामी सहजानंद सरस्वती की ओर हुआ। मुझे 'मेरा जीवन संघर्ष' नामक उनकी आत्मकथा पढ़ने को दी। स्वामी सहजानन्द सरस्वती के जीवन, व्यक्तित्व, उनके विचार और किसान आन्दोलन पर काम करने की पहली प्रेरणा मुझे उन्हीं से मिली। स्वयं उन्होंने स्वामी जी पर एक पुस्तक प्रकाशित की और उनके नाम पर एक विद्यालय की स्थापना की जो अब तक भरे-पूरे इण्टरमीडिएट कॉलेज में विकसित हो गया है। उनके एकमात्र सुपुत्र डॉ. अचलानंद राय शर्मा (बाचा बाबू) उसकी कीर्तिपताका अब तक फहराते आ रहे हैं।

त्रिलोचन शास्त्री ने उन्हें भोजपुरी में लिखने की राय दी। उन्होंने 'विधाता की मूरतें' के बाद जितनी भी कहानियाँ लिखीं वे सब भोजपुरी में हैं। 'सुन्नर काका' और 'माया मिलली न राम' भोजपुरी में उनकी अप्रतिम कथा-कृतियां हैं।

मुहम्मदाबाद इण्टर कालेज में शिक्षक के रूप में उन्होंने अपनी श्रेष्ठ सेवाएं अर्पित की लेकिन वहाँ भी उन्होंने साहित्य का रचनात्मक वातावरण पैदा किया। 'साहित्य समिति' बनवाई और कॉलेज की एक पत्रिका निकाली जिसका नाम रखा – 'सोमरस'। एक औपचारिक स्कूली मैगजीन न होकर यह एक मौलिक साहित्यिक पत्रिका थी जिसमें छात्रों-युवकों और अध्यापकों की रचनात्मक प्रतिभा को खिलने और खुलने का अवसर और मंच मिलता था। उनके अवकाश प्राप्त करने के बाद एकाध अंक निकले और फिर 'सोमरस' का सोता सूख गया।

अवकाश प्राप्त करने के बाद उन्होंने ज्यादातर भोजपुरी में साहित्य रचना की। कहानियाँ लिखी, निबन्ध लिखे, कवितायें सिखीं। एक लम्बा ललित-निबन्ध लिखा – "कारी लउरिया चितकाबरि हो"। यह भोजपुरी किसान की लाठी की महिमा का गद्य-गान है। जब उनकी धर्मपत्नी गुजर गई तो उन्होंने अपने गहरे शोक को भी श्लोक में बदल दिया। बेटियाँ एक-एक कर अपने घर चली गई थीं, बच्चा बाबू का ब्याह हो गया था, गृहस्थी के सारे कार्य पूरे हो गये थे। पत्नी के जाते ही वे निपट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अकेले हो गये। उन्हें अपनी जन्मदात्री माँ से लेकर अपनी बेटियों तक – जिनके बाल–बच्चे बड़े हो गये थे, हो रहे थे – मातृत्व की एक अटूट श्रृंखला दिखाई दी और उनकी अनुभूति एक लम्बी कविता में उतर आयी – "महतारी"। मातृत्व की महिमा का ऐसा उदान्त गान यह भोजपुरी में अकेला है।

आँख बनने के बाद उनसे मैंने निवेदन किंया कि आप अपनी जीवन–कथा भोजपुरी में लिख दीजिये। और कुछ ही दिनों बाद उन्होंने इसे भी पूरा कर दिया। उन्होंने अपने सभी सम्यक् संकल्प पूरे किये। वे मेरे पिता जी के समौरिया थे। पिता जी 2010 जनवरी में डिमेन्शिया हुआ और चार अगस्त को उनका स्वर्गवास हो गया। मास्टर साहब (अचल जी) पिता जी के श्राद्ध में आये थे तो देखा–अभी पूरी तरह स्वस्थ हैं और प्रसन्न है। अब यही समय था जब उनकी सेवाओं के लिये समाज को उनका अभिनन्दन करना चाहिये था। जो काम इण्टर कालेज मुहम्मदाबाद को करना था, जो काम उनके शिष्यों को करना था वह काम बड़े समारोह के साथ 'ऋषिकुल दर्पण' के सम्पादक श्री गोपाल कृष्ण राय जी ने सम्पन्न कर दिया। 'अचल' जी का अभिनन्दन मुहम्मदाबाद में बड़ी धूमधाम से हुआ जिसमें उनके चाहने वाले, शुभेच्छु, शिष्य और सहकर्मी अनेक गाँवों से चलकर आये। मास्टर साहब अपने अभिनन्दन से अत्यन्त प्रसन्न थे। पिछले वर्ष अप्रैल 2011 में उनका देहावसान चलते–फिरते बोलते–बतियाते ब्रह्म बेला में ऐसे हुआ जैसे एक कमरे से चलकर दूसरे कमरे में चले गये हैं। उनके निधन के बाद उनकी आत्मकथा को छापकर बाचा बाबू और गोपाल कृष्ण राय ने बड़े पुण्य का कार्य किया है।

उनकी यह आत्मकथा एक कर्मयोगी की पवित्र जीवन गाथा है जो विपरीत परिस्थितियों में भी जूझने, लगे रहने, जीने और जीतने की प्रेरणा देती है। इसमें रेवतीपुर ग्राम के छोटे से नखदर्पण में पूर्वांचल की किसानी संस्कृति की, तीज–त्यौहारों की गीतों और मेलों–ठेलों की प्रतिछवियाँ मिलती हैं। अपने बचपन की कथा भी 'अचल' जी ने बड़े रस और चाव से सुनाई है और इस कथा को पढ़ते सुनते हुये एक बात की ओर ध्यान गये बिना नहीं रहता – वह है उनकी बेमिसाल स्मृति। बचपन की एक एक–बात खास तौर पर अपनी मां की ममतामयी मूरत उन्होंने बड़े ब्यौरेदार ढंग से अंकित की है। गोर्की ने अपनी आत्मकथा में अपने नाना और नाना के स्वभाव का तुलनात्मक पर्यवेक्षण प्रस्तुत करते हुये लिखा है कि नाना कठोर और निर्मम थे, नानी नरमदिल और दयालु थी। दोनों धर्म प्राण थे, चर्च जाते थे लेकिन गोर्की का विश्वास था कि नाना के भगवान निश्चय ही बड़े न्यायप्रिय और निस्करुण होंगे और नानी के भगवान् कृपा और करुणा के सागर। 'अचल' जी ने लक्ष्य किया है कि उनके पिता आलसी, टालू प्रवृत्ति के, हमेशा कुछ न करके भी कूढ़ते–चिढ़ते रहने वाले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिन्दगी से हमेशा शिकायत करने वाले व्यक्ति थे जबकि बाबा कर्मठ, पुरुषार्थी और हमेशा उत्साहित रहने वाले और प्रोत्साहित करने वाले व्यक्ति थे। उन पर बाबा की कर्मठता का, जीवट का, उत्साह धर्मिता का प्रभाव पड़ा उन्होंने अपने विद्यालय के अध्यापकों को बड़ी तटस्थ और बारीक नज़र से देखा है। उदात्त और सीधे सरल व्यक्तित्व के प्रति अपना आदर प्रकट किया है और बनतू और हास्यास्पद व्यक्तियों का खुलकर मजाक उड़ाया है। कॉलेज के दिनों की यादें भी चित्रों की विविधता से भरपूर है। यद्यपि इस प्रकार की भाषा में लेखनी विविध प्रकार के मनुष्यों के ही इर्द-गिर्द घूमती है लेकिन 'अचल' जी ने अपनी यादों में अपने आस-पास के परिवेश को भी शामिल किया है। अपने जन्म ग्राम का पुश्तैनी घर, उसकी कोठरियाँ, उसकी छाजन, अपना आमों का बगीचा। विशेषरूप से तरह-तरह के आमों का वर्णन उन्होंने ऐसे किया है जैसे रीतिकालीन कवि नायिकाओं का किया करते थे। लेकिन बेहद पुराने "मिठका आम" पर जो उन्होंने रेखाचित्र अंकित किया है वह अपनी सरसता में बेजोड़ है।

'अचल' जी जैसे साहित्य साधक की जीवन-कथा वैसे ही प्रेरणा का आगार होती है और अगर वह उन्हीं की लेखनी से अंकित हो तो फिर बात ही क्या? मेरा विश्वास है कि यह स्मृति कथा युवकों को, छात्रों को, अध्यापकों को, साहित्य प्रेमियों को भरपूर आनन्द प्रदान करेगी और इससे भोजपुरी के गद्य-साहित्य के भण्डार में श्रीवृद्धि होगी।

अवधेश प्रधान
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
बी.एच.यू., वाराणसी-221005

अक्षय तृतीया
सं. 2069

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - प्रथम

श्रीगुरवे नमः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गुरवे नमः

अबू मैं नाच्यौ बहुत गुपाल।
काम क्रोध कौ पहिरि चोलना कंठ विषय की माल।
महामोह के नूपुर बाजत, निंदा शब्द रसाल।
भ्रम-भोयौ मन भयौ पखावज, चलत असंगत चाल।
तृष्ना नाद करत घट भीतर, नानविधि दै ताल।
माया को कटि फेंटा बांध्यौ, लोभ-तिलक दियौ भाल।
कोटिक कला काछि दिखराई जल-थल सुध नहिंकाल।

ई बाति एकदम पक्का बा कि काम-क्रोध आ विषय-वासना अउरी क साज-बाज साजि के ए जिनिगी में बहुते नाच नाचल गइल। एकले एक खेल खेलल गइल आ एक ले एक गुल खिलल। लमहरि-चाकरि दुनिया ए आँखिन का सोझाँ ले गुजर गइलि। आजा-आजी, माई-बाबू, भाई-भयबहु, बेटा-बेटी, पूत-पतोहि, बेटी-दामाद, नाती-नातिन, दर-दयाद, हीत-परीत, संगी-साथी, मेहरारू-भौजाई, शत्रु-मित्र आ अउरियो बहुतन क खेल तमासा ई आँखि देखली आ कान सुनलन स। एऊ सभकरा से लागलि बाजार-हाट में हम मन-बेमन क सउदा कीनत-बेसाहत सभकरा से निभावत, पटावत, बोलत-चालत आ सटत-सरकत गइली हँ। हम ए सभकरा हउँजार में आपनि जिनिगी खपाइ दिहली हँ। एही दुनिया का धम-गज्जर में अपना के बनावें-चोनावे खातिर आपन हाथ-पाँव चलवली हँ आ दिमाग खपवली हँ जेवना से कि अपना कुल खनदान आ गाँव-गिरावँ का नावँ पर कवनो धप्पा न लागे पावो। एकरा बदे जेवन रगरा-झगरा, धक्का-धुक्की, चोरी-चमारी आ बेहयाई करे के परल ह दुनिया के मेहना मारला, टिसाई कइल आ निहसावल सहे के परल ह, ए तरे का थउसावे वाला काम में जे आड़े समय हमरा कामे आइल ह ओकर गुन बखानल आ नेकी सकारल हमरा के आपन निम्मन धरम-करम बुझाइल हँ। ए ही से ई भोजपुरी गवाँर अपना भोगल जीवन के उघट-उघार देबे पर उतारू भइल ह। हम अपना जिनिगी के रुपया में एको पइसा संजीवनी बूटी नइखीं बूझत हम एकरा के भोजपुरी भाइन का घूरा के एगो धतूरा मानत बानी, बाकी धतूरो कबो कामे आ जाला।

हमरा से नेह लगाइ के हमरा दाहिना हाथ में कंडा क कलामि बनाइ के दुधिया का बोरिका में बोरि-बोरि के काठ का पटरी पर सभले पहिले लिखवावे क साइति के करावल, एकर साफ चेत नइखे परत। हमार धुँधुराह चेत का मोताबिक ई काम हमार बाबुए जी कइलन। एकरा बाद स्कूले पढ़ें बदे जाये क क्रम हमार एगो दयाद लगवलन जेवन पद में हमार काका लागत रहलन। ऊ पच्छिमी प्रारम्भिक पाठशाला, रेवतीपुर में पढ़ावत रहलन। एमे उनुकर किछु स्वारथ सधत रहे। ऊ हाले क ओ पाठशाला में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिक्षक नियुक्त भइल रहलन। जनवरी में ओकर छात्र-संख्या बढ़ावे बदे हेडमास्टर लोग पर चड़ंचा लगवलन। नाया मास्टर भइला से उनुकर दोचिताही ढेर बढलि। काहें कि सभका ले अगते उनुकरे गांव छूटे क नउबति रहे। एही से ऊ टोल-महाल में अपना कक्षा में पढ़े लायक लरिकन के टउरत रहलन। ऊ पिता जी किहाँ चोहँपि के हठ-हरतुज करे लगलन। कवनो नावा काम नेबाधे में हमरा पिता जी के नानी मरे। ऊ असक्के परला पर नावा काम ठानसु। ऊ आपन गर छोड़ावे बदे उनुकरा के माई किहाँ ठेल दिहलन। माई बहुत जीवट के करतबी मेहरारू रहली। उ अपने अपढ़ भइला से हमरा के पढ़ा-लिखा ना सकति रहली। उनुकरा के काला अक्षर भइँसि बराबर रहे। गने-गुने क काम परला पर पाँच बीस कइके ऊ सइ पुजावसु। शिक्षक काका पद में माई के देवर लागत रहलन।

ऊ माई के हाँक पारत हमरा बखरी में पइठलन .. नोनाँत-चोन्हात मुँह खोललन-"भउजी! कहवां बाड़ू? हेने आवऽ आज तोहरा से किछु मांगे के बा।"

"आवतानी, बबुवा! का माँगे के बा?"

"देबू त आई, ना त जाई। दाता ले सूम भला कि ठावें देइ जबाब।"

"देबे जोग होई त काहें ना देइब? पता ना, कवना भागी हमरा दुआरी आइल बाड़।"

"हे अपना लरिकवां के दा पढ़ावे बदे अपना स्कूल में ले जाइब। हेने-होने घूमत रही त बहेंतुवा बनि जाई।"

"ई तोहरे लरिका ह। एके माँगे के का बा? तनी बेलमि जा। अबे खरवाँस बा। खिंचड़ी ले निमन दिन होई। ओकरा बाद ले जइह। मनो रहला पर हम अबे भेजल ना चाहत रहली हँ काहें कि हमार के लइकबा अदान लागत बा। एके अखरी।"

"का उमिरि बा?"

"छव पूजी। फागुन क जन्म ह।"

"पढ़े आ स्कूलें जाए क उमिरि हो गइलि बा। पाँड़े से साइति देखवाइ के जोह दीहऽ"

"हकनहाक हालिए जोह देइब।"

आसरा लगवले मास्टर काका अपना घरे चलि गइलन।

माई हमरा के अपना आँखि का पुतरी मतिन प्रिउ समुझसु आ आँखिन ले अन्हा-अलोताँ कइल उनुकर मन ना सँकारे; तबो हमरा के पढ़ावे का लालच से ऊ खिंचड़ी का दिने पाँडे जी के दान-दच्छिना आ सिद्धा देइ के निम्मनि साइति देखाई के स्कूलें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाए क दिन धरवा दिहली आ ओकरि खबरि मास्टर काका के ओही दिने दे दिहली। ऊ साइति का दिने समय पर आइके हमरा के अपना संगे लिवाइ जाइ के अपना पाठशाला का कक्षा में अउरी लरिकन का संगे बइठाइ दिहलन। फेरु त हमरा लकमि परि गइलि कि हम काँखि तरे पटरी चँतले, हाथ में दुधिया के बोरिआ का आ कलमि लिहले स्कूलें आवे-जाए लगलीं।

हमरा भाई-बाबू के हमारि.जन्म-तिथि याद रहल होखे भा न; बाकी ओकरि जानकारी ओ पाठशाला का गुरू जी लोग के एकदम रहे। ऊ लोग हमरा घर का बेकतिन से बे पूछल-जाँचल अपना रजिस्टर में हमरा जन्म क तारीख १ जनवरी, सन् १९२५ टाँकि दिहल आ ऊ ब्रह्म-लेख हो गइल। ई ह गुरू क महिमा! एही से एकर बखान ए शब्दन में कइल गइल बा-

गुरु ब्रह्मा गुरु र्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

हेडमास्टर साहब नियत समय से स्कूलें आ जासु आ समय से स्कूल बन्न भइले पर घरे जासु। ऊ हमरा पितो जी के पढ़वले रहलन। जेवना सालि हम चार कक्षा पास कइलीं तेंवने सालि ऊ सेवा-निवृत्त हो गइलन। गाँव क लोग उनुकरि इज्जति करसु आ शिक्षक लोग उनुकर अदब माने। का मजाल कि केहू शिक्षक देर से स्कूले आवो आ स्कूल समय में बिना उनुकरा अनुमति क बाहर जाउ। अध्यापक लोग उत्तरदायित्व, अनुशासन आ लोक-लज्जा का करतन कर्तव्य पाले में तत्पर रहे। ओघरी प्रारम्भिक पाठशाला आ मिडिल स्कूल का छात्रन के दुइ हाकिम बुझासु। एगो विद्यालय के हेडमास्टर आ दूसरा डिप्टी साहब यानी एस.डी.आई.। ए दूनो के मास्टरन पर काफी दबदबा बुझाय। ओघरी क शिक्षक अगतें का गुरू परम्परा से अपना के जोड़े में गौरव समुझसु। छात्रन के पढ़ावे के उनकुरा हूब रहे। ओ परिश्रमी आ करतबी मिडिलची शिक्षकन में गजब के योग्यता रहे। ऊ नेतन क पिछलग्गू ना रहलन। ओघरी का सामाजिक आ राजनीतिक नेतन क राष्ट्रीय, समाज-सेवी, मानवतावादी, उदार आ त्यागी चरित्र होखे। ओघरी गांधी वादी युग रहे। नेता शिक्षक आ शिक्षा का प्रति श्रद्धा भाव राखसु। ऊ सभा समाज में गुरु परिचर्चा के अवसरन पर शिक्षकन का सोझाँ आपन माथा झुकावसु अपना श्रीमुख से ई कहत गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। तस्मै श्री गुरवे नमः॥

हमरा पढ़े का बेराँ प्रारम्भिक पाठशाला का शिक्षक क योग्यता मिडिल स्कूल उत्तीर्ण भइला का साथे गुरू-ट्रेनिंग (शिक्षक-प्रशिक्षण) हो गइलि रहे। अगतें ले खाली मिडिले स्कूल उत्तीर्ण शिक्षक पढ़ावत चल आवत रहलन; बाकी पढ़ावे-लिखावे में ऊ जानकारी आ कला में ओनइस ना परसु, बलुक बीसे परसु। शिक्षक-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रशिक्षण बदे चुनाए खातिर उम्मीद वारन के हिन्दी विशेष योग्यता का परीक्षा में उत्तीर्ण भइला के प्रमाण-पत्रो क जरूरति परे लागलि रहे भा अइसने कवनो अउरी परीक्षा उत्तीर्ण भइला क। जब हम ओ शिक्षकन के मेहनत-मुस्तैदी से पढ़ावत देखी आ ओकरा खातिर समाज से आदर सम्मान पावत तब हमरो मन में मिडिलची भइला पर हिन्दी-विशेष योग्यता क परीक्षा पास कइके आ ट्रेनिंग कइके शिक्षक बने क इच्छा होखे। पाठशाला में पढ़ाई आरम्भ होखे ले पहिले छात्र आ अध्यापक ई प्रार्थना श्रद्धा-भक्ति से हाथ जोरि के करसु-

हे प्रभो! आनन्ददाता ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।
लीजिए हमको शरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीरव्रत धारी बनें।

आजु ई प्रार्थना गीत विद्यालयन में गवात नइखे।

ई पुरान-चिरान बुझात बा। हमरा के बुझाता कि ए घरी एकरा के गावे-गवावे के दम-खम शिक्षकन आ शिक्षर्थिन में रही नइखे गइल। ऊ एकरा के अपना सुर-सूह में मने-मन एतरे गावत बान-

हे प्रभो आनन्द दाता हमें साक्षर कीजिए।
शीघ्र सारे सद्गुणों को दूर हमसे कीजिए।
लीजिए हमको शरण में हम कदाचारी बनें।
धर्म से निरपेक्ष नसबन्दी के व्रतधारी बनें॥

हमरा पढ़त खानी हेडमास्टर साहब का मेज पर टेबुल-घड़ी रहल करे। ओही से स्कूल क पढ़ाई चालू होखे, बन्न होखे आ घण्टा चलसु। स्कूल का छोट एकले मैदान में एगो धूप घड़ी रहे। हमनी का छात्र दिनभर ओने देखत रही जा। आ छुट्टी केतना देर में होई, जोरत-घटावत रही जा। हमनी का घरे परछाहीं घड़ी रहे। ओही के देख के स्कूलें जाई जा। धूप आ परछाहीं क घड़ी सुरुज का अछते काम देस। सुरुज नारायन क दरसन ना भइला पर ई दूनो गयन्ना हो जाँस। संजोगने केहू शिक्षक का हाथ में कलाई घड़ी लउके। जेकरा हाथ में ई लउके ओकरा के हमनी का छात्र सवखीना बूझीं जा। ईश-प्रार्थना बदे घंटी ठीक दस बजे टनटना जा। मास्टर-लरिका सभ स्कूल के प्रागंण में बटुरा जा। हम आ हमार जोड़ीदार ओ कक्षावार पंगति में ठाढ़ छात्रन का आगे उनुकरा ओंरा मुँह कइके ठाढ़ होइके टनाका एक सुर में प्रार्थना गीत कढ़ाई जा आ पाछे ले सभ केहू दोहरावे। विद्यालय ईश-प्रार्थना का ध्वनि से गूंज जा।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कनियाँ क ले कुन्ती कर्ण समीप गई गंगा के तट पर

अ का कक्षा में कनियाँ 'क' क रूप निहारत-बनावत कुल्ह अक्षरन के कले-कले लिखे-पढ़े लगलीं आ एक ले सइ तक गिनती रट के आ सुनाई के माई क मन हरसावे-उमगावे लगलीं। मिलाई-मिलाई के 'कमल' मतिन सरल-सरल बेमात्रन का शब्दनो के बाँचे क कोशिश करे लगलीं। ब का कक्षा में सरल हिन्दी क पुस्तक पढ़े लगलीं आ बीस ले पहाड़ा तोता रट हो गइल। एकरा बाद छोट-छोट अंकन क जोड़ घटाना आ गुणा-भाग का मैदान में उतर गइली। एक का कक्षा में हिन्दी भाषा क साधारण पुस्तक भटक-भटक बाँचे लगलीं आ जोड़-घटाना अ गुणा-भाग क अभ्यास करत रुपया आना-पइसा आ पाई, पौंड-शिलिंग-पेन्स, गज-फीट-इंच का गुणा-भाग से टकराए लगलीं। दुई का कक्षा क हिन्दी पुस्तक गद्य आ पद्य दूनो क संग्रह रहे। हर पाठ के मास्टर साहब पढ़ाई-पढ़ाई अर्थ समझावसु। कठिन शब्दन क माने समझावल, लिखावल या रटावल जा। सुलेख रोजे एक पृष्ठ कापी पर लिखके घर ले स्कूले ले जाइके जँचवावे के परे। गणित में खण्ड गुणा या खण्ड भाग क रीति, रुपया-आना-पाई, पौंड-शिलिंग-पेन्स मील-फर्लांग-गज, गज-फीट-इंच, मन-सेर-छटांक, तोला-मासा-रत्ती , बीघा-बिस्वा-विस्वांसी, कुल्ह क जोड़-घटाना, गुणा-भाग सिखलीं आ जनलीं। एक ले चालिस तक पहाड़ा रटावल गइल बाकी हमरा तीस ले पहाड़ा भरनाटिया याद रहे। आगे चालीस तक में भुलाए-भटके लागीं। एक ले सइ तक क आधा, पउवा, पवना, सवइया, डेढ़ा, अढ़इया, अँगूठा, ढँगूचा आ पहुँचा क बोध हो गइल। कीनला-बेसहला का व्यवहार बदे मौखिक सवाल पूछके ओकरा जबाब के हाली हल कइ लेबे बदे ओकर गुर बतावल गइल। हम ओकरा आधार पर सवालन क जबाब झट बतावे क बहुत अभ्यास कइलीं जेवन रोज का व्यवहार में बड़ा कामे आवेला। हमरा के एही कक्षा में भूगोल में सागर, महासागर, टापू, प्रायद्वीप, संगम, परगना, तहसील आ जिला क परिभाषा रटे के परल रहे। एही में हमरा के जिला का कस्बन आ शहरन के बोध करावल गइल आ ओहिजाँ बने वाली निम्मन-मशहूर चीजन के बतावल गइल, जइसे रेवतीपुर क टिकरी, मुहम्मदाबाद क गुलजामुन आ जमनियाँ क पिया बारा सुनि-रटि के मन ललचे लागल रहे। एही कक्षा में पढ़त खानी नदियन आ अउरी जलाशयन क परिचय हमरा के मिलि गइल।

तीसरी कक्षा में हिन्दी भाषा क जेवंन पुस्तक पढ़े के मिललि गद्य-पद्य दूनों के संग्रह रहे। कठिन शब्दन क शब्दार्थ लिखावल रटावल गइल आ पाठन क अर्थ-भावार्थ समुझावल गइल। व्याकरण में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आ अव्यय क चर्चा छिड़ि गइलि। मुहावरन के अर्थ आ प्रयोग समुझाइ-बुझाइ के लिखावल रहे। एही कक्षा में पत्र आ लेख लिखे का विधि क जानकारी हो गइल। हमनी का सभ सहपाठी अपना कापिन पर भाई, बहन आ मित्र के पत्र आ गाय, गंगा, गाँव जइसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषयन पर लेख लिख के मास्टर साहब के देखावे लगलीं जा। गणित में अपना के लघुतम समापवर्त्य, महत्तम समापवर्तक, साधारण भिन्न क रूप परिवर्तन, भिन्न क लघुत्तम रूप बनावल, संयुक्त भिन्नन के साधारण भिन्न में बदलल, भिन्न क समहर कइल, साधारण भिन्नक जोड़-घटाना, गुणा-भाग सिखावल गइल। जोड़, घटाना, गुणा का भाग का चिन्हन के एही कक्षा में चिन्हावल गइल रहे। गाजीपुर जिला क पूरा भूगोल ए कक्षा में अपना के पढ़ावल रहे।

चौथी कक्षा में हिन्दी प्रवेशिका नाँव क भाषा क गद्य-पद्य क एगो संग्रह रहे जेवना के हेडमास्टर साहब पढ़वावसु आ कठिन शब्दन क माने लिखवाइके रटवादेसु। जेंवन पाठ पढ़ावसु ओकर अर्थ-भावार्थ भली-भाँति समझावसु व्याकरण में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया अव्यय, कारक समझावल-लिखावल गइल। मुहावरा-लोकोक्तिन के अर्थ क प्रयोग समुझावल-लिखावल रहे। किसिम-किसिम क पत्र आ लेख लिखे क विधि बताइ के लिखे क अभ्यास करावल गइल।

गणित में लघुत्तम समापवर्त्य, महत्तम समापवर्तक, साधारण भिन्न क जोड़-घटाना, गुणा-भाग क अभ्यास कराइ के भिन्न क लघुत्तम समापवर्त्य, महत्तम समापवर्तक, साधारण भिन्न व्यवहार गणित, काम, समय, टैक्स, दिवाला आ हौज विषयक प्रश्नन के हल करे क नियम बताइके प्रश्नन के देई-देई के हल करे क अभ्यास करावल गइल। साधारण व्याज से लेइके चक्र वृद्धि ब्याज तक सवालन के हल करे क तरीका बतावल गइल आ सवालन के हल करे क अभ्यास करावल गइल। ब्याज क प्रतिशत, समय-दर, मूल धन, मिश्रधन ए कुल्हि के निकाल लेबे क विधि क बोध कराइ दिहल गइल।

संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध यानी उ.प्र. क भूगोल पढ़ावल गइल। ए प्रदेश के सीमा, जलवायु, पैदावार, नदी-पहाड़, रेलवे लाइन-स्टेशन, अउरी मुख्य नगरन क भरपूर विवरण पढ़े के मिलल।

एगो दिन रहे कि हम आन का मने अ का कक्षा क आपनि पढ़गीति कनियाँ भा कउवा 'क' से चालू कइली। आ एगो दिन उ आ गइल कि हम खेलते-खात आ पढ़त-लिखत चार का कक्षा में चोहँपि के ''कुन्ती कर्ण समीप गई गंगा के तट पर''झूमि-झूमि के पढ़े लगली आ सुनाइ के माई के रिझावे आ उमगावे-मनसावे लगली। चौथी कक्षा क हमारि पाठ्य पुस्तक रहे 'हिन्दी प्रवेशिका' आ ओमे ऐ गो पाठ रहे 'कुन्ती कर्ण-संवाद'। ई राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त क पद्यात्मक रचना रहे। ''कुन्ती कर्ण समीप गई गंगा के तट पर'' ओकर पहिली पंक्ति रहे। माई के हम ई कविता पढ़के आ याद कइके सुनावे लागल रहलीं। माइ कर्ण की दानवीरता से रस विभोर हो जा। हम बार-बार ई कविता सुनाइ के माई के बरिसन रीझत रिझावत आ रीझत रह गइलीं।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा तकली क टूटे न तार

हमरा प्रारम्भिक पाठशाला में हमरा पढ़े का समया में पढ़ाई-लिखाई जेतना चोटार होखे ओतने शिक्षणेतर सीखावे-खेलावे वाला कार्यक्रमो में अध्यापक चोप से मन लगावसु। ओघरी छात्रन के प्रारम्भिक कक्षा में सूत-सुतरी काते आ टाट बीने सिखावल सुरुम कइ दिहल जा। पहिली कक्षा में हमरा हाथ में तकली पकड़ा दिहलि गइलि। अंतिम घंटा तकली काते क रहे। तकलीं काते में हमार मन लागे आ तकली से मोटा सूत मजे में कात लेईं; बाकी निम्मन मेंही सूत काते में चूकत रह गइली। जेंव हम निम्मन मेंही सूत काते का फेर में परी आ तकली से बारीक सूत निकालत चटकारे गाई-'हमरा तकली क टूटे न तार चरखवा चालू रहे', तेवं हमरा सुघर नाचति ओ तकली का टोक भर नजर लगिजा आ मेंहिं तार टूट जाय। आ माई मतिन नाचि के ढमिला जा। हम ओंकरा पर खीझि-खिनिसाइ के माथा पटक के रह जाईं। मन होखे ओके कूँच-काँच देई। ऊ बड़ा निडर-ढीठ आ निर्दय रहे। ऊ हरामिनि कबो हमरा पर न दया कइलसि आ न हमार डर-भय मनलसि। मेंही सूत कातत हमरा कबो ई गावे क भागि ना भइलि-"हमरा तकली क टूटे न तार...।" चउथी कक्षा ले हम एकरा बदे तरसत रह गइलीं। ढेला पर सुतरी काटे में हम मँजल तेली लोग के मात देबे लागल रहली। टाट बीने के ताना-बाना फइलावल रहे आ बीने सिखावल जात रहे।

ओघरी खेल क कार्यक्रम विधिवत चले। लेजिम, लाठी, मार्चिंग, शारीरिक व्यायाम, रस्साकसी, दौड़-कूंद क अभ्यास बरसाति का बाद रामलीला क मेला देख आ मिठाई खाइके नेवधा जा। साल में एक तोर जाड़ा का मौसम में ए खेलन क प्रतियोगिता (दंगल) क्षेत्रीय स्तर से लेइके तहसील, जिला आ प्रदेश स्तर पर भइल करे। लेजिम, लाठी, मार्चिंग, शारीरिक व्यायाम आ गीत का टीम में सम्मिलित होखे क हमरा रचिको मन ना करे; तबो जबरन सामिल कइल जाईं। सबेरे-शाम अभ्यास डेढ़-दुई महीना चले आ एमें बड़ा पेराई होखे। ई कुल्हि मेहनत हमरा के वे खद्दी-बद्दी क बुझा। बड़ा जोर मरलीं, सरसिफारिस लगवलीं; बाकी पाठशाला का पलटनि ले भाग ना पवलीं। तीसरी आ चौथी कक्षा में दुइ बीस पढ़ली आ ओ परेट का कोल्हू में पेरइलीं। हम अपना गवई खेलन में खूब भाग लेईं आ हमरा के ओमे बेहद मजा मिले। गोटी, सतघरवा , अतला में तूल, आँख-मुँदौवल, गेनपिटापट, चोटीमार भाग-दौड़, गुल्ली-डण्डा, हैंगुल, बरगत्ता, दौड़-भाग, ओल्हा-पाती, बजना-बजनी अउरी में भाग लेबे बदे बराबर तैयार आ हाजिर रहीं अपना मन से। सयान आ शिक्षक भइला पर बाली-बाल, फुटबाल, बर्डमिन्टन, आ टेनिस का मैदान में बराबर हिसाब कइके उतरल करीं, भलहिन सराहूँ खिलाड़ी न भइल होखी। ए कुल्ह में हमरा के स्वास्थ्य-सवाद मिलत बुझा आ आजुओ जब हाथ-पाँव फेरीला तब बुझाला; बाकी ऊं लेजिम, मार्चिंग अउरी का अभ्यास क खटानि हमरा के बेअरथ क बुझाति रहि गइलि। अपना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन-मफिक खेलन का मैदान में उतरला से हमार तन-मन के बहुत स्वास्थ्य, स्फूर्ति, सत्प्रेरणा, उत्साह, श्रम-चोट सहे क क्षमता आ प्रसन्नता मतिन किछु अइसन सम्बल-सामान में भेटाइल कि जिनकरा चलते हमरा बिकट जीवन जातरा में कबो आहस न आइल। एही का बलें अध्ययन-लेखन, अध्यापन, खेती-बारी, घर-गिरहत्ती आ सामाजिक साहित्यिक कामन क खटानि ई हमार शरीर बरदास करत गइल ह।

जइसे प्रारम्भिक पाठशाला में पढ़त खानी हम अपना पीतर का तकली पर मध्यम कोटि क मोंटाहे सूत कात सकलीं ओइसहीं अपना जीवनो का चरखा पर मोटे-झोंट तागा कातत आपन काम-धाम संतोष-सहित ओही से बनावत-सँवारत रह गइलीं हँ। हम गाँव में जमलीं, बढ़लीं आ पनफलीं हँ आ एहिजे का सभ्यता संस्कृति में साँस लेत रह गइलीं हँ। हम जो शहर के मेंही आदमी ना बन पवलीं हं त एकर हमरा कवनो पछतावा नइखे। चाहे जेवन होखो, हमरा त अपना गाँव क अपना समय पर आ अपना रंग में पाकल आम-सिरफल पसन्न बा आ ई हमरा के स्वास्थ्य सवाद क खजाना बुझाता। कारबाइनी संस्कृति का अनार-अंगूर में हमरा के स्वस्थ रस नइखे भेंटात, मन लुलुआइल रह जात बा। एसे हम अपना जीवन का चरखा भा तकली पर जेवन तार तागा कातत आइल बानी, ऊहे हम कातत गावत रहीं "हमरा चरखा क टूटे न तार चरखवा चालू रहे।"

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंदौ गुरू-पद-कंज

अप्रैल आ मई में प्रारम्भिक पाठशाला क अंतिम परीक्षा स्कूल का डिप्टी साहब का देख-रेख में बड़ा कड़ाई से भइलि। उत्तीर्ण परीक्षार्थी लोग भगवती दुर्गा माई के लेड़ुवा आ बतासा क प्रसाद चढ़ावल आ मास्टरो लोग के दिहल। ओघरी शिक्षकन खातिर सभकरा मन में गुरू क ई दिव्य भाव बनल चल आवत रहे- गुरुर्ब्रह्मा, गुरूर्विष्णुः गुरुदैवो महेश्वरः। आजु हालति किछु अउरिये बा। ए घरी क लायक पढ़निहार लायक लरिका गुरु जी लोग के ई कहत भजत बान-

गुरुर्नेता, गुरुसांसद, गुरुग्राम-सभापतिः।
गुरुसाक्षात् भ्राष्ट्य रूपम् तस्मै श्री गुरवे नमः॥

ओ सालि का जुलाई में हम, ओ प्रारम्भिक पाठशाला से स्थानान्तरण प्रमाणपत्र लिहलीं आ रेवतीपुर का मिडिल स्कूल में आपन नांव लिखवावे बदे चल दिहलीं। जिन गुरू लोग का कृपा-प्रसाद से हमरा के पढ़े-लिखे का काम में सफलता मिलति गइलि ह ओ सभकरा चरन-कमलन में हम आपन माथा नवावत बानी सही दिल से ई मानत आ कहत-

गुरु ब्रह्मा, गुरू विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे सामने जन्म की जो मही है

हमनी का दूनो दयादन का बँटइला पर हमार माई का खास घर दयाद क बखरी में पर गइल रहे। ऊ हमार जन्मस्थली रहे आ आजुवो बटले बा। ऊ हमरा कबो भुलइबे ना कइल। परिवार बदे ऊ जगहि दूसरा क हो गइलि बाकी हमरा मन खातिर ऊ कबो आन क ना हो पावलि। जब हम ओके गोठँहुल-भुसहुल बनल देखीं तब हमरा हिया के दुःख होखे। माई ओके लीपि-पोति आ झारि-बहारि के चमन कइले रहसु जहवाँ कि हंस लोटे। हमरि माई ओमें बीसन बरिस रहली। ओ घर में हमरा एगो भाई आ दुइ गो बहिनों जनमल रहलीं बाकी ऊ लोग एह दुनिया में चार-चार आ पाँच-पाँच बरिस ले अधिका ना जीयल। हम माई का उदार उदर ले उतर बहरियाई के ओही छोटहन घर में 'किहाँ-किहाँ' कइले रहलीं। ओकरा गोदी में बरिसन बकइयाँ चलबो कइलीं आ आजु ए बयासी बरिस का उमिरि में ओकरि याद सँजोवले ए दुनिया में माया से संघर्ष करत चलल जात बानी। हमरा के बुझाता कि ई ओघर का धरती का ओ माटी क महातिम ह जेवना के हम पेड़ा मतिन खाए बदे अधीर रहीं। जेंब माई भर परसु हम तेंव ओघर का धरती देवाल क माटी किकोर के मुँह में डाल लेई आ चुभुलाई -चुभुलाई के खुबहिन सवाद लेई। अपना दयाद का बखरा-बखरी में पर गइला पर ऊ घर हमरा तन ले लम्मा पर गइल रहे। ओकरा के बनावे सहेजे क हमरा के कौनो अधिकार ना रहे। ओकरा के अपना कबुजा में करे क सोच कइलो अनर्थ रहे। संजोग, कि हमरा कवनो तरे क अनर्थ ना करे के परल आ ऊ घर पचीसन बरिस हमरा दयाद का बाँट-बखरा में रहला का बाद एक दिन हमरा बखरी में घुसुक आइल आ उनकरा मर्जी से हमरा बखरी क अंग बन गइल। बाति अइसन भइलि कि हमनी का अपना-अपना बखरी का ओ अलंग का घरन के ढहवाइ के ईंट गारा से जोरवावे-बनवावें लगली जा आ अपना सुविधा का अनुसार आपुस में मिलजुल के कुछ नया बँटवारा कइ लिहली जा। ओही क फल रहे कि हमरा माई क ऊ खास घर भा हमार ऊ जन्मस्थली फेरू हमार कबुजा में आ गईल; हमरा बखरी में सामिल हो गइलि आ प्रातः स्मरणीय गोस्वामी तुलसीदास का एह कथन का सच्चाई के उजागर करे लागलि - 'जाकर जापर सत्य सनेहू। सोइ तेहि मिले न कुछ संदेहू।'

इतिहास अपना के दोहरवलसि आ ओकरा चलते हमारि प्रिउ जन्मस्थली हमरा सनेह का रस्सी से घिंचाइ के हमरा लगीं चलि आइलि। ओकरा संतिर हमरा जेवन घर देबेके परल ऊ बड़हन रहे। ए से ओकरा बदला में हमरा जन्मस्थली का घर क कम परति जमीन बढ़ाई के ओकरा बराबर कइ दिहलि गइलि। एकरा चलते आ ईंट का जोराई का करतन ऊ छोटहन घर मजे क बड़हन घर हो गइल। ओकरा संतिर जेवन घर देवे के परल रहे ऊ हमरा मेंहरारू क खास घर रहे। एसे ऊ उनुकरे खास घर हो गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओ हमरा जन्मस्थली का घर में हमरा पहिलौटी का लइकी का बाद क दुसरकी लरिकनी क जन्म भइल जेवन आजु सरकारी अस्पताल में डाक्टर बाड़ी आ हमरा अकेला लरिका जनमलन जेवन आजु प्राचार्य बान।

धन्य हऊ तूँ हे हमार जन्म स्थली! जहवाँ हमरा ए मानुस शरीर के एह लोक का सभत्तर ले पहिले बित्ताभर धरती पर जगहि मिललि रहे आ धनि हऊव हे ओ जन्मस्थली क घर जेकरा गोदी में हम आ हमारि महतारी शीत-घाम आ बरखा-बतास से बचे बदे आड़ पवले हई जा। हे हमार सऊरी-घर हमरा के पशुता का चपेट-आतंक से बचावे बदे तोहरा दुआरि पर बराबर आगि दगलि ह आ केवाड़ बन्न रह चुकल ह। हे जननी, जन्मभूमि! तोहन लोग क गुन-महामित हमरा एको छन भुलात नइखे आ ई कहूके जियरा अघात नइखे-जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। तोहन लोग हमरा के बराबर अभिन्न लउकत रहे लऽजा, चेत परत रहे लऽजा आ मन गुनगुनात रहेला-

कहीं जा बसें चाहता जी यही ,
रहे सामने जन्म की जो मही है।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बचवा जीयऽ लाख बरीस

जेंव हम दुअराँ चोहपीं, तेव बाबा अपना कोराँ उठाइके खाटी पर बइठाईं के इसारा करसु–

हऊ देखऽ हऊ देखऽ
बरधा गइया बछरुवा,
हऊ बइठलि भइँसि पड़रुवा,
कहवाँ बाडऽताकत, मरदवा।
हऊ माकनात बाटे लयरुवा।

जब हम बरधन के खात देखी तब उनुकरा से अट्टा–पट्टा सुरूम करे बदे ठकठेनी करी। हमरा ठकठेनी कइला पर ऊ कढ़ावसु–

अट्टा–पट्टा गोला बरधा,
सनियाँ खाला पीएला पनियाँ
कहवाँ जाला, कहवाँ जाला
इहे जाला इहे जाला।

ई कहत ऊ हमरा के गुदुराई देसु आ हम ठठाइ–ठठाइ के हँसे लागीं। ई खेला कइ तोर चले। एसे अघाइ के जब हम भइंसिया के देखाई तब बाबा हमरा के कोराँ लिहले लेइ जाइके ओकरा पीठि पर बइठाइ देसु। जब कबो गाइ–बरधन का पीठि पर बइठे क आपनि भाषा बुझाई, तब ऊ हमरा के डाँटत मतिन 'नाहीं–नाहीं' करत कहसु–

गाइ हई लच्छिमी बरध महादेव
भइंसि हई सुअरी बहुत दूध देसु।

एकरा बाद ऊ हमरा के कोरा लिहले अपना खाटी पर बइठ जासु आ उनुकरा तमाखू पीए क ताव लागे। ऊ हमरा के लउरि–सोटा क घोड़ा बनाइ के धराई देसु हम ओकरा पर चढ़के तुबतुबावे लागीं आ ऊ तमाखू चढ़ाइ–चढ़वाइ के पीए लागसु।

बाबा पहिले क दण्ड–बइठक क निम्मन रियाजी रहलन आ पहलवानी कइले रहलन। फुर्तीला रहलन, असकतियाह ना। करीब रोजे साँझि खानी घुघुवा–मन्ना खेलावत टनाका सुर में गावसु–

घुघुवा मन्ना अनार क पत्ता,
बचवा क मामा जइहन कलकत्ता,
बचवा के ले अइहन कपड़ा–लत्ता
बचवा के दीहन खूब असीस
जीयऽ जीयऽ लाख बरीस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा के झुलावत बाबा अपना दूनो टाँगिन पर बेरेप टाँगलेसु। बुझा कि हम बाँसा गाड़ देले बानी। हमरा के सम्हारे बदे बुढ़िया दाई के गोहरावसु–

नई भीति उठेले, पुरानी भीति गिरेलें;
बुढ़िया दाई सम्हरले रहिहऽ।

बहुत दिनन ले सुनत–सुनत एक दिन हम पूछलीं–'बाबा बुढ़िया दाई के ह?'

ऊ बतवलन–भगवती जगदम्बा दुर्गा माई। तो हारिं महतारी उनकरे के रामनवमी आ रक्षा–बंधन जइसन तेवहारन पर पूजे ली। ऊहे हमनी क इष्ट देवी हउई।

माई परिवार में अकसरुवा मेहरारू रहली। घर का टहलि से उनुकरा के एको छन क कल ना रहे। ऊ हमरा के खेलावे बदे राम लीला का मेला ले माटी, लकड़ी आ रबड़–ओबड़ क अलमगंज खेलवना कीन के मँगवाइ देसु। जब उनुकरा हमरा के बझावे के होखे तब ऊ कुल्ह लेइ आइके हमरा सोंझां गाँज देसु। हम ओही कुल्ह के फइलावे–बटोरे में बाझल रहीं। ऊ रोटी बनावत क हमरा के पिसान क चिरई बनाइ के सोन्ह सेकि देसु आ लकड़ी में खोंस के हमरा हाथ में धराई देसु। हम ओकरा के खुश होइके कूद–कूद के खाये लागीं। हमरा के माई गरम–गरम रोटी पर लयनू–नून घंस के देसु आ हम खूब खाईं। कबो–कबो रोटी पर पकवान छानल कराही क बाँचल करू सोन्ह तेल आ नून पोता जा।

अपना घरे गाइ–भइँसि रहल करँस। एसे गोरस क टाना कबो ना परे आ माई हमरा बदे ओकर ओज ना होखे देसु। लयनू भा घीव पोतलि धिकलि–धिकलि रोटी आ आलू क चोखा सबेरे क हमार कलेवा अधिकतर बनल करे। कबो–कबो माई बोरसी में आगि सुनुगाइ के ओही पर पूजा–पूड़ी छाने वाला पवना तावा का संतिर गरम कइके ओही पर हमरा के खर–खर सोन्ह रोटी सेंक दिहल करसु। ऊ रोटी बहुत मीठि लागँस।

कहियो–कहियो जब बाबा किहाँ कवनो कारन से घुघुवा मन्ना क खेलाई ओखाहि रहिजा तब माई के खेलावे बदे उद्वेगी। हमार मन राखे बदे ऊ हमरा के घुघुवा–मन्ना खेलावे आ मधुरी–मधुरी धुनि में गावे लांगसु –

घुघुवा मन्ना अइहें मम्मा,
मामा का खेत में उपजे धाना,
ले अइहन ऊ चिउरा–दाना,
आके दीहन तुहें असीस
बचवा जीयऽ लाख बरीस।

ई कहि के माई अपना टांगिन पर हमरा के ऊपर टाँगत ए छनभंगुर संसार में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना नई पीढ़ी का रक्षा बदे बुढ़िया दाई के श्रद्धा भक्ति से गोहरावसु-

नई भींति उठेले पुरानी भींति गिरेले
बुढ़िया दाई-सम्हरले रहि हऽ।

हमरा पाँच बरिस का उमिरि का अयड़ाँ-गोयड़ा ले माई-बाबा क एह रूप में असीसल कम-वेश चलते रह गइल। करीब पाँच-छव बरिस क उमिरि ले पहिले दुइ मुसमातिन क घर हमार खेले क अड्डा रहलन स। मुसमाति लोग मनसायन आ मुँह-बोलार बदे आपन राति-दिन का सुख दुःख का संगी-साथी आ आपन नजदीकी ले नजदीकी परानी समुझि-बूझि के अपना बेटी आ नातिन-नाती के पजरा रखलें रहें। ओ लोग क संजोगन दुइ-चार बरिस पर दुइ-चार दिन बदे अपना ससुराँ जाँस। ओ लोग क नाती-नातिन हमार खेले क बचपन क साथी रहलन। हमहन का सभ साथी करीब समउमिरिया रहलीं जा। कबो ओहन का आ कबो हमरा घरे रोजे खेला जमक जा। हमहन क खेला रहे-चिउँटा-चिऊँटी क झगरा, तार काटों-तरकुल काटों, ताती-ताती पुरिया, पुतरा-पुतरी अउरी।

हमनी का चिउँटा-चिउँटी क झगरा सुरुम करत आपुस में एगो दूसरा क कान धइके एक दूसरे का सुर में सुर मिलावत बार-बार बोलीं जा-"चिउँटा हो चिउटा! चिउँटी क झगरवा छोड़ावऽ हो चिउँटा।" एकराबाद तार काटों, तरकुल काटों, खेलत राग कढ़ाई जा -

तार काटों तरकुल काटों
काटों बन क खुज्झा,
बाजे घोड़ घुघुरू,
चमक चलु राजा।

कुल्ह खेलन के खेलला का बाद सगुनहीं दलघुसरी पूरी पकाई जा। ऊ धिकलि-धिकलि आ तरातर घीव घँसलि पूरी अपने खाईं जा। खाली आन का मने भऊजी क मुँह छू देई जा। हमहन का भउजी के पातर-डाँगर आ कमजोर बतावत पूरी अपने मजा लेइ-लेइ खूब कूँच-कूँच खाई जा आ एक सुर में बोलत जाई जा -

ताती ताती पुरिया घीव में चभोरिया
हम खाईं कि भउजी खाई
भउजी पतरंगिया।

पूरी धूरि-माटीक पकावलि जा। हमहन क मिलल चटकार मधुरि धुनि से कबो हमार बखरी गूजें आ कबो मुसमातिन क।

समय बीतत गइल। मुसमाति लोग बुढ़ात गइल। ओ लोग का घरे हमारि आवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा ही घटति गइलि। जइसे आगे–पाछे एक दुनिया में ऊ लोग आइल रहे, ओइसहीं एहिजाँ ले चलि गइल। जवानी में जेवनि मुसमाति बेवा भइल रहली, ऊ चढ़बाँक–चालू रहली आ नीयति का खास रहली। उनकरा जीयत जिनिगी उनकर जवान बेटी आ जवान होत नातिन दूनो उनुकरा पर बज्जर ढाह के एह लोक से चलि दिहलीस। उनुकरा मुवला पर उनुकरा खातिर रोवे वाला उनुकरा कुल में केहू ना रह गइल। सीधवा–सधवाँ मुसमाति अपना बेटी आ नाती–नातिन क सुख–सेवा अपना आखिरी दम तक पवली। ऊ उनुकरा श्राद्ध क सभ क्रिया कर्म आ भोज कइ–धइ के अपना गांवें गइलन। फेरू हमरा ए जिनिगी में उनुकरा से भेटिं ना भइलि आ ना उनुकर कछु–आह पता लागल।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु चेती सब होत

हमरा जनमला का पाँच बरिस बाद हमरा पीठी एगो बहिनि जनमलि रहे। ऊ दुई दुई बरिस क भइलि रहे कि हमनी का माई का संगे निनिअउराँ गइलँ रहली जा। मामा हमनी के लिवा जाये बदे आइल रहलन। माई एक महीना ले अधिका ओहिजाँ ना रहि पवली। परिवार का दिकदारी आ घर-गिरहत्ती क चिन्ता उनुकरा माथे बराबर सवार रहे। हमरा कवनो गमि ना रहे। हम अपना दुइगो ममेरा भाइन का संगे खेले-खाले में बाझल रहीं। एक महीना बीतत-बीतत बाबा माई क विदाई करावे बदे चोहँपलन। नइहर ले माई क विदाई हो गइल आ अपना ससुराँ आइके घर का दुक्ख धन्धन में अइसन बझली कि फेरू नइहर जाये क भागि ना भइलि। नइहर जाये बदे तरसत रह गइली।

ऊ हमारि बहिनि चार बरिस क हो गइलि रहे। 'भइया' 'भइया' कहत हमरा संगे लागल रहे। हमहन का संगे-संगे खेलीं खाई जा। राति खानी माई का संगे खाटी पर सूत जाई जा आ कहनी-खिस्सा कहवाईं जा। फूल मतिन सुघर-साघरि ओ बहिनि क नावँ 'फूलमती' धइल रहे। हमहन का दूनोजाना रंग रूप आ चाल-ढाल में एक तरे क रहली जा। ऊ शरीर से हट्ठा-कट्ठा रहे आ टपटेल रहे। माई का विसवास हो गइल रहे कि दुइ-चार बरिस में किछु बरिसन खातिर उनुकरा अकसरुआ भइला क गरह बेटी काटि देई आ तले पतोहि आ जाई। बाकी वाह रे दइब क विधान आ उनुकरि टेढ़ी। हमरा ओ बहिनि के लकवा मार दिहलस। रोग क चपेट तेज तगड़ा रहे। ओ जुग का मोताबिक दवा-वीरो भइल, तंत्र-मंत्र-टोटका भइल, पूजा-पाठ, ई कुल्हि भइल। बाकी ओ बेचारी बहिनि क गर रोग ना छोड़लस। एक महीना ले अधिका समय बीते लागल। ओकर साँसति-दुक्ख आ अन्हार आगम देख के लोग बाग का मुँह ले ई आवाजि आवे लागलि-"ए जीयला से एकर मुइ गइल अच्छा बा।" दइब सभकर कहल सुन लिहलन आ एक दिन ओकर प्राण पखेरू उड़ गइलन। हमरा आ माई का आँखिन ले कई दिनले आँसू ढरकत रह गइल।

ओ सहोदरि बहिनि क 'भइया' कहल हमरा आजु ले ना भुलाइल। जब ओकर चेत परेला आँखिन ले लोर ढुरकी जाला। केहू क अपना बहिनि किहाँ आइल-गइल आ बहिनि क भाई के 'भइया' कहके गोहरावल-हाँक पारल हमरा ओ चेत के रह-रह खुटकियाइ देला। जब मामा कबो आवसु आ हमरा बखरी में 'बहिनियां' कहत पइठसु तब हमरा ओ बहिनि क चेत पर जा। हमनी का महतारी बेटा दूनो जाना ओ 'फूलमती' क जीयल पूरा मन में चाहत रहली जा। हमनी क चाहल ना भइल। काहे कि "नर चेती नहिं होत है, प्रभु चेती सब होत।"

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नर हो न निराश करो मन को

हमरा माई जी दुनिया का बाति-बेबहार आ घर का गिहथान खातिर केहू ले निमहुर ना रहली, जबकि करिया अच्छर उनुकरा बदे भइँसि बराबर रहे। परिवार का जिम्मेवारी का नेवरती ऊ अपना के सउँपि देले रहली। ऊ लउँडी ले लेइ के रानी तक कुल्ह कामे अपना कपारे उठा बजा ले ले रहली। अपना बच्चन के पालल-पोसल, परिवार का बेकतिन के उनुकरा अनुसार रसोई बनाइ के खियावल पियावल, डेरा-डंडा बदे सातू-मातू जुटावल, घर के लेवर-पोत आ झारि-बहारि के चमन कइले रहल, तर-तेवहार क भीरि सम्हारल, दयादी-भयवदी क तार-झार सहल, ए कुल्ह सैलन में उनुकरा के केहू बिचिला ना सकत रहे। असल में माई हमरा परिवार-पाठशाला क सुरेमन आचार्य रहली आ ऊ हमरा के बराबर पढ़ावत गइली - "नर हो न निराश करो मन को। कुछ काम करो कुछ काम करो।"

माई पुरुषार्थ क स्वरुप आ संतान-सनेह क मूरति रहली। ऊ हमरा के कवनो बिकट काम खातिर खटे बदे अरहवल ना चाहसु। माई के करतब हमरा के उकसाई दे आ हम उनुकरा के अकसरुवा कवनो कठिन मोरचा पर भिड़ल देख के उनुकर संग देवे बदे छरियाइ जाई आ उनुकर हाथ बँटावे लागी। उनुकरा सनेह में एतना बल रहे कि हम एक सुरुका बहुत देर ले उनुकरा संगे खटत रह जाई आ हमरा तनिको आहस ना आवे। ओघरी एक सुरुका बहुत देर ले जेवन काम करे क हमरा रपटा परल ऊ हमरा आगे का जिनिगी में बड़ा काम आइल। हम एक ले एक बिकठ बझाव का बइकंटी में फँस के न त अउँजइली आ ना त काम में खटे क सिलसिला बढ़त देख उबिअइली। हम काम फरियाइ गाले क हौसला लेइ के काम में भिड़ल रह गइली हँ। जो कबो विफलता का चट्टान से टकराये क परल ह त ओसे हम निराशो ना भइली हँ। काहें कि हमरा बुझात गइल ह कि हमरा पीठी हाथ धइले हमरा माई जी कहत जात बाड़ी- 'नर हो न निराश करो मन को, कुछ काम करो कुछ काम करो।'

बाबू असकतिआह, खिनिसाह, कवनो नाया काम देखते अउँजइना आ दूसरा का पसेना का कमाई खाई के जीये क मनसा राखे वाला प्रानी रहलन। जब उनुकरा काम करे के परे तब उनुकरा सगरो देहि में लुत्ती छीटी दे। ऊ तर-ऊपर होखे लागसु। ऊ पोस्टमास्टर रहलन। ओही का बहाने दुआरे पर हीरल रहे क उनुकरा के सुतार रहे आ खेती -बारी का ढेला-खावाँ में ढगराए आ काँट-कुस से छेदाये से ऊ बाँच जासु। ओकरा चलते सम्मानो मिले। बाकी ऊ ओकरा कर्तव्य के निभावे में काँच आ लापरवाह रहलन। ग्राहकन के लिफाफा, पोस्टकार्ड, टिकट, मनि आर्डर, अउरी सामानन के बेचे-देवे में बहुत असकतिआह रहलन। उ आदमिनं के ए काम बदे कबो-कबो मूत मुताई गालसु। एकर भुक्त भोगी एगो हमहूँ रहली। प्राइमरी पाठशाला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ मिडिल स्कूल क मास्टर लोग लिफाफा पोस्टकार्ड मंगइले क काम हमरा से सुतरगर समुझे, आ ई हमरा बदे बिकठ रोग हो जा। बाबू का आगे दीन प्रार्थी होइ के देर ले ठाढ़ो रहला पर सुनवाई कंचिते होइजा। बाबू का असकति अइला पर बाबा–माई केहू क मददि हमरा कामे ना आवे। बाबू आलसी आ सरकारी हाकिम रहलन। उनुकरा में जनता का सेवा क भाव तनिको ना रहे। एक ले एक बड़ आदमिन के हुरहेठ देसु। माई में सेवा–भाव रहे। ऊ केहू के अपना दुआरि ले निराश ना लवटे दीहल चाहसु। लाख बाझल रहसु; बाकी केहू भिखमंगा का दुआरि पर जय जजमान कहते ओकरा झोरी में दुइ दाना डालि देसु। जब हम स्कूल का मास्टर आ बाबू दुई पाट का बीच में पर के पिसात मनमारि के बइठ जाईं, हमरा कतहीं आवत–जात ना बने तब माई आ बाबा हमरा के बोध करावसु आ ललकारसु–का बइठ के झँखत बाड़ऽ का तूँ लिफाफा–पोस्टकार्ड गढ़बऽ ? जेवनि असली बाति बा जाइ के ऊ बता द। का डेरात बाड़ऽ ? निराश आ उदास भइला क कवनो जरूरति नइखे। ई सुनते हमरा शरीर में बिजुली दउरि जा आ हम मास्टर साहब के पइसा लवटावे आ खबरि देबे हुँमचत चल देईं। बाबू का हमरा बदे सनेह रहे। ऊ हमरा के जीयत–जागत देखल चाहसु। अपना कमाई का अनुसार हमरा के ओढ़े–पहिरे आ खाये–पीये क इन्तजामो करत गइलन; बाकी अपना स्वभाव–बानि से विवश होइके ऊ घर का बेकतिन के हूँसत निहसावत रह गइलन। माई अपने करतबी उत्साही आ लगनी घर परिवार का बढ़न्ती बदे जुझारू मेहरारू रहली आ सभका के एकरा बदे उकसावत रह गइली। हमार माई अपना काम–धाम आ करनी बानी से हमरा के ई सिखावे में ना चूकली कि "नर हो न निराश करो मन को कुछ काम करो कुछ काम करो।"

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दई दई का करत है

अपना गाँव क इष्टदेवी भगवती दुर्गा माई का दया, अपना माई बाबा का आसीसि-उतजोग से हम प्रारम्भिक पाठशाला क आखीरी परीक्षा उत्तीर्ण हो गइलीं। बुला सन् १९३६ का जुलाई में गांव का मिडिल स्कूल का पांचवीं कक्षा में हमार नावं लिखा गइल। मिडिल स्कूल में पांचवीं, छठईं आ सातवीं कक्षा होखँस। सतईं कक्षा क परीक्षा मिडिल स्कूल क अंतिम परीक्षा रहे।

जेवन वर्नाक्यूलर फाइनल एक्जामिनेशन (Vernacular Final Examination) कहा आ पब्लिक इंसट्रक्शन डिपार्टमेन्ट, संयुक्त प्रदेश, इलाहाबाद (Department of Public Instruction, United Provinces, Allahabad) से संचालित होखे। ओ घरी ए परीक्षा क बड़ा मान रहे। जे ए परीक्षा के पास कइ ले ऊ प्राइमरी आ मिडिल स्कूल भा एह स्तर का अउरी कवनो नोकरी क योग्यता राखे लागे। मिडिल स्कूल में पढ़े बदे छव विषय रहलन-हिन्दी, उर्दू भ अंग्रेजी, गणित, ज्यामिति, इतिहास-भूगोल आ रुरल नालेज। मास्टर लोग अपना-अपना विषय के बहुत तत्परता आ श्रम से पढ़ावे। काहें कि परीक्षा में सच्चाई रहे। परीक्षा फल अच्छा ना भइला पर मास्टर लोग उत्तरदायी होखे आ ओ लोग का विरुद्ध कारवाई होखे। ओघरी नकल करे-करावे क हियाव ना होखे। प्राइमरी भा मिडिल स्कूल में हमरा के पढ़ावत जे मास्टर मिलल ओकरा विषय-बोध का बारे में कबो केहू नाकि-भौंह ना सिकोरल।

सातवीं कक्षा तक पढ़े में हमार मन ना लागल। स्कूल में मास्टरन का डरनी हमरा किताबन क बस्ता खुले आ घरे ओही लोग का डरनी, ओ लोग क दिहल काम केहु पूरा करे बदे किताब-कापी उलाटलि-पुलाटलि जाँस। काम कइके ना ले गइला पर ठाढ़ करावल जा, मुरुगा बनावल जा, पिटाई होखे आ डांट-डपट सहे के परे। खेल में हमार मन बहुत लागे। ओघरी हम्मा-सुम्मा लरिकन क खेल रहल-हेंगुल, गुल्ली-डंडा, बरगत्ता, बजनी, गेन पीटा पटि, ऊढ़ा कूदल, ताल-पोखरा आ नदी-बाढ़ का पानी में पवँरल। मौसम का मोतबिक ई खेल जमल करँस। ना पढ़ला-लिखला क नतीजा भइल कि मिडिल स्कूल का अंतिम परीक्षा में हमार पाँव बिछिला गइल आ हम मुहें का भरे ढह गइलीं। ई हमरा बड़ा अखरल। आदमिन के मुँह ना देखावत बने। हम बेजोतल-बोंवल लमेरा जामलि फसलि अबले काटे परकल रहलीं। कबले कटतीं ? भागि-भुत्ते मजा मारत रहला क फल कपारे घहराइ गइल। बाबा आ माई बड़ा तीहा करवलन, तब कीछु मन थिर भइल। अथाहाँ बूड़त हमारा बदे ओ लोग क धीरज धरावल नाइ क सहारा हो गइल। ऊ लोग हमरा के ललकारल- "उठऽ फेरू पढ़े लिखे बदे नाँव लिखवाइ लऽ। मेहनति करऽ आ पास हो जा। मरद होइ के हारि ना माने के चाही। घोड़ चढ़वा, भागे-जोगे, घोड़ा परले गिर गइला पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घोड़ा क सवारी कइल ना छोड़ दे। उठऽ हियावं बान्हि के किछु कइ देखावऽ। चेतऽ, सूतऽमत। हारि के जीत में बदल दीहल मरद क काम ह।'' दुइ–चार दिन में हमार घाव भरा गइल। आगे ले खाली भागि भगवान भरोसे निम्मनि फसलि काटे क मनसा छोड़ दिहलीं। भागि भगवानो पर बिसवास करत अपना बाहुबले आपन काम करेक संकल्प हमरा में जागल। केहू का भरोसे जीयल हमरा के नमुसी आ नामर्दी बुझाए लागलि। गरमी का बड़की छुट्टी क गिनल दिन फरल आम क बगइचा अगोरे बदे आवत–जातू साँझ बिहान कइके बीत गइलन। जुलाई लगते रेवतीपुर का मिडिल स्कूल में फेरु नाँव लिखवा लिहलीं। सातवीं कक्षा क पढ़ाई फेरु सुरुम हो गइलि। हमरा के बुझा गइल रहे कि जे अपनि मददि करेला, ओही क मददि भागि–भगवती–भगवानो करेलन। ए समुझि–बूझि का होते हमरा पढ़े–लिखे में भा अउरियो काम में मजा आवें लागल। एकर फल भइल कि परीक्षा में विफल भइला पर हम थउसलीं ना। एसे हमरा में अउरी बल आइल आ ऊ विफलता हमरा के भागि–भगवती–भगवान क भेजल वरदान बुझाए लागलि। आगे कविवर बिहारी लाल जी अपना सतसई क अध्ययन करावत ई दोहा पढ़ावत हमरा ए भाव–विचार के बहुत पुष्ट पुखता कइ दिहलन दई दई का करत है, दई दई सु कबूल।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चहिअ अमिय जग जुरै न छाछी

प्राइमरी आ मिडिल स्कूल में पढ़त खानी हमरा के मास्टरी क जीवन किसानी ले सुखिया, सम्पन्न आ सम्मान क बुझाए लागल रहे। ऐसे मास्टर होखे क मन चले। मास्टरी करे बदे प्रशिक्षण कइल जरूरी रहे। प्रशिक्षण खातिर चुनाए में खाली मिडिल उत्तीर्ण भइला से काम ना चले। एकरा संगे उर्दू-अंगरेजी मिडिल आ हिन्दी विशेष योग्यता का परीक्षन में उत्तीर्ण भइला का प्रमाण-पत्रन क कीमति हो गइलि रहे। पहिले हम उर्दू मिडिल मे नाँव लिखवलीं आ फेरु अंगरेजी मिडिल में। एह कक्षन में हम अपना सहपाठिन में पढ़े-लिखे में चलफल परीं। एह कक्षन में हमहन के बड़ा मजा मिलल। किछु खलिहर घण्टा भेंटासु जेवनन में खूबहिन हँसी-ठट्ठा, गप्प-सड़ाका आ धक्का-धुक्की होखे। हमरा पढ़े-लिखे में रूचि हो गइलि रहे। हम आपन पढ़े-लिखे क रोजाना क काम पूरा कइल करीं। एमे कबों केवनो तरे क टूट ना परे देईं। एकरा चलते हम मौलवी साहब आ अंगरेजी का मास्टर साहब क स्नेह-पात्र बनल रहलीं। मौलवी साहब कट्टर मुसलमान रहलन। इस्लाम धर्म का आगे उनुकरा के सगरो धर्म घटिहा लागसु। उर्दू भाषा का तुलना में दुनियां क अउरी भाषा ओकर पसंघो ना रहली स। मौलवी साहब उर्दू बहुते मन-मुस्तैदी से पढ़ावसु। ऊ पाठ्य क्रम का अतिरिक्त गालिब, मीर, दाग, हाली अउरी का रचनन के अपना डेरा पर हमहन के बुला के पढावसु आ ओहन क खूबी समझावसु। अंगरेजी मिडिल का पढ़ाई क समय हमरा बदे सोना हो गइल।

अंगरेजी क मास्टर साहब ओ स्कूल में दसन बरिस ले रहत चल आवत रहलन। गांव का लोगन से जान-पहचान बढ़ाइ के धकिगर हो गइल रहलन। ओघरी मिडिल स्कूल खातिर बी.ए. पास मास्टर दुर्लभ रहे। रेवतीपुर का विद्यालय क भागि रहे कि ओकर अंगरेजी मास्टर बी.ए. रहे अ ऊ ओ मास्टर का मारे अभागा रहे कि ओ बी.ए. पास मास्टर में चीनी-मिसिरी के के चलावो, चोटो क सवाद ना रहे। ऊ देह-धजा से मोटँ-छोट, चांड़, करियां आ झरनाठ भइंसा रहलन। ऊ जड़काला में कई दिन पर नहासु। ऊ अपना जुलफी का अउँजाइल बारन का झुँड़ि में कवनो गमकउवा तेल लगाई के मलाइलि सैन गुप्ता धोती आ अध्धी तनजेब भा मलमल क कुरुता पहिरि के दरजा में आइके, कुरुसी पर बइठि के टेबुल पर पैर फेंक के पढ़ावे लागसु। उनुकर चुनउवा धोती पहिरे क आ पोंछिटा खोंसे क ढंग अइसन जुलुम जोर रहे कि ऊ बेपर्द हो जासु, नंगा हो जासु। उनुकर लुकाए-लुकवावे वाला अंग झाँकि-झूले लागसु। लइकन से सीलन आ उरनी किछु कहल ना बने। बाकी हमनी क लइक-बुद्धि रहे कि आपसु में कानाफूँसी कइ-कइ के अद्भुत हास्य रस क मजा लेई जा। बुझा कि ओ भइंसा मास्टर साहब का लंगोट बान्हे क हियाब ना रहे आ ना त लंगोट के पक्का होखे क मनरग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ थप्पड़, झापड़, मुक्कन अ सिटुकनि से मार के छात्रन के अदकवले रहसु। ऊ मनससु त कई दिन का संतिर एके दिन कई पाठ क शब्दार्थ लिखाइ देसु आ कहियो कई पाठ पढ़ा देसु। कुल्ह मिडिल पास करत हमनी का पुरेंठ हो गइल रहलीं जा हमनी का मुँह पर पाम्हीं परति रहे। जब ऊ भइँसा मास्टर साहब लइकन के बे छोह-मोह क सम्मेक पीटें लागसु तब हमनी का बहुत अनकसावन लागे अ तहवो गुरु-मरजादा क धियान कइके उनुकरा ओरा आँखि उठावे क हियाव ना करीं जा। कबो-कबो हँसिए-हँसी में ओ घानी में अपने परला क अनुमान कइके हमनी क ओसे बचे बदे खुरफाती बेंवत सोचे लागीं जा अ कबो-कबो ओ गरह के काटे बदे भगवती माई क मनवती करे लागीं जा। संजोग, कि ओ अंगरेजी का मास्टर साहब क उनुकरा गांव का पजरां का कवनो स्कूल में बदली हो गइलि अ ऊ हंसी-खुशी से ओहिजाँ चल गइलन।

उनुकरा जगहि पर जेवन मास्टर साहब अइलन ऊ खाली हाई स्कूल पास आ प्रशिक्षित रहलन। ऊ पढ़ावे-लिखावे में दक्ष, जानकार अ नियमित आदर्श मास्टर रहलन। ऊ कपड़ा-लत्ता-पहनावा से राष्ट्रीय, साफ-सुथरा, सादा आ अनुकरणींय रहलन। ऊ खादी-भंडार भा गांधी-आश्रम क शुद्धखादी पहिनसु आ कांग्रेसी रहलन। कई तोर जेल-जातरा कइले रहलन। ऊ शरीर से भड़कीला, सुघर-साघर अ बरियार ना रहलन। ऊ साँवर, लमछर, दुब्बर-पातर, फरहर अ तजेस्वी रहलन। ऊ आचार-बिचार में गांधीवादी आ मुधरभाषी रहलन। ऊ रोजे एगो हाथ में किताबि अ दुसरका में बेंत क एक डेढ़ हाथ क एगो डंडा लिहले रोजे दरजा में आइ जासु। मेज पर किताबि आ डंडा धइके कुरुसी पर सीधा बइठि जासु। पहिले का पढ़ावल पाठ पर छात्रन से प्रश्न करसु। जे ठीक उत्तर ना दे पावे ओके डाँटसु-डपटसु, दरजा में ठाढ़ करावसु अ जरुरति समुझि के ओ डंडा से ओकरा हाथ पर ओछराहे मार देसु। ऊ बड़ा समुझाइ-बुझाइ के खाली आधा पृष्ठ पढ़ा पावसु अ ढेर पढ़ावे बदे कबो अगुतइबो ना करसु। ऊ जाड़ा का चार-पांच महीनन में दस पाठ ले अधिका ना पढ़ा पवलन। बाकी उनुकरा पढ़वला से हमनी के अइसनि डहरि पकड़ाइल आ ज्ञान-ज्योति मिललि कि हमनी का बँचल पाठन क अर्थ अपने बहुत किछु समुझे-बूझे लगलीं जा। हम उनुकरा के पढ़े बदे हिन्दी क समाचार-पत्र 'आज' जब-जब जुटाइ दिहलकरीं जेवना से ऊ हमरा पढ़े-लिखे में बहुत मददि करसु। कक्षा का मोताबिक अंगरेजी क बोध हमरा अच्छा हो गइल रहे। हमनी का सभ सहपाठी परीक्षा में उत्तीर्ण हो गइली जा अ हम अच्छा अंक पाइके उत्तीर्ण भइलीं।

अंगरेजी मिडिल क परीक्षा उत्तीर्ण भइला का बाद हम हिन्दी विशेष योग्यता का परीक्षा का नेवरतीं पुस्तक जुटाइ लिहली। एकरा बदे ऊ मास्टर साहब हमारि पीठि बहुत ठोकलन अ हरिऔध जी का "प्रिय-प्रवास" क कई सर्ग पढ़इबो कइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संजोग से ए परीक्षा क आवेदन पत्र भरे का समय पर हम बीमार पर गइलीं। परीक्षा क फार्म ना भरा पावल आ हम परीक्षा ना देबे का स्थिति में हो गइलीं। स्वस्थ भइला पर हम परीक्षा देबे बदे मन चलवली। परीक्षा होखे क समय कम रह गइल रहे, तबो मास्टर साहब का बतवला का अनुसार हम चिकित्सकीय प्रमाण-पत्र का सहित प्रार्थना पत्र शिक्षा निदेशक किहाँ भेज दिहलीं आ हमरा के परीक्षा देबे क अनुमति मिली गइलि। ए परीक्षा खातिर पढ़े में हमार मन बहुत लागे, बाकी हम बेमारी का मारे पढ़ ना पवलीं। ए परीक्षा का तइयारी बदे हमरा के कविवर जगन्नाथ दास रत्नाकर क लिखलि बिहारी सतसई क टीका 'बिहारी-रत्नाकर' पढ़े क अवसर मिलल। कविवर रत्नाकर से बिहारी का शब्द प्रयोग क जेवन चमत्कार उजागर कइल गइल रहे, ऊ हमरा के बड़ा आश्चर्य चकित अ प्रभावित कइलसि। ओसे काव्य पढ़े-समुझे में हमारि रूचि बढ़लि। हम साहित्य जगत् क अनुरागी हो गइलीं। हमरा के बुझाला कि हमार कवि-साहित्यकार भइल 'बिहारी-रत्नाकर' का अध्ययन क फल ह। हिन्दी विशेष योग्यता का परीक्षा का उत्तीर्ण करते हम हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग से हिन्दी विशारद आ साहित्य रत्न क परीक्षा देबे का चक्कर में पर गइलीं।

प्रारम्भिक पाठशाला में पढ़त खानी ओकर मास्टर होखे क मन चलावे लागल रहलीं आ मिडिल स्कूल में पढ़त खानी ओकर मास्टर होखे क। एकरा प्रशिक्षण खातिर चुनाए बदे हम अंगरेजी-उर्दू मिडिल का हिन्दी विशेष योग्यता का परीक्षन के उत्तीर्ण कइलीं। साथे एन्ने-ओन्ने किछु अउरियो हाथ-पांव मारल गइल; बाकी हिन्दी-साहित्य के पढ़े आ जाने बदे हमार मन एतना चिसिकल कि हम हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से हिन्दी विशारद आ हिन्दी साहित्य रत्न कइ लेबे बदे ढेर उतजोग करे लगलीं। हिन्दी विशारद करते मास्टर होखे क हमार सपना आकाश छूए लागल। हम हाईस्कूल का हिन्दी अध्यापकी का मन-मोदक क सवाद चखे पावे लगलीं; जबकि ई मन मोदक क सवाद चखल हमार पागलपन रहे। ऐसे एके हम केहू से कबो ना कहलीं। ए बारे में हमारि ई हालति रहे कि हमरा के प्राइमरी या मिडिल स्कूल क अध्यापकी मिले वाली ना रहे आ हम हाईस्कूल क अध्यापकी पावे क टिसुना मने मन करे लागल रहलीं। अचरज ई रहे कि एकरा बदे हम शैक्षिक योग्यतो भरपूर जुटा ना पवले रहलीं। ओघरी जो केहू हमरा मन क बाति जानित अ हमरा सनकवाही क सपना सुनित त हँसि के हकनहाक कहले रहित-चहिय अमिय जग जुरै न छाछी।

ओघरी गाजीपुर शहरे में दुई-तीन गो हाईस्कूल रहलन। ओहन में हमरा के पढ़ावे क सवँहर आ चाह बाबू का ना रहे। ऊ हमरा से पलटनि-पुलिस क नौकरी या किसानी करावे में आपन सुबेंवत समझसु आ हमरा बदे कुबेवत रहे। पत्र-पत्रिका पढ़त रहीं। स्वातंत्र्य आन्दोलन क समाचार मिलत रहे। भाव विचार पर राष्ट्रीयता क असर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे। किसानी रूचे बाकी ऊ हमरा पढ़े-लिखे का मन का लहरि का अनुकूल ना परे। माई आ बाबा ऊ चाहसु जेवन हम। अध्यापकी छोड़ के हमरा अउरी कवनो नौकरी पसन्न ना परे। हम काव्य पढ़े आ किछु-किछु तुकबन्दी करे चिसकल रहली। बाबू अपना मन-माफिक नौकरी हमरा से करवावे बदे हमके के तनो उद्वेगलन, गभिया-लागू बाति बोललन, खिझलन खिनसइलन, तबे हम अधीर ना भइलीं। कान में तेल डाल के आ मुँह पर ताला लगाइ के कोना अंतरा परल किताबिन क पन्ना उलटत रह गइलीं।

माई हमरा पढ़ाई-लिखाई, स्वास्थ्य अ नौकरी-चाकरी बदे बहुत दोचित रहल करसु। आपन गहना-गीठो बन्धकी धइके ऊ हमरा के मौका परला पर रुपया-पइसा जुटाइ दिहल करसु। जेके हाईस्कूल में पढ़े क बेवंत ना लागल, ऊ हाईस्कूल में अध्यापक होई के पढ़ाई; ई अपना के एगो अनहोनी घटना बुझाय; तबो हम भागि-भगवान पर भरोसा कइके एके घटा देबे पर उतारू रहलीं जेवना से कि जिनिगी में कबो हाथ-पांव ना चलवला का मारे पछताए के परो। आई आम चाहे जाई लबेदा मान के हम अपना करतब में लागल रहलीं। पता ना, कि ई हमारि पूरुबही क कमाई रहे, कि भगवान क किरिपा रहे कि हम हाईस्कूल में हिन्दी अध्यापक हो गइलीं। हम उन्तालीस बरिस ले हाईस्कूल आ इण्टर कालेज में अध्यापकी कइलीं आ इण्टर कालेज में हिन्दी प्रवक्ता रहके सेवा-निवृत्त भइलीं।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन! तूँ वृक्षन से मत ले

जब आमन के बारी फरे तब अउरी भाई-दयादन का संगे कई बरिस ले हमँहू बारी अगोरे में डटीं। दुपहरिया में सभ जाना मिलजुल के काँच आम भूँजी जा, ओकर पन्ना बनाईं जा, महुवा या बरगद का पत्ता क दोना बनाई जा अ इनार ले पानी ले आई जा। खाए-पीए क कुल्ह सामान जुट गइला पर सभ जाना एक संगे बइठ के सतुआ-पन्ना परोसाइ गइला पर हँसी-ठट्ठा करत खाईं जा।

हुम्मा-हुम्मी से ई भोजन होखे। जेठ का दुपहरिया में ऊ लू चलेकि सभकरि देहि झँवराई जा, तबो पन्ना का प्रताप से लू क ताप केहू पर धावा बोले क हियाब ना करे। खेतन में नाचति खड़खड़िया भकसावन लागे। हम भूताहि बारी आ भुक-भुक बरतिं भूत-लुकारी क चर्चा बहुत सुनले रहलीं, बाकी बारी ओगोरे का समया में हमरा कईगो बारिन में आवे जाए के परल। हमरा कबों भूत-प्रेत अ भूत-लुकारी से भिड़न्त ना लेबे के परल। सभबारी अगोरवइयन का आम का फेड़न के चारू ओराँले छोपले नन्हीं-नन्हीं किरबनन से वड़ा तंग होखे के परे जब बइसाख-जेठ तवे लागे। एहन का दुक्खन बारी में रहल बहुत जब्बर-जबून लागे तबो फरलि बारी छोड़त ना बने। फरन का छोटहन बड़हन घारि-घोंपन से लदलि-नवलि फेड़न क डाढ़ि चिरई-चुरंग का साथे झूमति रहँस। जब हवा का झोंकन से मरमराए लगंस त बुझा कि धरती पर लोट जइहन स। रोहिनी नक्षत्र का आगम पवते फेड़न से कोइलाँसी आ सिप्पी आम गिरल मिल जासु। फेरु त देखते-देखत रोहनियाँ आमन क पेड़ पीयर लउके लागसु। एहन का अलम पर मृगडाह ठेला जा। अदरा नक्षत्र का चढ़ते आ ओकरा बरखा के पवते आम भरभराइ के पाके चूबे लागँस। एतना चूवँस कि बिनवइयन क बीनत-बीनत करिहायँ फाटे दुखाए लागे। गाँव का घरन में आम एतना गँजाइ जा कि पाकल आम से गाँव क गली गमकबे ना करँस, बलुक सरला से बसइबो करँस। एक आना यानी चार पइसा में बीस एकइस गाही यानी एक सइ पाँच आम कीनला पर मिले। आम से सभकर पेट भरजा। आम खइला क बले बारिन में अखाढ़ा खना जाँस।

हम सभ दिना ले बड़ा चोप से आम खात चलल आवत बानी। हमरा बुझाला कि जो हमरा के ई अमृत फल बारहो महीना खाए के मिलत रहित त हम कालजयी होई के एकरा ए नावँ के सार्थक कइ देतीं। हम बीजू आमन क बारी अगोरत रहलीं। ऊ बीजू आमन के जुग रहे। ई कलमी आमन क जुग ह। ओ बीजू आमन क जो एगो पेड़ फर जा त एगो परिवार आम खाइके अघा जा आ सालिभर के अमावट पर जा। ओ बीजू आमन क लकड़ी का माने में बहुत कीमति रहे। जब अदरा नक्षत्र का ठेलम ठेल पानी से धरती पुरहर नम हो जा अ खिलल-खिलल मजिगर ओ अमृत फलन के खाइके हमरा देहि में अजुगत ताकति जोर मारे लागे तब हम ओ फेड़न का नेकी क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भार उतारे बदे फेड़न का जरीं बड़-बड़, गहिर-गहिर, चाकर-चाकर आ गोल-मोल थाला बनावे लागीं। ओ फेड़न का जरीं जांघिभर ऊँच माटी दे देईं। बरसाति भर मनचाहा पानी खाइ-पी के ऊ पलुह के लहलहाए लागँस। ओ बुढ़वा फेड़न में जवानी आ जा। धनि हउवन ऊ फेड़। हमरा नेकी के ऊ कबो ना भुलइलन। जब ऊ आम क बारी फरलि तब हमार ऊ फेड़ बारी का अउरी फेड़न ले अधिका फरलनस। ओहन क फरल देख के अउरी सभका कह देवे के परल "तोहरा पेड़ तोहरा मेहनति आ सेवा क फल दे देले बान स।"

अजुवो एह बुढ़वती में ओ अपना मिठका आम का फेड़क ऊ रूप रंग, ओकर नेकी, किसुन भोग मतिन बड़-गोल-सुगमकदार उज्जर-उज्जर फर, ओकर लयनूमतिन मोलायम मिसिरी जइसन मधुर गुद्दा हमरा भुलाते नइखे। ए आँखिन ले ओझल भइले ओके चौसठ-पैंसठ बरिस होखे जात बा। ऊ फेड़ हमरा के जवान-पट्ठा भइला तक आपन सराहूँ सुनबगर फर चिखवलस ना, भरपेट खियवलस। ऊ धनि रहे कि मरन-सज्जा पर पर गइला का बादे ऊ अपना दुर्लभ फल के हमारि मनसा समुझि के दरसन कराई दिहलस। हम नौकरी-चाकरी करे लागल रहलीं। हमार माई जरूरति परला पर बारी अगोरे लागल रहलन। जब आम के पेड़ निकाए लागँस तब ऊहो हमारि बनावलि राह पर चल के फेड़न का थल्लन के साजे मेहनति कर में तनिको ना असकतियासु। समय मिले त हमहूँ फेड़न क नेकी मानत उनुकरा संगे लाग जाईं। एक सालि आम क पेड़ खूबहिन फरलन स। ओ सालि आम क ऊ पेड़ मरन सज्जा पर परल दम तोरे लागल। ओकरि ऊपर क डाढ़ि मंगर लगला से बहुत बरिस पहिले ले गिरे लागल रहली सआगिर के साफ हो गइली स। खाली ओल्हा क डाढ़ि रहि गइल रहली स। ऊ हो गिरे लगली स आ अन्त में एगो मँड़ई का खम्भा देवे भर मोटि डाढ़ि बाँचलि रहि गइलि, जेवन कांखि-कूंखि के सइ-पचास आम फरे लागलि रहे। ओ सालि ऊ हो डाढ़ि बेदम क हो गइलि। ओ में पाँच-सात गो फर लगलन स। ऊ हो पाके ले पहिलहीं घाम बतास ना सहके गिर पर गइलन। मृगडाह के तवल ओ बेदम का पेड़ बदे माहुर हो गइल। दुपहरिया में ओकर हरियर पतई मुरझाए लगली स। ए से ओकर ऊकठल पक्का बुझाए लागला सभ बरिहा एक जुट होइ के राइ दे दिहल-फेड़ क सिल्ली कटवाइ लेबे के चाही। हमहन का बारी छोड़ते निचलावँ पाइके मुसहर एकरा सिल्ली के चउपट कइ दिहन स। जो सुतार पा जइहन स त चइली छोड़ावत-छोड़ावत पुरहरि सिल्ली गायब कइ दिहन स

हम पूछलीं-"फेड़ जीयतार बा। का ए घरी एके काटल ठीक रही?" "कहे बदे जियतार बा। दस दिन में इहो ना रही। एकर थल्ला बनाइ के का करब? एकर सिल्ली कटवाइ लऽ।" ई कहत सभ अपना फेड़न का ओरा चल गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा आखिन का सोझाँ ओ फेड़ क भूत, वर्तमान आ आगम कुल्ह सूझत रहे :- कहियो एही फेड़ी का ऊपर मोटकी मोटकी डाढ़ि छाता मतिन तनाइलि रहली स आ ओल्हा क डाढ़ि धरती का ओरा सोहरलि। एकरा घनघोर छाया में बँसहठा खाटी डाल के बाबा अपना बुढ़वती में बारी अगोरल करसु। एकरा ओल्हा का डाढ़िन में कलमी, दुधियुवा लँगड़ा आम का गोल-बड़का दाना मतिन एकर चमकदार फर लटकत रह के बिजुली का बल्ब मतिन एह स्थान के गहगह कइ दँस। एकरा तरे साफ, ढर्रा, सभ उरि आ बेधूर-धाकड़ का धरती पर बरिहा लोग बराबर बटुराई के बइठल, लोटल गलचउरन करत रहे। ई धरती बड़ा हँसता आ मनसायन रहलि हई फेड़ घाम बरखा से सभकर आड़-छाँह करत रहल ह। अंगोछी-भिंजावँ झिंसार से ई केहू के भींजे ना दे। ओ राजासाहब बाबा का चलते कबो-कबो एकरा तरे गवनई ठना जा। अड़ोस-पड़ोस क गाँवन क नामी गवइया बजवइया एही का तरे बिछावलि लमहरि चाकरि दरी पर बइठ के आपनि हरमुनिया, सारंगी, सितार, ढोलक, तबला, आ टुन्टुनियाँ बजावे लागसु अलापे गावे लागसु। आसमान में तरई चमकसु आ एकरा ओल्हा में लालटेनि बरसु। गवइयन का सुर-तान से आदमिन का संगे फेड़ो झूमें लागसु, हवा झुरुके आ फेड़न से पाकल आम टपके लागसु। गवनई खतम होखे। गवइया बजवइया एक एक गो, या दू-दू गो सोहारी कचउड़ी खाइके सिकमभर साबित साबित आम खाइ के ढेंकारे लागसु। ए मिठका आम के सराहना सभकेहू एक मुँह से करे।

हम सोचे लगलीं - "ए फेड़ क आम हम खइलीं, हमार बाप-दादा खइलन अ हमहन क लमहर चाकर परिवार खइलसि, बाकी आजु ले केहू अइसन ना जनमल जे एकर एगो गांछी लगा देले होखे। लेहड़े एकर कमाई खइलन अ एकरा कामे केहू ना आइल। हमरा के बुझाए लागल कि ए दुनिया में दूसरा क कमाई खाए वाला ढेर बान अ आपन कमाई खियावे वाला किछु इनल-गिनल। जले ई फेड़ तनिको जीयतार रही तले हम एकरा फेड़ी पर टंगा-टांगी क छेव नां लागे देइब आ एकरा के अनगराहित बनाइ के एकर थल्ला बनावल बन्न ना करब।"

संझा क ठंढा हवा क झोंका हमरा पनियाइल शरीर में लागल हमरा देहि में जान आ गइला ऊ फेड़ो किछु हरियर लागल। हमरा बुझाइल, ऊ मसुकियात कहत बा- "तोहरा सँपरे-सिरावत हमरो जरीं थल्ला बना द। शायद काम-भर खाद-पानी पाइ के एकाद बरिस ले जी जाईं। हमरा अब अपना ए जिनिगी क कवनो लालच नइखे। हम केहू का कवनो काम क नइखीं रह गइल। अब हमरा के के पूछी? रे छूँछा तोके के पूछा? अब ए देहि में गों-गुन नइखे रह गइल। जले फरलीं कमइली तले आपन सुफल सभकरा के चखवलीं। ई शरीर लकड़ी हो गइल। एकर सदुपयोग करऽ। एमे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा कवनो इतराज नइखे। बस, तन से ना त मन-मुँह से हमार नेकी मानत रहऽ। ई हे ए जीउ खातिर बहुत बा।"

एतना सुनते हमारि भटकि खुलि गइलि, मन क घचपचाहटि भागि गइलि। हम लजइला मने उठके ठाढ़ हो गइलीं। धोती क फेटा कसलीं, ओके खूँटली आ धरती पर फरुसा क छेव मारि-मारि अउरी फेड़न मतिन निम्मन-बड़हन थल्ला बनाइ दिहलीं। किछु बेर ले सुहुतइलीं आ "मन! तूँ वृक्षन सें मत ले" कहत घरे चल दिहलीं। बारी निझा गइलि। सभ बरिहा घर धइ लिहल। फेरु सालिभर केहू बारी में ना झांकल। दूसरियो सालि आम क फेड़ फर गइलन स आ हमार पेड़ खूबहन क फरलन स। ओ मिठका आम का पेड़ का ओल्हा क ऊ घुनठंलि डाढ बीसन गो छोट-बोड़ फर-फर गइलि रहे। ऊ अपना नेकी आ हमरा मेहनति क फर दे देले रहे। बरिहन खातिर ऊ एगो तमासा हो गइल रहे आ आके देख के सभ केहू दंग रहे। हमरा के बुझा कि हमारि मनसा समुझि बूझि के ऊ पेड़ बीसन गो कोइली जुटा देले रहे। हमरा के भरपूर कोइली मिलि गइलि, बाकी हमरा जिनिगी क बझाव ओ कोइलिन से एके गाँछी ना लगावे दिहलीस जेवना से कि मिठका आम क नाँव न बुताए पावे। हम ओ आम क एगो बीज धरती में ना रोप पवलीं। खाली पछतावां रोपले रह गइलीं। हाँ, एतना हम हकनहाक कहब आ डंका बजाइ के कहब कि बारी का धरती परले ओ आम का फेड़ का उकठू गइला पर ऊ हमरा मन का धरती पर अजुवो हलरत बा। ओकरि हरियर-हरियर डाढ़ि पलुहति जाति बाड़ी स। जले हमरा घट में रही प्रान तले हमरा मन का मिठका आम का फेड़ी में रही जान आ हम गावत रहब "मन! तूँ वृक्षन से मत ले।"

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किती न औगुन जग करै, बय नइ चढ़ती बार

तीन-चार बरिस का उमिरि ले लेइ के छव-सात बरिस का उमिरि तक हमरा पिल्ला पाले क बड़ा मन करे। अपने जेवन किछु दाना-दूनी आ मिठाई-पक्वान खाईं तेवना में ले तनी-मनी माँछी मूंड़ी भर क रोरी गिरावत आ पिल्ला के खियावत, "तू-तू" करत ओके कतहीं बहरां ले घर का आंगन में लिहले चल आई। देखते माई दुर दुरावे लागसु आ हम ओके कतहीं बाहर ना जाए देईं। ओके धइ-पकड़ के कोरां में चाँत लेईं आ माई से पाले बदे हठ करे लागी। उ कहंसु - 'भइया, ई पिल्ला अनबूझ बा। इ आंगन में हग-मूत देई। हमरा ओके फेंके के परी। हमार चित फरियाये लागी। हम बेमार पर जाइब। एकर मल-मूत बड़ा बासना करी। एकर गन्हाउरि देहिं मत पकड़ऽ छी, छी।"

हम माई का बेमार परला का डरनी आपन हठ छोड़ के पिल्ला के बहराँ ले जाइके भगा देईं।

हमारि उमिरि बढ़ति गइलि। हम आम क बारी अगोरे जोग आ उमिरि में क़ड़ेर हो गइल रहलीं। एक सालि आम क बारी फरि गइलि रहे। घर-बारी क हमारि आवा-जाही चालू हो गइलि रहे। हमरा बारी से लागलि एगोबारी का छोर पर एगो डेरा रहे। आवत-जात क ऊ हमरा डहरि में परे। पियासि लगला पर हम ओहिजाँ ठमक के पानी पीलिहल करीं। बारिहा पानी पियावे में तनिको ना असकतियासु आपन धर्म समुझि के उत्साह से जल पियावसु जबकि लम्मा का इनार ले पानी ले आवे के परे। कोसन लमहर-चाकर फइलल घनघोर बारी का एगो आर पर निचाट निर्जन जगहि पर ऊ डेरा रहे। ओकरा आगे लम्मा ले खेत पसरल रहलन स। जेवनन में दुपहरिया में खड़-खड़िया नाचे। ऊ डेरहा अपना मनसायन बदे एगो कुक्कुर पाल लिहले रहलन। ऊ कुवार-कातिक क पिल्ला खइला-पियला का जोर से गरमी का दिन में भोकस कुक्कुर हो गइल। ऊ बाघ मतिन घुहर के तिकवे आ गुरुना। ओकरा "भो-भो" करता बढ़ला पर डेरा का ओरां बढ़त आवे बालन बड़-बड़ जाना क जाँघि काँपि जा। ऊ डेरा का पजरा मालिक का बिना आज्ञा क आदमी, गोरू-भइंसि, चिरई-चुरुंग, भेड़-बकरी, केहू के ना कल से ठहरे दे, लखेद क दम ले।

डेरा का मड़ई का आगे का जमीनि पर एगो बीजू आम क बड़हन फेड़ सोहरल रहे। ऊ डेरहा क बइठका रहे। ओ ही फेड़ का तरे सिकरिया सुरेमन कबो ढरकल-बइठल रहे, कबो ऊँघात-सूत रहे, कबो टहरत-घूमत रहे, कबो दुइ गोड़ पर बइठल चारू ओरा घुइरत रहे, कबो चेखरि-चिरई के ओहिजाँ जमीनि पर देखते लखेद ले, कबो अपना मालिक क देहिं चाटे लागे, कबो केहू के डेरा का ओराँ बढ़त-आवत देख के गुरनाय आ कबो केहू अजनवी के देख के ओकरां पर चढ़ाई करे बदे आगे बढ़े लागे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि मालिक का मना कइला पर माने। ऊ मालिक का खैरखाही में किछु उठा ना राखे। ऊ बनइला खरहा मतिन कान ठाढ़ कइके सजग भइल डेरा क अगोर–पछोर करे बदे हरघरी तइयार रहे। डेरा का आगे का पसरल खेतन में सियार, खेखरि आ खरहा के देख लिहला पर ऊ ओहन के मीलभर ले लखेद ले जा।

रूप–रंग, कद–काठी, रहनि–चालि आ दउरे भागे में प्रकृति का ऊ बेटा अलबेला रहे। ओकरा देहिं पर पाकल बड़का मरिचा मा टमाटर मतिन लाल टहाका रोवाँ क पुहल जमावल रहे आ माथा का पजराँ गरदनि पर उज्जर रोवाँ क टीका रहे। ऊ ओकरा सुघराई के बढ़ावे में कमाल करे। ओकरा चलला–फिरला, उठला–बइठला आ कूदला–दउरला कुल्ह में फुरुती रहे। ऊ फुरुती क रूपे रहे। ओकरा दहिं में असकति बुझइबे ना करे।

हम ओकर रूप रंग देख के मोह गइल रहलीं। लइकाईं क पिल्ला पाले क टिसुना जोर मर ले रहे। ए कुक्कुर के पाल लेबे में माई का बेमार होखे क कबूनो खतरा ना रहे। हम ओकरा आ ओकरा मालिक का मध्धे फोरका डाले बदे उतारू हो गइल रहलीं। हम एक ले एक सबदगर खाये जोगु चीजु अपना घर ले अपना के खाये बदे ले जाईं ओ डेरा पर खाइके ओ कुक्कुर के लगारे कवरा दे दईं। जहिया किछु मिठाई–पक्वान रहे तहिया डेरहा के उपराहे चिखाईं। एसे कुक्कुर के कवरा दीहला पर उनुकरा कुरबुरइला क डर ना रह गइल रहे। किछु दिन बीतला पर कुक्कुर हमरो के आपन मालिक बूझे लागल आ फेरुत ऊ हमरा से अइसन पांजल कि पुरनका मालिक उल्ला परे लगलन। ऊ हमरा के ओरहन देबे लगलन कि तूँ हमरा सिकरिया सुरेमन के न घर क रहे देबे आ ना त घाट क। ऊ ओकरा के अपना ओराँ ले बहुत फुसलावन चहलन, बाकी उनुकर जादू काम ना दिहलस आ हार मान के एक दिन कहीं दिहलन–"एके तू ही राखऽल। ई हमरा कवनो काम क नइखे रह गइल।" हम मुँह से एकाध तोर "नाही–नाही" कहलीं, बाकी मन से तुरंते संकार लिहली। काहें कि बिरबल आपन खोजल दाव पा गइल रहे। हम कुक्कुर के अपनाइ के अपना घरे ले जाये आ ले आवे लगलीं। ऊ हमरा परिवार क एगो परानी हो गइल आ हमार घर दुआर अगोरे लागल।

माई का कुक्कुर पालल पसन्न ना रहे, तबो ऊ हमरा करतन राजी हो गइलि रहली। ऊ ओकरा के भरपूर भरपेट खियावल आ पानी पियावल आपन जिम्मेवारी बूझे लागलि रहली। हम ओके दूनो जून मन से कवरा देबे में कबो ना चूकीं आ अउरी सभ ओकर रोवां टूटे का डरनी आन का मने ओकरा के अनगराहित बूझत तनी–मनी रोटी क रोरी फेंक दे। ऊ माई के बड़ा जाने–माने लागल रहे। जेवँ ऊ कतहीं जाए बदे ठाढ़ होखसु, तेवँ ऊ उनुकरा संगे ठाढ़ हो जा। ओकरा के संगे गइल उनुकरा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तूल–तवालति बुझा, तबो ओकरा हठ का आगे उनुकर किछुना चले–बसा आ ओके लेई जाए के परे। जब हम भा हमरा घर के केहू ओके 'सिकरिया सुरेमन' कहके बोलावे तब ऊ कतहीं ले दउर के ओकरा पजराँ चोहँपजा। हमरा आ माई का बोलवला पर ऊ धधाई के धावे। ओकरा के अउरी कुक्कुरन से बजावे आ ओनहन के पटकवावे में हमरा के खूबहन क मजा मिले। जब ऊ कवनो कुक्कुर के पछारे तब हमारि छाती दूना हो जा। जेब हम 'ले ले', 'ले ले' करत ओके ललकारी, तब ऊ दूसरा कुक्कुरन पर चढ़ बइठे। कुक्कुरन का बजनी में खूब पटका पटकी आ काटा–कूटी होखे। कटइला पर ऊ आपन घाव के अपना जीभि से चाट के सुखवाइ गाले। हमरा किहाँ सिकरिया सुरेमन क खूबहन क पेट भरल। कुवार–कातिक क महीना लगला पर ऊ करीब एक सालि क पूरा भइल रहे, तबो जवान कुक्कुर लागे; बाकी बचकस रहला से जवान कुक्कुर बदे भारी रोग कुवार–कातिक क महीना ओकर किछु विगार ना कइ पवलन। ओ सालि ऊ अउरी जवान कुक्कुरन क काम लीला लग्गे ले देखत झांकत सब्बुर कइले रह गइल। सिक्कर में बान्हल 'कायँ–कुईं' करत परल रह गइल। ओ सिकरिया सुरेमन के बरियार ले बरियार बनावे बदे हम ओकरा खाये–पीये का परई में माई से चिरउरी कइके उमराहे दूध डलवावल करीं। किछु अपनो पीए वाला दूध में ले बँचाई के ओके पियाइ दिहलकरीं। ओकरा उमिरि क दुसरकी सालि चालू भइलि आ दिन दूना आ राति चौगुना ओकरा देहि में ताकति बढ़ति गइल। हमरा ले उमिरि में बहुत लहुर, बहुत लहुरओ काल्हि क पिल्ला आजुक ओ कुक्कुर का देहिं में चढ़ति जवानी क जोश–जोम जोर मारत जात रहे। ऊ सिक्कर में बान्ह के राखल जा। ओसे आदमी बहुत भय खासु। ओकरा ओ बढ़ती जवानी में कुवार–कातिक क महीना आ धमकलन स ओकरा माथा पर कुवार–कातिक क भूत एह सालि सवार हो गइल। ऊ कुक्कुरन का झूँडि में अवारा बन के घूमल चाहे आ हमहन के ओकरि ऊ गइतल जिनिगी पसन्न ना रहे। ऊ आदमी ना पशु रहे। ओकर मन लाज–बीज क मरजादा गवाँ दिहलस। कुवार के महीना केहू तरे ठेला गइल। बाकी कातिक में ओके सिक्कर में बान्ह के राखल परिवार बदे विपत्ति हो गइलि। ऊ चौबीसों घंटा अफनात रहे आ रोवे लागे। राति खानी सभकर आँखि लागल सूतल कठिन कइ दिहलस। कुक्कुर क रोवल असगुन मानल जाला आ ऊ रातिभर पुक्का फोर के रोवत रहे। हमहन का ओकर शक्ति सुघराई बचावे बदे कुल्ह जतन कइके थाक गइलीं जा। लाचार होइके हमहन का ओ पशु के एह दुनियां का बेहयाई क मजा चखे बदे छोड़ देवे के परल। छूटते ऊ सिकरिया सुरेमन कतिकहा कुक्कुरन का झुँडि में जा मिलल। दुई चार दिन ले बाघ मतिन ओझूँड़ि में बिचरत रह गइल। अउरी कुक्कुर लोग ए के देखते दाँत चियार दे नातपटकाइ के धूरि चाटे के परे। कुत्तिन क पाछे धइलेवे में ओकरा के केहू कुक्कुर रोक न पावे, बाकी उ रंग किछुए दिन रहल ओकर शरीर सूख के कांटा हो गइल, ओकरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रंगति आ शक्ति माटी में मिलि गइलि। आ ऊ लथेर होइके दरे-दरे ठोकरियाए लागल। कुत्तिन का पाछे-पाछे लागल रहे का अइसन नशा ओकरा कपारे चढ़ल कि ओकरा अपना खहू-पीए क सुधि ना रह गइलि। खूब भुखइला-पियसला पर पेट खलबले दिन-रात में कबो एक तोर आ जा। हम ओकर रूप रंग देख के खिनिसन ओकरा ओर फूटलू आँखि से तिकवल ना चाहीं। परिवार क अउरियो सभ केहू "मार-मार" करे लागे। ऊ दुवारि पर "काई-काई" करत धरना दे दे। मरलो पर ना टसके। माई दया जासु। ऊ ओ बेचारा परानी के भरपूर खियाइ-पियाइ के टंच कइ देसु। ऊ खउला-पियला पर किछु बेर ले हमनी का ओरौं कनखी झाँके-झूँके आ फेरू ओ बेकाबू मन कुक्कुरन का झुँड़ि में सामिल होखे बदे दुलुकेत चल दे, हमनी क आँखि बचावत। हम अपना ओ प्रिय पालतू पशु के बरियाई-बेहयाई से आपन जिनिगी चउपट करत देख के खिनिसन बुत्त हो जाईं। माई ओकरा पर नराज ना होखसु। ऊ हमरा के समझबिसु - "पशु ह ओकरा समुझि-बूझि नइखे। ओकरा ए घरी अइसन नशा घरा गइल बा कि ओकरि मति मरा गइलि बा ओकर अदिन आ गइल बा ऊ जेवन करत बा ओकर फल आवत बा। हम हन का ओकरा भलाई बदे जेवन किछु कइ सकत रहलीं हैं जा तेवन कइलीं जा। जो केहू कूवाँ में कूद के आपन जान देबे खातिर तुली जाई त केहू ओकर बचाव कहवाँ ले कइ पाई? तूँ ए मरकीनवना बना बेकहल मनमाना पशु का बारे में एतना का दोचित बाड़ऽ? तू आपनि जिनिगी बनावे-चोनावे का बारे में सोचऽ। तूँ लायक बन जइब, त आपन कुल-खानदान के लायक बना देब। का कुक्कुर बिलारि क फिकिरि कइले बाड़?"

माई क समुझावल हमरा मन में ढुकल। हम ओ कुक्कुर का ओरांले बेगम होई के ओकरा जिनिगी क तमासा देखे-सुने लगली आ हो सके ला ओ से हमरा के ए अपना जिनिगी में किछु सीखि आ चेतावनी मिललि होखे। अउरी नात एतना लाभ हमरा के ओसे हकनहाक भइल कि हम बिहारी लाल का एह दोहा क अर्थ पढ़त-पढ़त समुझ गइलीं।

कित डूबे, चहले परे, बूढ़े-बहे हजार।
किती न औगुन जंग करे, वय नइ चढ़ती बार॥

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जर संडा बाबा जटाधारी

बाबा राजा साहब का फगुवा गवावे क बड़ा सवख रहे। ऊ फागुन में महाशिवराति ले फगुवा राति खानी अपना बइठका में गवावे लागसु आ सम्मत फूँकाए यानी होलिका दहन तक ई बराबर चलत जा। चइत का अन्हार पक्ख का एकमि के रंग-अबीर खेल-खाल के ई बन्न होखे। फगुआ का गवइयन बदे बाबा खमीरा तमाखू, कुलंजन आ जयफर क पुरहर इंतजाम राखसु। बाबा चल-फिर के, खरच-बरच कइके आ अपना बेवहार से अउरी टोल-महाल का चुनींदा सुरीला, फगुवा गीत क भंडारी आ गावे-बजावे क नसइल गवइन क गोल बना ले ले रहलन जेवन बाबा क ए मोका पर बड़ा संग देसु। अपना टोल महाल क गवइया त एके घर क आपन काम समुझि-बूझि के एमे भाग लेसु। एक ओरां बाबा क कोलवारी के गवइया बइठ जासु का दूसरा ओरा अपना टोल-महाल क। ई गाना-बजाना क काम आठ बजे राति ले करीब बारह बजे राति तक हकन हाक चलत जा। ई फगुवा-गीत क उत्सव पुरहर तब जमे जब बाबा क नेवतल अउरी टोल-महाल क गोल चोहँपिजा। फल होखे कि तब फगुवा-गीत ना गवा; बलुक फगुवा-गीत क दंगल नधा जा। महाशिवराति ले सम्मत फूंकइला तक का सत्रह-अट्ठारह दिन में ले बारह-तेरह दिन त हकन हाके ई दंगल होखे आ लमहर चाकर गाँव का आसमान में ढोलक, डफ, झाँझ-झालि आ आदमिन क ताल सुर गड़गड़ाए, तड़तड़ाए झन झनाए आ गूँजे लागे। गाँव जान जा कि राजा साहेब का दुआर पर फगुवा होत बा। हमरा के बुझा कि एके बाबा आपन फगुवा गवावल सुकुलान बूस सु आ एसे उनुकर मन उतंग-मतंग हो जाइल करे। सम्मत फूँकइला ले एक-दुई दिन पहिले ऊ अइसन तिगड़म भिड़ावसु आँ जोगाड़ बान्हसु कि गाँव क पाँच-सातगो गवइन क गोल हमरा दुआर का राति खानी का ओ फगुवा-गीत में बटुराइ जासु आ सइ-सई गवइया एक-एक ओराँ बइठ के गावसु संगे कई-कई गो ढोलक, डफ, झाँझ या सैकड़न गो झालि बाजँस। ऊ दंगल ना फगुवा गीत क महादंगल हो जा। एतना हरमहल्ला नधा कि सगरो गाँव क नींदि हराम हो जा; बाबा का मन के एसे ऊ टानिक भेंटा, ओके अइसनि कवनो पुष्टई खाये के मिले कि राति राति भर जागल रह गइला क उनुकरा तन-मन पर कवनो असर ना परत लउके।

हम मिडिल में पाँच भा छव का दरजा में पढ़त रहल होइब। ओ सालि एक दिन अइसनि नउबति आइलि कि अपना दुवार क गोल कई राति लगातार दंगल लड़त-लड़त चूर रहे। सभ गवइयन क गर बइठ गइल रहे। मुँह ले "सायँ-सायँ" आवजि निकले। कई दिन क जागल रहला से अनमनाह मतिन भइल रहे। एगो आयोजन क क्रम भंग ना होखे देबे बदे पांच-सात गो गवइया आने का मने एकाध गो गीत गा देवे बदे बटुराइ गइल रहलन। ऊ गाइ गू के आ जयफर-कुलंजन खाइके घसकल चाहत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहलन कि तले बाबा क नेवतल कवनो गोल लम्मे ले ठरर्‌रऽ जोगी! ठरर्‌रऽ, कबीर" बोल के हमरा दुवार का गोल के अपना भइला क सूचना देत ललकरल स। सुनते घस-के वाल्ला पट्ठन के काठ मार दिहलस। न भागत बने न मोरचा बान्हत बाबा क मंत्री हियाब कइके सभकरा ओराँ ले पूछलन-"राजा जी! अब का होई?" बाबा वेपरवाह उत्तर दिहलन-"जब दूसरा टोल-मंहाल का गवइन क गोल आ गइल तब ऊ बइलावल कइसे जाई? ऊ गाई। तोहन लोग का मन का हियाव नइखे त अपना अपना घरे जा, जा।" नतीजा भइल कि अपना टोल-महाल का सीवँ पर आइके आ बाबा का सील-मुरवति में परके अपना दुवार क गवइया लोग बइठ के गोलियाई गइल। हमरा दुबार का बेंदा पर चढ़त-चढ़त आवे वाला गोल गरजल-ठरर्‌रऽ, कबीर। ओकरा जबाव में हमहन क गोल होंकड़ल-ठरर्‌रऽ कबीर। जोगी, ठरर्‌रऽ कबीर। एकरा बाद हुम्मा-हुम्मी गावे बदे दूनो गोल गोलिया के ढोलक, डफ आ झालि का साथे बइठ गइलन। आइल गोल बधुवाई के चहंका का जुझारू सुर में अपना इष्ट देवता क सुमिरन आ बिनती गीत गवलस। ओकरा गाजा-बाजा आ गवइन का बुलन्द सुर से ओसारी गूँजि गइलि। हमहन क गोल सिक्मभर जोर लगाइ के ओकरा पाछे परल; बाकी हावा हो गइल। एक त जवानन क संख्या आधा-तीहा आ ऊहो कई दिन क लड़त-लड़त चूर। सेना क मुट्ठी भर जवान बइठल गर क भोथर हथियार लिहले का करतूति देखावसु? खाली ढोलक झालि का आवाजि क अलम्म रहे। हमनी क गोल प्रतिपक्षी का मुकाबला में धुवां हो गइल रहे। हमनी का तेरह चौदह जाना लइका चहंका चउताल सुने बदे बटुराइ जाईं जा ओहिजां का हँसी-ठट्ठा क मजा उठाईं जा। हमहन से अपना टोल-महाल का गवइन क अपमान का हँसाई भइल ना अड़ाइल। हमहन में अपना टोल-महाल क सीवँ जागल। एसे जब गावे का क्रम में दूसरी तोर अपना गोल क गर-बइठल जवान हुँमाच बान्ह के सुर दगलन तब हमनियों का उनुकरा सुर में सुरभर दिहलीं जा आ अबकी बार हमनियों का गोल का बन्हलि आवजि से ओसारी गूँजि गइलि आ हुम्मा-हुम्मी गवात रह गइल। हमनी क हँकड़ि-हँकड़ि गावत रहली जा; बाकी गीत क टेको ना समुझि पाई जा। खाली हरमहल्ला में आवाजि में आवाजि मिलाई जा। अगला मोहँड़ा पर बइठल गवइया हमनी से लम्मा पर जासु। हमनी का चिलमि काका क मुँह-लगू रहलीं जा आ उनुकर काम रहे खाली तमाखू चढ़ाइ-चढ़ाइ के गवइन के पियावल। ऊ खमीरा तमाखू पीये का टिसुना से रातिभर तमाखू क चिलामि चढ़ावसु आ पहिले ओके एक दुइ फूंक घींच के तब आगे दूसरा का ओराँ बढ़ा वसु। चिलमि काका का पुरहर चहका-चउताल एको याद ना रहे। उनुकर दावा रहे कि ऊ कुल्ह गीतन क नाकी जानेलन आ ओही के ऊ फागुन में दिनभर गावत रहसु। हम ओ हरम हल्ला में चिलमि काका का कान से लाग के पूछली-"काका! आइल गोल का गावत बा? गीत क नाकि, टेक हमनी के बता द" ऊ भट्ट से बता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिहलन-"जरसन्डा बाबा जटाधारी।" काका कगर साफ़ रहे। ऊ एही तरे क भीरि परले पर अपना गोल क गार्ह काटे बदे जोर लगावसु। आ अइसनी भीरिपरला पर ऊ मोरचा पर बोलावल जासु। जेवँऊ हमनी के जरसण्डा बाबा क आलमा दिहलन तेवँ हमनी क आवजि अउरी तेज परि गइलि आ टेक भेंटाते ठेहुनियाइ के ऊ जोर लगाई जाकि हमनी क गोल तनिको निमहुर ना परे। जब आइल गोल क गीत खतम भइल तब हमनी का गोल क अगुवा लोग हमनी क पीठि ठोंकल। हमनी का गोल क गीत कढ़ावे क पारी आइलि। गोल क सुरेमन गवइया एक झटका में गीत बतावत कढ़वलन-"पइयाँ रउरी परों भवानियां।" अबकी बार हमनी का ऊ जोर लगवली जा कि हमनीक गोल जोड़-तोड़ क बुझाये लागल। फगुनहटा का जाड़ा में दूनों गोल भिन्सहराँ ले गावत रह गइलन। बाबा का समुझवला पर दूनो गोल मोरचा से हटलन आ हँसी-मजाक करत उठ-पठ भइल।

जरसण्डा बाबा करीब एक बरिस ले हमरा दिमाग में कवनो धाकड़ देवता बन के जमल रहलन। बहुत दिन ले घचपच में परल एक दिन हम सतुवा-पिसान बान्ह के ओ देवता के जाने बदे निकल परली। हमनी का गोल क एगो सुरेमन गवइया रहलन जिनकरा के हमनी का 'बड़का भइया' कहीं जा। हम उनुकरा के खोज-खाज के भेंट कइलीं आ पूछलीं - "जरसण्डा बाबा केवन देवता हउवन?" उ सोचत-समझत कहलन - "हम जानत नइखीं। केहू बरम-वरम होई।" हम चिहाइ के पूछलीं-"ए बड़का भइया का तोहन लोग बे जनले सुनले अपना ए देवता क फगुवा गावे का बेरा भाव भगति से सुमिरन करे ल जा?"

हमरा एतना कहते ऊ बड़ा चक चिहइलन-"हमहन का बेजानल-सुनल केवनो देवता क सुमिरन-विनती ना करीं जा। अइसन भरम तोहरा कइसे हो गइल? हमहन का, का गाई लें जा?"

"जरसन्डा बाबा जटाधारी, तोहरा मठियाँ हीरा भरल भारी।"

ऊ ठहाका मार के हँसलन-अरे भइया! जरसण्डा बाबा का भवँजाल में तोहन लोग के के डाल दिहल ह? हमहन का फगुवा गावे वाला समझकर जानल-सुनल आ प्रिउ ई प्रार्थना गीत ह-"दरसन द बाबा जटाधारी जेवना गोल क माँज बइठ जाला ऊ एकरा के गावे ला आ तब एकरा उत्तर में दुसरका गोल गावेला- 'पइयाँ रउरी परो भवानियाँ' हमहन का सभ फगुवा गवइया एक गीतन के गाइके के महादेव शंकर जी का जगदम्भा पार्वती जी के सुमिरेला। तोहन लोग बदे ई "जर संडा बाबा" केकरा बुद्धिमानी से उपराइ दिहल गइलन हँ? हम अपना लइकपन का साक्षर ज्ञान पर लजात आ चिलमि काका का ओ बेवकूफ जवानी का कऊँकावे वाली ओ जानकारी पर हँसत बतवली "चिलमि-काका क बुध्धिमानी ए देवता के उपजले ह।" चिलमि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काका नावँ पर बड़का भइया बेमन हँसी हँसलन आ आपन माथा धइलिहलन। हमहन का दूनो जाना ओ साक्षर जवान का ज्ञान पर झवान रह गइलीं जा।

ओ जरसंडा बाबा के हमनी का अबोध बालक जान अनजान में बहुत देर ले विनवत–गावत रह गइलीं जा, ऊ बहुत दिन ले हमहन का सुमिरन में बनल रहके हमनी के मउज मजा दे रह गइलन मोक–झोका अबले हमरा याद परत रहेलन आ हमरा के किछु सोचे–समुझे खातिर लाचार करत रहेलन। चिलामि काक क बउरहिया का बुद्धिमानी मुँह पिटाओ। ओसे हमार का मतलब ? बाकी जरसन्डा बाबा हमरा के झारखण्ड में बसत हैं। बैजनाथ भगवान बुझालन।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान

मिडिल स्कूल का पढ़ाई का समय में भँइसि एगो भूवरि पाड़ी बियाइलि। ऊ पाड़ी पला गइलि, तिहना भइलि, गइलि आ गाभिन होई के बियाइलि। ऊ भवरि भइँसि सात छव-किलो जूनन दूध देवे लागलि। हमरा घरे केहूँ पक्का-मंजल दूहबइया ना रहे। बाबू दूह सकत रहलन, बाकी ऊ असकतियाह आ रोवना रहलन। एक हफ्ता बधुवाइ के दुहलन आ फेरू दूहे क जिम्मेवारी आ भार कपारे परला पर माता दाई खेले लगलन। रोजना भइंसि क दूहल एगो बिकठ काम हो गइल रहे। हम करीब चउदह बरिस क भइल रहल होइब। बाबा भइंसि दूहे बदे हमरा के उकसावे लगलन उमिरि आ शरीर से लोच भइला के मारे हमरा के भइंसि दुहल असक्क बुझा।

एक दिन बाबा ललकरलन "बच्चा का भइंसि दूहल तोहरा के असक्क बुझाता? मरद का ना कइ सकें? मरद होइकें केचुअइला से काम ना चली। कइला से, रगर कइला से कवनो काम हो जाला। गोसाई जी कहले बान कि अतिसय रगर करे जो कोई, अनल प्रगट चन्दन तें होई। तनी इनार का पथ्थर का जगित पर गौर करऽ। ओकरा पर आवत जात ओके रगर के सन के लोच-नरम जेंवरि ओपर घरारी बना देले।" एही बाति के केहूँ कवि कहले बा-

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान्।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर होत निसान॥

ई सुनते हमार रोवां किछु फरफराइल। हम ओरहन दिहलीं "का दूहीं? हमरा के दूहे कबो केहू बतावल ह?"

"का बतावे के बा? जहवाँ चांह, तहवाँ राह। जब कवनो काम करे क मन बनइबऽ त कवनो डहरि ओकरा बदे धराई जाई, केहू गुरू भेंटाई जाई।"

"त हम दूहे बदे तइयार बानी। अब ए मोरचा पर हमरा भिड़ेके बा।"

"आवऽ तोहके दूहे सिखाईं। सुतार बइठी, त आजु ले भइंसि दूहे लगबऽ"

बाबा हमरा दूनो हाथन का तरजनी अंगुरिन के भइंसि क चूँची, थन मान के अपनी चिटुकिन से दूहे लगलन "गाइ-भइँसि दूहे क ई हे आसान तरीका ह, घात ह फेरू चहबऽ त मुट्ठा से या अंगुरिन का गहुआ का बले दूहे लगबऽ"।

एकरा बाद ऊ अपना तरजनी अंगुरिन के हमरा ओरा बढ़वलन आ दूहे बदे अरहवलन। हम दूहे लगलीं। किछू देर ले दूहत रह गइलीं। ऊ ठहाका मारके हँसलन- "बस,बस। तोहरा दूहे आ गइल। आजु साँझि ले दूह, मंगर महाबीर जी क दिन ह।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओही दिन साँझि क हम भइँसि दूहे बइठ गइलीं। दूइ चूँची दूहत-दूहत हमारि चिटुकी आ बाहिं भर गइली स। हम ओज गइली। कहते अउरी केहू दूहे बदे जुम गइल। फेरु त हमरा दूहे में एतना मजा आवे लागल, हमरा अइसनि धुनि सवार भइल कि हम एक हफ्ता में बेरेप भँइसि दूहे लगलीं आ घर क एगो भीरिटरि गइलि। एकरा चलते खेती-गिरहत्ती का अउरियो कामों में हमारि रूचि बढ़लि आ हम उनुकरो के सीख गइलीं। हमारा के कबो अपना खेती-गिरहत्ती का काम मे बुड़बक बडराह कहाए क न उबति ना आइलि। हम अपना घूरा पर एक ले एक तरकारी बोवलीं, उपर-जलीं आ बइठका मा घर का बगल में परल जमीनी में अमरूत रंड़मेवा क पेड़ लगवलीं। एहू में सफल रहलीं। मजा लेइ-लेइ हम फल तरकारी तोरीं। हम अपना खेतन में खाद फेंके में लागीं लपटीं। आगे चल के सर्वोदय दर्शन आ ओकरा कार्यक्रम क जानकारी भइला पर हमरा ए प्रवृत्ति के सैद्धान्तिक समर्थन मिलल आ हमारिभाव विह्वलता 'युग प्रदीप' नामक हमरा काव्य का 'सर्वोदय' कविता में फूट परलि। हम अपना ओ बे पढ़ल लिखल बाबा के धनि मानी लाँ जेवन अपना गँवारू बोली-बानी से अइसनि सीखि दे गइलन जेवन कविवर रहीम ए जगत-जहान के सही माने में बुला ए दोहो से ना दे पवलनकि ऊ अपना मन बानी कर्म से रटत-कहत-करत रहो-

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर होत निसान।

पता ना कवना सुभ मूहूरति में गाइ-भइंसि दूहे बदे हाथ लगवले हईं कि हम अपना हाथ क दूहल दूध अस्सी एकासी वरिस के फानति उमिरि ले पियत रह गइली हँ बुझाता कि जेवना रपटा-अभ्यास के कइके हम अपना बचपन में गाइ-भइँसि दूहे लागल रहली ओही का बलें ए बुढ़उती में निबुकत गइली ह। आ अबो कबो-कबो दूहे क हिसाब कइ जाई लाँ।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थाकलि देहिँ गोन भइलिभारी

जब हम मिडिल स्कूल में पढ़त रहलीं तब हमनी का देहात में आदमिन का रोजी–रोटी क भारी कारबार खाली खेती–बारी रहे। आ एही का सटा हूँ पशु–पाललो रहे। गाइ किसान का बेटा के गोरस दे ओकर बेटा अन्न आ गूर उपराजे। जब किसान के गोरस–गोहूँ–गूर मिल जा तब अउरी ओके चहबे का करी?

गोरस का बलें परिवार में धूरिहा पट्ठा भइल करसु। ओघरी पहलवान परिवार क शक्ति–शान रहे अ निम्मन गाइ–बरध दुआर क शोभा। घर का गाइ से जनमल बाछा जवान भइला पर घरगइया बरध कहा। नाटा–खूँटी भइलो पर अइसन बरध बड़–बड़ आ सरनामी बरधन क नाकि काटसु। हमार बछवा मंझिली रास क अइसने घरगइया बरध रहे।

ऊ हमरा देखते जनमल रहे, लयरू बन के कूदल–फानल रहे आ दाँत के जवान–पट्ठा बरध भइल रहे। ओ लायक बछवा के हर में चलावे बदे बहुत तवालति मेहनति ना करे के परल। ऊ मँजल बरध मतिन हर में दू–तीन दिन सिखवले पर चले लागल। ऊ सुच्चा धावर रहे। ओकरि देहिं सीसो क लमछर सिल्ली रहे। ऊ कवनो अंग से काटे जोग ना रहे। रास्ता में ओकर बड़–बड़ फाल परसु। ओकर चलल सयार होखे। चलन सार बैलन में ओकर नाँव रहे। ऊ अपना देहीं कबो गोबर मूत ना लागे दिहलस। हर में नधा गइला पर हर जोते वाला बनिहार का मन–माफिक चलत रहे। ओकरा पीठि पर कबो बनिहार क पैना ना गिरल। ओकरा दाहिना अंग पर लहसन रहे आ ऊ आँगछ क निम्मन रहे। जबले हर सम्हरलस आ हरे चलत रहे तले अन्नो–सन्नो क पैदावारि होति गइलि। ऊ बहुत खधोर रहे। जेवने पावे तेवने खाइके अन्नन रहे। ओकरा चरनि में लथेर ना छूटे। एतना सुध्ध कि लरिका, मरद मेहरारू केहू ओके बान्हि छोर सकत रहे। ऊ स्वभाव क साधु, जाँगर में साँढ़, आ फुरुती में बिजुली रहे। ऊ अपना पुरुबही के कवनो बड़ जीव बुझा।

बछवा के वेंरेप चलत कई माटी हो गइल रहे। एक सालि रबी का फसलि क समहुत होते कातिक महीना में बछवा क जोड़ हपटंग बरध कवनो विकठ रोग मा भूत–परेतन का चपेट में पर के एक दिन एक–ब–एक मर गइल। अपना परिवार खातिर बोड़ आफति आ गइलि। चल–फिर–दउर के बाबू कतहीं लें एगो माँगनी क बरध जुटा वसु अ ओकरा कान्ही ओ बछवा का चले के परे। जोड़–फुट बरध का कान्हीं ओकरा महीनाभर चले के परल; बाकी ऊ कबो हारना मनलसि। ऊ एकले एक चलवइया बड़की जोड़ी का बरधन का कान्हीं बेरेप चलल ओहन के रंगरलस। बूढ़ आ छोटहन कमजोर बरधन का संगे उनुकरा फाल पर गते–गते चलत गइल। ऊ अपना देहीं कबो कबनो तरे क तूल–तवालति ना दिहलस। एगो हमरा दयाद मछली शहर ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सराहूँ बड़का बरधन क जोड़ी ले आइल रहलन। उनुकरा गुमान रहें कि उनुकरा बरधन का संगे महमूली अउरी बरध हर में चल ना पइहन स।

एक दिन ओ जोड़ी क एगो बरघ एक दिन बदे मँगनी में मिलल। बछवा ओकरा संगे हर में दहिने नधाइल। एकर पल्ला ओकरा ले बहुत हेठ हो गइल, तबले सांझि ले वे गम उनुकरा के दबावत चलत रह गइल। उनुकरा के पानी–पानी कइ दिहलस। ऊ घरे थकहर लवटलन आ ई माकत। बछवा साहु आ कुल्ह समला में चलवइया रहे। ऊ पहिले दिन सघल लदुवा बयल मतिन गोनन के लिहले मीलभर लम्मा ले घरे चोहँप गइल आ पहिले दिने नधइला पर आखि का कल में मँजल चलवइया बरध मतिन चले लागल। ओ सालि ओकर खइबही अइसनि भइलि कि ऊ तनिको ओहजल ना। ओकरा देहिं पर ले माँछी बिछला जाँस। ऊ महादेव जी क बाहन नन्दी भइल रहे। ओके खियावे–पियावे में हमार मन खूब लागे। बाकी माघ क महीना बितत–बितत ओकरा पर बज्जर टूट परल। ओकर मुँह बवा गइल आ जीभि फूल के लोढ़ा होइ के बाहर निकलि आइसि। गोरून क गुनी नालिबन्ह बुलावल गइल। ऊ जीभि के टोई–टाइया अइँठ–मरोर के देखके जीभि–बघ्घा रोग बतवलस। ऊ बरधन क बयद हमरा ओ बरघ के ढहवाइ के ओकरा जीभि का पाछे चार गो चीरा लगाइ दिहलस आ जीभि के कड़ेरे हाथे गार दिहलस। करछहूँ खून गिरल। फेरू हँसुआ आगि में लाल कइके ओसे दाग दिहलस। छोरला पर बरध बेधवास ठाढ़ भइल। ओकर कुल्हि देहिं धूवां भइलि रहे। ओकरा बदे खाए–पीए अ दवा–वीरो क सामान जुटवावल बाबू क काम रहे आ बाकी सेवा हमरा जिम्मे रहे। हम नीबि क पतई डाल के एक तसला पानी अवँट के रोजाना साँझि–सबेरे ओही से ओ बरघ क घाव घोइके नालिबन्ह क बनवावल मलहम बहुत सावधानी का तत्परता से लगावल करीं। ऊ बरघ किछु खाई ना पावे। खाली तीसी क खरी पियाइ के ओके जियावे के रहे। हम रोजना सांझि–सबेरे जूनन दू–तीन सेर तीसी क खरी भेइँ देई आ ओकर आ चार पंसेरी पानी के घोल बनाइ के ढरकी से पियाई। हमरा ए सेवा में तीन–चार दिन ढेर तूल–तवालति उठावे के परल; एकराबाद ऊ हमरा से एतना पाँज–परक गइल कि हमरा के ढेर तंग ना करे। हम ओ असक्काँ परल प्रानी के सेवा करे में बहुत रूचि लेईं। ओकरा जीभि क दगला से खलरा ओकचत घाव बहुत भीरूखावन लागे, तबो हम नाकि–मुँह बेसिकोरल ओके घोइ के मलहम अच्छी तरे लगाई। हमरा कबो घिनगिनावन ना लागल। अउरी सब ओ घाव के देखते आँखि–मुँह एन्ने–ओन्ने फेरे लागे। अठारह दिन ले सेवा कइला का बाद ओ बरघ के ढेर आराम भेंटा गइल रहे। एकइसवाँ दिने पशुन क ऊ बयद फेरु अइलन आ जीभि क हालति देखके पहिलहीं मतिन फेस चीर–दाग दिहलन। बरध पहलहीं मतिन पीरा में आ गइल। बाकी ओ बयद जी क हिकमति आ दवाई काम करति गइलि। हम ओ अनबोलता जीव क सेवा करत गइलीं आ बयालिसवाँ दिने ऊ अपना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुँह से पकड़वला पर सरिसो क हरियर पतई धइ लिहलन। घाव सुखात गइल, जीभि में सुधार होत गइल अ ऊ अपने खाए-पीए लगलन। उनुकरा देहिं क कुल्हवार भरगइल। खउरा लागल कुक्कुर का छेहिं मतिन उनकर देह लउके। पहिले जेकरा देहिं पर माछी बिछिलाँ सअब ओकरि हड़वारि ठाढ़ रहे। ऊ बरध चिन्हल ना जा सकत रहे। खाए-पीए क मजिगर प्रबन्ध हो गइल। स्वार्थवश सेवा कइलि गइलि जेठ बीतत-बीतत ऊ हमार बरध बहाल हो गइल। देहिं पर रोवां जामि गइल। ऊ सुच्चा घावर बरध चमचमाए लागल आ असाढ़ में हर पल्ला धइके पहिले मतिन दाएँ चले लागल। ओके कबो केहू बरध दवा ना पावल आ नात ऊ कबो ठेहुनियाइल। बाकी ओकरा देहिं में ऊ तामस ना आइल जेवन बेमारी का अगते रहल। रोग ओके नीकहन क तोर दिहलस अ जीभि पर आपन भारी निशान छोड़के दूर भइल। हमार सेवा कइल पुरहर सुकुलान हो गइल आ ऊ बरध परिवार क करज मय सूदि क भर के दम लिहलस। जेवन हमार बछवा बरध बुझा कि ओहजबे ना करी ऊ बेमारी क मारल बेचारा हालिए खमराइ गइल, ओकरि बुढ़वती आ गइलि, देहिं हड़रियाए लागलि आ लदला पर जब-तब ऊढुके लागल। बेर-बागर ओके देखला पर अड़ोसी-पड़ोसी हमरा परिवार का बेकतिन से कह दिहल करसु-ई बरध तोहन लोग क बड़ा खइले रहल ह। कुल्ह करज मय सूदि के भर दिहलस। अब एकरि पीठि ठोंक द जा। ई डाँक-डाँक कइ रहल बा – "थाकलि देहिं गोन भइलि भारी, अब का लदबे रे बेवपारी।"हँ, हँ, एक दम ठीक कहत बानी जा। ई बड़ा सुध्ध, सच्चा आ सुरुवाँ बरध रहल ह। हमनियों का एकर करतब देख के ए बेचारा के आराम दिहल चाहत बानी जा।" बाकी ई स्वार्थी संसार खाली कहत आ सोचत-सपरत रह गइल। ई ओके खटावे में कबो ना चूकल। बुझा कि ई ओकरा मूवल हाड़ो के खटाई आ ओसे किछु कमाई। हम माई दिल से चाहीं जा कि ओकरि माटी अपने खूँटा पर पार-घाट लाग जाऊ। ओकरा के दूसरा क दुआरि न देखे के परो। जब हम ओकरा पजरा ठाढ़ होखीं तब ऊ अपनी ठूँठी जीभि से हमरा के चाटत अपना आँखिन से हमरा पर आपन सनेह बरसावे लागे। हम ओ बरध के लयरू रहला पर खेवले रहलीं, ओकरा जवानी में आके सज्ज से खियावे बदे दोचित रहीं, बेमार भइला पर ओकरा जीभि के मवाद डेढ़ महीना कछले रहलीं आ अब जब अपना बुढ़वती में कतही ले लादल आवे तब हम आ माई ओके कवरा लिहले धाई जा जेवना से कि ओके आहस न आवे पावे।

ओ बछवा बरध क बुढ़वती आ गइलि आ हमार किशोरावस्था। हमार विवाह तय हो गइल। तिलक विवाह का परोजन बदे लम्मा का बाजार ले कीन-खरीद के बटुराइ सामान ले आइल जरूरी हो गइल। सामान खरीदे में सहयोग करे बदे एगो साहुजी गइलन आ सामान ढोइ के ले आवे बदे मददि करे खातिर हमार ऊ बछवा बरध ले जाइल गइल। साहु जी के बहुत नजदीक ले ओ बरध क रहनि चालि देखे क मौका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिल गइल। साहुजी ओपर मोह गइलन। उनुकरा विसवास हो गइल कि ऊ अपना किहाँ बरध के ले जाइके खियाइ पियाइ के काफी टाँठ बना दिहन आ कई बरिसन ले अपना काम में ले अइहन। ऊ बरघ के मोल ले लेबे बदे बाबू का पाछे पर के उनुकर मनु बदल दिहलन। हमरा आ माई का नाहीं चहलो पर ऊ बूढ़ बरघ बेचा गइल। ऊ आपनि जन्मभूमि, आपन पुरान-चिरान खूटा आ अपना जानल-मानल मोवारन के छोड़ल ना चाहत रहे। एकरा बदे ऊ बड़ा एड़ियाइल, बिंबियाइल आ भांगल-पराइल बाकी न ओकर चलल आ न हमनी का महतारी-बेटा क। ओ अनबोलता जीव क अपना स्वार्थवश बरियाई से खूँटा छोड़ा दिहल गइल आ अनगइयाँ जगहि पर ओ बुढ़उती में ओकरा जाये के परल। हमरा परिवार से ओकरि नेकी ना ढोवाइलि। जेंब ओकरा देहिं-मुँह से सुनाए लागल - "थाकलि देहिं गोन भइलि भारी अब का लदबे रे बेवपारी" तेंव ऊ अनगराहित हो गइल आ ओकरा मूवल हाड़के मंजाइ के ओकरा के अपना आँखि से अन्ह कई दिहल गइल। वाह रे स्वार्थी, नमक हराम, बेहया मायावी संसार! एतना हरामखोर आ पाजी मुतफन्नी भइलो पर तू ए बेचारा जीव से छोड़त नइखे बनत!

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करिअ बियाह सुता अनुरूपा

जब हमरा उमिरि क चउदहवाँ बरिस लागल तब माई हमरा बियाह बदे बाबा के उकसावे उदवेगे लगली। अकसरूवा भइला से ऊ पतोहि क मुँह देखे बदे तरसत रहसु। खिंचड़ी यानी मकर-संक्रान्ति बीतत-बीतत हमार नाँव तिलकहरूनके दियाए लागल। माई का अकसरुवा भइला का उद्वेगला से बाबा अपना संगी-साथिन में ए बारे में मुँह खोललन। ओघरी तिलकहरुन क देवता मतिन पूजा होखे माघ-फागुन में बियाह ठाने क रवाज ना रहे। जब रबी का फसलि क बटुराह अनाज गिहत्तन का घरे आइके ठिल्ला-ठिल्ली, कुंडा-छोड़ि आ बखारि में भर जा आ उनुकर हाथ रसा जा तब ऊ अपना तरिका-लरिकनी क बियाह करे क हिसाब करसु।

ओ सालि मेष-संक्रान्ति का बीतला पर हमरा एगो दयाद क हीत अपना मझिली लरिकनी क बियाह करे का नेवरती ओकरा जोग लरिका खोजे खातिर उनुकरा किहाँ चोहँपलन। हमार दयाद उनुकर समधी रहलन आ उनुकरा छोटका लरिका क सादी ओ हीत का जेठकी लइकी से भइल रहे। उनुकर दामाद उनुकर के तीन गो बिछुवा बहेंतुवा लइका देखा दिहलन जेवन उनुकरा के एक ले एक बढ़के देखाई परलन। ऊ हीत बाबू साहब कपारे हाथ धइ लिहलन। उनुकर मन किछु हिनाई क अनुभव कइलस। ऊ अपना हीत का दुबारे आइके एगो खाटी पर थकहरला मतिन ढह गइलन।

देखते उनुकर समधी पूछलन-"काहें ढह गइलीं?"

"सोचले रहलीं हँ कि अपना मझिली लरिकनी क सादी असो हकनहाके कइ देईं। रउवाँ इहाँ जोग लरिका मिलेक बहुत आशा रहलि ह; बाकी जेवन लरिका देखावल गइलन हँ ओहन के देख के हम झवान रह गइलीं हँ। ऊ लरिका बर हउवन? कि बरनाठ-झरनाठ हउवन? हमरी लड़की तेरह-चऊदह बरिस का उमिरि क बा। ओकरा जोड़ जुगुत क लइका हमारा के चाहि। हमार इहे विचार ह कि 'करिअ वियाह सुता अनुरूपा' असो बियाह ठीक होखे क कवनो लच्छन नइखे लउकत।"

"सोरहो आना चिक्कनि रउरा ए बाति के के काटीं? एही सालि बदे उतजोग करत जाईं। हार मत मानीं। ए घरी खाइ-पी के आराम करीं। सांझि बेरा में लरिका टउरे का फेर में परल जाई। तले हम बइठले-बइठल एकादगो लइका झइँकत बानी।"

सांझि बेरा में हम स्कूल ले लवटल रहलीं। दयाद बाबा क चरवाह हमरा किहाँ चोहँपल-"बाबा तोहरा के बोलवलन हँ।"

हम पूछलीं - "काहें के?"

"तोहरा स्कूल का केहू मास्टर का बारे में किछु पूछे के बा।"

"आवतबानी"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हमरा अपना संगहीं तोहके लिया चले के बा।" ऊ कतहीं जाए वाला बान।

"तोहरा किहाँ जेवन तिलकहरू आइल रहलन हँ, का ऊ गइलन?"

"बान। उनुकरे बदे कतहीं लइका देखे जाए के बा।"

बाबा क बाति टारल हमरा के निम्मन ना लागल। माई आ अपना बाबा का दबाव दीहला से दयाद बाबा का चरवाह का संगे चल दिहलीं। उनुकरा दुवार पर चोहँपते हम उनुकरा आ हीत का पावलग्गी कइलीं। ओ लोग क इसारा पाइके आगे परलि खाटी पर बइठ गइलीं। बाबा पूछलन-"तोहरा स्कूल क फलाना मास्टर क लइका कवना दरजा में पढ़ेला?"

"सात में।"

"ओकर बियाह कतहीं ठीक भइल बा कि ना?"

"हम नइखीं जानत।"

उनुकर हीत पूछलन-"दूनो जाना करीब-करीब एक उमिरिये होइब जा?"

"जी।"

"एघरी तोहारि उमिरि का होई?"

"करीब चउदह।"

एकरा बाद ओ लोग से घरे चल देवे क अनुमति मिलि गइलि। हमरा घरे अइला का थोरकी देर बाद दयाद बाबा आ ऊ हीत हमरा दुआर पर चोहँपलन आ हमार राशि क नावँ लेइ के चल गइलन। ओ लोग का जाते बाबा के बोलाइ के माई पूछली-"तिलकहरू का कहलन हँ?"

बाबा तिलकहरू क कहल हूबहू कह दिहलन-"नावँ ले जात बानी। गनना बनी त मनना क बाति आगे बढ़ी। लइका पसन्न बा, बाकी लइका-लइकी क एक उमिरा भइल तनी खटकत बा। अपना घरे राइ-बाति करब। मन बइठे त तुरन्ते लवटब।"

एतना कहके बाबा गुड़गुड़ी गुड़गुड़ावत दुवराँ चल गइलन। माई देर ले देवता पितर मनावत रह गइली। काहें कि बियाह-कटुवन क भय उनुकरा के सतावत रहे।

हमार दयाद बाबा अपना टोल-महाल क सभले चतुर-चल्हाँक आ दिमागदार बूढ़-पुरनिया मानल जासु। उनुकरे बुद्धी रहे कि हम अपना बियाह का लइका-देखाई, साक्षात्कार का करमट में तनिको निमहुरना परलीं। जो हम जान गइल रहतीं कि हमरा के तिलकहरू का आगे हाजिर करे बदे ले जाइल जाता त हम लजाघुर भइला से गइल ना रहतीं अ जो गइल रहतीं त हमार चेहरा फक्क पर गइल रहित आ हमारि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जबानि ना खुलल रहिति। दयाद बाबा का सूझ-बूझ क फल रहेकि हम ओ परीक्षा में सभले अधिका नम्मर पाइ के प्रथम श्रेणी में सफल हो गइलीं। ई भेद हमारि साध्वी धर्मपत्नी बियाह का 55-56 बरिस बाद अपना बुढ़वती में जीवन का अखीरी समय में अपना परलोक जातरा पर जाये ले पनरह-सोरह दिन अगते अपना बेटिन से खोललें रहली। उनुकर कहनाम रहे-"तोहन लोग का बाबू का सुघराई सिघाई आ गुन-सहूर पर रीझके हमार बाबू इनकरा से हमार बियाह कइ दिहलन। उनुकरा नजरि में जइसन सुघरि हम रहलीं तइसन ई। ऊ लइका-लइकी का मेल पर बियाह बदे ढेर जोर देसु। ऊ अपना लरिकनी का एकदम अनुरूप लइका चाहसु।"

एकाध सप्ताह बाद दयाद बाबा अपना हीत के लिहले हमरा दुवार पर आइ बइठलन। बियाह करे बदे बर आ कन्या दूनो पक्ष राजी हो गइल। उपरोहित जी बोलावल गइलन। बरच्छा धरा गइल। तिलक-बियाह क लगनि सोधाई गइलि। नियत्त दिन के तिलकोत्सवो ठाट से मनावल गइल। भाई-भयवद, संगी-साथी, उपरोहित-बाभन, पवनी-पँजहर लोग भारी संख्या में भोज-परोज में सामिल भइल। वर-कन्या दूनो प्रक्ष क उपरोहित जी लोग आपुस में समुजा कइ के बियाह क लगनि-पत्री लिख के दूनो पक्ष के दे दिहल। हमरा बियाह क बराति दूसरा जिला में बहुत लम्मा जाए के रहे। एसे गवना का बराति मतिन चुनमुनियाँ रहे। ओमे केहू फालतू ना रहे। ओमे दुइ जाना झाँपी में बन्न कइके ले जाए वाला बूढ़-पुरनिया आ एक जाना जवान नामी पहलवान आ बराति क इन्तजामी रहलन। एकराबाद दुलहा क पिता, बड़ भाई, दुलहा, सहबल्ला, उपरोहित, नाऊ, कानू आ कमकर रहलन।

संजोग से बरतिहा बड़ा मोट-झोंट आ भेखगर रहलन। ए से बराति भराइलि रहे। बाजा हमरा ससुरारी का ओरां ले हो गइल रहे। ऊ मोका पर आइके बराति में मिल गइल। बराति में धोती, कुरता, मिरजई, पगरी, मुरेठा आ चदरा क बहारि रहे। हम दुलहा बने बदे पीयर जोरा-जामा पहिरले रहलीं। हमरा माथा पर मऊर बान्हल रहे। पलगवनी का बेरा हमार पहिरावा बदलल। ओघरी हम धोती, कमीज पर रेशमी-रंगीन चहकदार कोट आ सिर पर सोन्हुली टोपी पहिरले रहलीं। पांवन में ललछहुआँ बूट रहे। सहबल्लो क एही तरे क पहिरावा रहे। बराति का बूढ़न का पैरन में चमरउधा जूतन क, आ जवानन का पैरन में लुधियाना आ जगत गंजी परेटी क रंग जमल रहे।

ओघरी रेवतीपुर ले गाजीपुर जाए खातिर कच्ची-बिकठ सड़कि रहे। एक्का से बराति ताड़ी घाट चोहँपलि आ स्टीमर से गंगा नदी के पार कइलसि। फेरु पार कइके एक्का पर बइठलि आ फुल्लनपुर यानी सिटी स्टेशन पर चोहँपि गइलि। ओहिजाँ ले रेलगाड़ी से जौनपुर जा पहुँचलि। एकराबाद एक्का का सवारी क सहारा लेइ के शहर पार करत इलाहाबाद जाए वाली सड़कि धइके पाँच छव कोस चलि के हमरा ससुरार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का गाँव का पजरौ जाइके ठहरि गइलि। ओहिजाँ ससुरार का ओराँले बड़ा खातिरदारी भइलि। करीब चार बजे संझा में बजनिहाँ बराति में आइके सामिल हो गइलन आ उनुकरा साथे दुलहा-सहबल्ला बदे डोलियो आ गइलि साढ़े पाँच बजे बराति गाजा-बाजा सहित द्वारपूजा बदे चलदिहलसि। कन्या-पक्ष से बहुत उत्साह-उल्लास का साथ अगवानी भइलि दरपूजा लागल आ बराति अपना ठहरे का तम्मू में जाइके ठहरि गइलि। कन्या पक्ष का ओराँ ले ओहिजे आइ के आज्ञा-मँगाई भइलि। मोलायम, भरक्का, सोन्ह, गमगमात गाइ-भइँसि का सुच्चा घीव से बनलि मधुर-मधुर बुनियाँ से बराति के भरपेटा जलपान करावल गइल। बराति के खाए-पीए आ आराम करे बदे अउरी जेवन किछु सामान चाहत रहे, ऊ सभ किछु जमादिहल गइल। बियाह क कुल्ह करमट राति में बारह बजे ले ओराइ गइल। एकरा बाद बराति गारी-गीत सुनि-सुनि मुसकियात हँसत भोजन कइलसि आ तोसक-तकिया लगाइ के तम्मू में सूति गइलि। दूसरा दिने बराति जनवास रहलि आ खिंचड़ी खइलसि जनवास का दूसरा दिने बराति समय पर जलपान कइलसि आ सुचिताही से भोजन कइके विदा हो गइलि। लइकी गवना के रह गइलि। बराति सकुशल गाँवें चोहँप गइलि।

नियत दिन के सबेरहीं गंगा जी जाइके हमार कक्कन छूटल। लवटला पर करहियाँ आ रेवतीपुर का भगवती दुर्गा माई क आ गाँव का अउरी देवतन क मंदिर में हमरा के ले जाइके दर्शन करावल गइल। ओ ही दिन संझा में शिव खियाइ के विवाह क कुल्ह करमट पूरा करा दिहल गइल।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बचपन का वह जमाना

हम सन् १९४० में वर्नाक्यूलर फाइनल परीक्षा (Vernacular Final Examination) यू.पी. बोर्ड से उत्तीर्ण कइलिहलीं। उर्दू अंगरेजी मिडिल आ हिन्दी-विशेष योग्यता का परीक्षनो के सन् १९४१, ४२, आ सन् १९४३ में उत्तीर्ण कइ गइलीं। सन् १९४३ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से हिन्दी माध्यम का परीक्षा में सफल होइके विशारद क उपाधि प्राप्त कइ लिहलीं। प्राइमरी आ मिडिल स्कूल क अध्यापक होखे खातिर प्रशिक्षित होखे बदे टुकटुकाई के मन रह गइल। हिन्दी विशेष योग्यता का परीक्षा तइयारी हमरा जीवन के नया मोड़ दे, दिहलसि। यह तइयारी में हमरा के 'बिहारी-रत्नाकर', 'सूर-पंचरत्न' आ पं. रामचन्द्र शुक्ल क 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' पढ़े क अवसर भेंटाइल। ई पुस्तक हमरा के हिन्दी भाषा साहित्य का ओराँ घिंचली स। बिहारी रत्नाकर पढ़के महाकवि बिहारी क गागरि में सागर भरे क जौहर देख के हम चकरा गइलीं आ कवि बने खातिर मन टुक-टुकाए लागल। रत्नाकरी टीका सहित बिहारी का दोहन के पढ़के मन एतना गद्गद भइल कि ओ पुस्तक के भरपुर हाली पढ़ जाए बदे आतुर हो गइल। राति क पढ़े क रपटा ना रहला से तबीयति खजमजाह भइला से राति में ना पढ़ पाईं। हम दिन में खूब पढ़ी आ पढ़त-पढ़त अघाई जाईं। सूत गइला पर अपना में हम बिहारी-बोधिनी, बिहारी की कविभूति, हिन्दी-नवरत्न, देव-बिहारी आ सतसई-संहार पुस्तकन के खोज-खोज के पढ़लीं। एकराबाद लाला भगवान दीन क संकलित-सम्पादति 'सूर-पंचरत्न' हमरा के हिन्दी साहित्य का ओरां अइसन घिंचलस कि हम उनुकरा वत्सलरस में अद्भुत रस लूटे लगलीं आ आगे चल के भरपूर सूर-सागर में गोता लगावे बदे आतुर हो गइलीं। आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य के पढ़के हिन्दी भाषा आ साहित्य क एगो सोगहम आ सजीव स्वरूप हमरा के झलके लागल आ इनकरा महातिम क बोध भइल। ए पुस्तक से हमरा के आपन हिन्दी भाषा क शब्द-भण्डार बढ़ावे में मददि मिललि। एकरा में कवनो सक-सुबहा नइखे कि 'हिन्दी-विशेष योग्यता' का परीक्षा क पढ़ाई हमरा में हिन्दी भाषा आ साहित्य क ज्ञान करे बदे बड़ा चाव पैदा कइलसि। आ हम ओही झटका में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का हिन्दी मध्यम क परीक्षा दे के हिन्दी विशारद क उपाधि पा गइलीं।

ए हिन्दी प्रेम का उमंग में ए परीक्षन के उत्तीर्ण कइला का बाद प्राइमरी आ मिडिल स्कूल के मास्टर होखे क हमारि इच्छा लापता हो गइलि आ हम हाईस्कूल में हिन्दी अध्यापक होखे क सपना मनगुमे संजोवे लगलीं। हम बे प्रशिक्षण कतहीं मिडिल स्कूल में पढ़ावे के सुविधा-सुतार जोहे लगलीं। एकर टिप्प लगावे बदे बाबा के उकसावे लगलीं। आपन एगो नजदीकी काफी पढ़ल लिखल दयाद श्री भद्रेश्वर राय से ऊ एकर जिकिरि कइलन। ए काम में ऊ मददगार भइलन उनुकरा कृपा-प्रसाद से राजपूजाना का एगो इंग्लिश मिडिल स्कूल में हमारि अध्यापकी बदे नियुक्ति हो गइलि। जुलाई सन् १९४६ का पहिला दूसरा सप्ताह में हमरा ओहिजाँ चोहँप जाए के रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नौकरी हमरा के मन–माफिक मिल गइलि रहे, बाकी जाए के कलवा कोस रहे। ओ स्थान का दूरी क सोच हमरा के अखरे आ असमंजस में डाले लागल। लम्मा क रेल–यात्रा कबो ना कइले रहलीं। एसे मन दोबिधा का भवँर में बूड़े उतराए लागल। हम आँखि पसारि के अपना नियरां का दुनियां में चारू ओरां देखे लगलीं। केहू पड़ोसी कलकत्ता जाइ के ठेकल रहे, केहू दिल्ली–बम्बई में टिकल रहे। केहू सिलहट डिबरू गढ़ का चाय बगान में डेरा डलले रहे, केहू गुजरात, पंजाब राज पूताना में अपना रोजी–रोटी क जोगाड़ि बइठवले रहे। ई सभ सालि–सालिभर, दुइ–दुइ सालि मा, चार–पाँच सालि पर घरे लवटे। कई गो हमार सहपाठी पलटनि में भरती होइ के दुसरका विश्व युद्ध में अफ्रीका का सहारा रेगिस्तान में धूरि–बालू फाँक के लवटल रहलन। दुइ जाना हमारा दयाद राजस्थान जाइ के ओहिजाँ का स्कूल में मास्टरी करत रहलन। हमरा के जो ऊ ना गइल रहतन त उनुकरा संगे जाए में हमरा के साहस सुविधा मिलल रहिति। ए घुमक्कड़ दुनियाँ के देख के हमार मन राजस्थान जाए क हियाव जुटा लिहलस। मन–माफिक नौकरी भइला से ऊ लम्मो क स्थान नियरां लागे लागल। हमारि भलाई सोच के माई के कवनो दिकदारी ना बुझाइलि। हमरा मेहरारू ओघरी अपना नइहर रहली आ उनुकरा से हमारि कबो बाति चीतो ना होखे। हम लोक–लज्जा–वश उनुकरा के कबो पत्रो देबे क साहस ना जुटा पवलीं। उनुकरा के हमारि ऊ राजस्थान क यात्रा निम्मन लागलि कि बाउर; ए बारे में हम किछुना कह सकीं। महाकवि अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध" क "एक बूंद" कवि तो हमरा के राजस्थान जाए में बहुत प्रेरणा दिहलसि। ओ कविता क सुधिभवते हमरा झिझक–हिचक क देवाला निकल गइल हम किछु बेर ले गुनगुनात रह गइलीं।

लोग यो हीं है झिझकते–सोचते, जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किनतु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें, बूँद लौं कुछ और ही देता है कर॥

हमरा बुझाला कि नौकरी बदे हमार घर छोड़ल प्रिउले प्रिउ परानी के ना अवहल–अखरल। माई उपरोहित जी के बोलवाइ के अगतही ले शुभ साइति पूछले रहली। ओ साइति पर, ओ दिने हम साफि–साफि धोती–कमीजि पहिर के कान्ह पर गमछा धइके गोड़ में बूटन के डाल के ओ लमहरी जातरा पर चले बदे कमर कस लिहलीं। बाकी कपड़न के चपोत के एगो कमरा में लपेट के बन्डल बनाइ के कसके बान्ह लिहलीं। एकरा बाद माई, बाबा आ बाबू क गोड़ लगली आ कांखितर बंडल चाँत के पानी का एक बून से मोती बने क चाह लेइ के अपना के बिकठ बुझाति राजस्थान का ओ दूर देश का जातरा पर पयान कइलीं। गाँव का धरती पर लइकपन का रंग में रंग जेवन खेला बीसन वरिस ले खेलल गइल रहलन स तेवन सगरो जातरा का साथ पता ना, कहवाँ बिदा हो गइलन स। ए जिनिगी में ओहन के बहुरे क फेरू भागि ना भइलि। बस, उनुकरि याद ई कहे बदे रह गइल–"मुझ को नहीं है भूलता बचपन का वह जमाना।"

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड - द्वितीय

जहवाँ चाह
तहवाँ राह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

....घर का छोड़ना....
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर

राजस्थान-जातरा ले अगतें कवनों एतना लमहरि रेल-जातरा ना कइले रहलीं। रेलगाड़ी से हमारि पहिली जातरा चार-पाँच बरिस का उमिरि का अयड़ाँ-गोयड़ाँ दिलदार नगर रेलवे स्टेशन से धीना स्टेशन तक अपना निनियउराँ कनवाँ जाए वदे भइलि रहे आ फेरु एकाद महीना बाद लवटानी भइलि। एकरा बाद दूसरि रेल-जातरा अपना बियाह-गवना का सिलसिला में गाजीपुर सिटी स्टेशन से जौनपुर सिटी स्टेशन तक भइलि। एकरा आगे अपना बल-बूते एकाद तोर गाजीपुर स्टेशन ले बनारस कैंट तक गइलीं। ओ समय कतो लम्मा समय तक रहेके ना परल रहे। राजस्थान-जातरा में गाजीपुर से राजस्थान का ओघरी का जयपुर राज्य में जाए के रहे। अबे देश आजाद ना भइल रहे। ओ राज्य का शेखावटी क्षेत्र का झुनझुनू रेलवे स्टेशन से उतर के अलसीसर हमरा जाए के रहे। हमार हितू वकील काका हमरा के चिट्ठी लिख के रेवतीपुर ले अलसीसर तक का डहरि के बई-बई समुझाइ देले रहलन। हम दिलदारनगर रेल गाड़ी पर चढ़के टूंडला जंकशन पर चोहँपलीं आ ओहिजाँ ले गाड़ी बदल-धइके दूसरा दिने दस बजे ले आगरा चोहँप गइलीं। जयपुर के गाड़ी पकड़े बदे ओहिजाँ पाँच-छव घण्टन ले बेलमे के रहे। एगो बड़हन विश्रामालय का ओसारा में तीसरा दरजा क जातरी काम चलाऊ बिछौना बिछाइ के आ अउरी सामान चाँत-मुड़ियाइ के ओलरल रहलन भा बइठल रहलन। ओही में सभकर खान-पान-नहान चलत रहे। हमहूँ ओही में एकगरी अपना जोग जगहि तजबीज के आपन डेरा गिराई दिहलीं। एकराबाद मल-मल के मुहँ आ हाथ गोड़ मजे में धोइ-धाइ के माई जी के दिहल कलेवा भइँसि का सुच्चा घीव क नरम-नरम सोहारी, कचउड़ी आ पूवा तरकारी संगे भरपेट खाइके हाथ-मुँह धोवली आ बायीं अलंगे ओलर रहलीं। सवँसि पवते माई के याद उमड़ परलि आ हम आँसुवन का धारा से बूड़े उतराए लगलीं। जेवना माई जी का कोराँ आ पजराँ रहत बीसन बरिस बीत गइल रहे आ दुइ-चार दिन लम्मा रहे क नउवति ना आइलि रहे, अब उनुकरा से ए बरिस का बादे भेंटि होखे क आसरा रहे। माई जी का मोह-छोह क याद परते हमर के ऊ कलवा कोस क जातरा बुझाए लागलि। हमरा भीतर हउल फूँक दिहलस। जातरा पर आगे बढ़ेक हियाव ना रह गइल। हम अबूहाँ पर गइलीं। लवट के माई का सोझाँ ठाढ़ होइ जाए बदे मन अफनाए लागल। हमरा गरमी छीट दिहलस। उठ के कपार धोवलीं, पानी पियलीं आ एन्ने-ओन्ने चल फिर के महँटियावे लगलीं।

मन क घोड़ा बे लगाम घर-मुँह हो गइल रहे। बिछौना बटोर-सटोर के घर लवटे बदे बन्डल बान्हे जात रहलीं कि घूरा क घतूर हमरा कामे आ गइल। हम अपना मन का घूरा पर बाबू का कई बरिस का खुझला-खिनसइला क अपना के खोभल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निहसावल, गरदनियाबल, मेहना मारल, छीप काटल, हूँसल अउरी के झार-झूर के फेंकत गइल रहलीं। हमरा अमाठाँ पर प्रानी के ओघरी ऊहे आलम्म हो गइल। ऊ हमरा लवटे का सूह-वेग में बेड़ डाल दिहलस। हमरा समुझि में आइल कि जो हम घरे लवटब त घर का खूँटा क पाहुन हो जाइब, आ बाबू हमरा के बहुत हुरियावत रहइन हमरा दीन दशा नौकरी-चाकरी ना कइला से माई दुखी रही। माई हमरा के अपना हाथ-गोड़े ठाढ़ देखल चाहति बा। एसे हमरा के किछु बुझाए लागल कि हमार हित आगे जातरा में बढ़ला में बा। नौकरी मन-माफिक मिललि बा। एके छोड़ल बेवकूफी होई आ दूर देश का जातरा आ दूरी से भीरुखल आ असकतियाइल हमरा के महँगा पर जाई। हम एही कुल्ह सोच विचार में रहलीं कि तले कहियो क पढ़लि ''हरिऔध'' जीक कविता ''एक बूँद'' हमरा के खुदकियवलसि आ हम ओकरा के गुन गुनाए लगलीं।

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी इक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर वह यही जी में लगी,
आह क्यों घर छोड़कर मैं यों बढ़ी।
देव मेरे भाग्य में क्या है बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
या जलूँगी गिर अंगारे पर किसी,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।
बह गई उस काल एक ऐसी हवा,
वह समुन्दर ओर आई अन मनी।
एक सुन्दर सीप का मुँह था खुला
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।
लोग यों ही हैं झिझकते-सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किन्तु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें,
बूँद लौ कुछ और ही देता है कर॥

ए कविता के गाइ-गुनगुनाइ के मन में अइसन भाव उठल कि हम जातरा पर आगे बढ़े बदे उत्तान हो गइलीं।

जयपुर वाली गाड़ी के समय हो गइल। बिछवना क बन्डल बन्हलीं, टिकट कटवलीं, गाड़ी धइली आ राति में जयपुर स्टेशन पर चोहँप गइलीं। जहवाँ शहर में ठहरे के वकील काका लिखले रहलन तहवाँ जाइके ठहर गइलीं। दूसरा दिने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खाइ-पीके जयपुर रेलवे स्टेशन से टरेन पकड़ के शेखावाटी क्षेत्र का झुनझुनू रेलवे स्टेशन पर जा चोहँपलीं। ओहिजाँ ऊँट गाड़ी क सवारी मिललि। ऊ रेत का बड़-बड़ टीलन के पार करत राति भर में हमरा के अलसीसर चोहँपाइ दिहलसि।

अलसीसर एगो छोट-मोट कस्बा रहे। कस्बा का पच्छिव छोर पर ठाकुर साहब क गढ़ी रहे। ओकरा राजदण्ड का तरे कस्बा सूते आ जागे। ओकरा पूरब प्रजा लोग क कच्चा-पक्का मकान फइलल पसरल रहलन। ओहिजाँ नरिया-पटरी क कतहीं नाँव निसान ना रहे। मकानन पर छत रहे मूँज पतलो क छाजनि। ऊ छाजनि बीसन-तीसन बरिसन खातिर टिकाऊँ होखँ स। कस्बा में किछु सेठन क शानदार विशाल कोठी रहली स। एमे दुई सेठ अइसन रहलन जिनकर कारबार देश का बड़-बड़ शहरन में चलत रहे आ उनुकरा घरे लक्ष्मी गोड़-तोड़ के बइठल रहली। राजस्थान का चमचमात रेतू का करतन ऊ ना, बाहर का कारबार से धन कुबेर रहलन। ओही में ले जे.के. इंग्लिश मिडिल आ हाईस्कूल चलावे वाला सेठ जी रहलन जिनिकरा निजी जेब से विद्यालय चले। कस्बा का पूरब बहरवाराँ एगो बहुत लमहर-चाकर मैदान में छर देवाली का मध्धे ओर विद्यालय क भव्य-विशाल दूइ तल्ला भवन ठाढ़ रहे। ओकरा ऊपरी तल पर हाईस्कूल चलावे जोग आ निचली तल पर प्राइमरी आ मिडिल स्कूल चलावे जोग कमरा बनल रहलन स। हेठाँ ऊपर बड़हन सभागार रहलन स। ओही विद्यालय परिसर में एकओरी छात्रावास क दुई तल्ला निम्मन मकान रहे। विद्यालय परिसर से सटल ओइसने बड़हन-चाकर मैदान में अध्यापकन खातिर आवास भरपूर सुविधान राजकीय आवासन मतिन बनल रहलन स। ऊ विद्यालय काफी साधन सम्पन्न रहे।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह तो कोई तूफान नहीं है

हम सन् १९४६ का जुलाई महीना में जे.के.इंग्लिश स्कूल अलसीसर में पढ़ावे सुरु कइ दिहलीं। हमरा अध्यापकी जीवन क ऊ पहिला बारिस आ पहिला महीना रहे। हमारि शैक्षणिक योग्यता ओ विद्यालय का सभ मास्टरन ले कम रहे। अउरी सभ हाईस्कूल उत्तीर्ण ले कम ना रहे। करीब सभे मैट्रिक रहे आ हम मिडिलची रहलीं। हमरा के प्राइमरी दरजन में पढ़ावे बदे घंटा हेडमास्टर का देबे के चाहत रहे, बाकी हिन्दी विशेष योग्यता आ हिन्दी विशारद का आधार पर हमरा के पाँचवाँ दरजा ले लेइके आठवाँ दरजा तक क हिन्दी पढ़ावे के मौका दिहल गइल। हेडमास्टर क सोचानि रहे कि ओहिजाँ क स्थानीय भाषा क बोध ना रहला से हम छोट-छोट बच्चन के भली भाँति समुझा पढ़ा ना पाइब। बाकी घंटन में हमरा के इतिहास भूगोल पढ़ावे बदे दिहल गइल। भागि कहीं, राजस्थानी भाषा क आपन अज्ञान कहीं, हेडमास्टर साहब क कृपा कहीं या कि हमरा विशारद का परीक्षा शुल्क बदे माई जी का अपना गहना के बन्हकी धइके लक्ष्मी माई क दर्शन करा देबे क महातिम कहीं कि हमरा के विद्यालय का ऊँच की कक्षन में पढ़ावे क अवसर मिल गइल आ हम निम्मन गम्हीर आ छात्रन के अनुशासित राखे वाला शिक्षकन में जोराये गनाये लगलीं।

एक महीना हेडमास्टर साहब का संगे उनुकरे कुवाटर में रहलीं। ऊ आपन भोजन अपना हाथें बनावसु आ हम छात्रावास का भोजनालय में जाइके भोजन कइल करीं। मासिक भोजन-व्यय पाँच-छव रुपया पर जा। भोजन का साथे घीव क पूरा प्रबन्ध राखीं। गोशाला से सेर-डेढ़ सेर गाइक सुच्चा दूध लेइके सबेरे आ राति खानी सूते का बेरा पियल करीं। तीस रूपया मासिक वेतन पर हमारि नियुक्ति भइलि रहे। एही का बले हमरा खइला पीयला, कपड़ा-लत्ता, पढ़ला-लिखला आ कतहीं का अइला-गइला क कुल्ह खरच बरच चले लागल। हम स्वावलम्बी हो गइलीं।

हेडमास्टर साहब किहाँ रहत हमरा के पाँच-सात दिन ले भइल रहे कि उनुकर दाढ़ी क बार बनावे बदे साफ-सूफ कपड़ा-लत्ता पहिरले, माथा पर राजस्थानी पगरी बन्हले पूरा सभ्य-शिष्ट एगो सज्जन नाऊ ठाकुर अइलन। उनुकर हजामति बनवला का बाद हमरो दारही क बार बना दिहलन। ओघरी ले हम दाढ़ी क बार कबो छूरा से ना बनवले रहलीं। खाली कैंची से मेहीं कटवाइ देईं। फल भइल कि हमार दाढ़ी फर गइलि। भर दाढ़ी नन्हीं फुसरी निकल गइली स। दाढ़ी बथ्थे लागलि। ओकरा आवग से हमरा जोरदार बोखार आ गइल। हम खाटी पर गइलीं। जब हेडमास्टर साहब विद्यालय चल गइलन। हमरा आगे-पाछे केहू ना रह गइल। हम काँपत-कहँरत चदरा में लेंडुरियाइ के खाटी पर अकसरुवा सुनहटाँ परल रहलीं। हमरा माई क सुरुता आ गइल। उनुकर पजराँ ना रहल हमरा अखरे लागल ए हालति में माई हमारि खाटी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धइ के बराबर हमरा पजरौं बइठलि रहसु आ किछु ओखद-बीरो करत रहसु। ऊ अइसना पर देवी-देवतन क मान-मनवती करे से भर ना परसु। पियास लगला पर मिसिरी मोनक्का का साथे हमरा के पानी पियावल करसु। माई क करतब चेत परते हमारचित बिह्वल हो गइल। आसुन का धारि में हम बहे-बूड़े लगलीं। बुझा कि अब माई जी से भेंटे ना होई। हम असगुन सोचे पर उतारू हो गइल रहलीं। तले हमरा चटकन लागल कि जर-बोखार त अवते जात रहे ले। हमरा ई कई तोर आइल-गइल बा। मरद पर ई कुल्हि आफति आवत-जात रहे ले। मरद होईके अइसनि कदराही! हमरा में उत्साह उमंग क अइसनि हिलोर उठरिन कि हमरा मुँह से निकल गइल- "आए और चला जाए, यह तो कोई तूफान नहीं है।" देश भक्तन का जीवन का बारे में एगो कविता ओ आजादी का लड़ाई का दौर में कबो छपलि रहे। ओही क ई एगो मुख्य डँडारी रहे। हम ए डँडारी के गुनगुनात रह-रह के बार-बार दोहरावे-तेहरावे लगलीं। हमरा के एक अपना छनभँगुर शरीर में अमरता क गंध सवाद मिले लागल। ए ही में हेड मास्टर साहब आइ के हमरा खाटी का पजरौं ठाढ़ हो गइलन। ऊ एगो छात्र से एगो पुरान अनुभवी वैद जी के बोलवलन आ उनुकरा दवा दारू से हमरा के हालिए आराम मिल गइल आ हम दुइ-तीन दिन में चंगा हो गइलीं।

हेडमास्टर साहब का संगे रहत एक महीना हो गइल रहे। ओहिजाँ क रंग-ढंग किछु-किछु बुझा गइल रहे। जेवन शिक्षक आ छात्र हमरा के बयबी लागत रहलन ऊ आपन परिवार जनाये लगलन। हेडमास्टर साहब हमरा के परीक्षा देबे बदे ललकरलन। हम चहते रहलीं। हमार परीक्षा दीहल तय हो गइल। हाई स्कूल का परीक्षा खातिर अंगरेजी भाषा क पाठ्यक्रम तइयार कर में उनुकरा से काफी मददि मिललि। एक महीना अपना संगे रखला का बाद ऊ हमरा के परिवार सहित रहे जोग एगो कुवाटर दे दिहलन। ई हमरा के जबूनो ना लागल। हमनी का तीन जाना भोजपुरिया रहलीं जा-हम, हेडमास्टर आ संस्कृत-शिक्षक शास्त्री जी। हेडमास्टर साहब हाकिम रहलन आ शास्त्री जी परिवार सहित। हम ओ दूनो का संगे रहल पसन्न ना करत रहलीं। ऊ दूनो निखालिस शिक्षक रहलन आ हम शिक्षको ले अधिका विद्यार्थी। हमरा के हमरा जोग संगी चाहत रहे। संजोग से हमरा के अइसन कुवाटर मिल गइल रहे जेवना से हम अपना जोग संगी का नियरौं चोहँप गइलीं। ऊ शिक्षक इण्टर क परीक्षा उत्तीर्ण रहलन आ बी.ए. क परीक्षा देबे क तइयारी करत रहलन। हमनी का दूनो जाना एक ही संगे एक कुवाटर में रहे, बनावे खाए आ पढ़े-लिखे लगलीं जा।

ओ विद्यालय में ढेर शिक्षक आ छात्र लम्मे क रहलन। सभकरां सुविधा क खियाल कइके कुवार-कातिक में विजयादशमी, दीया-दीवारी आ गोधना का छुट्टियन के एक में मिलाई के एक महीना क अवकाश हो जा। ओ लमहरि छुट्टी में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभ अपना-अपना घरे चल जा। ओघरी विद्यालय परिसर में भम्म लोटे लागे। दुई मंजिला मकान में खाली कबूतरन चाल-चलबल रह जा। विद्यालय का ओ लमहर चाकर मैदान में खाली गदहा बिचरे लागसु। छुट्टी आ गइलि। हमनी का घरेना गइलीं जा। अउरी सभ अपना-अपना घरे चल गइल। जहवाँ पाँच-छव सइ आदमिन क मेला लागे आ छात्रावास शिक्षकावासन में चौबीसो घंटा सइगो छात्र-शिक्षक हीरल रहसु तहवाँ हमनी का दुई मुरुगी रह गइलीं जा। दुई-तीन दिन ले ऊ स्थान झनझन करत रह गइल। चारू ओराँ स्मसान क सुनसान छा गइल रहे। सुनाय कि शिक्षकन क कुवाटर कबुरिस्तान पर बनल ह आ ओकरा पजरें गढ़ी क छतरी रहे जेवना में गाँव का ठाकुर साहब का कुल -खानदान का मृतकंन के फूँकल जा आ उनुकर राखि धरती माता का गोदी में संचलि जा। हमनी का दुकेला भइला क एतना महातिम रहे कि हमनी का ओहिजाँ बे डरि-भय क बेगम परल रहलीं जा आ ओ शान्त, एकान्त आ निर्जन स्थान का वातावरन में हमनी क पढ़ाई-लिखाई खूबहिन डँट के भइलि। हमनी क मन पढ़े-लिखे में अइसन रमल कि "मास जात नहिं लागहि बारा।" छुट्टी क ऊ महीना बहुत शान्त सुखद बीतल।

छुट्टी बितलि। विद्यालय, छात्रावास आ शिक्षकावास में पहिले मतिन मेला लाग गइल। आ सभकरा कपारे पर पढ़ऽ पढ़ावऽ क धुनि सवार हो गइलि। समय पर विद्यालय का छात्रन क परीक्षा भइलि। हमनियों का दूनो संगी परीक्षा दिहलीं जा। शिक्षा-परीक्षा क ऊ सत्र-सालि खतम हो गइलि। विद्यालय हर सालि मतिन बीस मई के बन्न हो गइल। घर का पयान बदे हँसी-खुसी से सबकर बन्डल बन्हा गइलन स। दूर देश आ लमहरि जातरा पर रहत हमरा ए तन का छन भंगुरता क चेतना परे। हम त बराबर ए जीवन का बारे में ई हे सोचता रह गइलीं। कि "आए और चला जाए यह तो कोई तूफान नहीं है।" हम का ? हमरा त ई हे बुझाता कि हमनी का सभे ई हे समुझि-बुझि के एह दुनियाँ का टन्ट-घन्ट में बाझल-अझुराइल बानी जा।

अलसीसर से झुनझुनू चोहँपे बदे ऊँट का सवारी क जोगाड़ रहे। संस्कृत शिक्षक शास्त्री जी बलिया जिला क रहलन आ हेडमास्टर साहब छपरा क। हमनी का साथे जातरा करे के रहे। ऊ लोग ऊँट पर बइठ के कई तोर आवत-जात ढीठ हो गइल रहे। हम ओ सवारी से एकदम अनगइयाँ रहलीं। हमरा के बुझा कि ओपर बइठके आसमान पर टँगाए के बा। डरपोक ना कहाए बादे ओ जवानन का संगे ई लँगड़ो देवालि फाने बदे तइयार रहली। हम अपना मन क दुगदग केहू से जाहिर ना कइलीं। शास्त्री जी अपना लरिका का संगे एगो ऊँट पर बइठ गइलन आ हेडमास्टर साहब दुसरका पर।

ऊँट पर बइठे क रंग ढंग ओ लोग क देख के हेडमास्टर साहब का पाछे ओही - ऊँट पर हमहूँ बइठे गइलीं। अपना-अपना मालिकन का इसारा पर आगे-पाछे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओरम के ऊँट ठाढ़ भइलन स आ हमार लिलार साहब क माथा का पछिला भाग से जा टकराइल। हमरा ओछराहे घाव लागल। हम लिलार सुहुराइ के चुप लगा गइलीं। ऊँट चले लागल रहलन स। हमनी क माथा झकझोरात आसमान में हवा खाये लागल रहलन स। ऊँट का सवारी के जेवन भय-खुटुका हमरा मन में रहे, ऊ कुल्ह खतम हो गइल रहे। ओ रेगिस्तानी जहाज पर हमरा के मजा मिले लागल रहे। ओघरी रेगिस्तान में ओही सवारी क गतागमि समुझलि जा। हमनी का ऊँटन से झुनझुनू चोहँप के रेलगाड़ी धइके लोहारू होत दिल्ली पहुँच गइलीं जा। दिल्ली तूफान मेल पकड़ीं के आ मुगलसराय आ गइलीं जा। हम ओहिजें ले दिलदार नगर खातिर गाड़ी धइलीं आ हेडमास्टर आ शास्त्री जी बनारस कैंट जाइके छपरा बलिया बदे। हम जुलाई सन् १९४६ में जेवना अपना घर गाँव से चलल रहलीं, चलत-चलत मई,सन् १९४७ में ओहिजे फेरु चोहँप गइलीं। ई धरती गोल ह। गोलमटोल क एकरा रपटा ह।

घरे चोहँपते हम बाबा, बाबू आ माई क गोड़ लगलीं। हम देखते माई जी भाव-विहवल हो गइली। उनुकर कंठभर आइल। किछुबेर ले हमार मुँह निहारत रह गइलीं। फेरु असीसे लगली। दउरि के हमरा हाथ गोड़ धोवे बदे पानी लेई आइके धइदिहली। हाथ-गोड़ धोवते हमरा के मिट्ठा पानी दिहलीं। उनुकर सनेह-सनल मधुर सीतल जल के पी के कई दिन क पियासल हम तृप्त हो गइलीं। चित्त के बहुत शान्ति मिललि। चारपाई पर ढरकल तन-मन से सुहुताए लगलीं। एतने में पल मारत-मारत माई हमरा के बोलवली। हम रसोई-घर में जा के पीढ़ा पर बइठ गइलीं। हमरा आगे परोसलि थारी आ गइलि। सुच्चा भइँसि का गमगमात सोन्हघीव में चभोरलि गरम-गरम रोटी, तरकारी आ चीनी डाललि दही खाइके हम मस्त हो गइलीं। दुइराति क जागल रहली। मन सच्चा भोजन कइके गहरी नींनि में फोइँ-फोइँ सूतलीं। बाकी जातरा क थकानि राति खानी सूतले पर दूर भइलि।

हम बाहर जाइके नोकरिहा होइके लवटल रहलीं। सभ केहू हमार मन जोगवे। कवनो काम बदे केहू हमरा के ना अरहवे। हम रुपया-पइसा ले आइके घर का बेकतिन के ना देले रहलीं। हमार कमाई आत्म-निर्भरता रहे आ ई ओही क असर रहे। हम अपना बले खाए-पीए, ओढ़े-पहिरे, पढ़े-लिखे आ कतहीं आवे-जाए क खर्च चलावे लागल रहलीं। माई जी का छोह-मोह का गाँछी तरे ओ गरमी का महीना क हमार छुट्टी क दिन ठाट से बीते लगलन स। एक एक दिन क आँतर देइके माई बीतल दस महीनन का तेवहारन का संतिर पकवान बनाइ के हमरा के खियावत जासु। एकरा नेवरती ऊ अगते ले कुल्ह सामान जुटा-जोगा के धइले रहली। ऊ माई आ उनुकर छोह-मोह धनि रहे। हस़रा मेहरारू नत हमरा जयपुर का जातरा पर जाए का बेराँ रहली आ ना त अइला पर। हमरा घरे अइला से अगतहीं उनुकरा महतारी बाबू किहाँ ले हमरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के ओ लोग किहाँ एक-दुइ दिन बदे भेजें खातिर चिट्ठी आ गइलि रहे। बाबू-माई का हरनठला पर हम एक दिन बदे ससुरारी गइलीं। ओहिजाँ एक दिन रहलीं, बाकी हमनी का मरद-मेहरारू अपना माई-बाबू, सासु-ससुर आ लोक का लाजिवश आपुस में बोल-बतिया आ मिल-जुल ना सकलीं जा। हम एक-दुइ दिन रहके अपना सासु-ससुर क आसीस लेइके घरे लवट अइलीं।

गिनल दिन क का थाती? एक-डेढ़ महीना का गरमी क ऊ महीना एक-एक दिन कइके बीत गइल। जयपुर का जातरा बदे हमार बन्डल बन्हा गइल। हमरा पयान के सोचते माई क आँखि ढबढबा गइली स। कहली-बचवा जाँगर ठेठवला आ रोग से देहि थाकलि जाति बा आ तूँ लम्मा ठेके जात बाड़ देखीं, फेरु एही तरे भेंटि होले कि ना। हम अपना ओघरी का सनक सुर में ललकरलीं-हमनी खातिर बहुत कइलू आ अबे बहुत करबू। अइसे आपन जीउ थोर मति करऽ। तूँ हमरा मन में अमर बाड़ू आ रहबू। तोहार ई जीवन ठठे में ना जाई। बहुत कइलू आ अबे करबू। तोहरा मतिन जीवन का बारे में कहल गइल बा कि "आए और चला जाए यह तो कोई तूफान नहीं है।" फेरु तोहार दर्शन होई आ तोहारि मनसा पूजी। उनुकर चेहरा हरियराइ गइल। कहली-"ठीक बा, भइया! इहे चाही। जा जहवाँ रहऽ, तहवाँ जीयत-जागत रहऽ आ समय पर हँसी-खुशी बहुरे क भागि भइलि करो।"

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूरख मनंहिं न चेत

पाँच आ छव जुलाई, सन् १९४७ के बाबा आ माई-बाबू क गोड़ लागके राजस्थान जातरा पर चल दिहलीं। हमरा के ओहिजाँ का हवा-पानी से बहाल आ पढ़ाई-लिखाई क सुविधा-सुतार देख-सुन के माई निहाल रहली। काहेंकि अउरी-सभ निहारे मोटरी आ माई निहारे पोटरी। ओ सालि का जातरा में हम अकेल ना दुकेल रहलीं। हमरा साथे एगो अगड़धत्त विद्यार्थी लाग गइल रहलन। ऊ ओ दयाद काका क एकलउता सपूत रहलन जेवन पहिले-पहिल हमरा के विद्यामंदिर क दर्शन करवले रहलन। ओ विद्यार्थी का बाबा का आसरा रहे कि छात्रावास में रहला पर उनुकर नाती पढ़-लिख जाई। हम हूँ काका का रिन से उरिन भइल चाहत रहलीं। अउरी सभ केहू हमरा के बरजल-"ओतना लम्मा पढ़े बदे ए बबई के ले गइल बेकारबा एके दसन बरिस स्कूल में जात हो गइल आ ई दुइ-तीन का दरजन के ना पास कइ सकल। ई ऊ मूरख ह जेवन मूरख मनहिं न चेत जो गुरु मिलहिं बिरंचिसम।" एकरा के संगे ले गइला पर तोहरा हाथे अपजसे लागी।

हम ओ परिवार का एहसान से एतना चँताइल रहलीं कि हमरा से 'ना' कहत ना बनल। विद्यार्थी जी हमरा गरे लाग गइलन। ऊ कुल-खानदान का नाते हमार भाई लागसु।

हमनी का दूनो भाई जातरा क आपनि-आपनि मोटरी-गँठरी लिहले दिलदार नगर जाइके रेलगाड़ी धइलीं जा आ दिल्ली जा चोहँपली जा। ओहिजाँ ले रेलगाड़ी धइके लोहारू का रास्ते झुनझूनू रेलवे स्टेशन पर उतर के आपनि रेल-जातरा खतम कइ दिहलीं जा। फेरु ऊँट-गाड़ी पर चढ़ बइठि के रातिभर चलके सात जुलाई के सबेर ही जे.के. हाई स्कूल का शिक्षकावास का परिसर में हाजिर हो गइलीं जा। देरना लागलि, हमनिएँ मतिन ओ विद्यालय परिसर में अउरी सभ शिक्षक आ छात्रो आपनि हाजिरी दाग दिहल। सुनसान परल ऊ विद्यालय, छात्रावास आ शिक्षकवास गुलजार हो गइलन स।

हमनी का दूनो पहिलका संगी अगतें का सालि मतिन पहिलके कुवाटर में एकसंगे रहे लगलीं जा। हमनी का संगे हमरा संगी क एगो दयाद भाई शिक्षक भइला का बाद हमनिये का संगे रहे लगलन। पढ़े-लिखे का सुविधा से हमरा संग क विद्यार्थी हमनिये का संगे कुंवाटर का एगो कमरा में रहसु आ भोजन छात्रावास का भोजनालय में कइ आवसु। शिक्षकन का जाँच आ हेडमास्टर का राइ-बाति से उनुकर नाँव तीसरी कक्षा में लिखा गइल। अपना उमिरि, कद-काठी आ पहनावा से ऊ कक्षा का अउरी लरिकन के धाहे लगलन। पढ़े-लिखे में ऊ अउवल ना रहलन, बाकी एह मामला में सरनामी हो गइलन। अनखुनाही-रोरा ही कइके ऊ लरिकन के गहिराहे धमकाइ देसु।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ हमार भारी सिर दर्द हो गइलन। एगो मास्टर क भाई भइला आ संगे रहला से उनुकर बल अउरी बढ़ जा। हम उनुकरा के कई तोर समुझा वलीं–हमनी का परदेश में बानी जा। गों–विचार से रहला पर मान–मरजादा रही। एहिजाँ आपन निम्मन बाति–बेवहारे बल बा। तोहरा लरिकन का संगे मिल–जुल के रहे के चाही। जो कवनो लरिका के कुठावें मार देबऽ आ ओकरा जान लेवा घाव लाग जाई त हमनी का बवाल में पर जाइब जा। जो तूँ रोज एगो कांड करत रहबऽ त एक दिन तूँ बनाइ–बनाइ के खनइबऽ, आ हमरा के बे पानी क करबऽ। बाँड़ो जइहन आ नौ हाथ क पगहो ले ले जइहन।

उनुकरा के लाख समुझवली, बाकी ऊ अपना रहनि चालि से बाज ना लाचार होइके, उनुकरा के ताड़न क अधिकारी जान के एक दिन धोह बान्ह के अइसन हाँप–हूँफ कइलीं कि ऊ अदंक गइलन। ओकरा बाद छोट–छोट लरिकन से लागल–बाझल आ उनुकरा के मारल–धकियावल बन्न कइ दिहलन। तबो लम्मे ले अउरियाही कइके ओ लोग के तंग करे बदे किछु न किछु रचत रहसु।

शिक्षकन का संगे रहत ओ विद्यार्थी का हिन्दी खड़ी बोली बोले क रपटा पर गइल रहे। उनुकर बोली सुनके, उमिरि क अनुमान कइके, देह–धजा देखके अनगइयाँ लोग उनुकरा के कालेज का छात्र बूझे। हमनी का संगे एगो नया शिक्षक सिंह जी रहे लागल रहलन। जब उनुकरा से केहू पूछ दे–"इहाँ का कवना दरजा में पढ़ी लाँ ?" तब ऊ झट दें मजाक में कह देसु–"थर्ड ईयर में।" ईहाँ का कालेज में पढ़ीलाँ तब एहिजाँ कइसे ? "रायजी क भाई हउवन। आवत–जात रहेलन।" थर्ड ईयर क छात्र कहइला से ऊ विद्यार्थी महाराज बहुत खुश रहसु। ऊ हो अपना के थर्ड ईयर क छात्र बतावे लगलन। एकाद तोर हम उनुकरा के समुझवलीं कि तोहरा के मजाक में ई कहल जात बा। तोहरा अपना के थर्ड ईयर क छात्र ना कहेके चाही। ऊ हमरा बाति के ना समुझलन आ मनलन। उनुकरा अपना के थर्ड ईयर क छात्र कहल–कहवावल निम्मन लागे।

जब 20 मई के विद्यालय बन्न भइला पर घर–गाँव खातिर लवटानी जातरा होखे, तब हम जेवँ भोजपुरी क्षेत्र में पहुँचीं तेवँ भोजपुरी भाषी लोग से भेंटि होते भोजपुरी भाषा में बोले–बतियावे लागीं। अइसन अपने आप हो जा। हमरा के एमे कवनो अटक ना होखे। एनापारी का लवटानी जातरा में ऊ विद्यार्थी महाराजो साथे रहलन। जब भोजपुरी भाइन से भेंटि होखे लागल तब ऊ उनुकरो से खड़ी बोलिए में धड़धड़ाइ के रोब से बोलसु। हम टोकलीं–"हमनी का अपना क्षेत्र में आ गइलीं जा। ए आदमिन से अपना घरऊ बोली में बतियावे क जरूरति बा।"

"भइया! हमरा एही के रपटा पर गइल बा। हमरा घरवा क बोलिए भुला गइलि बा। हमरा के हिन्दी बोले द।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बउराह हउवऽ। घरे ई हिन्दी बोल बऽ त मारऽ, मारऽ होई। गँवई घर-परिवार का मरद-मेहरारून का बाउर लागी। जे हिन्दी में बोले ओही से ए भाषा में बतियावे के चाही।"

"भइया! तूँ बूझत नइखऽ। एकरा बोलला से निम्मन पढ़ल-लिखल लागत बानी। हमरा के बोले द। एकरा बोलला से हमरा घर का परानिन का विसवास हो जाई कि लम्मा जाइके खूब पढ़ले बानी आ पढ़वइया-लिखवइया मतिन बोले-चाले क हमरा बढ़िया लूर-सहूर हो गइल बा।"

हमरा उनुकर समुझावल जबून लागल। हमरा से किछु रोसियइला मतिन बोला गइल-"हम का बूझीं? तूँ बूझत बाड़ न?"

"त हम का करी?"

"जइसनि तोहारि मरजी?"

ऊ चुपा गइलन। हमनी का दूनो जाना आपनि जातरा ओरबाइ के अपना-अपना घरे चोहपि गइलीं जा।

दूसरा दिने सबेर हीं ऊ विद्यार्थी महाराज हमरा घरे आइके ओरहन

दिहलन-"भइया! तोहरा संगे गइल हमरा के काल हो गइल। बाबा हमरा के दुवार पर ठाढ़े नइखन होखे देत।"

ई सुनते हमार जीउधक् दें हो गइल! ई नउबति काहें? बुझाता, ई बबई बाबा का सोझाँ हमरा के मुँह देखावे जोग ना रहे दिहलस। कहवाँ रिन से उरिन होखे गइल रहलीं हँ कि अब माथे कलंको थोपाई। रोजा के गइलीं, नमाज परल गरे। बड़ा हियाव कइके पूछलीं-"का? हो! का बाति ह?"

"काल्हि दुवारें चोहँपते गठरी-मोटरी धइ के बाबा का गोड़ लगलीं। ऊ निहार होइके आसीरबाद दिहलन। आगे हमरा जीउ -जाँगर आ पढ़ाई क सर-समाचार पूछलन। जेवं हम स्कूली भाषा में तीसरा दरजा पास भइला क उनुकरा के खुसखबरी सुनवलीं, तेवँ ऊ जर के झंगार हो गइलन आ आगि उगले लगन-'ससुर तीसरा दरजा पास करे बदे बिलाइत भेजल रहलन हँ। ओहिजाँ ले आइके हमरा पर रोब जमावे बदे अरबी-तरबी झारत बान का तोहरा मतिन पढ़निहार नइखीं देखले? पाड़ा कहीं का। सोझां ले हटजा ना त जूतन मार के तोहार मँगास फोर देइब।"

एतना कहत ऊ अपना के रोक ना पवलन पनही लेइ के हमरा के मारे दउर परलन। हम गँठरी-मोटरी लेइके बखरी का आंगन में परा गइलीं। तबे ले हमरा समुझी में नइखे आवत कि हम कइसे उनुकरा सोझां जाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भेद खुलते हमार जीउ हलुका गइल। कहलीं–"उपाइ का बतावे के बा? अरबी–फारसी मति बोलऽ।"

"हम असक्कां परल बानी। इहे बोली पावत बानी। हमरा से आपनि घरऊ बोली बोलाती नइखे।"–ई कहत उनुकरि आँखि छलछला गइली स।

अपना एगो भाई क ऊ दीन दशा देख के हमरा दया आ गइलि। हम उनुकर आँसू पोछलीं–"अउँजा जनि। आसमान में बदरि घोहसे ले आ अन्हार छा जाला। बुझाला, दिन में अमवसा क राति छा जाई; बादरि फाटे लागेले अंजोर हो जाला। एमे केतना देर होले? तोहरा ई रोग एकाद हफ्ता में अपनहीं भाग जाई। अधीर जनि होखज ए बीच बाबा से बरक के रहऽ जा।"

दुई–चार दिन बाद उनुकरा बाबा से भेंटि भइलि। पलागी करते ऊ कहलन–"हमरा विद्यार्थी उसों ओतना लम्मा पढ़े ना जइहन ई पढ़े लिखे वाला ना हवन।"

"का उनुकर पढ़ाई छोड़ाइब?"

"अबे छोड़ावे के मन नइखे; नात उनुकरा देही हरदी ना लागी।"

"अब उनुकरा के कहवाँ पढ़ाइब?"

"संस्कृत–पाठशाला क गुरू जी लोग कहिए क हमरा घर का केहू लरिका के पढ़ावे बदे चोकवासल ह। उनुकरे के भेज के ओ लोग क साध पूजाइब। हमरा बापे देव के ऊ लोग पढ़ाओ। जो ओहिजों क पढ़ाई पढ़ जइहन त कवनो बाति ना रही। चहिहन पंडिताई–पुरोहिती क कारबार करिहन आ चहिहन कतहीं संस्कृत क मास्टर बनवा देइब। ए पढ़ाई में लागे के का बा? आई आम, चाहे जाई ल बेदा।"

हम बाबा का बाति क जोरदार समर्थन कइलीं–"ठीक सोचतानी। उनुकरा पर ओ लोग क मंतरि काम दे सकेले।"

बाबा तुरंते हमरा बाति के काट दिहलन–"ओ लोग क का? उनुकरा पर ब्रम्हो क मंतरि काम ना देई। गोसाई जी बड़ा ठोक–ठेका के कहले हउवन–मूरख मनही न चेत जो गुरू मिलहिं बिरंचि सम।"

हम बाबा क पलग्गी कइके घुसुकलीं। एही में हमार कुशल रहे।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहवाँ चाह तहवाँ राह

सन् १९४७ क बरिस हमरा के बड़ा शुभ आ उत्साह देवइया बुझाइल। हमार हाथें हाईस्कूल क प्रमाण-पत्र लाग गइला से हमार मनोबल बढ़ल हमारि शैक्षिक बढ़लि आ हमार वेतन बढ़ल। हमरा के आठवीं कक्षा तक हिन्दी पढ़ावे बदे घण्टा देवे में हेडमास्टर के कवनो झटक भटक ना रह गइल। हम ओ विद्यालय में निर्विवाद हिन्दी शिक्षक हो गइलीं। ओ विद्यालय का सभ शिक्षकन ले हमारि हिन्दी-योग्यता अधिक माने जाए लागलि। ओही सालि स्कूल के हाईस्कूल क मान्यता मिल गइलि आ नउवीं कक्षा चालू हो गइलि। हाईस्कूल का दरजन के पढ़ावे बदे प्रशिक्षित योग्य शिक्षकन का नियुक्ति बदे विज्ञापन भइल। अध्यापक ना मिलला से जुलाई अगस्त में नियुक्ति ना हो पावलि। हमरा के नउवीं कक्षा क हिन्दी क काम चलाऊ शिक्षक बना दिहल गइल। हम एसे अपना के हाली से हाली प्रामाणिक योग्यता वाला हिन्दी शिक्षक बनावे का उतजोग में पर गइलीं। हम प्रयाग का हिन्दी साहित्य सम्मेलन क उत्तमा परीक्षा यानी साहित्य रत्न क परीक्षा उत्तीर्ण कइल चाहत रहलीं; बाकी ओ हालति में पंजाब का विश्वविद्यालय से होखे वाली हिन्दी प्रभाकर क परीक्षा हमरा के बहुत सरल, सुरेब आ सुतरगर बुझाइलि। ओहू से पंजाब आ राजस्थान में हाईस्कूल क प्रामाणिक योग्यता क शिक्षक बनल जा सकत रहे। हम मनगुमे स्कूल से अनुमति लिहल ओ परीक्षा बदे आवेदन-पत्र जमा कइअइलीं आ ओकरा नियत समय पर रेवाड़ी परीक्षा केन्द्र से परीक्षा दे दिहलीं।

ऊ हमारि सालि बहुत सुख चैन से बीतल। हम चार बजे भिन्सहरें उठ जाईं। फर-फराकित होइ के दुई घंटा डटके आपनि-पढ़ाई-लिखाई करीं, एक घन्टा पढ़ावे वाला पाठन के पढ़के पढ़ावे क तइयारी करीं। एकरा बाद नहाई-धोईं, अपना संगी शिक्षकन का संगे भोजन बनवाईं-खाईं, आ स्कूल में पढ़ावे जाईं। हम चार बजे का बाद अपना कुवाटर में आईं आ किछु जलपान कइके खेल का मैदान में उतर जाईं। नामी खेलाड़ी बनल हमार उद्देश ना रहे। हम व्यायाम कइके आपनि स्वास्थ्य-रक्षा आ मनोरंजन-चाहीं। खेलला से पढ़ला-पढ़वला क दिनभर क थकानि मेटा जा। संझा में किछु न किछु दण्डो-बइठक लगवला क रपटा बनवले रहीं। जहिया कवनों खेल खेले के संजोग ना रहे तहिया करीब मीलभर क दउड़ लगा देईं। विजया दशमी आ दीपावली का लमहरि छुट्टी का बाद एगो प्रशिक्षित स्नातक आ एगो हिन्दी स्नातकोत्तर अध्यापक नियुक्त हो गइलन। प्रशिक्षित अध्यापक हाईस्कूल का छात्रन के भूगोल पढ़ावे लगलन आ स्नातकोत्तर हिन्दी। एकरा अतिरिक्त ओ लोग के हाईस्कूल क अउरी विषयो पढ़ावे बदे दियाइल। अप्रैल बीतला पर मई में ओ लोग क अगलीं सालि ले ना आवे क रंग बुझाए लागल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पढ़त-पढ़ावत, खेलत-खात दिन आ महीना बीतत गइलन स। एहीं में हम पंजाब का रेवाड़ी परीक्षा केन्द्र से पंजाब विश्वविद्यालय क हिन्दी क परीक्षा दिहलीं आ मई ले अगतहीं ओकर परीक्षा-फल प्रकाशित भइल। हम उत्तीर्ण हो गइलीं। जे.के. हाईस्कूल का छात्रन क वार्षिक गृह परीक्षा मई-अप्रैल में भइलि आ बीस मई के परीक्षा-फल सुना दिहल गइल। हमरा संग के विद्यार्थी महाराज अपना बलें तीसरी कक्षा क परीक्षा पास हो गइलन।

सांझि खानी हमनी का, हेडमास्टर साहब, शास्त्री जी आ उनुकर लइका एक संगे ऊँटन क सवारी कइके अपना-अपना घरे पहुँचे बदे रेलगाड़ी पकड़े खातिर झुनझुनू के पयान कइलीं जा। ऊ हमरा आसरा क बरिस रहे। काहें कि जेके पढ़े-बदे हाईस्कूल क मुँह देखे क भागि ना भइलि रहे, ऊ हाईस्कूल में पढ़ावे क सपना देखे लागल रहे आ ऊ सपना लम्मा नियराँ सच होत लउके लागल रहे। ओ सालि हम पंजाब आ राजस्थान का हाईस्कूल में हिन्दी शिक्षक होखे बदे नियत कइल गइलि प्रामाणिक योग्यता बना लिहले रहलीं। ओ सालि हमरा के हाईस्कूल में दुई-तीन महीनन ले पढ़ावे क मौको मिलल रहे। एसे हमारि आशा-लता झमरि के पलुह उठलि रहे आ हमरा के जहवाँ चाह तहवाँ राह लउके लागलि रहे।

गरमी का छुट्टी क दिन-महीना, माई का हाथ क नीक-नोहर पक्वान आ गरम-गरम रोटी-लिट्टी खात, मनोवांछित भोजन चाभत, अइसन बितलन सकि ओहन का बीते में बुला छनो भरक बेलम ना भइल। पछिली सालि मतिन माई-बाबू का कहला पर एक दिन बदे ससुररियो चल गइल रहलीं। हमनी का मरद-मेहरारू का अपना ससुर-सासु आ माई-बाबू का लाजन आपस में बतियावे आ भिले जुले क हियाव ना भइल। पाँच जुलाई, सन् १९४८ के हम पढ़ाई-लिखाई क सुबेंवत-सुतार देखके हम अपना माई के साथें राजस्थान लेत गइलीं। हमनी का सात जुलाई के सबेरे अलसीसर चोहँप गइलीं जा।

अपना ओ विद्यालय में हाईस्कूल क नउवीं आ दसवीं दूनो कक्षा चले लगली स। प्रशिक्षित स्नातक आ स्नातकोत्तर शिक्षक दूनो जाना ना अइलन जा। विद्यालय क एगो शिक्षक भूगोल लेइ के बी.ए. हो गइल रहलन। ऊ हाईस्कूल क भूगोल शिक्षक हो गइलन आ हम हिन्दी-शिक्षक। ओ सालि हमरा के साफ सच बुझा गइल कि जहवाँ चाह तहवाँ राह।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कलियुगे संघे शक्ति

जानकीदास केजरीवाल (जे.के.) हाईस्कूल, आलसीसर, जयपुर सेठ का निजी खर्च से चले। ओकरा खरच-बरच से सरकार आ जनता का कवनो किछु लेना-देना ना रहे। ओमे निःशुल्क शिक्षा रहे। दूसरा गाँवन का छात्रन के निःशुल्क छात्रावास-व्यवस्था ठहरे बदे रहे। उनुकरा खाली आपनि खोराकी चुकावे के परे। ऊ चार-पाँच रुपया मासिक परे। भोजनालय में भोजन पकावे क सामान-हंडा, कराहा, कंडाल, बेलन, चउकी, कलछुलि, जलावन आ नोकर-चाकर-का खरच-बरच क भार सेठ जी उठावसु। सुने में आइल रहे कि कहियो ऊ खोराकियो चुकता करसु। उनुकरा कोठी से उनुकर मुनीब जी एकर हिसाब-किताब राखसु आ खरच-बरच क रुपया-पइसा चुकावल करसु। कहे बदे मुनीब जी प्रबन्धक रहलन। स्कूल क पूरा प्रबन्ध हेडमास्टर का जिम्मा रहे। सेठ जी कबो भागे जोगे गावें आ जासु। पत्र द्वारा सेठ जी से राइ-बाति कइके हेडमास्टर स्कूल चलावल करसु।

देखत-सुनत आ सोचत समुझत स्कूल का शिक्षकन के बुझाए लागल रहे कि सेठ के खुश कइके आपन मतलब गाँठि बदे हेडमास्टर शिक्षकन का हितक बलि देबे से बाज नइखन आवत। परतंत्र भारत में हेडमास्टर का सोझां ठाढ़ होखे क हिसाब शिक्षकन का कबो ना भइल रहे। स्वतंत्र भारत में उनुकर स्वाभिमान जागल। ऊ स्वतंत्र आकाश में पंख फड़फड़ावे बदे कनमनइलन। ऊ एकजुट होईके आपनि माँगि लेइके हेडमास्टर का सोझां ठाढ़ हो गइलन। ऊ मामिला टरकावल चहलन। ऊ टरकल ना। शिक्षक-समाज आपनि माँगि ना मनइला पर हड़तालि पर उतारू हो गइल। हड़तालि आदर्श, नैतिक आ अहिंसक रहे। शिक्षक आपनि मांगि मनवावे बदे हेडमास्टर क सामाजिक बहिष्कार कइलन। उनुकरा से बोलल चालल एक बारगी छोड़ दिहलन। जे जे शिक्षक उनुकर छात्र रहल रहे, ओके ऊ समझाइ-बुझाइ, फुसुलाई आ धमकाई के हड़तालि से अलगाइ के शिक्षक एकजुटता के भंग कइल चहलन। ऊ केहू शिक्षक के अपना पक्ष में फोर ना पवलन। उनुकर कुल्ह दाव गयन्ना हो गइलन स। ऊ मुँह लटकवले महीनन ले गुरमुसात रह गइलन। हाईस्कूल का परीक्षा का तइयारी का समय किछु पढ़ाई-लिखाई के हमारि मददि कइले रहलन। हम उनुकरा के गुरू मानी। हमनी का दूनो जाना भोजपुरिया भइला से एगो दूसरा का नियराँ रहलीं जा। हमरा दयाद वकील काका आ हेडमास्टर साहब दूनो सेठ जी क खास आदमी रहलन जा। एसे ओ लोग में बड़ा बनाव रहे। हेडमास्टर अपना कुवाटर में बोलाइ के हमरा के बहुत किछु ऊँच-नीच देखवलन। उनुकरा सीलि-संकोच में परलो पर हम शिक्षक समाज ले बिलगाई के नक्कू बने बदे हुँकारी ना भइली। ऊ नाकि भौंह सिकोरत रह गइलन। हाँ, एतना जोर देई के कहलीं-जो रउवां के अपमानित करे क कवनो जोर-जतन कइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाई त ओमें हम संग ना देइब आ काम परला पर रउवों संगे हो जाइब। ए बाति के हम महँमहँ ना रखलीं, शिक्षकों लोग के साफ-साफ बता दिहलीं। हम व्यक्तिगत दबाव आ अपना लाभ-लालच का वशीभूत होइके शिक्षक-हित के अनगराहित बनावे बदे हमार मन कबो राजी ना भइल।

हमनी क हड़तालि चाक-कलमि चलावल बन्न यानी पढ़ाई-लिखाई क काम-काज बन्न कइल आ घेराव कइल जइसन जोर-जबरदस्ती क ना रहे। ऊ पूरा गांधीवादी रहे हमनी क मनसा कबो छात्रन का पढ़ाई पर असर डाल के आ अधिकारिन के घेराव से तंग कइके हड़तालि के जोरदार बनावे क ना भइलि। हमनी का शुद्ध-शान्त चित्त से हड़तालि चलवलीं जा। हमनी क खाली मनसा प्रबन्ध-तंत्र का दबाव, दोहन आ मनमानापन से शिक्षकन क बचाव कइल रहे। हमरा बुझाला कि ओ हड़तालि क भनक तक छात्र ना पवलन ना त शिक्षकन का पक्ष में किछु सगबगाइल रहितन। ओ विद्यालय का छात्रन का अध्यापकन खातिर बहुते श्रद्धा रहे। हेडमास्टर बदे ना त केहू मर्मबेधी शब्द बोलल आ ना त उनुकरा हियरा के करके-खटके वाली कवनो बाति केहू कहल, बाकी ऊ झूठे चिहूँकल करसु। हड़तालि तीन महीनन ले चललि आ हेडमास्टर शिक्षकन खातिर अनगराहित बनल रह गइलन। ए दौरान ऊ हमरा पर विशेष रोसियाइल रहलन। उनुकरा विश्वास रहे कि उनुकरा विरोध क कुल्ह मन सउदा हमरे कुवाटर में बनत बा आ ओमे हमार मुख्य हाथ बा। बाकी बाति ई रहे कि हमनी का तीन जाना एके संगे एगो कुवाटर में रहीं जा आ हमनी का राई बाति क हड़तालि का कार्यक्रम मे वजन रहे। अउरी केहू अपना कुवाटर में एकरा बारे में किछु राइ-बाति करे बदे कवनो बइठको करावे क हियाव ना करे। हमनियो का कुवाटर में शिक्षक समाज क बइठक होखे।

समाज-बहिष्कार, जाति-निकाला एगो बड़ सजा हऽ। हेडमास्टर एकरा के तीन महीना ले भोगत उबजियाइ गइलन। उनुकर मन तीन महीना ले शंका-सन्देह का भवँर में परल ऊभ-चूभ करत रह गइल। खीझि-खिनिस का आगि में ऊ सुलगत, उसिनात आ जरत रह गइलन। आखिसर ओ पुरहर अधिकारी सेठ आ हेडमास्टर का झुके के परल आ शिक्षकन क कुल्ह माँगि मान लिहल गइली स। ओइसन नैतिक आ आदर्श हड़तालि हमरा के ए लोकतंत्र का भारत में देखेके ना मिललि आ ना त मिलति बा।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खत क मजमूँन बाटे जबून

अलसीसर का ओ हाईस्कूल में पनरह दिन पर, महीना में दुइबार मिडिल स्कूल आ हाईस्कूल का छात्रन बदे हिन्दी आ अंगरेजी में वाद-विवाद-सभा भइलि करें। अध्यापक-पंजिका में लिखल क्रम से अध्यापक ओकर सभापति भइल करसु। करीब माघ मास रहल होई कि सभापति बने क हमारि पारी पर गइलि। सनीचर हमरा कपारे घहरा गइलन कि अंगरेजी भाषा में वाद-विवाद क बारी आ हमरा सभापति बने क पारी। ऊ पहिले पहिल कवनो सभा क सभापति बने क मौका मिलल रहे आ ओ में अंगरेजी में बोलल सौतुक रहे। भागल कादरता रहे आ अंगरेजी में भाषण झारल बिकट। कवनो तरे छात्रन का सोझा हीन बनल आ आपनि हँसी करावल हमरा पसन्न ना रहे। कपार छोलवते पत्थर-पानी कपारे परे जा रहे। मन दोविधा-दोचिता ही में परके परेशान रहे। एतने में हेडमास्टर साहब ललकरलन-"राय जी! भभरला क काम नइखे सभापति रउवें बने के बा। हम रउवां के पढ़वले-लिखवले बानी। राउरि योग्यता जानतानी। सोच-समुझि के दस वाक्य याद कइ लेईं। ई सुनते हमार आग-पाछ कइल बिलाइ गइल। हमरा आँखिन का आगे जेवन अन्हार क बादर धमसल रहे ऊ छनभर में फाट गइल। हम अपना स्मृति-पटल पर दस वाक्य टाँक लिहलीं।"

सभा शुरु भइलि। वाद-विवाद जमल। बस, सनीचर महाराज क हमरा पर टेढ़ी हाजिर। पोस्टमैन हमरा हाथ में एगो रजिस्ट्री कइल लिफाफा-पत्र देइके अपना रजिस्टर पर दस्तखत बनवलन। रजिस्टरी पत्र पवते हमार मन छुटबुदाए लागल। पता ना काहें, हम सोचे लगलीं-खत क मजमून, बाटे जबून। मन नहियों रहला पर हाथ मेज का हेठाँ कइलीं आ पत्र खोल दिहलीं। शोक क माहुर गर का हेठां ना उतरे दिहलीं। चिट्ठी गुमसुम जेब का हवा ले कइलीं। सभा का कारवाई में रुचिना रह गइलि। अपना नियत समय पर सभा समाप्त होखे लागलि। आखिर में हम अपना स्मृति-पढल पर टाँकल भाषण के सुनाइ के आपन गर छोड़वलीं। ओघरी हमरा सभा में बइठल ना सोहात रहे।

हम पत्र क समाचार ममहमें रहे दिहलीं। ओकर भेदना खोललीं। ओघरी हम अपना माई के ओ शोक समाचार से मर्माहत ना कइल चाहत रहलीं। मौका पाइके अपना संगी मास्टर लोग के ऊ गमी क खबरि दे दिहलीं।

ओ दिन अनमानाह क बहाना कइके हम राति खानी किछुना खइलीं। हमार संगी आ भाई, ई सभ खाई-पी के सूत गइल। राति का निचलावाँ माई क सुरुता हमरा के अइसन दबोचलसि कि हमारि आँखि लगबे न करे। हमरा ऊँघाई का लागो ? माई जी का रूप-रंग आ करनी क सूरति अवते आँखिन ले आँसुवन क धारा उमड़ि चले आ ओमे ऊ बहाति जा। बुझा, हम ओ निचलावाँ राति में झोंकर-झोंकर रोवे लागब। राति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में मेला लगावल हमरा कबूल ना रहे। अपना चउकी-बिछौना से उठ के कुवाटर का बहरवाराँ का बरामदा, ओसारा में टहरे-घूमे लागीं। किछु बेर में महँटियाइ के अपना के काठ बनाइ के चउकी पर जाइके ढह जाईं। ओ राति ऊँघाई लगबे ना कइलि। गमी क खबरि मिले में एतना बेलम हो गइल रहे कि घरे चोहँपे बदे जातरा कइल कवनो अर्थ ना राखत रहे।

जब गरमी का लमहर अवकाश बदे विद्यालय बन्न होखे में चारी-पाँच दिन रह गइल आ पढ़ाई-लिखाई का काम ले सम मुहँठ गइल रहे तब हम भाई का गंगा-लाभ क खबरि गों-विचार से अपना भाइयो के दे दिहलीं। 20 मई के स्कूल बन्न होते हमनी का दूनो भाई घर का जातरा पर चल दिहलीं जा। बाइस मई के हमनी का घरे चोहँप गइलीं जा। आँगन में जाइके ठाढ़ भइलीं। चारू ओर निहरलीं। हमार माई नालउकलीं जे हमरा जन्मे ले हमरा बदे अपना नेह क अकूत खजाना सच ले चल आवत रहे ऊहे लूट लिहल गइल रहे। हम आँगन में परलि एगो बँसहठा खाटी पर ढह गइलीं। माई जी का मुवत खानी उनुकर आखीरी दर्शन ना भइला क हमनी का दूनो भाई का पछतावा रहे। कवनो कोठरी में हमरा मेहरारू किछु करत रहली। ऊ ओहिजे ले झाँकि के हमनी के देखली आ पुक्का फोर के रोवे लगलीं।

माई हमनी का सेवा-सत्कार क पुरहर जिम्मेवारी हमरा मेहरारू के सऊँप देले रहलीं। ऊ हमनी का हकसल-पियासल भइला क अनुमान कइके आँखि पोंछत उठली आ हमनी का सोझाँ मिट्ठा-पानी धइ दिहली। एकराबाद हमनी के मन-माफिक भोजन बनावे खातिर कमर कसली। माई का रहते जेकरा एक कुल्हि क गमि-फिकिरि ना रहे, ओकरा अरहवले पर ई कुल्ह करे बदे दउरे, ऊ अपनही सभ किछु करे बदे अगुताइल रहे। माई का रहला पर जेवनि पतोहि अपना नइहर बराबर ठेकलि रहे, अब ऊहे उनुकर जिम्मेवारी मजे में कन्हियवले रहे। हम अइसन हरामी निकललीं कि अपना जिनिगी के बनावे-सवाँरे का लोभ लालच में परके कलवा कोस जा ठहरलीं आ माई का जिनिगी का आखीरी समय में उनुकरा मुवत खानी उनुकरा के आँट ना पवलीं, बाकी हमारि भागि कि हमरा मेहरारू माई का सेवा में कवनो कमी ना होखे देइ के हमारि अर्धांगिनी भइला क धरम-करम भरपूर निबहली। सुने में आइल कि माई क मल-भूत काछे में ऊ कबो नाकि ना सिकोरली आ ना तनिको असकतियइली। ऊ रूप रंग, भाव-विचार, रहनि चालि आ बाति-बेवहार क सुघर-साघरि आ सरल चित्तक हमारि मेहरारू धनि रहली जेवन ओघरी माई क भरपूर सौतुक सेवा कइके हमारि हँसाई आ निंदा ना होखे दिहली।

ओ सालि क जेठ असाढ़ ऊ पहिलका महीना रहलन स जेवना में माई का सनेह का झभरल बिरीछ का छाहाँ बइठ के बिछुवा-बिछुवा ठंढ़ा पानी में भेंवल आमन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाभत अपना महतारी से आपन सुख-दुख बतियाई ना पवलीं। हमरा मेहरारू हमरा सुख-सुविधा बदे सभ किछ करे बदे उजग रहलीं, बाकी लोक-लाजि आ बड़-छोट क लिहाज कइके हमरा से बोले-बतियावे क हियाव न कइलीं।

राजस्थान जाये क नियत दिन हमरा कपारे आ धमकल। ओ सालि ओहिजाँ जाए क हमरा हुलास ना रह गइल रहे, तबो जीवन का माई का सोझाँ बनावल कार्यक्रम में कवनो भीरिंगा डालल पसन्न ना परत रहे। एसे राजस्थान में एक बरिस अउरी रहेक आपन निश्चय ना छोड़लीं। हमारि नाया-नोचरि लजाधुरि आ बाहर-भीतर ना निकले पइठे वाली मेहरारू अकसरुवा पर गइल रहलीं। उनुकरा मनसायन बदे हमरा भाई के गाँवे रहके पढ़ल-लिखल जरूरी हो गइल। उनुकरा के अपना संगे ना ले जा सकलीं।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनइच्छित आवे बरियाई

अगतें का सालिन मतिन सात जुलाई के अलसीसर का हाईस्कूल में उपस्थित हो गइलीं। सन् १९४८ रहे। जे शिक्षक का संगे शुरू में ले बनावत खात चल आवत रहलीं, ऊ बी.ए. हो गइला पर एल–एल.बी करे बदे जयपुर जाइके ओहिजाँ का कालेज में आपन नाँव लिखवाइ लेले रहलन। ऊ हे कालेज बाद में जयपुर विश्व-विद्यालय हो गइल। हमरा ओ हाईस्कूल क कईगो बरिष्ठ शिक्षक ओहिजाँ ले घसक गइलन जेवन कि हमरा से बहुत बनाव राखसु। हम ओहिजाँ तीन–साढे तीन बरिस रहके हाईस्कूल, हिन्दी प्रभाकर आ हिन्दी साहित्य रत्न कई गललीं। हम उत्तरो प्रदेश का हाईस्कूल में हिन्दी शिक्षक होखे जोग हो गइल रहलीं। हम एनिए कतहीं घर का नजदीक का कवनो हाईस्कूल में शिक्षक होईके अपना परिवार क पुस्तइनी खेती-गिरहत्ती के ठीक–ठाक कइके परिवारिक आर्थिक दशा सुधारल चाहत रहलीं। माई का परलोक चल बसला से हमरा मेहरारू अकसरुवा पर गइल रहली। उनुकरा कपारे परिवार क घरऊ पुरहर काम सम्हारे क भीरि भड़क्का क पहाड़ आ परल रहे। हमरा कवनो सामाजिक–साहित्यिक काम अपने जिला–जवार में कइल पसन्न रहे। ए बटुराह कारनन का मारे हमहूँओ अलसीसर का हाईस्कूल के छोड़ के अपना जिला जवार में आ जाए बदे आतुर हो गइलीं। जयपुर रियासत का भारत में समा गइला पर ओहिजां क कुल्ह विद्यालय राजकीय होखे जात रहलन आ होऊ गइलन। हमरा बुझाए लागल रहे कि राजकीय सेवा का लोभ–लालच में पर के हम ओहिजें क अहथिर पाहुन हो जाइव आ हमार घर–गाँव का जिला–जवार से लगाव कहियो ना रह जाई। ओघरी अपना ओराँ उत्तर प्रदेस में नाया–नाया हाईस्कूल खुलत जात रहलन स। ओहन में कतहीं न कतहीं हिन्दी–शिक्षक हो जाए क सुबेंवत–सुतार लउकत रहे। ए कुल्ह का देखते ओहिजाँ रहे में अपना के कवनो मजा ना लउकत रहे। बस, एक बरिस अउरी ओहिजाँ काट लिहल चाहत रहलीं।

राजस्थान में रहे क हमरा ऊ चउथका बरिस चलत रहे। ओ सालि हम चारू ओराँ ले मन बटोर के खाली पढ़ला–पढ़ावल आ अपना आगे का जीवन का बारे मं किछु अहथिर सोचे–समुझे में समया लगावल चाहत रहलीं। एह सालि लमहरि छुट्टी में एकाद तोर घरहूँ चोहँपे क मन बना ले ले रहलीं।

बाकी ए दुनिया आ एकरा नियति के का कहल जाऊ? अगस्त क महीना बीतल रहे कि सेठ जी क खैरखाह हेडमास्टर पछिली सालि क मास्टर के दिहलि सुविधन क कटौती कइ दिहलन। एपर शिक्षक भड़क गइलन आ एकर विरोध करे बदे पछिली सालि मतिन हमरे कुवाटर में बुटराइ गइलन। एक बदे ऊ हमरा से किछु पूछबो–जँचबो ना कइलन। सभकरा बटुराइ गइला पर अलग–अलग रहलो पर हमरा सभकरा बइठे क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इंतजाम करहीं के परल। शिक्षकन का चेरउरीं कइला पर आने का मने हम हूँ बटोर में बइठलीं। पछिली सालि मतिन हेड मास्टर क सामाजिक बहिष्कार ठना गइल। हम हाथ जोरलीं-सोच समुझ के कदम उठावे-बढ़ावे के चाहीं, नात रोजा के गइलीं, नमाज परी गरे। हेडमास्टर का विरोध क नतीजा हमनी केतने जाना क एहिजाँ ले बोरिया-बिस्तर बन्हइलो होई। हमरा गइला घर क का बा? शिक्षक भइला से रउरा सभे का संगे बानी। तबो एतना हकनहाक कह देइब कि तातें पाँव पसारिए जाते लाँबी सौर। अपना समाइए भर विरोध होखे।

हमरा के अगुवा बनावे क जिद्द भइल। हम एकदम नकार गइलीं। विजया दशमी आ दीपावली का छुट्टी ले करीब एक महीना अगतें पछिली सालि का अपना माँगन के कायम राखे बदे अध्यापकन का ओराँ ले हेडमास्टर का सामाजिक बहिष्कार का हड़तालि क बिगुल बाज गइल। छुट्टी भइला पर सभ अपना-अपना घरे चल गइल। ओ सालि हमहूँ घरे चल गइलीं।

ओ विद्यालय क संचालक सेठ जी क उपरोहित पुजारियो हमनी का संगे शिक्षक रहलन। बुला ऊहे अगुवो बनावल रहलन। ऊ अक्खड़ स्वभाव क रहलन। ऊ अउरी शिक्षकन से बेराइ-बाति कइल ओ छुट्टी का दिन में अपना अध्यापकी का ओरा ले त्यागपत्र लिख के सेठ जी किहाँ भेज दिहलन। सेठ जी उनुकर तनिको सील-मुरव ना कइलन। अपना स्थानीय मुनीब आ हेडमास्टर से राइ-बाति कइके उनुकर इस्तीफा मंजूर कइ लिहलन छुट्टी बिताइ के लवटला पर पुजारी जी का अध्यापक पद से त्याग-पत्र आ ओकरा मंजूरी क खबरि शिक्षकन के चउँका दिहलसि। सभ हमरा कुवाटर में बटुराइ गइल-"का होखे के चाही?" फुट्दें केहू बक दिहल-"सभकरा इस्तीफा दे देबे के चाही। नात पुजारी जी का साथे बड़ा धोखा होई।" सभ चुप्प। पनरह मिनटले बीत गइल। हम सभकर मुँह निहरलीं। सभकरा चेहरा क रंग फक्क। इस्तीफा मंजूर हो गइला से पुजारी जी क दिकदारी बढ़ गइलि होखे त ओकरा खातिर हमनी क सहानुभूति चाही। बाकी उनुकरा हम सभकरा से पूछ के अइसन करे के चाहत रहल ह। ई उनुकर व्यक्तिगत मसला ना रहल ह। जो केहू सोरि में गोड़ डाल के तोरे क बउराही करीत का सभ केहू ऊहे बउराही करी? के उनुकरा के इस्तीफा देबे के कहले रहल ह? सभ एक सुर से बोलल-"केहू ना।" तब एघरी इस्तीफा का? जो पुजारी जी के दिकदारी होखे त ओकरा के दूर करे क उपाइ कइल जाऊ। अबे इस्तीफा क ब्रह्मास्त्र छोड़े क नउबति नइखे आइलि। जब अइसनि नउबति आई तब आपुस में राइ-बाति होई। सभ एसे एकदम सहमत हो गइल। बटोर खतम हो गइल।

शिक्षकन का सामाजिक बहिष्कार से उबियाइ के हेडमास्टर क परान नथुनन आ गइल रहे। ऊ बाई में हो गइल रहलन। आन्हे-अलोते हमरो बारे में बेनाँव लिहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकादतोर मास्टर लोग से बक देसु–"रउवाँ सभ कठपुतरी भइल बानी। रउवां सभ क सूत्र जेकरा हाथ में बा ओकरा के हम जान भइल बानी।" संजोग से विद्यालय का पढ़ाई–लिखाई का बारे में किछु सोचे–समुझे खातिर सभ शिक्षकन के प्रधानाचार्य का कार्यालय में बटोरल गइल। ओमे हेडमास्टर शिक्षकन के सम्बोधित करत बोली बोल गइलन–"हम रउरा सभे से का कहीं? रउवाँ सभे कठ पुतरी भइल बानी। आप सभे के एक आदमी नचावत बा।" उनुकर कहल हमरा खटकल। पहिलहूँ ले अउरी सभ से ए कहला क चरचा सुनत आवत रहलीं। हंसिए में एकर किछु जबाब दिहल हमरा के सौतुक बुझाइल हम बोल गइलीं। "हेडमास्टर साहब! हमन का मास्टर हउई जा। रउवाँ हमनी क हेड हई। हमनी क सूत्र आपे का हाथ में बा। जइसे चाहत बानी तइसे नाच नचावत बानी। सभे रउवाँ का जाने के बा?" सभ ठहाका मार के हँस दिहल। ऊ भक्कू हो गइलन। किछु दिन बाद हेडमास्टर हाले क पढ़ावल आ शिक्षक हो गइल दुई मास्टर लोग के अपना डेरा पर बोलवाइके खूबहिन डँटलन डपटलन, समुझवलन–बुझवलन, फुसलवलन आ रोसियाइ के धमकी दे दिहलन–"आप लोग आपन हित–अहित सोच के हड़तालि से जल्दी हटीं, ना त आप सभे अपना के नौकरी से बरखास्त समझीं। जाईं। जल्दा उत्तर देइब जा।"

हेडमास्टर किहाँ ले छूटते ऊ लोग हमरा किहाँ चोहँपल आ पूरा समाचार दिहल आ आपन रोवना मुँह बनवले आ रोवाँ गिरवले कहल–"नौकरी से बरखास्त भइला क मतलब हमनी क परिवार मुई जाई. का करीं जा?" हम बड़ा असक्का पर गइलीं–शिक्षक एकता क बचाव एक ओराँ, आ ओ लोग का परिवार क रक्षा दूसरी ओराँ। हम दूनो क निर्वाह कइसे करीं–कराई? ई प्रश्न दिमाग में नाचे लागल। माथ खजुवावत कहलीं "तोहन लोग क दुख–दरद आ लाचारी हमरा बुझा गइलि। अब जल्दी समझौता क हवा बनावऽ जा, जेवना से शिक्षकन का मुहें करिखो न लागे आ तोहन लोग क परिवार जीयत रहे। जो शिक्षकन क हड़ताल के हेड मास्टर अपना कूवति से असफल कई दिहन त शिक्षक उनुकर गुलाम हो जइहन आ पता ना कि कहिया ले उनुकरा सोझाँ माथा उठावे क हियाव ना करिहन। ए से हेडमास्टर से घुमाई–फिराई के केइतरे समझौता क चरचा चलावऽ जा। जो समझौता में मास्टरन बदे तनिको लस्सी भेंटाइ जाई त हम शिक्षक लोग के समझौता बदे राजी कइ लेइब।"

ऊ लोग ओहिजें हमरा पजरें बइठल–बइठल अपनन में समुजा कइके कहल–"हमनी का उनुकरा सोझाँ किछु कहे क हियाव नइखे होत। हमन क बाति ऊ सुनले नइखन चाहत। ऊ साफ कहले बानऽ आप सभे हड़तालि से हटीं आ हमार साथ दईं। आप लोग से हम अउरी किछु अब सुनल नइखीं चाहत। रउवें उनुकरा से बतियाइ के समझौता होई जाए क किछु डहरि बनाई।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रउरे सभे का बलें ई गाँगि घींचाइलि। हम त लम्मे रहके तमाशा देखल चाहत रहलीं। बरियाई हमरा के ठाढ़ कइल गइल। जब इहे करे के रहल ह तब काहें के एतना दिन ले पैंतरा मांजल गइल ह? मामला खरसान पर चढ़ल आ रउरा सभे पाछ देवे लगलीं तब गढ़ कइसे फतह होई? जब रउरा सभे हथियार धइके विपक्षी का सरनि में ढह जाइब तब समझौता क बाति हम केकरा बदें चलाइब? हाँ, जो एकाद हफ्ता कड़ेर परल हथियार माँजत रहे क हियाब देखाई जा तबहम समझौता क हवा बनाईं?

ओ लोग के हमारि बाति भावलि। प्रसन्न होइके ऊ लोग एकाद हफ्ता ठेल लेई जाए क हियाव देखावल। ओ दिन हमरा राति भर ऊँघाई ना लागलि। दूसरा दिने हम सभ शिक्षकन का मन के टोवलीं। सभकर दम फूलत रहे। हड़तालि सभकर गर धइले रहे। केहूतरे लाजि ढोवाति रहे। समझौता बदे सभ भुखाइल रहे। सभकर रुख जान के हम हेडमास्टर ले लम्मे-लम्मा रहे का नीति में ढील डाले लगलीं। ऊ हो मनहूँस माहौल में रहे से उबियाइ गइल रहलन। बड़ा चोप से हमरा से सटत गइलन। एक दिन बरियइयन हमरा के अपना कुवाटर पर चढ़वले चल गइलन। किछु बेर ले एन्ने-ओन्ने क बाति करत मउज-मस्ती क गलचउल चलत गइल। ओही में हेडमास्टर साहब शिक्षक हड़तालि क चरचा छेड़ दिहलन। हम ओसे कतरियाइल चहलीं, बाकी हमरा के ओसे भड़ँकियाये क अवसर ना दिहलन आ हम दिल से अइसन चहतो ना रहलीं। ई हमार खखने कइल रहे। काहें कि हम अपना हड़तलिया लोग क दमदारी जान चुकल रहलीं। हमरा ओ लोग का लाजि बजावें क जिम्मेवारी कपारे आ परलि रहे। हेडमास्टर साहब बहुत नरम पर के जोर देत साफे कहलन-ई आपसी अनगराहिती मेटाईं। हमनी का सभ शिक्षक मिलजुल के रहीं जा। हमहूँ त शिक्षके हईं। हम अध्यापकन क कब अहित चाहब?

हम उत्साही सुर में झट् से जबाब दिहलीं-सभ कछुकाज भरत के हाथा। मसला क हल रउरा हाथे बा। चाहब छनभर में हल हो जाई। शिक्षकन पर दया करीं। पछिली सालि उनुकर माँगि मान के उनुकरा जेवना सुविधन के कायम रहे दिहलीं, ओहन के रहे दईं। उनुकर कटौती मति करीं। बार-बार हमारि इहे चेरउरी बा।

हेडमास्टर गिड़गिड़इला का सुरमें कहलन-"हमहूँ लाचार बानी। सेठ जी क माली हालति गड़वड़ाइलिबा। ऊ हमरा पर दुइबरिस ले दबाव देत बान आ उनुकर आदेश बा कि खाली वेतन के छोड़के खरच बरच का अउरी मदन में कटौती कइ दिहल जाउ। हमरा अउरी मदन क खरच बरच घटवहीं के परी। छात्रावास क दुइनो गृहपति (वार्डेन) ना रह पइहन। खाली एगो गृहपति रही। पछिलिए सालि हम एगो कइ देले रहलीं। रउवाँ सभे का आग्रह पर पहिलहीं मतिन दुइगो कायम राखे क परल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असों ले खाली एगो रह पाई। सेठ जी दुइगो पर राजी ना होइहन। ओ तरे हम शिक्षक हई। शिक्षकन का ओरॉं घिचबे करब। ओ लोग से बतियाई।''

हम झगरा ओराए क आसरा लिहले उनुकरा के प्रनाम कइके चल दिहलीं। दूसरा दिने सभ शिक्षकन के बटोरलीं। हेडमास्टर आ शिक्षकन का मध्धे अउरी जेवन किछु ठेक परल रहे, ओपर हेडमास्टर से जेवन किछु हम बतियाइ आइल रहलीं ओ पर सभ मन क थाह लाग गइल, बाकी गृहपति का एको पद पर शिक्षक लोग राजी ना होखे। ऊ लोग दूनो पद के पहिले मतिन बनवले राखल आपनि प्रतिष्ठा बना लिहल। बटो खतम भइल आ हम हेडमास्टर से मिललीं। अउरी मामलन में किछु घाट बाढ़ करत ऊ राजी होत गइलन, बाकी गृहपति का मसला के ऊ अपना प्रतिष्ठा क प्रश्न बना लिहलन। ऊ गृहपति के दुईपद राखे बदे केहूतरे तइयार ना रहलन। अन्त में ऊ ई हो कह दिहलन-''ई हमार आ सेठ जी का प्रतिष्ठा क प्रश्न बा। एपर कवनो समझौता नइखे।''

बड़ा कहत-सुनत ऊ केहू तरे आधा भत्ता पर हमरा के बार्डेन बनावे बदे तइयार भइलन। ऊ हो ए खातिर कि हमरा चारी-पाँच महीना अउरी ओ स्कूल में रहेके बा आ ओकरा बाद अगला शिक्षा-सत्र जुलाई ले ऊ समाप्त हो जाई। चार-पाँच महीना बदे हमरा के अपना माथे एक पद क पगरी बान्हल अजीब, बेतुका, आ बेगन्ह स्वाद क अपना मुँह पर कारिख पोतल बुझा। हम मास्टर लोग से समझौता क कुल्ह बाति बता दिहलीं। ओ लोग क अउरी माँगि करीब-करीब मना गइल ऊ लोग हमरा के समुझावल कि रउरा सँकार लिहला से हमनी क बाति रह जाई आ मनोबल ऊँचा बनल रही। हेडमास्टर के ई पद खतम भइल बुझात रहे। दूनो पक्ष के आपनि बाति मनवा लेबे क खुशी रहे। दूनो पक्ष क मान-मरजादा राखे बदे हम ओ खाँचीभर घूरा के अपना माथे ढोवे बदे तइयार हो गइलीं। हमरा चार-पाँच महीनन वार्डेन रहला क न कवनो गाढ़ि रकमि मिले के रहे आ न प्रतिष्ठा। अध्यापकी ले कवनो निम्मन पद ऊ ना रहे। दूनो पक्ष का खुशी बदे हम ओकरा के अपना ले ले रहलीं। ओकरा के अपना लीहला से शिक्षक लोग क संकठ टल गइल; बाकी हेड मास्टर आ सेठ क प्रतिनिधि, उनुकरा मुनीब क दिल-दिमाग हमरा ख़ातिर साफ ना रहला से हमरा ओकर फल भुगते के परल। हमरा ओकरि कवनो गमि ना रहे। हम अपना डहरि पर बढ़ते जात रहली। पाछे मुड़ के तिकइबो ना कइलीं; बाकी ओ लोग के भागत भूत क किछु लँगोटी धरात खुशी भइलि होई।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो घर जारे आपना चले हमारे साथ

हमार त्याग-पत्र संचालक से संकार लिहलि गइलि रहे। स्कूल बीस मई के बन्न हो जाइल करे। एह ले तीन-चार दिन पहिले हेडमास्टर हमार हिसाब-किताब स्कूल ले चुकता करा देबे क मन बनवलन। विद्यालय से जेतना धनराशि हमरापावे के रहे ओमे ले दुइ सइरुपया क भुगतान हमरा के करे में ऊ आ स्कूल क प्रबन्धक अपना मन क कुनह देखाइ गइलन। हमरा चेत नइखे परत की 3 रुपया अध्यापक का निजी निधि में मैनेजर का ओंरा ले जमा होखे वाली रहे आ अउरी केवनो तरे का हेडमास्टर शिक्षकन का विरोध क मामिला लेंइ के हमरा से खार खइले रहलन। ऊ हमरा के झुकावे बदे, वे पानी करे बदे ओ दुइसइ रुपया का भुगतान में अडंगा डाल दिहलन। उनुकर कहनाम रहे-जेवन शिक्षक-विरोध पाँच-छव महीना चलत रह गइल ह ओकरि जरि रउवें रहलीं हँ। ए से ओ गलती क माफी मँगला का बादे रउवाँ के ऊ दुइसइ रुपया क भुगतान कइल जा सकत बा।

हेडमास्टर शिक्षक-विरोध के लेइके अपना मन में जेवन गुर्ही बन्हले चल आवत रहलन, ऊ ऊभर के हपरा सामने आ गइल रहे। मौका पाइके हमरा से बदला ले बे खातिर उतारू भइल कवनो अचरज ना रहे। हमरा जिनिगी में हमरा नैतिकता क ई पहिली परीक्षा रहे। हम झट् से जबाव दिहलीं-"हमरा माफी माँगे क मतलब बा कि शिक्षकन से चलावलि गइलि हड़तालि क जरि हम रहलीं हँ आ कई महीना ले स्कूल प्रशासन का विरोध में चलेवाला शिक्षक विरोध गलत रहल ह। हम अजुवो एके गलत माने के तइयार नइखीं। हम झूठे माफी काहें खातिर माँगीं हाकिम होइ के रउवां जेवन चाहीं तेवन कह देईं। हमरा सुनही के परी, बाकी शिक्षक होई के ई बाति कइसे कहतानी?"

ऊ सेठ जी क प्रतिनिधि मुनीब जी का ओराँ किछु बेर ले तिकइ के हमरा से किछु झँपत कहलन-अरे भाई! आपनि बाति नइखीं कहत। स्कूल क संचालक सेठ जी क कहल रउवाँतक पहुँचावत बानी। उनुकरा आदेश के हम पालत बानी आ रउवों पाले के चाहीं। समाज के शिक्षा-दान कइ के सेठ जी जेवन नेकी करत बानी ओकरा सोझाँ हम आपन दसो नहँ जोर के झुकत बानी। बाकी शिक्षकन का हड़तालि का मामिला के लेइके कवनो तरे क माफी माँगे के राजी नइखीं चाहे एकरा बदे हमरा कतनो तवालति-तकलीफि आ घाटा उठावे के परी।

"हेडमास्टर हमरा से सहानुभूति देखावत कहलन-दुइ सइ रुपया क किछु कीमति रउवाँ के नइखे बुझति?"

हम बेधड़क जवाब दे दिहलीं-"कीमति ना बुझाइति, त ए पचास-साठ रुपया क नौकरी-चाकरी करे बदे एक कलवा कोस मरुस्थल में आइ के रेत फँकती?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेठ क स्थानीय मुनीब आ विद्यालय क मैनेजर आ हेडमास्टर साहब दूनो जाना बड़ा जोर मरलन–"हमन का ईहे कहबा जा कि रउवाँ आपन कमाइल रुपया–पइसा ले लेईं आ एगो कागज पर माफी क दुई वाक्य बना के लिख दईं। सेठ जी का आदेश के पाले का उद्देश से एके लिख दई।"

रउवाँ सभे बड़–बड़कवा हउईं। जो हम गलती कइले होखी त रउवाँ सभे का सोझा सइतोर माफी माँगे के तइयार बानी; हमारि आत्मा कवनो गलती अबले समुझी ना पवलसि। हमरा बुझाता कि हमरा संगे रउराँ सभे बड़ चालांकी करत बानी।

ऊ लोग दबले गरे पूछल–"चालांकी कइसनि?"

"हमरे कमाइल पइसा से हमरा आत्मा के कीने क । जब शिक्षकन से समझौता हो गइल तब ई मसला उठाइ के एह मौका पर बे सूचना क आ बे हमरा से किछु पूछल जाँचल हमरा के अपराधी बनाइके हमरा पर ई मनमाना डाँड़ कइसन लगा दिहल जात बा? गूढ़ बाति के रउवाँ दूनो जाना आ सेठे जी समुझ सकत बानी। हम का समुझ पाइब? बड़ेन की बाति बड़ेन ही जाना। बस, हम एतने जानत बानी कि हमरा के असक्काँ परल जान के हमरा से गलत माफी मँगवाइके के हमरा के आ शिक्षक–समाज के बेगुनाह दोसिहा ना बनावल जा सके। रउवाँ सभे अपना डहरि पर चलीं। अब हमरा के आज्ञा देईं जा। हम चलीं।"

हेडमास्टर छपरा (बिहार) क रहलन। अपनापन जनावत कहलन–"कइसनि हमन क डहरि आ कइसनि राउरि? अरे, हऊ सेठ जी क मन जोगवत आपनि बाकी रकमि ले लेईं आ संगहीं चलल जाउ।" किछु कहल–सुनल हमरा के पथ्थर पर को मारनो चोखो तीर नसाय। बुझाइल हम माया–मोह छोड़ के ठाढ़ हो गइलीं आ कबीरदास का भाषा में बोल गइलीं–

कबीरा खड़ा बजार में, लिये लुआठी हाथ।
जो घर जारै आपना, चले हमारे साथ॥

हेडमास्टर मुनीब का संगे बइठल रह गइलन आ हम चल दिहलीं। हमरा मतिन ए दीन–हीन परानी के अपना जीवन का ओ पहिलका रगरा–झगरा में जेवनि कीमति चुकावे के परलि ऊ हमरा आगे का जीवन में हमरा के स्वाभिमान का साफ सुथरा डहरि पर चले बदे बराबर डीढ़ करति गइलि।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परहित सरिस धर्म नहिं भाई

ओ सालि विद्यालय का छात्रावास का दुइगो बार्डेन में ले एगो हम बना दिहल गइल रहलीं। हमरा छात्रन क पढ़ाई-लिखाई आ अनुशासन देखे के रहे। हम एतना तत्परता हकनहाक रखलीं कि पढ़ाई क घण्टा लगते सभ विद्यार्थी अपना आसन पर जमल लउके आ सूते क घंटा लगला पर अपना सूते का बिछौना पर पावल जा ।एन्ने-ओन्ने घूमत-फिरत मा केहू का कमरा में जाके हँसी-ठट्ठा करत केहूना मिले। जे छात्रावास का नियम क उल्लंघन करत पावल जा, ओकरा के संझा में समुझावल आ दंडित कइल जा। छात्रावास में रहे क कोठरी मिलली पर हम ओमे ना रह के अपना कुवाटरे में रह गइलीं। ऊ खाली छात्रावास क कार्यालय बनल रह गइल। जरूरति समुझि के समय-समय पर राति खानी कई चक्कर अचानक लगा दिहल करीं।

पिलानी डिग्री कालेज (अब पिलानी विश्वविद्यालय) ओ हमरा हाईस्कूल क परीक्षा-केन्द्र रहल करे। ओ सालि हमरा के परीक्षार्थिन का संगे जाइके उनुकरा के परीक्षा दिवावे आ कक्ष-निरीक्षक क कार्य करे के कहाइल। हमरा अन्ते गइल पसन्न ना परे। ए से हम हेडमास्टर से ओहिजाँ गइल ना संकरलीं। अउरी मास्टर परीक्षार्थिन का संगे एह अवसर पर जाए बदे बहुत भुखाइल रहसु। एगो शान्त-चित्त, कर्मठ, आज्ञाकारी, विनम्र आ बुद्धिमान छात्र छात्रावास क मनीटर चुनल गइल रहे। ऊ पढ़े-लिखे आ आचार-विचार से बड़ा तेज आ सराहनीय रहे। उ हमार बड़ा प्रिय रहे। हमरा अरहवल पर हमरा काम से ऊ दसन कोस ले खुशी ले धावल चल जा आ आपन काम समुझि क जहवाँ तक हो सके ओके कइके लवटे। ऊ जाति से जाट रहे। ऊ हो ओ सालि हाईस्कूल का परीक्षा क परीक्षार्थी रहे। ओकरा रहनि-चालि से सभे शिक्षक ओकरा के माने। ऊ एक दिन संझा में आइके हाथ जोरलस-"गुरू जी! रउवाँ एह सालि परीक्षा दिवावे बदे परीक्षार्थिनो का संगे हकन हाक चलीं, ना त बहुत अनर्थ हो जाई। 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' का समझवला-बुझावला आ उपदेसला पर हमन का चार-पाँच जना साथी परहित करे पर उतारू बानी जा आ ए धर्म पाले में हमन का असफल कइल जा सकत बानी जा। रउवाँ हमनी का संगे ठाढ़ हो जाई त हमनी का केहू पर कवनो आँचि ए परीक्षा समय का मध्धे ना आई।"

"बचवा! अन्ते गइल-आइल हमरा स्वास्थ्य बदे भल ना बदावे। हम यात्रा भीरू हई। एकरा बदे हमार जीउ छोड़ऽ जा। हमरा के एहिजें परल रहे दजा।" ई कहत हम हँसते कह गइलीं-एगो बाति अउरी बा कि हम धर्म-वीर ना हई; हम पर उपदेश कुशल बहुतेरे में ले एगो बावन वीर हई।

ऊ चेरउरी-कइलस-जो ना चलबत कुल्ह गूर गोबर हो जाई। दुई-तीन गो छात्र परीक्षा ना दे पइहन स। पछिली सालि एगो छात्र परीक्षा ना दे पवलस। दुइ-तीन गो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजपूत लइका लोग उनुकरा पछेड़ा परल बा। ऊ परीक्षा दे दिहन त बहुत पुन्न होई।

ओ भलमानुस छात्र का बारम्बार चेरउरी कइला पर हार असकतियात मन आग पाछ करत छोड़के एगो निम्मन काम में मददि करे बदे राजी हो गइल। ऊ छात्र हमरा सहमत भइला क खबरि हेडमास्टर के दे दिहलस आ हमरा के हाईस्कूल का परीक्षार्थिन के परीक्षा दिवावे बदे परीक्षा केन्द्र पर जाए क आदेश हो गइल।

हमरा कहला पर हेडमास्टर सभ परीक्षार्थिन के छात्रावास में बटोरलन आ डेरवलन धमकवलन-जो परीक्षा केन्द्र पर अपना विद्यालय का मरजादा का विरुद्ध अपना स्कूल का परीक्षार्थिन से कवनो जबून आ नमुसी क काम कइल जाई त अनुशासन-हीनता का करतन उनुकरा के दंडित कइल जाई आ निम्मन चरित्र क प्रमाण-पत्र विद्यालय ना देई। ओहिजें हेडमास्टर का रहले पर हमहूँ जोर देई के कहलीं-"हमरा विसवास बा कि हमरा छात्रावास क केहू छात्र परीक्षा केन्द्र पर जाइके कवनो तरे क गलत काम ना करी जेवना से विद्यालय क मूँड़ी लोक का सोझाँ गड़ा जाई, ओकरि बदनामी होई आ ओकरा छात्रन का अनुशासन-हीनता क डुग्गी चारू ओराँ पिटा जाई।" जो कवनो गलत कदम उठावल गइल त जेवनि छात्रवृत्ति भा सुविधा उनुकरा के दिहलि गइलि ह, जहवाँ ले हो सकी ऊ लवटा लिहलि जाई। धमकी आ चेतावनी क अइसन घोह बन्हाइल कि एकर असर आगे देखे के पुरहर मिलल।

हम अपना छात्रावास का परीक्षार्थिन के बटोर के उनुकरा से राइ-बाति कइके उनुकरा रहे-सहे का भोजन-छाजन का प्रबन्ध बदे पाँच गो छात्रन क एगो समिति बनवा दिहलीं। ओ कर प्रधान ऊहे भलमानुस छात्र बनावल गइल। एक कारन रहे कि पछिली सालिन में करीब-करीब बहुते परीक्षार्थिन का संगे जाए वाला शिक्षकन पर एह इंतजाम के लेइके अँगुरी उठावलि गइलि रहे, कलंक लगावल गइल रहे। ए से हम एह प्रबन्ध से दर किनार हो गइलीं। परीक्षा ले दुईदिन पहिले समिति क प्रधान अउरी सदस्यन का संगे संझा में नियत समय पर ऊँट का सवारी पर रहे-सहे आ भोजन बनावे क सर-सामान लिहले पिलानी डिग्री कालेज का छात्रावास में नौ बजे राति ले चोहँप गइल। हमहूँ दूसरा दिने संझा में ऊँट का सवारी से चल के नौ बजे राति तक हाजिर हो गइलीं। चोहँपला पर मालूम भइल कि छात्रन के ठहरे बदे दुइगो कमरा, सामूहिक भोजन जल-पान बनावे बदे मन माफिक स्थान, ईंधन-पताई अउरी सामान माँग जांच आ कीनिकानि के जुटा दिहल बा। एकरा बदे ऊ छात्र ओ राजस्थान में मार्च महीना का दुपहरिया का धूप-ताव में बड़ा दउड़-धूप कइले रहलन। एकरा बदे हम अपना ओ छात्रन के बहुत प्रसन्न होइके हृदय से कोटिश : धन्यवाद देत ना थकलीं। हम हुमस-हुलास में पूछलीं-"तोहन लोग बहुत कइले बाड़ऽ जा। अब बताउऽ जा कि हमरा का करे के बा?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ लोग किछु अपना काम में कमी अनुभव करत झेंपत मतिन कहल "गुरु जी! रउवां के रहे बदे लरिकन ले अलगाँ एगो कोठरी क जोगाड़ ना बइठ पावल ह। ना मिलला पर रउवों हमनी का संगे कवनो कमरा में एक कोना एकगर रहेके परी।"

"एकरा बदे अफसोसला क कवनो जरूरति नइखे। जोर फेरु एकतोर लगावल जाई। जो कोठरी हाथ लागि जाई त बहुत अच्छा या जो बेवँत ना बइठी त एही में गुजर होइबे करी।"

हमरा बंडल एगो कमरा का कोना में धरा गइल, जवना ओराँ ओ समिति क प्रधान आ अउरी सदस्य रहत रहलन। हमरो उठे-बइठे आ ओलरे-सूते क इंतजाम हो गइल।

समिति क प्रधान अपना ओ भलमानस छात्र के साथे लिहले हम कालेज का छात्रावास का गृहपति (वार्डेन) का कार्यालय में घुसलीं। ओ छात्र से पहिले उनुकरा जान-पहचान हो गइल रहे। शिष्टाचार का बाद उनुकरा से जान-पहचान भइल। ऊ मद्रासी सज्जन रतनम साहब पिलानी कालेज में वनस्पति शास्त्र (बाटनी) क प्रवक्ता रहलन आ काशी विश्व विद्यालय से एम.एस-सी. कइले रहलन। ऊ ओ विश्वविद्यालय क एगो प्रवक्ता हमरा दयाद भाई क चेला निकल गइलन। हमरा से उनुकरि सहानुभूति हो गइलि। ऊ हमरा के छात्रन ले अलगाँ रहे बदे एगो कोठरी क प्रबन्ध कइ दिहलन। हमनी के सभकरा के रहे-सहे क मनमाफिक जगहि मिलि गइलि। हम बड़ा मुस्तैदी से छात्रन का पढ़ाई-लिखाई आ अउरी गतिविधियन क देख-रेख करत रहीं। मन सरहंग आ चुलचुलाह केहू लरिका कबो केहू का ओराँ कुरुख आ कड़ेर होइ के ना तिकबल। समिति का सदस्यन का उतजोग आ हरीच्छा से हमार बेड़ा पार बहुत शान से हो गइल। हमार धाक-पानी अन्त तक एक भाव बनल रह गइल। परीक्षार्थिन क हूँ-हूँ पट्पट् सुने के ना मिलल। सभ परीक्षा दिहल आ हँसी-खुशी अपना-अपना गावे-घरे चलत गइल। हमरा कपार ले भीरि उतर गइलि। हम अपना ओ जिम्मेवार छात्रन का संगे अलसीसर लवट अइलीं। परीक्षा केन्द्र पर सामूहिक खरच-बरच खातिर छात्रन का ओराँ ले सुरक्षा का दृष्टि से जेवन धन-राशि हमरा किहाँ जमा रहे ओकर समिति का प्रधान का संगे हिसाब-किताब कइ के लवटा दिहलीं। हमरा किहाँ कवनो खिझराह हिसाब ना रहे। भोजनालय चलावे बदे आ अउरी कवनो सामूहिक काम बदे सर-सामान प्रबन्ध समिति क सदस्य कीनलन आ जुटवलन। हम एक कुल्ह बइरकंटी में फँसल पसन्न ना कइलीं। हम काम परला पर आवश्यकता अनुसार अपना यहाँ जमा धनराशि में ले रुपया समिति का प्रधान से हस्ताक्षर कराइ के देत गइल रहलीं। बँचल रुपया-पइसा छात्र लोग आपुस में बाँट लिहल। हमरा ले एक-दुइ सालि पहिले जे अध्यापक छात्रन का संगे गइल रहे ओकरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर ई कलंक लगावल गइल रहे कि ऊ छात्रन का सामूहिक घीव में पूड़ी-परौंठा बनवाइ के उमराहे घीव दाल में डालके आ ओके रोटी चभोर के खूब चाभसु आ उनुकर चेहरा हरियराइ जाय। भोजनालय क खरच-बरच चलावे बदे जेवन छात्रन क सामूहिक रुपया पइसा जमा रहे परीक्षा खतम भइला का बाद ओकर कवनो हिसाब ना देइके बाँचल कुल्ह रुपया-पइसा हड़प जासु। एमे केतना झूठ आ केतना साँच रहे, ई जाने क हम कबो जतन ना कइलीं। एक कान से सुनलीं आ दूसरा से निकाल दिहलीं। कान में ई भनक आ गइला से मौका पर एसे ई लाभ हकनहाक उठवलीं कि जब हमरा के परीक्षा दिवावे बदे छात्रन का संगे जाएके परल तब हमरा पर एतरे क कलंक लागे क नउबति ना आइलि। जो अइसन अछरंग लगबो करित त का पछतावा रहे? हम त परहित सरिस धर्म नहिं भाई, का मकसद से गइल रहलीं। जो हूम करत हाथ जरे त हमार का दोष। हम खाए-कमाए का मकसद से ना गइल रहलीं। हम ओ छात्रन का भोजनालय में उनुकरा बड़ा हठ कइला पर, छरियइला पर भोजन करे के राजी भइलीं आ आपन भोजन खर्च देबे बदे बहुत आग्रह कइली, बाकी उनुकरा अमनख मनला पर चुप्प लगा गइलीं बनतू कहाये का डरनी। एक-डेढ़ सेर दूध जेवन हम रोजाना खाईं-पीहीं ओकर दाम हम बरियाई से अपना जेब से चुकता कइलीं।

हमार ऊ जिम्मेवार आ पढ़ावल छात्र लोग ओ परीक्षा केन्द्र पर खास कइ के आपनि हाईस्कूल क परीक्षा देबे गइल रहे आ ओकरा साथे 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' का अनुसार अपना के जीवन में परहित धर्म का निम्मन मार्गपर चलावे आ हम पर उपदेश कुसल बहुतेरे का सूची में आपन नाँव लिखाइ जाए का डरनी ओ लोग का साथे घसीटाइल चल गइल रहलीं परहित धर्म के पाले।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम लछुमन क जौड़ी बरवा बन्धु

ओनतालीस–चालीस बरिस का अध्यापकी जीवन में जेवन श्रद्धालु छात्र भेंटइलन ओमे लछुमन सिंह बरवा क पलरा केहू ले हलुकाह परत हमरा के नइखे बुझात। सन् १९४७ का अगस्त महीना में एक दिन राजस्थान का ओ अलसीसर का स्कूल में पढ़ावल खानी अपना रहे का कुवाटर के ओसारा में सांझि खानी बइठल रहलीं। अचानक एगो कड़ेर किशोर हमरा सोझाँ आइके प्रनाम कइलस। आशीर्वाद देत पूछलीं–"कवनो काम बा?"

".जी। हम पढ़ सकीलाँ? हम दुइदरजा ले पढ़के छोड़ देले हईं। अपना घरे का काम काज में बाझल रहत रहलीं हँ। पढ़े क मन नाकरत रहल ह। अउरी लरिकन के पढ़त देख के मन चलत बा।"

तूँ काहें ना पढ़ सकऽ। तू कवना माने में केहू ले कम बाड़ऽ। जब मन लगइब त पढ़ जइब। हाली से नाँव लिखवा ल। एह निम्मन काम बदे सँपरत आ दिन मति धरत रहिहऽ।

"गुरू जी नन्ही–नन्ही लरिकन में पढ़त लाजि लागलि बा।

लाजि काहें के? कवनो चोरी–बदमासी करे जात बाड़? देखऽ। हई हमार भाई–दयाद हउवन। इनकर नाँव तीन में लिखाइल बा। ई तोहरा ले तनिएँ मनी हरहुन बान।"

"गुरू जी! उनुकरे के पढ़े आवत–जात देख के हमार मन पढ़े–बदे ढेर टुकटुकाइल ह।"

"जा। नाँव लिखवाइ के जल्दी पढ़े सुरु कइद।"

ऊ दूसरा दिने विद्यालय में आ गइलन आ उनुकर जाँच करवाइ के पाँचवीं दरजा में उनुकर नाँव, "लक्ष्मण सिंह बरवा" लिखवाइ दिहलीं। एक महीना बाद ऊ अपना एगो चचेरा भाई के लिहले अइलन। ऊ देहि–धजा में उनुकरो ले पूरेठ, चइलंठ आ चाँड़ रहलन, बाकी उमिरि में छोट आ स्वाभाव क मोलायम। सरल, सीधा आ सीली दूनो एक समान। शरीर से दूनो रूखर–भिक्खर आ मन–बानी से लयनू के मात देबे वाला। हमरा के देखते उनुकरि श्रद्धा–भक्ति उमड़ परे। जाँच–जूँच कराइके दुसरा जाना क नाँव चउथी कक्षा में दरज करवलीं–उमराव सिंह बरवा। ऊ लोग हरसालि परीक्षा में उत्तीर्ण होत गइला जेवना बरिस हम स्कूल छोड़लीं ओसालि लक्ष्मण सिंह बरवा मई में सातवीं कक्षा पार कइगइलन आ उमराव सिंह बरवा छठवीं। ओ लोग के पढ़ावे क मौका हमरो के हर सालि किछुन किछु मिलते गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम अपना छात्रन का नेवतला पर उनुकरा किहाँ खाए-पीए ना जाईं। एसे हम अपना बिदाई का नेवरतीं कवनो सम्मान-समारोह कइल पसन्न ना कइलीं आ छात्रन के मना कइदिहलीं। ऊ एक तोर पटा गइलन। एकादे दिन पर आइके फेरु हठ करे लगलन आ ऊ दूनो छात्र त छरियाइ गईलन। ऊ एतना तुल गइलन कि उनुकर आ उनुकरा साथिन के हम करारा जबाब ना दे पवलीं। छात्रन का बे पूड़ी-मिठाई क सूखल-पाखल नीरस सम्मान ना आवल। ऊ अपना भाव-विचार से ओके सरस बना लिहलन। छात्रन का उत्साह-उतजोग का चलते हमार ऊ विदाई क उत्सव-समारोह भव्य उतर गइल। ओ उत्सव-समारोह क खबरि सेठ जी का मुनीब का भाई-बिरादर का नवहन के उद्बेगलसि। ऊ लोग शिक्षकन से खार खइले रहे ओ आयोजन का बारे में विरोध प्रगट करे बदे ऊ लोग कस्बाती, स्कूल में पढ़वइया छात्रन के बटोरल। ओमे हमार ऊ दूनो श्रद्धालु छात्र रहलन।

बटोर में ओ छात्रन के के कहो; अउरियो सभ छात्र जोर देई के कहल-"जेवन आयोजन भइल रहल ह ओमें शिक्षक लोग क हाथ ना रहल ह। ऊ खाली स्कूल का छात्रन का चलते उनुकरा इच्छा से भइल रहल ह। हमनी का रउरा सभे का कहला से अपना बनल-बनावल गूर के गोबर करे क बउराही ना करब जा। हमनी का ई कहब जा कि रउरा सभे हमनी का मेहनति के अकारथ जनिकरीं जा।" लरिकन का विरोध-पत्र शिक्षकन के देबे पर उतारू हो गइल आ ओकरा बदे मौका तजबीजल।

बीस मई के विद्यालय बन्न भइल हमनी का भोजपुरिया सभ शिक्षक अपना घर-गाँव खातिर पयान करे बदे बस स्टेशन पर चोहँपलीं जा। ओही सालि ले नाया-नाया बस-सेवा चालू भइलि रहे। हमनी के बस पर चढ़ावे बदे आ हमरा के बिदा करे बदे छात्रावास क काफी छात्र आ शिक्षक चार बजे संझा के ओहिजाँ हाजिर हो गइलन। बस करीब चार बजे सांझि खानी अलसीसर चोहँपे का आध घंटा ठहर के झुनझुनू लवटि जा। ऊ चौबीस घंटा में खाली एक दाईं आवे। हमनी का सभ जाना बस का आवे क राह जोहे लगलीं जा। शिक्षक विरोध क कस्बाती ओ नवहन के ऊ अच्छा मौका बुझाइल। आपन मनसा पुजवे बदे ऊ पनरह सोरह गो आदमिन क एगो गोल बनवले ओहिजाँ आ जमलन। ओमे आपन ऊ श्रद्धालु दूनो छात्र आ उनुकर संगी-साथियो रहलन। हमनी का ओ गोल का बारे में कवनो सक-सुबहा ना रहे। ऊ गोल बढ़त आइके हमनी का नियराँ ठाढ़ हो गइल। गोल क मुखिया हाथे से साफ-सुथरा सुन्दर मोट-मोट अक्षरन में हाथभर लमहर मोट -कड़ेर कागज पर रच-सवाँर के लिखल एगो विज्ञापन-पत्र हमरा के थम्हावे बदे आपन हाथ बढ़वलन कि तले लछुमन सिंह बरवा चील्ह झपट्टा मार के उनुकरा हाथ ले ओके छीन लिहलस आ फार-फूर के चोंथ-चाँथ के गुद्दी-गुद्दी कइके उड़ा दिहलस। हमनी का सभ भवचक्का आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कस्बाती गोल हक्का-बक्का। हम असमंजस में पर गइलीं। "सरल-सीधा आ सरधा क मूरति बरवा ई का कइदिहलस शिक्षक दार ही पर हाथ लगाइ के सोचे लगलन-का मामिला बा? छात्रावासी छात्र तिकवत रहलन-का बरवा सनकल बा? कस्बाती जवानन क पारा गरम - "तोहरा के देखब जा। तोहरा इतना हियाव हो गइल?" लछुमन सिंह बरवा उत्साह में तनल सिंह मतिन गरजल-"तोहन लोग हमार का कइ लेबऽ जा? हमरा रहते गुरू जी क अपमान ना होई। हम गुरू जी लोग पर आँचि ना आवे देइब। जा जेवन मन में आई तेवन करत रहि ह जा। तोहन लोग का हमार डीह छोड़ावे क सवँहर नइखे।"

एतना सुनके ऊ कस्बाती नवहा आगि हो गइलन आ ओकरा पर हाथ छोड़ दिहलन। एक ओराँ कस्बाती जवान दस आ दूसरा ओराँ बरवा-बन्धु दुई। एक ओराँ संख्या बल रहे आ दूसरा ओराँ अकूल हियाव आ अजेय जाँगर। दूनो दल में जुध्ध छिड़ गइल। हराठी-मुराठी बरवा-बन्धु सम्मेक घुस्सा-मुक्का, झाँपड़-थापड़ आ धक्का मार के विपक्षी गोल के मुँहठाई-मुँहठाई देसु। सहजे में मन से बरवा-बन्धु का पुरहर पक्षधर भइलो पर हम जात-जात क कस्बा क़ा मामिला में बे किछु जानल-सुनल किछु बोलल ना चाहीं। पहिले ले शिक्षकन क ई हे नीति चलि आवति रहे। बाकी अपने तमासबीन बन के ढेर देरले ओ दुई छात्रन क एगो बड़हन गोल का विरुद्ध ओ तरे लड़त रहल, देखल निम्मन ना लागल जबकि ऊ दुई दस परभारी परत जात रहलन। पता ना आगे का घटित? इहो त कहे के पर जाला कि 'लिखत सुधाकर लिखगा राहू।' इहो बुझाए लागल रहे कि झगरा क जरि हमनिएँ का बानी जा। एसे ओघरी हमरा घरहरि कराइके झगरा के आरेवइ दिहल भल लागल। हम झट् दे छात्रावासी चाँड़ छात्रन के धरहर कइके झगरा आगे ना बढ़े देबे बदे इसारा कइलीं। हमार संकेत पवते ऊ कस्बती नवहन के बरियाई से धइ-पकड़ के ढ़ेकलले लेई जाइके लम्मा ठाढ़ कइ दिहलन स आ समझाइ-बुझाइ के घरे जाये बदे लाचार कइ दिहलन स आ ओहू लोग के अपना कूवति क पता लाग गइल रहे। हम बरवा नवहन के बरियाई के, फेरू झगरा क न नवति ना आवे देबे क सलाह देई के गों-विचार से घरे चल जाए बदे कहदिहलीं। ऊ अपना रोजाना का डहरि से निर्भय गइलन स आ पता चलल कि केहू उनुकरा ओराँ आँखि ना उठावल।

ओ दिन बस समय पर ना आइलि आ बस आवे क आसरा टूट गइल। हमनी का अगिला दिने पयान कर के मन बनाइ के कुवाटर में लवट अइलीं जा। अउरी दुसरि सवारी भेंटाए क जोग ना रहे। दुसरा दिने किरिनि फूटते बरवा-बन्धु हमरा कुवाटर में पहुँच के प्रसन्नचित्त आ खिलल चेहरा लिहले हमार पाँव छूवलस। लछुमन सिंह बरवा ओ दिन हमरा के पछिला दिन क कुल्ह ब्योरा बई-बई बता गइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाव-बिहवल होइ के हम कहलीं-"बचवा! तोहन क मरदानगी सराहूँ बा। तोहन लोग मुनीब का कुल-खानदान का नवहन के बेपानी कइ दिहलऽ जा। ओ दसन जाना के तरनाइल-बघुवाइल तोहन लोग का सोझाँ हावा हो गउवे। बाकी हमरा पर अछरंग लागल। तोहन लोग क महतारी-बाप कहत होइहन-"मास्टर हमरा लरिकन के मरवा पिटवा दिहलन आ जात-पात क बवाल करावत गइलन।"

ई सुनते ऊ दूनो उमगि-छुलसि के एक सुर में बोललन-गुरूजी! हमनी का चन्दबरदाई क कुल-खनदान क हईं जा। हमहन के हँसी-ठट्ठे में केहू मारि-पीट के पस्त ना कइ देई। हम्मासुम्मा "एक बार कालहु संगलरि हौ" क जोस-खरोस लेइके भिड़ीं लें जा। हमहन क महतारी-बाप हमहन क पीठि ठोंकल रहलन। ऊ हमहन के हूँसलन-डँटलन ना। रउराँ सभे क ऊ छीप ना काटत रहलन। ऊ मुनीब का परिवार का नवहन क बेजायँ ठहरावत रहलन। उनुकर कहनाम बा-चोरहिं चाँदनि राति न भावा।

उमराव सिंह बरवा पूछलन-"गुरू जी! आजु सांझि खानी जरूर जाइब?"

"हम त काल्हीं जो बदे कमर कसले रहलीं। बसे ना आइलि। जो आजु बस आ गइलि त चार बजे साँझि क गइल हकनहाक तय बा।"

"गुरू जी! राउर दर्शन करे हमहन का आइब जा।"

बचवा! जीयऽ जा। दर्शन त होई गइल। का साँझिखानी दउरल अइबऽ जा। जइसनि तोहन लोग क इच्छा?

एकइस मई के हम आ हेडमास्टर बस का ठहराव का ठावें चोहँप गइलीं जा। छात्रावासी छात्र, शिक्षक आ ऊ बरवा बन्धुओ बटुराइ गइलन बस आ गइलि। हमनी का बस पर चढ़लीं आ बइठलीं जा। हमहन क सामान बस पर धरा गइल। पलग्गी-चिरंजी भइलि। बलुई जमीनि क रेत, धुरि-माटि उड़ावति, अखाढ़ति, बालू का पहाड़ के पार करति आ डीजल का धूवाँ से जातरिन क नकदम करत बस चलति गइलि आ झुनझूनू जाइके सुहुताए लागलि।

लमहर समय बीत गइल। आपनि कमरि बुढ़उती का भार से झुके लागलि बा आ आँखिन क रोशनी घटे लागलि बा, बाकी ओ बरवा बन्धु क राम-लछुमन क जोड़ी हमरा के अजुवो सदेहे लउकति बा।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुरुवाँ मरदन क तीर्थ-स्थान, चित्तौड़ गढ़

जब हम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग का हिन्दी उत्तमायानी 'साहित्य-रत्न' का दुसरा बरिस क परीक्षा देबे बदे आवेदन पत्र भरे लगलीं तब सोच-समुझ के चित्तौड़ गढ़ आ उदयपुर का दरसन करे का लालच का करतन एगो विषय गुजराती भाषा राख लिहलीं आ हम हिन्दी विश्वविद्यालय, उदयपुर में ओकरि शिक्षा लेबे क निश्चय कइलीं। ओमे सम्मेलन का प्रथमा ले उत्तमा तक का परीक्षन का पाठ्यक्रम का अनुसार पढ़ाई क सुविधान प्रबन्ध रहे। ओमे गुजराती भाषा आ साहित्य क पढ़ाई होखे। समय पर हम अलसीसर से प्रस्थान कइके झुनझुनू रेलगाड़ी पकड़के चढ़त-बदलत चित्तौड़ गढ़ चोहँप गइलीं। गढ़ अरावली पहाड़ का एगो मजिगर ऊँच चोटी पर बनल रहे। ओकरा गोयड़ाँ एगो बहुत महमूली बस्ती रहे। ए हेठाँ ले गढ़ का ओराँ तिकवे में माथा क पगरी-टोपी घसके लागे। ओपर चढ़े बदे तरसिवाई कंकड़-पत्थर क चाकरि, ठोस, साफ-सुथरा चिक्कन-चाकन, समडउरि सड़कि बनलि रहे। ऊपर गढ़ तक पहुँचे में सात द्वारन के पार करे के परे। गनेस, हनुमान, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुधन जइसन नाँव रहलन स। द्वारन के पार कइला पर गढ़ का चउरस-समडऊर हाता में पइसार हो जा। गाइड का बतवला का मोताबिक बुलागढ़ चार मील आ चार कोस क घेरा में रहे। ओकरि देवालि सात-आठ हाथ चाकरि रहली स। ओपर सेना क टुकड़ी परेड तक करँस। ओघरी पुरनका राज प्रसाद का खँड़हर में पाकिस्तान ले आइल शरणार्थी बसेरा लेले रहलन स। जहवाँ चेतक बान्हल छोरल जा तहवाँ ओ घुड़सारि में उनुकरा के खाना बनावत-खात आ ढरकल देखलीं।

मीराबाई क रहे आ जहवाँ राना के भेजल माहुर पियले रहलीं, ऊ हो स्थान हमरा के देखे के मिलल।

ओ पुरनका राजमहल ले तनी लम्मा हटके पन्ना धाइ क महल रहे। पुरनका महल ले पश्चिमी का स्नान-सरोवर किहाँ जात क डहरि में हमरा के गोरा बादल का महल क दरसन भइल। सरोवर पर चोहँपला पर एगो दरवाजा देखावल गइल जेवन ओ सुरंग का मुँह पर रहे जेसे महारानी राजमहल से ओ सरोवर में नहाए-धोवे आवसु आ जासु। सरोवर कवनो लमहर-चाकर आ बहुत भड़कील ना बुझा। ऊ प्रकृति क रचना भइला से अपना पवित्रता खातिर नामी बुझा। ओमे आरावली का पहाड़ी का दरार में ले झुर-झुर पानी गिरत रहे। जहवाँ पानी गिरे तहवाँ किछु दरार रहे आ ओहू में ले पानी सरोवर में बराबर गिरत रहे आ ऊ भरत रहे। ओहिजाँ पहाड़ी धनुषाकार टेढ़ रहे। गढ़ क मजबूत देवालि ओकर डोरी बन जा। ऊ धनुषाकार गाड़ा ओ पहाड़ी का अमनियाँ जल से भरके सरोवर बनल रहे। हमरा के बतावल गइल रहे कि महारानी पद्मिनी स्नान-ध्यान करे बदे रोजाना सुरंग से ओ सरोवर पर आवसु।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरन का राज प्रसाद ले थोरकी लम्मा हटके नवका राज प्रसाद बनल रहे। पुरन का राज प्रसाद में किछु पेवन साटल बुझाइल। पूछला पर पता चलल कि ओघरी क महाराना जी ओ जर्जर महल क मरम्मत करावे बदे हाथ लगा देले रहलन; बाकी ओकरा ऐतिहासिकता पर परदा परे का डरनी उनुकरा काम ठप्प करा देबे के परल।

ओहिजाँ ले सेना का कसरत करे का मैदान में अइलीं। ओहिजाँ तोप खाना रहे। ओमे राना सांगा क बाबर से छीनल बड़की-बड़की तोप देखावल गइली स। मैदान में पत्थर भा कंकड़ क बड़-बड़, भारी-भारी चक्का ढेला देखावल गइलन स जेवन कहियो सेना का जवानन का कसरत का काम में आवँस। ई हो बतावल गइल कि किला का देवालि पर ले शत्रु-दल का ऊपर फेंकहू में काम दँ स। मैदान बड़ा लमहर-चाकर रहे। किला में जगहि-जगहि पर लमेरा जामल सीताफल (शरीफा) घूरा का रेड़ का फेड़ मतिन लहकल-फरल रहे।

किला का द्वारन के पार कइके चौरस भूमि पर बीस-तीस फाल चलला का बादे अपना करिहाँय हाथ का सहारे एगो खाँची लिहले लकड़ी-पताई किछु बीनति एगो मेहरारू भेंटाइलि। ऊ बे पढ़ल-लिखल मेहरारू हमनी का भोजपुरी क्षेत्र का ओघरी का मुसहरिन मतिन लागति रहे। बात-चीत करते बुझा गइल कि ऊ महमूली मेहरारू ओ ऐतिहासिक गढ़ क गाइड (परिचय देवइया) ह। ऊ हिन्दी खड़ी बोली ठीक-ठाक बोल ले आ राज प्रसाद पर जहवाँ-तहवाँ जेवन सन-सालि अँगरेजी में लिखलि रहे ओके अँगरेजिए में बतावल जा। दर्शकन क मददि करे में ओकरा तनिको असकति ना रहे। जेवन जानकारी देबे खातिर ओके रटावलि रहे ओकरा के तोता-रट मतिन दर्शनार्थिन के सुना जा।

सुरुवाँ मरदन क ओ तीर्थ स्थान क दरसन कइके हम उदयपुर जाए बदे रेलवे स्टेशन धइलीं।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेहि फल कर फल दरस तुम्हारा

चित्तौड़ गढ़क क दरसन कइके रेलगाड़ी धइके उदयपुर का ओराँ पयान कइलीं। गाड़ी में एगो उदार मुस्लिम बन्धु क संगति हो गइलि। ऊ राष्ट्रीय समुझि-बुझि क सही मुसलमान रहलन। उनुकर कहनाम रहे चित्तौड़ का आजादी का लड़ाई में महाराजा प्रताप क संग सेना में रहके मुसलमानो देले रहलन। गाड़ी उदयपुर का पजराँ चोहँपे लागलि। ऊ मुसलमान साथी पूछलन-"भाई साहब! उदयपुर का करे जातानी? ओहिजाँ राउर केहू जान-पहचान क बा? ना त कहवाँ ठहरब?"

"ओ ऐतिहासिक नगर के देखे जात बानी। ओहिजाँ हमरा जान-पहचान के केहू नइखे। जहवें हमरा के ठहरे जोग जगहि मिली तहवें ठहर जाइब।"

ऊ चुप हो गइलन। ओघरी हिन्दुस्तान-पाकिस्तान का बँटवारा क कुफुति-कुफल हिन्दू-मुसलमान भोगत रहलन। सभतर दंगा-फसाद क डरि भय बनल रहे। हमहूँ उदयपुर में कतहीं निरापद ठावँ पर ठहरल चाहत रहली। उदयपुर क एगो जानल-मानल नेता श्री जनार्दन राय नागर क कई गो लेख हिन्दी क समाचार पत्र दैनिक "हिन्दुस्तान" में पढ़ले रहलीं। ऊ कांग्रेसी नेता आ हिन्दी विश्व विद्यालय, उदयपुर क कुलपति आ हिन्दी लेखक रहलन। उनुकरा के विश्वास करे जोग व्यक्ति जानिके उनुकरे से राइ-बाति कइके कतहीँ ठहरल चाहत रहलीं। रेलगाड़ी उदयपुर रेलवे स्टेशन पर पहुँच गइलि। हम अपना ओ संघतिया का संगे प्लेटफार्म पर उतर गइलीं। उनुकरा से बरक के प्लेटफार्म का एक ओराँ एकगर बंडल धइके ठमक गइलीं। ऊ हो हमरा पजराँ आइके आपन झोरा-झक्कड़ लिहले ठाढ़ हो गइलन। हमरा उनुकरा से पूछे के पर गइल-"बन्धु। रउवाँ हमरा साथे का ठाढ़ बानी?"

"जले राउर ठहरे क कतहीं ठेकान ना लागी तले कइसे जाई? रउवाँ के हम अपने इहवाँ ठहराइ लेती, बाकी ई नाजुक समय बा। जो भागे-जोगे किछु अनहोनी घटि जाई त हम मुँह देखावे जोग ए दुनियाँ में ना रह जाइब। एही से हम असक्काँ परल बानी। रउवाँ केहू भल आदमी भा निरापद जगहि के नइखीं टिपले? बताइव, त हम ओहिजाँ रउवाँ के चोहँपाइ देइब।"

"का रउवाँ श्री जनार्दम राय नागर के जानत बानी?"

बड़ा चिहाइ का प्रसन्न होइके कहलन-"हकन हाक जानत बानी आ ऊहाँ के इहवाँ के नइखे जानत?"

हमरा कहते ऊ हमरा के उनुकरा कुवाटर पर चोहँपाइ दिहलन आ अपना उमदा बेवहार से हमरा दिल-दिमाग के जीत के अपना घरे चल गइलन। नागर साहब का कुवाटर पर एगो बाल द्वारपाल बइठल रहे। ओसे पूछलीं "नागर साहब बान?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नाहीं।"कहवा गइल बान?", "नइखीं जानत।", "जा। भीतर ले पूछ आवऽ।"

ऊ भीतर ले पूछके आइके बतवलस कि अजमेर कवनो राजनीतिक सभा में भाग लेबे गइल बान। आगे ऊ पूछलस – "रउवाँ कहवाँ ले आइल बानी? राउर परिचय का बा?"

"हम जयपुर ले अइल बानी। हम कवनो नामी आदमी नइखी। आपन परिचय का देईं?"

ऊ भीतर जाइके लवटल आ हमरा के भीतर चले बदे कहलस। हम बहराँ का ओसारा में बंडल धइके ओकरा संगे भीतर गइलीं। आँगन का चउतरफा ओसारा रहे। आगे परे वाला ओसारा में हम ठाढ़ हो गइलीं। हमरा सामने का ओसारा में ओ गृह क सुघर-साघर, टहाका गोर-गार, छरहर शरीर आ माझिलकद क शिष्ट शिक्षित, तेजीला-फुर्तीला लक्ष्मी हमरा कान में आमिरित घोरत पूछली-"रउवाँ आपन नाम काम हमरा के बता देईं। बतावल जरूरी बा। ऊ हाँ क अइसन आदेश ह। हो सकेला हमहीं रउरा काम में किछु मददि कइ देईं।"

हम आपन नावँ आ ओहिजाँ ठहर के एकाद सप्ताह हिन्दी विश्व विद्यालय में गुजराती भाषा पढ़े क उद्देश बता दिहलीं।

सुनते ऊ प्रसन्न होइ के बोलली-अच्छा, अच्छा। राउरि हरतरे मददि होई। हम अपन इहाँ रउवाँ के ठहरा देती; बाकी असक्का बानी। किछु परीक्षार्थी हमरा किहाँ ठहरल बान। रउवाँ विश्वविद्यालय में चल जाईं। प्रिंसिपल के आपनि कुल्हि बाति बता देइब। राउर प्रबन्ध जरूर हो जाए के चाही।

ऊ हमरा के अपना साथे लिहले बहराँ ओ बाल द्वार पाल का पजराँ अइली। हमरा बंडल के देखत ओंकरा के अरहवलीं-बंडल ले लऽ आ इहाँ के प्रिंसिपल साहब किहाँ पहुँचाइ दऽ बता दिहऽ कि इहाँ का नागर साहब क अतिथि हउईं। जो इहाँ क रहे क प्रबन्ध ना होई त साथे लेत अइहऽ। फेरु हमरा से कहली-"संकोच मत करबऽ। रहे क जोगाड़ ना बइठला पर लवट आइब। प्रबन्ध होइबे करी।"

ओ समाज-सेवी, करतबी आ उदार महिला, ओ गृह-लक्ष्मी का प्रनाम कइके हिंन्दी विश्व विद्यालय, उदयपुर क डहरि धइलीं. ओहिजाँ केहू वाजपेयी जी प्रिंसिपल रहलन। ऊ हमरा रहे-पढ़े क प्रबन्ध कराइ दिहलन। महाराना फतेह सिंह स्मारक धर्मशाला में हमरा रहे क इन्तजाम हो गइल रहे। रोज सबेराहे हम गुजराती भाषा-साहित्य पढ़े बदे ओ विश्व विद्यालय में चोहँप जाईं। ओहिजाँ क गुजराती भाषा क शिक्षक हमरा के दुइ-तीन घण्टा पढ़ावसु। समय निकाल के रोज उदयपुर का दर्शनीय स्थानन के देखीं। पहाड़ी में बसल ओ नगर क अजगुत प्राकृतिक छटा रहे। शहर का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मकानन आ सड़किन में कवनो दम-दिलासा ना रहे। ए माने में ऊ जयपुर शहर का गोड़ क धोवनो ना रहे। गढ़ में राजप्रसाद में किछु देखनऊक कृति रहली स। एगो कमरा में एगो अजीब सिंहासन रहे। कमरा में पइसला पर सोझाँ ले ऊ सिंह का पीठ पर बुझा। फेरु एक बगल से देखला पर हाथी का पीठ पर बनल लागे आ दुसरा बगल ले देखला पर घोड़ा का पीठ पर। पाछे ले देखला पर ऊ चित्र-पट पर रचल विचित्र चित्र रहे। ओ कमरा का नियरें का एगो कोठरी में मौजूदा महाराना का पहिले का महाराना फतेह सिंह क दर्शनीय चित्र धइल रहे।

उदयपुर क लक्ष्मी-निवास स्थापत्य कला क सराहे जोग एगो नमूना रहे। ऊ फतेह सागर का बीच में रचल गइल रहे। ओकरा चारू ओराँ ऊ सागर हलरत रहे। छोटी-छोटी रंगीन डोंगी नावन पर चढ़के ओहिजाँ पहुँचल जा। फतेह सागरो मनुष्य का प्रतिभा क ढेर कारदानी रहे। ऊ मीलन लमहर चाकर रहे आ ओइस ही गहिर सुने में आवे। ऊ नगर का एगो आरि पर रहे। आरावली का चोटी जइसन ऊँच भाग लें आँ कवार भर मोट-मोट लोहा का पाइपन से ओमे पानी गिरावल जात रहे। लक्ष्मी निवास का करीब सोझां फतेह सागर का ओ पार दुसरा किनारा पर भामाशाह का कुल खानदान क घर-गाँव बतावल जा। बुला उदयपुर क अजायब घर रहे कि ओकर अउरी किछु नावँ रहे ओमे वीरवर महाराणा प्रताप के कवच, तलवार आ भाला जइसन ऐतिहासिक चीझु रहलीं स। राजा का ओ भाला क दण्ड-फाल सब किछु लोहे बनल रहे आ ओकर बजन मन या कि आधा मन बतावल गइल रहे। शहर के चारों ओराँ निम्मनि पकियवा सड़कि रहे जेवना से ओघरी क महाराणा भूपाल सिंह जी साँझि खानी रोजना एक चक्कर लगा जासु। सड़कि का मोड़न पर किछु बेर उनुकरि जीपि बेलमें। ओ खुललि जीपि में बइठल महाराना से उनुकरि प्रजा आपनि अरज-गरज कह सकति रहे। सुने में आइल कि ऊ सभकरि बाति स्नेह-सहित सुनेलन आ न्याय-मददि देबे में कोतहाई ना करसु।

जब उदयपुर में ठहरे क हमार उद्देश पूरा हो गइल आ आलसीसर लवटल तय हो गइल तब नागर साहब का दरसन बदे उनुकरा कुवाटर पर जुमलीं। ऊ हे बाल द्वारपाल कुवाटर का बहराँ का ओसार में बइठल रहे। ओसे पता चलल कि साहब कुवाटर का उपर का मंजिल पर अपना पढ़े-लिखे का कमरा में बान ? उनुकरो से पूछके ऊ हमरा के ओहिजाँ चोहँपा दिहलस। प्रनाम करते ऊ हिन्दी-हिन्दुस्तान क भक्त देव पुरुष हमरा के हिन्दी क विद्यार्थी जान के धधाइके मिललन आ सनेह से बइठवलन ऊ दूनो परानी बाहर-भीतर ले एकतरे निम्मन आ सुघर बुझइलन। कद काठी, रूप-रंग, रहनि-सहनि, बानी-बेवहार, सोभाव-सहूर, समाज-सेवा आ शिक्षा, ए कुल्ह ममिला में एक सामन लगलन। दूनो क गनना खूब बनल रहे। ऊ ब्रह्मा क रचलि बेजोड़ जोड़ि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहलन। साहित्य चर्चा छिड़ला पर नागर साब कहलन–"आचार्य चाणक्य ए धरती एगो असाधारण प्रतिभा रहन। बाकी ओ महापुरुष के नायक बनाइके आजु ले कवनो साहित्यिक रचना ना आइलि। साहित्य का एक कमी के पूरा करे बदे उनुकरा के नायक बनाइ के एगो नाटक हम लिखे जात बानी।"

उनुकरि ऊ कृति छपलि। ओघरी का हिन्दी का प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका "साहित्य संदेश" में ओकर समीक्षो छपलि रहे। समय बीतत गइल। इधर आइके सन् १९९५-९६ में हम नागर साहब के एगो पत्र लिख दिहलीं। पचासी बरिस उमिरि में चलत ऊ वृद्ध सहृदय महापुरुष "आचार्य चाणक्य" आपनि नाट्यकृति डाक से भेजवा दिहलन।

उदयपुर रहे क उद्देश पूजल आ हम ओदिव्य पुरुष नागर साहब क दर्शन कइके अलसीसर लवट गइलीं। जिनिगी का ए भाग–दउड़ में रह–रहके श्री जनार्दनराय नागर आ उनुकरि गृह–लक्ष्मी क याद आ जाइल करेले। ई हमारि भागि रहे कि उदयपुर का जातरा में ऐतिहासिक स्थान का दर्शन क सुफल तुरंते भेंटा गइल–सही मानवता क दर्शन। याद अवते हुलसाइके हम कह उठी लाँ–तेहि फल कर फल दरस तुम्हारा।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात करीं जान के, पानी पिहीं छान के

सन् १९४७ भा ४८ में कवनो कारन से एक ब एक विद्यालय क छुट्टी हो गइलि। शेखावाटी क रहवइया हमार दूनो शेखावत साथी अपना-अपना घरे चल गइलन। अजराँ-पजराँ क अउरियो शिक्षक लोग आपन-आपन घर-गाँव धइ लिहल। कुवाटर परिसर में खाली हमनी का चार जाना-हम, हेडमास्टर शास्त्री जी आ उनकर सयान शिक्षक लरिका-रह गइलीं जा। हेड मास्टर आ शास्त्री जी साँझि खानी हमरा कुवाटर में रोजाना आ जाइल करसु आ दुइ घंटा बइठकी जमे। हमनी का भोजपुरी भाषा में बतियाइ के भोजपुरी होखे क सुख लूटीं जा। एक दिन का बइठकी में हेडमास्टर सुझाव दिहलन कि अगला दिने सबेरे का बखत में अपना ओराँ चले वाला कवनो खास बेनजन बनो आ काल्हि का ओ विशेष भोज में कवनो तरे क ओज ना रहे के चाही। हेडमास्टर क ऊ सुझाव हमरा बदे बिलारि का भागीं सिकहरे टूटल रहे। हमनी का नया-मोचर सयान-जवान तीनो साथी छुट्टी में कवनो न कवनो विशेष भोजन क जोगाड़ जरूरे बन्हले रहीं जा। सुनते-सुनत हेडमास्टर का बातिक हम तुरंते हामी भर दिहलीं। शास्त्रियो जी हँसी खुशी तइयार लउकलन। हमनी में शास्त्री जी भोजन बनावे के माहिर रहनल। हेडमास्टर उनुकरा से पूछलन-"शास्त्री जी! का बनाइब?" शास्त्री जी हुल्लास-उमंग में तनेन होईके बोललन-"सेवई।"

सुनते हेडमास्टर माथा धइ लिहलन-"आहि हो, दादा! आरे, शास्त्री जी महाराज! इहे बेनजन काल्हि बधुवाइके बनाइब? हमरा के त ई बुझाता कि जो आगे विशेष भोजन क मन चलावल जाई त गुरम्हे-बखीरि बने क नउबति ले आइब।" हेडमास्टर का चिहइला दुखइला क शास्त्री जी पर कनो असर ना परल। ऊ बड़ा हँकड़ के उत्तर दिहलन-"माथा मति धरीं। पहिले सेंवई खाईं। ई अइसनि बनी कि मुँह ले ना छूटी।"

सेवई क नाँव सुनते हमरो अरुचि भइलि, बाकी हमार दशा 'मन की मनहीं माहिं रही।' भोजपुरिया गवाँरि मेहरारू लोग काहाथ क पूरलि-बनावलि मोटकी सेवई क सवाद पावल हेडमास्टर क चिहुँकन कवनो ताजुब ना रहे। केहू नीक नोहर भोजन करेवाला ओ सेवई क नाँव सुन के मुँह बना-बिजुकाई सकत रहे। ओघरी ले सवदगरि सेवई क चरचा खाली हमरा कान तक चोहँपलि रहे। ओसे भेंटि ना रहे। मुसलमान भाई लोग का सराहूँ सेवई का सवाद क खाली हल्ला सुनले रहलीं जेवनि ईद का त्योहार पर ओ लोग का घरे बने। शास्त्री जी का बानी से ओइसनी सेवई क हमरा उमेदि होखे लागलि रहे। एतने में सेवई से पिण्ड छोड़ावे बदे हेडमास्टर कहलन- "शास्त्री जी! खीरि कहीं चाहे जाउरि हमनियों का ओराँ बने ले आ एनियों। काल्हि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उमदा खीरि आ कोंवरि-कोंवरि सोहारी बने देईं। सपरे त कचउड़ियो बना लईं। तर तरकारी चट्कार बनबे करी। ई कुल्ह बनला पर ज एनियों क केहू आ जाई त लजाये के ना परी। राउर बनावलि जाउरि बहुत बाँका होले।"

शास्त्री जी का उनुकरि बाति तनिको पसन्न ना परलि। उनुकरा बाति के एकदम काट दिहलन-सेवई बनला से लजाए के ना परी। जाउरि ले सेवई चोख परी। शास्त्री जी का लाख विश्वास दियवलो पर हेडमास्टर का सोझाँ मोट की सेवँई क ऊहे छत्ता रहलन स जेवन चलनी पर पूर-पूर के सुखवाइके घरा जा आ तेवहार का दिने तनी-मनी घीव में भूँज के गूर-पानी आ महमूलिए दूध डाल के उसिनाइ-रिन्हाइ जा। सचमुच सवखीन खवइया बदे ऊ सेवई कवनो अरथ क ना होखे। ऊ लदभेसरन क खाजु रहे। हेडमास्टर आ शास्त्री जी में करीब आध घंटा ले हरतुजि होत रह गइलि। ऊ लोग नौकरी आ उमिरि दूनो पद से हमरा ले जेठ रहे। जब ओ लोग में ना फरियाइ पावल तब ओ लोग का तीसर क जरूरति पर गइलि। ऊ दूनो जाना हमार मुँह देखे लगलन आ पूछलन-"ए राय जी! काहें रउवाँ चुप्पी सधले बानी? बोली, का बनो?"

अपना कपारे ए धान का गिरे क अनेसा हमरा अगत हीं ले होखे लागल रहे। ऐसे ओके आड़े क जुगुती सोचे लागल रहलीं आ किछु सोचू लेले रहलीं। हेडमास्टर का कड़ेर विरोधी सुर आ सूह के नरम करे बदे अगते उनुकरा से पूछलीं-"साहेब! सेवई बनो आ जाउरि, ई त पाछे क बाति बा। जब सेवई क नाँव पहिले हमहन का पाक शास्त्री शास्त्री जी महाराज का ओरों ले आ गइल बा आ इहाँ का ओ के बनावे बदे एड़ियाइ गइल बानी, तब हमनी का ई जाने में का हरज बा कि सेवई में का-का सामान परी आ कइसे बनी?"

साहब मेहराइ के कहलन-"किछु हरज नइखें। शास्त्री जी बतावसु।" शास्त्री जी छतियाइ के बतावे बदे अपना मुँह क फाटक भट् दें खोल दिहलन एक सेर दूध पाछे बाजार क कीनलि मेहीं-बारीक सेंवई एक छटाँक रही। जब मधुरी आगि पर जराइ के दूध एक दम लाल मलाई मतिन कई दिहल जाई तब ओने गाइ भइँसि का घीव में भूँजलि सोन्ह सेवई, दुई छटाँक चीनी आ छटाँक भर पंच मेवा- किसमिस, चिरंउजी, गरी, बादाम आ लावा-पर जाई। किछुबेर ले आगि पर खउलला का बाद ओमें छोटकी लाची क चूरन आ केसरि डाल के तोप दिहल जाई। सेवई सेराति रही आ पूड़ी-तरकारी बनति रही। परोसे का बेरा सेवई का बरतन क मुँह खुली।

शास्त्री जी का बतवला से हमरा के थाह लाग गइल कि उनुकरि बनावलि सेवई जाउरि ले निमहुर ना परी, बलुक अपना सोन्हाहटि में ई जाउरि के मात देई। हम सेवई बनावे क अनुमति दिवावे का टिसुना से हेडमास्टर के उकसवलीं-"अरे साहब! हमरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्दाज बा कि शास्त्री जी हकनहाक मुँहलें ना छूटे जोग सेवई बनाइब। राउर का अन्दाज बा?"

"हमरो ई हे अन्दाज बा आ जब इहाँ का मने बा त सेवइये बनो। इहें का न बनावे के बा।"

हमरे कुवाटर में दूसरा दिने दो पहर का भोजन बदे सेवई, सोहारी आ तर–तरकारी क बनल तय हो गइल। दुसरा दिने सबेराहे एक आदमी पर दुई सेर दूध क परता राख के आ ओही हिसाब से अउरियो कुल्ह सामान हमरा कुवाटर में जुट गइल। हमनी का चार जाना रहलीं जा। एक आदमी क अधिका भोजन बनल। साढ़े आठ–नौ बजत–बजत शास्त्री जी दोकछा–काछ के रसोई का अखाड़ा में उतर गइलन। उनुकरा संगे हम आ उनुकर बेटो भिड़ गइलीं जा। हरतरे से हमनी ले जेठ, शरीर से भारी–भरकम आ अधेड़ हेडमास्टर पलंगरी पर बइठल हमनी के ललकारे लगलन। जोश में ऊ हो कबो–कबो हाथ–गोड़ चलावे बदे हुमाँच बान्हसु बाकी उनुकरा के केहू ना अरहवे। ऊ बइठल कूट करत रहसु आ शास्त्री जी बेर–बागर उनुकर उत्तर देत रहसु। हँसी–ठहाका होत चले। बारह साढे बारह बजत–बजत कुल्ह सामग्री बन के तइयार हो गइलि आ हमनी का कमरा बिछाइ के आसन पर जम गइलीं जा। प्रशंसा सुने का लालच से शास्त्री जी बरियाई से परोसे में छतियाइल रहलन। ऊ सेवई का बटलोही क जेवँ मुँह खोललन तेवँ ऊ पुरहर कमरा गमके लागल। मुसकियात हेडमास्टर हमरा ओराँ तिकवलन। थारिन में परोसते सेवई से ऊ सोन्ह–सुवासित गमकि उठलि कि खवइयन का मुँह ले लार चू जाये लिहल। हाली–हाली आपनि–आपनि थारी हिलाइ–हिलाइ सभ सेंवई सेरवावे लागल। अँगुरी सहाते सभ चीखल। हेडमास्टर चिकरि के कहलन–अइसनि सेवई हम ए जिनिगी में ना खइले रहलीं हँ आ ना त खाए क उमेदि रहलि ह। एकरा सोझाँ कुल्ह बेनजन झूठ लागत बा। हमहूँ शास्त्री जी का कला क सराहना कइलीं। शास्त्री जी क चेहरा गुलाब क खिलल लाल फूल भइल रहे। निहाल भइल शास्त्री जी कहलन–"ई हम सभका मेहनति क खेला ह। एमे हमार गुनावट का बा? अपना पसेना का कमाई क अजबे सवाद ह। अपना हाथ का बनावलि रसोई मे अमिरित घोरा जाला आ एहू कुल्ह क समय होले–राग, रसोइया, पागरी, कबो–कबो बन जा।"

सभ का भोजन क ताव बिगरत रहे। केहू का बाति ना सुहाति रहे। हम शास्त्री जी के बरियाइ से धइके आसन पर बइठाइ के उनकरा आगे थारी में सेवई परोस दिहलीं। हाथ जोरलीं–"सेवई सेराइ गइलि। अब एकरा पर सभकर हाथ लागो। थारिन क सामान ओरात रही आ परोसात रही। अपने परोसे के बा अपने खाए के बा।"

हमनी का चारू जाना भरपेट्टा सेवई खाइके लोंढ़ गइलीं जा। अउरी किछु खाए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क हियावे ना रह गइल। हाथ-मुँह क चिक्कनाई पानी से ना धोवा पावे। उ लुग्गा-फाँटा से पोंछला पर कम भइलि आ पानी का आँवक में आइलि। ऊ गरिष्ठ, सवदगर आ मदमस्त करे वाला भोजन कइके दुई बजे खाटी पर ओलरलीं जा आ आँखि अइसन लागलि कि पाँच बजे ले पहिले ना उठलीं जा।

सेवई का लोभ में हमनी का सभ जाना बटुराइ गइलीं जा आ हाथ-गोड़ धोइके आठ बजे राति खानी पांति में बइठि गइलीं जा। शास्त्री जी क लरिका चार थारी में भोजन परोस दिहलन आ सभ साथे कवर उठावल। जेकरा थारी में कवनो खाजु ओरात लउके ओकरा के हम जरूरति समुझि के देत जाईं। सभ छक के भोजन कइके उतान हो गइल। किछुक कमी आवे क नउबति ना आइलि। साढ़े दस बजे राति ले खाटिन पर ओलरि के हँसी मजाक-चलल।

दुसरा दिने एकन्ता हमरा से भेंटाते शास्त्री जी हँसत हमारि कान्हि धइके हँसत कहलन-"राय जी! बाति करीं जान के आ पानी पिहीं छान के, नाहीं त बउराह बेवकूफ बने के परेला।"

"एक दम राउरि बाति सोरहो आना ठीक, सइ में सइ पइसा सही।" सेवई क चरचा हमनी में बहुत दिन ले चलति रह गइलि।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतिथि देवो भव

सन् १९४७ रहे। कवनो काम से हमरा पुष्करतीर्थ अजमेर जाए के पर गइल। ओहिजाँ जाइके हम काम कइली आ तनी-मनी नगर के घूमलीं-घामलीं आ रेलगाड़ी धइके जयपुर के चल दिहलीं। गाड़ी का इग्यारह बजे राति खानी जयपुर चोहँपे के रहे। ओघरी ले ओहिजाँ का दुकानिन का बन्न हो जाए क अनुमान रहे। एसे हम कवनो बीच में परे वाला स्टेशन पर गम्हिराहे जलपान कइके सुचिन्ताह हो गइल चाहत रहलीं। फुलेरा नावँ क जंकशन परल। ओहिजाँ गाड़ी देर ले बेलमलि। हम ओहिजाँ रातिका भोजन का संतिर गम्हिराह जलपान कइके गाड़ी का एगो खलिहर डब्बा में एगो खाली बर्थ पर बइठ गइलीं। गाड़ी सीटी देइके चले के भइलि तले एगो अधेड़ सज्जन ओही डब्बा में आपन भारी बंडल कुली से लिवाइ आइके पटकवाइ दिहलन आ हमरे बर्थ पर हमरा पजराँ बइठ गइलन। भेस-भूसा से ऊ ब्राह्मन लागत रहलन। ऊ बड़ा बोलता-चलता मरद बुझइलन। गाड़ी का चलते ऊ कवनो मजेदार बाति छेड़ दिहलन। हमनी का दूनो जाना बतरस में बाझि गइलीं जा। पौने इग्यारह बज गइल। इग्यारह बजे गाड़ी का जयपुर स्टेशन पर चोहँपे के रहे। पंडी जी हमरा से पूछलन- "राउर घर कहवाँ परी?"

"काशी-क्षेत्र में।"

"जयपुर में नौकरी करी लाँ?"

"जयपुर शहर में ना। शेखावाटी क्षेत्र में झुनझुनू का ओराँ का एगो गाँव-कस्बा अलसीसर में एगो विद्यालय में शिक्षक बानी।"

"तब ए राति खानी जयपुर शहर में कहवाँ ठहरब?"

"स्टेशन का पजराँ का धर्मशाला में।"

"जो राउर कवन जानल-सुनल ठावँ ठहरे बदे नइखे त आजु हमरे के आपनि सेवा क अवसर देईं आ हमारि बखरी पवित्र करीं।"

एगो अनगइयाँ का घरे ओ राति विराति क गइल हमरा के बहुत अबूह बुझाइल। हाथ जोरत हम पंडी जी का नेवता के नकार दिहलीं। ऊ चुपा गइलन। गाड़ी जयपुर स्टेशन पर चोहँप गइलि। पंडी जी उतरलन हमहूँ उनुकरा पाछे लागल उतरलीं। पंडी जी हडबड़-हड़बड़ भीड़ि के चीरत दरवाजा पर टिकट देत बहरियाइ गइलन। हम सुचिताह ठाढ़ रहलीं. जब सभ जातरी टिकट देइ के फाटक से निकल गइल तब हम टिकट देत फाटक का बाहर भइलीं। देखलीं, पंडी जी फाटक ले किछु लम्मा अकेले ठाढ़ रहलन। हमरा के देखते ऊ आगे बढ़ के ओहरन दिहलन-"हम जनली हँ कि रउवाँ जवान मरद हमार पाछ धइले बानी। कहवाँ पछुवाइ गइलीं है?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हमरा अपना घरे ना जाए के रहलँ ह कि अगुताई। भीड़ि छँट गइलि ह त टिकट देइके आवतानी। हऊ धर्मशाला ह। ओहिजें रहे के बा। रउवाँ अबले इहवाँ कइसे ठाढ़ बानी?"

"रउवे बदे। हउ आपन बग्गी ठाढ़ि बा। ओपर बइठी। चलल जाउ।"

"हम त ओघरी नाहीं कही दिहुई?"

"त हम रउरा नकरला से कहवाँ आपनि सहमति जनउई? देर जनि करीं। बग्गी पर बइठीं।"

पंडी जी हमार जबाव सुने बदे तइयार ना रहलन। ऊ धार्मिक आचार-बिचार क, अधेड़ पतराहि काठी क आ मँझोला कद क गोर-गार मरद रहल। ऊ हमार हाथ धइके हमरा के ठिठिरावे लगलन । उनुकरा आव-भगति का जोश से हमार मुरउवती सोभाव पस्त हो गइल रहे। ऊ बग्गी पर हमरा के बरियाई से बइठा दिहलन ई कहत-हे आधी राति खानी एगो अतिथि के अधजल में छोड़के कइसे चल जाई? एघरी राउर अन्न-पानी हमरे किहाँ लिखल बा। बग्गी जाइके उनुकरा मकान का दरवाजा पर रूकलि। ओसे उतर के हम पंडी जी का संगे उनुकरा मकान में पइसलीं। बखरी क पहिला खण्ड मरदाना बइठका 'रहे। ओमे एगो छोटाहे ठाकुर बाड़ी रहे। ओहिजाँ ढोलक-झालि का संगे हरकीर्तन जमल रहे। पंड़ी जी एगो ओसारा में बिछल बिछावल बिछौना पर हमरा के बइठे-सूते क इंतजाम कइ दिहलन। बिछौना जमीनी पर बिछल रहे आ बुझाइल कि पाँच-सात आदमिन क बराबर सूते-बइठेक प्रबन्ध रहेला। पंडी जी क पुरहर मकान पक्का आ साफ-सुथरा रहे। हम अपना बदे मीठा-पानी आ भोजन क इंतजाम करे से मना कइ दिहलीं। चेरउरी कइली कि हम जंकशन पर चार बजे भोजन कइ चुकल बानी। हमरा के हाथ-गोड़ धोवे बदे खाली पानी चाही।

हमरा के गोड़-हाथ धोवे बदे पानी आ गइल आ हम हाथ, मुँह आ गोड़ धोवलीं, तलें पोछे बदे तउलिया अंगोछा हमरा के पकड़ा दिहल गइल। ओसे हाथ-मुँह पोंछ-पाँछ के हम ढरक रहलीं। दिनभर क थाकल-खेदाइल शरीर साफ-सूफ आ गुदगर कालीन-तोसक जइसन बिछौना पाइके ऊँघाए लागल आ मन आधा-तीहा हरिकीर्तन सुने लागल। देश स्वाधीन हो गइल रहे। रियासति क रंगति अबे गइलि ना रहे। भगवान का कीर्तन का बाद अन्त में उनुकर अंश समुझ के ओहिजाँ के महाराज मान सिंह क गुन-गान भइल। ठाकुर जी क आरती भइलि, परसाद बँटाइल आ हरि कीर्तनिया लोग अपना घरे गइल। ऊ रोजाना क करा-धरा रहे।

पंडी जी हमरा के आवाजि देइके, खुदुकाइ के उठवलन। हम उठ बइठलीं। ऊ हमरा के सनेह सहित एक थारी मोहन भोग हमरा सोझाँ परोस दिहलन आ कहलन-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"असकतियाई जनि। हई भगवान क परसाद पाईं। परसाद पावे में नाहीं-नुकुर ना कइल जा। हमरा घरे-दुवारे आइके उपास करबऽ ? दुकानि का दुई चारगो गिनई पूड़ी-मिठाई खइला से जवान क भूखि जाले। खाई।" पंडी जी एतना आग्रह कइलन कि लाजि संकोच छोड़के हमरा सिक्मभर परसाद खाए के परल।

सबेरे उठलीं। प्रात क्रिया से निवृत्त भइलीं। हमरा के जलपान आगइल। पंडी जी भोजन कराई के हमरा के अपना मकान से हटे दिहल चाहत रहलन, बाकी हम आपन झोरा-झक्कड़ उठाइके चल देबे बदे ठाढ़ हो गइलीं। हमरा अपना काम से शिक्षा-विभाग का इंस्पेक्टर का कार्यालय में जाए के रहे। जनते पंडी जी ओहू में मददि करे बदे आपनि छड़ी उठा लिहलन इंस्पेक्टर क नावे बतावल कहलन-"शर्मा हमरा के जानत बान। रउरा काम में हम मददि कइसकी लाँ।"

हम हाथ जोरलीं-"हमरा बदे रउवाँ बहुत कइलीं। अब अधिका तकलीफि तवालति जनि उठाई।"

ऊ चिहइलन-"ई का कहता बानी ? सेवा में तकलीफि होले ? जे सेवा करेला ते मेवा चखे ला। रउवाँ हमरा अतिथि बानी। राउरि सेवा हमार धर्म बा-अतिथि देवो भव, अतिथि देवो भव।"

हम उनुकर चरन चूम लिहल चहलीं कि ऊ हमरा के अंकवारि में भर लिहलन। उनुकर अशीर्वाद लेइके हम चल दिहलीं।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर हमने ले लिया है तेरे दर के सामने

सन् १९४७ क सावन महीना, साँझि खानी एगो बालू का ऊँचाह आ लमहर चाकर टीला पर बइठल हमनी का चार संगी हँसी-ठट्ठा करत प्रकृति रानी क अमनियाँ छविके निहारत रहलीं जा। तले हवा का झोंका में झकझूमरि खेलत-बाजत जाटी का पेड़न के देखके बजनी क चरचा छिड़गइललि आ अइसनि न उबति आइलि कि आपन दुई संगी अपनन में बाजे बदे तुल गइलन। एगो रहलन श्रीवास्तव आ दुसरका सिंह जी। श्रीवास्तव करिया-कलूटा, नाटा, गँठिगर, फरहर, हँसमुख, विनोदी, पढ़े-लिखे में तेजीला, बनतू आ सबखीना जवान रहलन। ऊ ऊँच कक्षन में भूगोल पढ़ावसु, छात्रन में गम्हीर रहसु आ अनुशासन रुखे में कवनो हरज ना परसु। फुटबाल आ बालीबाल खेले में बहुत रूचि राखसु, बाकी कवनो चमत्कारी खेलाड़ी ना बन पवलन। ऊ मेहरारू आ अपना खास भाई सहित हमनी का कुवाटर का नियरे का कुवाटर में रहसु। हमनी से उनुकर खूब पटे। बे लरिका-मेहरारू क हमनी का तीन शिक्षक एके कुवाटर में रहके बन्नाई-खाईं जा। हमनी किहाँ दिन भर में उनुकर एगो-दुइगो फेरा हकनहाक लाग जाइल करे। ऊ हरबार हमनी का कुवाटर में हई गावत पइससु "घर हमने ले लिया है तेरे दर के सामने।" ऊ नोनाइ-चोन्हाई के एकले एक गभिया-लागू बोली-बानी बोलसु। उनुकरा हँसी मजाक क बानी हमनी का मऊज-मस्ती से सुनत-सहत रहीं जा। कबो-कबो हमनी का हाथ धोइके उनुकराय छेड़ा पर जाईंजा आ उनुकरा हफ्तन बोली बोलला क बदला एक दिन में चुका लेईं जा। ऊ लजाइल लरिका ढेंढुकी खजुवावत अपना कुवाटर में परा जासु। एतनो पर ऊ लथेर संगी दुसरे दिने हमनी का कुवाटर में पइसत टनाका सुर में सुनावसु-"घर हमने लेलिया है तेरे दरके सामने।" हमनी का कुवाटर में बेआइल उनुकरा कले ना परे। ऊ उत्तर प्रदेश का टूंडला, जँकशन का आस-पास का कवनो गाँव क रहवइया रहलन।

सिंह जी बालीबाल क सराहूँ, खेलाड़ी रहलन। एही गुन का करतन ऊ विद्यालय में नियुक्त रहलन। ऊ शेखावाटी क शेखावत राजपूत रहलन। जब सिंह जी उछड़ के बालीबाल का गेना के मारसु त जना कि गेनाधरती में धँसि जाई आ 'पम्म' दे बोल देई। ऊ विपक्षी बाल खातिर चीन क देवालि रहलन। ऊ गोर-गार, लमहर, छरकाह, फरहर आ राजपूती जोश क जवान रहलन। ऊ प्रारम्भिक कक्षन के पढ़ावसु। तीसरको संगी राजपूते रहलन आ सिंह जी का गाँव का शेखावते राजपूत रहलन। ऊँचकी कक्षन में पढ़ावसु। छात्रन पर निम्मन प्रभाव रहे। चउथवा संगी हम रहलीं। ईहे हमनी का चारू जाना साँझि खानी ओ बालू का टीला पर जमल रहलीं जा।

सिहं जी धोती खूँट के, आ श्रीवास्तव जी पायजामा चढ़ाई के ओ बालू का बेमेढ़ी का असीम अखाड़ा में भिड़ गइलन। ओ दूनो पट्ठन में रामलीला का बालि आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुग्रीव मतिन ठेला-ठेली होखे लागलि। श्रीवास्तव, सिंह के चकमा देई के उनुकरा टाँगि पर परलन आ ठेहुन किहँ धइके टाँग लिहलन। सिंह ओके छोड़ाइना पवलन। किछु बेर ले एके टाँग पर कूदत रहलन कि श्रीवास्तव दुसरकीं टाँग में अपना लात का ठोकर भार दिहलन आ सिंह चित्ते गिर के असमान देख लिहलन। सिंह के संगे-संगे दूनो जून रोटी खइला से उनकरि हारि हमनी के अखरलि। दूनो जवान ठाढ़ हो गइल रहलन। सिंह ठाढ़ होइके फेरु बाजे बदे श्रीवास्तव के ललकारे लगलन। हमनी का सिंह से श्रीवास्तव के पटकवावे क लालच रहे। ऐसे दखल ना डललीं जा। हमनी का सोचलीं जा कि बजनी बिछूल हरि ह । सिंह भर परला से पटका गइलन हँ, ना त पटकाइल ना रहिलन। दूनो पट्ठा दूसरी तोर भिड़ गइलन। फेरु ऊहे नतीजा निकलल। सिंह खिनिसन अपना ले बाहर हो गइलन आ तीसरी तोर ठाढ़ होत-होत बरियाई से धइके बाज गइलन आ श्रीवास्तव अउरी बेरेप क धइपटकलन। चउथी तोर फेरू सिंह बाजे बदे उनुकरा से जुत्थियाई गइलन। हमरा बुझा गइल कि अब झगरा क नउबति आ जाई आ हँसी-हँसी में ढेर काम बढ़ जाई। हम सिंह के धइके दुसरका सिंह जी का पजराँ ले जाइके बइठा दिहली आ श्रीवास्तव के अपना पजराँ बइठा लिहलीं। दूनो माल सुहुताए लगलन। बिछ्छी का ठाढ़ झाड़ मतिन मोंछि रखबइया सिंह जी का मन के बोध करावे बदे हम कहलीं – "श्रीवास्तव! सिंह तोहरा ले बल में तनिको निमुहर नइखन। ठेला-ठली में कहवाँ नरम परत बान? बजनी का बारे में एकदम अनगइयाँ बना।"

एतना कहते सिंह दम पा गइलन आ बोललन-"एकदम ठीक। हम इनकरा के निमोरि के देई मारव, बाकी बजनी क मरम ना जनला सेहमारि टाँगि धरा जाति बा आ ई टाँग लेत बान् आ हम गिरजात बानी।"

श्रीवास्तव उनुकर उपहास कइ दिहलन-बत्। तू कुश्ती क मरम केतनो जनबऽ। हम तोहरा के जिनिगीभर पटकबे करब।

उदुकी स्वभाव क श्रीवास्तव क मन आसमान छुवत रहे। एसे दुसरका सिंह जी आ हमरो कपारे तलवारि लटके लागलि। सिंह जी पर जेवन बीतल होखे बाकी हमरा मन में त हुद-बुद, हुद-बुद होके लागल। दसगो दण्ड-बइठक कइला से हमरा मलइती क झूठिया धोह बन्हाइल रहे। ओकर भंग होखे क नउबति आ गइलि। सिंह जी जो काँखि-कूँखि के केहू तर जोड़ छोड़ाई लेले रहितन त हमनी के किछु झाड़ भेंटाइत, बाकी ऊ होना सकल रहे। ऊ हमनी क मुँहलग्गू श्रीवास्तव हँसिए-हँसी में कवनो छन हमनियो से बाजे बदे ताल ठोंक सकत रहलन। ए डरि-भय आ शंका-संदेह में परके बराबर भभरत रहल हमरा के महँगा बुझाए लागल। हम श्रीवास्तव क मन टोवलीं-"श्रीवास्तव जी! रउवाँ किछु दिन अखाड़ा में वाजल बुझात बानी?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नाहीं। हम संघ का शाखा में जाईं। ओहिजे संघतियन से धक्का-धुक्की हो जाइलि करे। पहलवानी करे बदे अखाड़ा में बाजल ना हउई।"

हमरा अंदाज भइल कि हम श्रीवास्तव के पटकब ना त पटकइबो ना करब। जोड़ हकनहाक छोड़ाइ लेइब। एसे हमरा के कपार पर बराबर तलवारि लटकत रहेदीहल निम्मन बुझलीं आ घात से बाजे बदे उनुकरा के खुदुकाई दिहलीं-"श्रीवास्तव जी चार-चार तोर बाज के थक गइल होइब। चलीं, चलल जा। रउवाँ किछु खाई-पीहीं।"

ऊ टनाका बोललन-"कवन गामा से बजनी भइलि रहलि ह? हमरा थाके के का बा?"

सिंह जी गुरमुसइनल-"तू गामा भइल बाड़?"

"तोहरा बदे गामा बटले बानी। मन बा त बाज लऽ।"

हम ओ लोग में बाति आगे ना बढ़े दिहलीं। हम श्रीवास्तव के अजमावे बदे पैंतरा बदल के हाथ मिलावे क नेवता दिहलीं-त आईं हमरा के आपन जौहर देखाईं। सिंह जी के बेकल मति करीं।

ऊ निहाल होइके उछल गइलन-"खोजल दाव बीरबलवे पावा। हम त चहते रहलीं हँ। मारेत सिरोही आ लूटे त भंडार।"

"अरे भाई! हम तोहरा से बाजे जोग नइखीं। खाली तोहार बाजे क जौहर देखे क मन चल गइल बा, ना त कहऽ। हम अ बे ले बाजे में तोहरा से हार लिखवा लेईं।"

"नाहीं, आईं। हाथ मिलाईं। तनी जोर आजमाइश हो जाउ।"

"हम तोहरा सोझाँ ठाढ़ होइके हाथ ना मिलाइब। हम बइठत बानी। हमरा के धइके चीत कइदऽ।" ई कहत हम लुंगी मजे में कस-खूँट के ओ करकंरवा, चमकत चानी चूर का असीम अखाड़ा में गोड़ के पाछे मोर के जमींनि पर ठेहुना टेक के केहुनी का बले बइठ गइलीं। ऊ अपना बाहिन में हमारि करिहायँ धइके अपना छाती से धक्का मारके हमरा के पसरा देबे क जतन करे लगलन। अउरियो कुल्हि आपनि जोर-जुगुती लगाइ गइलन; बाकी हम तनिको जुमुस ना खइलीं। हमरा के उनकरा बल के दुरहर थाह लाग गइल। हम उनुकरा के चेतवलीं-"रउवाँ हमरा के चीत ना कइ पाइब। अब हम ठाढ़ होत बानी। रउवाँ जो हमार के धइ-दबाइके हेठाँ बइठवले रहजाई त घरी, नात छोड़ के लम्मा हटीं।"

ऊ हमरा के चाँप के धइके बइठवले रह गइल चहलन। हम उनुकरा के लिहले-दिहले ठाढ़ हो गइलीं आ उनुकरा बाहिं क घेरी चीर के निकल गइलीं। दूनो जाना आमने-सामने हो गइलीं जा। ऊ हमरा से भिड़ गइलन आ हम उठा पटकलीं। ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पट्ठा एकतोर में हारि ना माने वाला रहलन। दोबार बदे पायजामा चढ़ावे लगलन। उनुकर मन राखे बदे हमरा लुंगी कस के मैदान में फेरु उतरे के परल आ हम उनुकरा के पहिलहीं मतिन छकवलीं। फेरू ऊ कबो हमार से बाजे क नाँव ना लिहलन।

एकरा बाद हम शिक्षकन क एगो अखाड़ा ओ बालू का बिरहद मैदान में चल परल। कबो-कबो ओमे छात्रो आ जासु। जहवाँ ले हो सके हम छात्रन के बरकाई ओमे उनुकरा के आवे देबे का पक्ष में ना रही। किछु दिन का बाद ऊ अखाड़ा हमरे कुवाटर में खना गइल। श्रीवास्तव आ अंगरेजी शिक्षक शर्मा ओकर मजेदार पट्ठा रहलन। ओ लोग में बदानि बद के कुश्ती होखे। शर्मा अलसीसर का करीब पजरें क, डेढ़-दुइ कोस पर परेवाली एगो बस्ती भलसीसर क रहवइया रहलन। ऊ रोजाना घरे चलजासु। असकतियाइ गइला पर जदा-कदा हमनिएँका संगे ठहर जासु। ऊ शरीर से गोर-गार, पातर-छितर, ठोस आ हँसमुख मरद रहलन। ऊ अपना सिर का अँगुठिया बार से बड़ा घोह बान्हसु आ उनुकरा मुख मंडल के छटा बढ़ जा।

अखाड़ा में पाला पर शर्मा आपनि करिहायँ धँराइ के श्रीवास्तव के दाव पर मारदेसु। ऊ चारू खाना चीत हो जासु। शर्मा से लड़त-पछरात श्रीवास्तव जोश ढील परत गइल। ओ अखाड़ा का पहलबानन में ऊ तीसरा चउथा नम्मर क पहलवान हो गइलन। फेरू गरमी क छुट्टी आ गइलि। स्कूल बन्न हो गइल आ ऊ अखाड़ा बन्न हो गइल। फेरू स्कूल खुलल चलल बाकी ऊ हमनी क अखाड़ा ना चलल। श्रीवास्तव क हमनी का कुवाटर में आवा जा ही लागलि रह गइल आ जले ओहिजाँ हमार रहलीं तले बराबर ऊ हमरा आवास में ई गावत हसी-खुशी में मउज मस्ती में पइसनल-घर हमने ले लिया है तेरे दर के सामने।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

म्हारो शेखावाटी देश म्हानो प्यारो लागो जी

राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र का चानी मतिन चमचमाति धरती पर चार बरिस रहल हमरा खातिर सोना हो गइल। जेवना मन चाहल जिनिगी के जी रहल बानी ओकरि नेइँ ओहिजें का चमकति माटी से चँताइलि। ओहिजें हमरा के स्वास्थ्य आ शिक्षा क सुरेब-समडउरि डहरि भेंटाइल। अध्यापकी का बादशाही नौकरी क हम ओहिंजें साइत-समहुत कइलीं आ हम सन् १९४६ से १९८५ तक एक रंग में इज्जति पानी से एके करत, उन्नति पावत गइलीं। हमरा बदे ओ उज्जर बलुई भूमि क रज-रेत क टीबा (टीला) रजत क पहाड़ बन गइलन। ओहिजाँ सिलवर-किंग सेठन क हवेली आसमान से बाति करति रहली स। ओहिजाँ का मानिंद बासिन्दा राजपूत अपना के शेखावत कहत गर्व क अनुभव करसु। विद्यालय का छात्रावास में रहवइया छात्र जब आनन्ददायी राति (गोल्डेन नाइट) मनावसु तब कविता भाषण निबन्ध आ गीत सुनावसु आ प्रहसन-नाटक अभिनय करसु। कार्यक्रम का ओराइ गइला पर ऊ हुमक के गावसु-म्हारो शेखावाटी देश म्हानो प्यारो लागो जी।

ओ शेखावाटी का खार जल का रुखरि-सूखलि हवा के ऊहे सुख से बरदास करे जेकरा ओकर रपटा पर गइल रहे आ जन्मभूमि क ममता रहे; नात अउरी सम छनछना जा। ओहिजाँ नौकरी करे ले अगतें क हमार दुई बरिस अपना घरे का धरती पर तवाँइल रहे। हमरा कब्जियत क सिकाइति रहे लागलि रहे। ओ शेखावाटी का अलसीसर क हवा-पानी का ओहिजाँ क हमरा निफिकिर रहल हमरा जिनिगी बदे दवाई हो गइल। हम खूब भुखाई, खूब खाईं आ खूब पचाईं। हमरा के त ओ खार पानियों में मधु घोरा गइल रहे। ओहिजें क रहवइया हमरा साथी कबो-कबो मीठ पानी पदे छछासु बाकी हमरा ओकरा बदे कबो टिसुना ना होखे। मिल गइला पर ओ लोग का संगे पी लिहल करीं, हम कबो तरसीं ना।

मीठ पानी ओहिजाँ बरखा क होखे जेवन पचीसन-तीसन हाथ गहिरा कुण्ड में बटोरल गइल होखे। ऊ कुण्ड हमनी का इहवाँ का इनार मतिन होखँ स। ऊ एकदम पलस्तर कराइ के चिक्कन-चाकन बनावल जाँ स। ओमे लमहर-चाकर छत भा पलस्तर कइल रहे। ओमे जमीनि क पानी बटुरा जाए क जोगाड़ कइ दिहल जा। सभे ना केहू-केहू गो-सँवहर वाला ओके बनवावे। ऊ सार्वजनिक ना होखे। ओकरा मालिक का मरजीए से केहू ओमे ले जल पीए बदे एकाद ठिल्ला-ठिल्ली निकाल ले जा ऊ पानी बड़ा संचि के राखल जा, नात ओरात देर ना लागित। अलसीसर का गउसाला का मैनेजर से जान-पहचान भइला से हमनी का ओहिजाँ का कुण्ड ले पीए बदे कबो-कबो पानी मँगाइ नीबि क कईगो पेड़ रहलन स जेवन धरती पर ले सोहरल रहलन स। जब बसन्त में नाया-नाया, नरम-नरम, लाल-लाल भा ललछहुईं पतइन से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उ झभरस त ओहन क अजगुत छवि छटा मूँगा क पहाड़ी के मात करे। नीबि का गुन क बखान सुन के हम ओघरी एक महीना ले ओकरा टूसा के यानी ललछहुईं पतइन के एक मुट्ठा चबाई के गाइक एक सेर दूध सबे राहे पियल करीं। ओ गउसाला से घर का गाइ का दूध मतिन सुच्चा दूध हमनी के मिल जाइल करे। गउसाला क दूध कस्बा में उठवना जा। करीब मनभर दूध एगो बाल्टा में ताला लगाई के बन्न कइदिहल जा। ओ में टोंटी लागलि रहे। उठवना देबे वाला आदमी ओही से कामेभर दूध नपुहा बरतन में निकालि-निकाल गहँकिन के देत जा। ओसे गोलमाल होखे क अनेसा ना रहे। हम दूनोजून दूध लेईं का दालि में डाले बदे गाइ-भइँसि का घीव क प्रबन्ध राखीं।

ओहिजा फल फलहरी आ हरियर तरकारी क बराबर टाना रहे। बरसाति में कंकरी, फूट आ मतीरा (हिंगुवाना) क बहारि रहे। बाजड़ा का फसलि का संगे ई बोवाइजासु। ओहिजां भोजन क मुख्य अनाज बाजड़ा मानल जा। ओहिजाँ क मुख्य दालि मूँग आ मोठ क होखे। दूध-दही-माठा मिल जाइल करे। साधारन जनता का इ हे साधारण भोजन रहे। ओहिजाँ का आदमिन का गोहूँ, चाउर का रहरि का दालि क टिसुना ना रहे। हमनी का शिक्षक-छात्र सभ गोहूँ क रोटी आ मूँग क दालि खाईं जा। कबो-कबो छात्रावास में चाउर आ मूँग का दालि के खिचड़ी बन जाइल करे। विशेष भोजन में खीर-पूड़ी खूब चले। हर रविवार के हमनी के कुवाटर में विशेष भोजन किछु न किछु बना लिहलकरीं जा। ए खास खाजु में कबो खीर-पूड़ी कबो मूँग का दालि क हलुवा, कबो पूवा-कचउड़ी, आ कबो फुलवरा-पकौड़ी बनल करसु। ए माने में हमनी का तीनू साथी चटोर रहलीं जा। हरियर तरकारी क ओहिजाँ बड़ा टाना रहे। बरसाति में नेनुवाँ-कँकरी तनी-मनी मिल जा आ जाड़ा में मोटकी मूरई मिले। ए ही पर संतोष करे के परे। इँकड़ी क तरकारी होले ओहिजें सुने के मिलल रहे। कुकुरमुत्ता का सबदगर तक तरकारी क चरचा ओहिजाँ खूब सुने के मिललि।

बाजड़ा क रोटी-लिट्टी हम अपना गाँव घरे पहिल हीं ले खइले रहलीं, बाकी आने का मने। एके स्वास्थ्य सवाद का विचार से सउख से खाए क परसाद शेखावाटी से लेइके लवटलीं। ई परसाद एगो आपन छात्र देले रहे। ओ छात्र क बखान 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' शीर्षक लेख में भइल बा। ऊ छात्र हमनी का तीन जाना के अपना घरे ले जाइके खियावे बदे नेवतलस। हमार दूनो साथी राजी हो गइल। हम केहू छात्र किहाँ खाए-पीए क विचार ना रखला से असहमत हो गइलीं; बाकी ओ गुरभक्त छात्र का हठका चलते हमार ना चलल आ हमरो जब तइयार हो जाए के परल तब हम बालू का टीबन (टीलन) पर उपजल खाली बाजरा के रोटी खाए क शर्त रख दिहलीं। हम ओ विशुद्ध बाजरा से बनल रोटी क बहुत बखान सुनले रहलीं। नियत अतवार के डेढ़ कोस क डहरि पार कइके हमनी का ओकरा गावें-घरे चोहँपली जा। पहुँचते हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाजड़ा क रोटी क तगादा कइ दिहलीं। अगते ले तइयारी रहे। थोरकिए देर में हमनी के बाजड़ा क तावा-तावा भर क बड़हन, पतराह, कड़ेर-कड़ेर, सोन्ह-सोन्ह, सफेद-सफेद आ गरम-गरम ऊ रोटी दही-चीनी का संगे ऊ सवाद दिहलसि कि ओकरा खातिर आजु ले चेत परला पर तरसी लाँ। ऊ बाजड़ा क रोटी किछु अउरिए रहे,-वह चितवनि अवरे किछु जेहि बर होत सुजान।

अहिजाँ बहुत गहराई पर जाके धरती से पानी निकले। ओहिजाँ इनारन में झँकला पर झइँ आवे। ओहन में ले पानी निकालल बोड़ समर रहे। हाथ अगियाइ जासु आ बाहिं फाटे लागसु। ओहिजाँ ऊँटन से मोटि घींचवाइ के कूवँन से पानी निकलवावल जा, आ बाल्टी-गगरा मतिन छोट-छोट पात्रन के आदमी ओही तरीका से घींचसु। एक तोर छात्रावास में पानी भरे वाला मजूरा ताव दे दिहलस। छात्रवासी विद्यार्थिन का ठिल्ली-ठिल्ला उठावे के पर गइल। ऊहे हमनियों क पानी भरे आ हमनी का ओकरि-मजूरी दे दिहलकरीं जा। ओकरा ताव दीहला पर हमनियों का गागरि-बाल्टि उठा लिहलीं जा। देखते छात्रावास क लइका हमनियों क पानी भर देवे बदे धवलन। हमनी का उनकरि सेवा ना सँकरलीं जा जले ओह तरेक जरूरति बुझाइलि तले अपना पीए बदे भरत रह गइलीं जा।

हम शेखावाटी में रहके तन, मन लोक व्यवहार आ शैक्षिक योग्यता का माने में बहाल भइलीं। ओहिजाँ हमरा स्वास्थ्य निम्मन भइल। शरीर में तागति बुझाइलि, काम करे में बाधा डाले से थकानि लम्मा भागलि आ उत्साह धुन क पक्का भइलीं। ओहिजाँ खाली हमार काम रहे खाइल-खेलल, आ पढ़ल-पढ़ावल। थोरे में कहाई कि स्वास्थ्य आ अध्ययन। ओघरी हमार जवानी-जीवन गृह-विरागी मतिन रहे। हम 'माया प्रबल धाम-धन-बनिता' का बान्ह में ना कसाइल रहलीं। मन जोग निम्मन काम में बाझल रहलीं, ना त ओसे सवँसि मिले आ ना त घर क चेत परे। हमरा घरहूँ ले केहू चिट्ठी पत्री लिख के हमरा के घर-परिवार का मोह बदे उटकेरे वाला ना रहे हमरा मेहरारू 'मरद-रसिया' कहाए का डरनी एकरा बदे हियाव ना कइ सकत रहली। ऊ सासु बाप महतारी ससुर आ लोक से अदकल रह गइल होइहन। जइसे ऊ अछरंग से बँचल चाहत रहली ओइसहीं हम हूँ 'मेहरि चेर' कहाये का अछरंग से लम्मा-लम्मा रहल चाहत रहलीं। हम पत्र लिखे में असकतिया हो हई। हम माई का ममता-मोह का मारे कबो-कबो पत्र लिख के आपन समाचार उनुकरा के देइके बोध करावल करीं।

हम आपन पहिले क नियमित व्यायाम दंड-बइठक बराबर करत जाईं। सांझि खानी संगिन का संग में परके आ उमिरि का तकाजा से कबो बाली बाल, कबो फुटबाल कबो टेनिस आ कबो बर्डमिन्टन खेले लागीं। मन में आ जात बालू का ओ पहाड़ मतिन टीलन पर चढ़के देर ले टहरीं, बइठीं आ सरेहि क साँझि खानी क नोहर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दृश्य निहारीं आ सीझीं। आजु जब-जब हमंरा ओ शेखावाटी क अपना मन-मोताबिक हावा-पानी, भोजन-छाजन, पढ़े-लिखे आ पढ़ावे क धुनि, छात्रन क गुरू भक्ति, ओ लम्मा का जीवन क मऊज मस्ती, ओहिजाँ का रहवइया साथिन के हेल मेल आ सरेहिक प्राकृतिक छटा क याद पर जाला तब-तब ई सगरो भारत वर्ष अपने गाँव-घर बुझाए लागे ला आ हमार मन चाहे लागेला कि हम ओ शेखावाटी में जाइके सभकरा के देख लेइ, सभकरा गले से मिल लेई, आ एक दुई दिन रहके सभकरा संगे खा-पी लेई, बाकी बुढउती क ई तन जाए क हि याब ना करे तब मगन होइके हमार मन खाली ई गावत रह जाला-म्हारो शेखावाटी देश म्हानो प्यारो लागो जी।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड – तृतीय

सोरह भइँसि क सोरह चभक्का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुन ना हिरानो गुन गाहक हिराना है।

सन् १९५० का मई क आखीरी सप्ताह राजस्थान से लवटानी जातरा क हरारति मेटावते बीत गइल। जून क जरत-तपत महीना हमरा बदे नौकरी खोजे-पावे का चिन्ता क लू-बतास लिहले आ जुमल। ई चिन्ता चार बरिस बाद डाहे लागलि रहे। ओघरी पहिलकी नौकरी से एक बारगी इस्तीफा दे दीहल हमरा अखरे लागल। तले चेत परल कि पाछिलि बुध्धि गँवारन क। मनथिरा गइल। सोंचलीं, जो नौकरी ना मिली त एह सालि डटके खेतिए कराइब आ एकर घाटा-नाफा समुझब। जब अपना बाप-दादा से पाँच बिगहा जमीन क थाती सौंपल गइलि बा त अइसना मौका पर ओके जोत-बोइ के आपनि गिरहत्ती चलावल समुझदारी आ पुरुषार्थ कहाई। एमे कवन आपनि नमूसी नइखे। मिडिल स्कूल का कृषि मास्टर साहब क शिक्षा याद परलि-'उत्तम खेती मध्यम बान, नीच नौकरी भीख समान।' ए मंत्र के जपते हमरा मन क मलाल मिट गइल।

हम जून क महीना सतुवा-पिसान बान्ह के नौकरी खोजे में लगावे बदे ठान लिहलीं। चार-पाँच दिन हलुकाहे देहि हिलवले हिन्दी-शिक्षकन क खाली परलि जगहिन क आह-पता लागे लागलि अपना घर का पजराँ कतहीं नौकरी करे क इच्छा रहे। काहें कि एही में हम आपन घरेलू हित बूझत रहलीं। अपना गाँव का स्कूल में शिक्षक भइल हमरा पसन्न ना रहे। आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दिलदार नगर आ इण्टरकालेज, मुहम्मदाबाद पर हमारि नजरि गड़लि। एहू में मुहम्मदाबाद क इंटर कालेज पहिला नम्मर पर रहे। काहें कि ओहिजाँ अपना सरेहि मीहें आवे-जो के रहे। एमे आपनि खेती-बारी आवत-जात देखे क सुतार रहे आ अपना टोल-महाल का आदमिन क डेरा-डंडा का आवत जात क बीच में परत गइला से डहरि मनसायन रहे। दिलदार नगर क आइल-गइल अनबह बुझा। एसे हम मुहम्मदाबाद का कालेज में अध्यापकी की खातिर खाली प्रार्थना पत्र देइके आपनि भागि अजमावे क मन बनवले रह गइलीं।

राजस्थान में नौकरी पावे में बाबा राजा साहब क सिफारिस आ माई क मान मनौती हमार कामे आइलि रहे। मुहम्मदाबाद का स्कूल का नौकरी खातिर बाबा क उतजोग आ हमरा मेहरारू क मंगल कामना हमरा कामे आइलि। हमरा गाँव क एगो तेज-तपाक आ चलता-पुरजा चउधुर रहलन। बाबा क उनुकरा से बड़ा बने। बाबा मुहम्मदाबाद स्कूल में हमार नियुक्ति करावे क चरचा चलवलन। संजोगन ओहिजां क प्रबन्धक आ हेडमास्टर उनुकर किछु-किछु जानल पहचानल रहलन। उनकरे संगे हम ओ दूनो क दर्शन कइली। हेडमास्टर अजीब प्रानी बुझइलन; बाकी मैनेजर वकील

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहब संयत-गम्भीर वाणी-स्वभाव क सिद्धान्तवादी आ समुझदार व्यक्ति रहलन। हमरा मकसद के जनते ऊ हमरा से तुरंते पूछलन-"तोहरा गाँवें का उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में हिन्दी शिक्षक का आवश्यकता क विज्ञापन अखबार में छपल रहल ओहिजाँ अध्यापकी खातिर प्रार्थना पत्र देले बाड़ कि ना ?"

"हमरा अपना गाँव पर अध्यापकी कइल पसन्न नइखे।"

ऊ सुनते चिहाइ के अपना बडी-बड़ी आँखिन से हमरा के निहारत पूछलन-"ई काहे ?"

"देहाती मसला ह कि घर क मुरूगी दालि बराबर। गाँव पर मास्टरी कइला पर कवनो रवा ना रहे आ एहू ले बढ़के ई बा कि आगे हमरा किछु पढ़त-लिखत रहे के बा। ओहिजाँ अपना घर-गिरहत्ती आ गँवई राजनीति का चक्र-व्यूह में फँस गइला पर हमरा अपना पढ़ला-लिखला आ पढ़वला का उद्देश क बलि देबे के परी। हम ओहिजाँ अध्यापकी कइ के ई खता मोल लीहल नइखीं चाहत। हम अपना गाँव-घर से थोरकी लम्मा हटके अध्यापकी कइल चाहत बानी जेवन सेकि सप्ताह में छब दिन पढ़ल-पढ़ावल चली आ एक दिन घर-गिहत्ती क मामिला देखल-सुनल।"

हमरा के बुझाइल कि वकील साहब के हमारि बाति रुचलि आ पचलि। पता ना उनुकरा के हमरा में का गुन बुझाइल कि ऊ बड़ा सनेह से पूछलन-"हमरा विद्यालय में प्रार्थना पत्र देबे क नियत तारीखि बीत गइलि बा। तूँ प्रार्थना पत्र देले बाड़ कि ना ?"

"हम प्रार्थना पत्र समय से दे देले बानी।"

"ठीक बा। चउधुरी साहब! हमरा जाने में रउवाँ एगो गुनगर उम्मेदवार क सिफारिसि लेई के आइल बानी। ए से राउरि मनोकामना पूजी। फेरू प्रभु क जइसनि मरजी। स्कूल का कार्य-समिति क बइठकी पहिली जुलाई के होई ओकरि सूचना डाक से उम्मेदवारन के समय से दे दिहल जाई। एह विषय में एघरी हम ई हे कह सकत बानी। अब अउरी कवनो काम होखे त कहल जाउ।"

चउधुरी साहब प्रसन्नचित्त कहलन-"वकील साहब! हम एही काम से आइल रहलीं ह। एपर उदारता से विचार होखे के चाहीं।"

"रउरा उम्मीदवार में किछु गुन बा आ ओकरा साथे न्याय होई।" एकराबाद हमनी का ओहिजाँ ले चलता हो गइलीं जा। रास्ता में चउधुरी काका हमरा से पूछलन-"हे फलाना! तोहरा में कवन गुन वकील साहब के लउकल ह कि ऊ ओपर रीझला मतिन लगलन हँ।"

"काका जी! ई हमरा समुझ में ना आइल ह। रउवाँ के का बुझाइल ह।"

"वकील आदमी का गुन क पारखी आ गाहक बुझातन। ऊ तोहरा में अध्यापकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क गुन परखले बान आ ओ से तहरा पर उनकरि किछु रुझानि बुझाइलि ह। वकील घाघ, अंकोरहा, लोभी आ चापलूस पसन्द नइखन बुझात। ए से "गुन ना हिरानो गुन-गाहक हिराना है" कहे क नऊबति ना आई। हमरा बुझाता कि ऊ तोहरा में समय-श्रम लगाइ के पढ़े-लिखे आ पढ़ावे-लिखावे क गुन अँइकले बान। चलऽ लच्छन निम्मन बा। दइब सोझ बुझात बान। काम होई। हमनी का एही तरे बतियावत संझा में घरे चोहँप गइलीं जा।"

हमरा करीब एक डेढ़ सप्ताह ले प्रतीक्षा करे के परल। बुला स्कूल सात जुलाई के खुले के रहे कि पाँच-छव जुलाई के हमरा के डाक से हिन्दी-शिक्षक का पद पर नियुक्ति क पत्र मिल गइल आ ओकरा अनुसार हम इंटर कालेज, मुहम्मदाबाद का अध्यापक उपस्थिति-पंजिका पर हस्ताक्षर कइके ओहिजाँ का शिक्षक समूह में शामिल हो गइलीं।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होवहि सो जु राम रचि राखा

सात भा आठ जुलाई सन् १९५० ईसवीं के हम इण्टरकालेज, मुहम्मदाबाद का प्राचार्यका कार्यालय में चोहँप के उनुकरा अनुमति से शिक्षक उपस्थिति पंजिका पर हस्ताक्षर कइके विद्यालय-परिवार से जुड़ गइलीं आ पैंतीस बरिस ओहिजाँ क बराबर आइल-गइल हमरा लागल रह गइल। ओघरी विद्यालय के साहित्य, विज्ञान आ कृषि वर्ग का पढ़ाई बदे मान्यता रहे। साहित्य-वर्ग का नवीं-दसवीं कक्षन में अ ब स कइके कई गो अनुभाग चलँस। स्कूल का छात्रन क कुल्हि संख्या एक हजार के फान के डेढ़ हजार पर जोर मारल चाहति रहे। छव, सात आ आठ का कक्षन में नावें मात्र क छात्र-संख्या रहे। करीब-करीब पुरहरि तहसील ले पढ़वइया लरिका बटुराइ जाँस। तहसील भर में खाली दूई-तीन गो हाईस्कूल रहबे कइलन। ई तहसील का केन्द्र में रहे। ओघरी स्कूल मुहम्मदाबाद में तहसील कार्यालय का सोझां शहीद-पार्क का पजराँ ओहिजाँ चलत रहे, जहवाँ आजु महिला अस्पताल बन गइल बा। ऊ काम चलाऊ विद्या मंदिर पाँच ईंच का मोटि देवालि पर कर्कट-टीन टपाड़ी से छावल-छोपल रहे। मकान से हरहुन भइली पर विद्यालय छात्रन का भारी भरकम संख्या से भरहुन आ चुहेलगर लागे। स्कूल क शिक्षा, साहित्यिक-संस्कृति आ खेलकूद क कार्यक्रम सराहनीय रहे। हम राजस्थान में जेवना स्कूल में पढ़ाईं ओकरा मकान शिक्षकावास आ छात्रावास का तुलना में ई सोन्ना रहे; बाकी छात्र आ अध्यापक-संख्या का माने में तिन्ना रहे। पढ़ाई आ खेल-कूद का देखते दूनो समान।

ओही सालि मुहम्मदबाद का इंटरकालेज के इंटर क मान्यता मिलि गइलि। पछुवाई के मान्यता मिलला से ओ बरिस खाली इग्यारह गो छात्र इग्यारहवीं कक्षा में प्रवेश ले सकलन। अँगरेजी आ अर्थशास्त्र का प्रवक्तन क नियुक्ति भइलि आ इतिहास, भूगोल, संस्कृत क प्रवक्ता पहिलहीं का शिक्षकन में ले मिल गइलन। हिन्दी-साहित्यरत्न का आधार पर दुई सज्जन भाषा-शिक्षक का पद पर अगतहीं ले काम करत रहलन, तबो हिन्दी पढ़ावे बदे अउरी विषयन के पढ़ावे वाला प्रशिक्षित ग्रेजुएट लोग के लगावें के परे। भाषा-शिक्षक क जरुरति रहला से साहित्यरत्न का आधार पर हमरो हो गइलि रहे। नवीं आ दसवीं कक्षन क हिन्दी पढ़ावे बदे हमरा के दिहल गइलि। छात्र हमरा पढ़वला क सराहना कइलन आ ओकरि आवाजि प्रबन्धक का कान तक गइलिं। उनुकरा दिमाग पर हमरा पढ़वला क निम्मनि मोहरि लागि गइलि।

अँगरेजी क प्रवक्ता हिन्दियो से एम.ए. रहलन। ए से उनुकरा के हिन्दियो पढ़ावे के दियाइ गइलि। उनुकरा दुइ विषयन के पढ़वला से छात्र उबजियाये लगलन। काहें कि उनुकर पढ़ावे क तरीका रूचिकर ना रहे। ऊ विद्यार्थी प्रिंसिपल से हिन्दी क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यापक बदले क आग्रह करे लगलन। ऊ टरकावत जात रहलन, तले एही बीच में अँगरेजी क ऊ प्रवक्ता बोखार से खटपरूँ होइ के एक महीना क स्कूल से छुट्टी ले लिहलन। विवश होइके प्रिंसिपल का प्रबन्धक से राइ-बाति कइके हमरे के इंटर क हिन्दी पढ़ावे के देबे के परल। काहें कि छात्रन क ईहे माँगि रहे। हमरा ओघरी अपनहीं इंटर क परीक्षा देबे के रहल, घर का खेती-गिरहत्ती का बढ़न्ती बदे जोगाड़ बान्हे के रहे आ इंटर में पढ़वला से हमरा के कवनो आर्थिक लाभ ना रहे एसे हमरा ओ कक्षा के पढ़वला क कबनो उत्सुकता दोचताही ना रहे। एतनो पर बरियाई से अपना के मिलत अवसर से हाथ धोवल हमरा के बड़ बुड़बकाही बुझाइलि। एही का मारे इंटर में पढ़ावल संकार लिहलीं आ खट के पढ़ावे लगलीं। एकर फल अच्छा भइल कि ओघरी ले इंटर का कक्षन के हिन्दी पढ़ावत रहला से हिन्दी में एम.ए. कइलीहला पर हम हिन्दी-प्रवक्ता हो गइलीं आ प्रवक्ता क वेतनमान हमरा के स्कूल का देबे के परल आ अगते ले हमार हिन्दी पढ़ावत रहल सुकुलान हो गइल। हम अपना पढ़ावे लिखावे का उद्देश का एह ऊँचाई ले चोहँपे क पहिले कवनो आसरा ना रहे। हमरा बुझाला किई हमरा बल पौरूख क नतीजा ना रहे ई हरीच्छा क रचल विधान रहे। जब केहू हमरा करतब क बखान करे लागेला तब हमार मन लजाए लागेला आ हम 'होइहें सोई जो राम रचि राखा' कह के ओकर मुँह बन्न कइदिहल चाही लाँ।

हम भागि, भगवती आ भगवान पर भरोसा पर भरोसा राखी लाँ; बाकी उनुकरा कपारे अपना जिनिगी क कुल्हि जिम्मेवारी सँडप के बेकाम क नपुंसक साँड़ मतिन उगरह सरेहि चरत रहल पसन्न ना करीं। मानी लाँ कि हम माया क पुतला हईं। गृह-कारज नाना जंजाला का चलते हमरा केहू देवी-देवता क पूजा-पाठ करे क सवँसि ना ह। हम ए मतलबी दुनियां क खट्ट-तीत-मीठ मजा चखत, रोवत, गावत रहीलाँ। हम एसे लम्माना भागीं। जानीलां कि एही बदे हम एहिजाँ आइल बानी। जले जीए के बा तले सीए के बा। ई हे हमार पूजा पाठ ह। हमरा फोकट में देवी-देवती क प्रसाद खाइल पसन्न ना ह। हमरा भागीं विद्या होखे भा जनि हम सरस्वती माई का सोझाँ कबो-कबो जाइके माथा नवाइ के विनती कइ देइलाँ-हे जग-जननी महारानी दुरुगा माई हमरा हाथ ले कबो ई कलमि-कुदारी न छूटे हम निकम्मा निठल्ला होई के ए स्वारथी संसार में केहू क ओठर सुनीं। एकरा आगे बस एतने जानी लाँ कि "होइहें सोई जो राम रचि राखा।"

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भेंट को सके कुंअंक भाल के

इण्टर कालेज, मुहम्मदाबाद का अध्यापकी का संगहीं जिम्मेवारी क भारी जुवा ए बैल का कन्हा पर सजके धरा गइल आ जवानी का जोस-खरोस में हम घींचे लगलीं। पढ़ला-पढ़वला क काम अगतहीं ले तय चलत रहे। समय पर मैनेजर से अनुमति पाइके इंटर क परीक्षा देबे खातिर आवेदन-पत्र भर दिहलीं। परीक्षा दिहली आ उत्तीर्ण हो गइलीं। आगे अइसन संजोग बइठत गइल कि हम जेवना सालि परीक्षा में बइठे क मन चलवलीं तेवना सालि अनुमति मिलति गइलि। हम करीब हर बरिस परीक्षा देत गइलीं। एमे हमरा के माता क पूजा बहुरिया क नेवत रहे। ज्ञान-लाभ का साथे अर्थ लाभो क आशा पोख्ता होखे। चउतरफा जिनिगी का जंग में जूझत हम सन् १९५७ तक आगरा विश्व विद्यालय से एम.ए. क परीक्षा पास कइ लिहलीं आ हिन्दी भाषा-शिक्षक से हिन्दी क प्रवक्ता होइके प्रवक्ता-वेतनमान में विद्यालय क सेवा करे लगलीं। ए दौरान हमरा के देखे के मिलल कि अइसनो संतोषी आ असकतियाह शिक्षक रहलन जेवन बी.ए., बी.टी. भा बी.एड्. रहलन आ एही का वेतमान में अपना पूरा सेवा-काल तक सहायक अध्यापक रह गइलन। अनुकूल अवसर आवत लउकलो पर लाख उकसवलो पर ऊ ना सगबगइलन। ऊ निछान महावीर हनुमान जी का किरिपा क भरोसा कइके अपना उन्नति कल्यान बदे हनुमान चलीसा बाँचत रह गइलन। हम गोरखपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में फेरु एम.ए. कइ लिहलीं आ आगरा विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. करे बदे पंजीकृत हो गइलीं। आचार्य परशुराम चुतर्वेदी का निर्देशन में शोध करे के हमरा के अनुमति मिललि रहे। हमारा विषय रहे-सूर साहित्य में अन्तर्कथाएँ। बाकी धरते झाँपी बवन्डर। अन्तर्कथा का परिभाषा का बारे में हमार आचार्य जी से मतभेद हो गइल। हम आचार्य पं. सीताराम चतुर्वेदी, डा. भगीरथ मिश्र आदि हिन्दी का कइगो मान्य विद्वानन से राइ-बाति कइलीं। उ हमरे मत का पक्ष में हामी भरलन। वृद्ध आचार्य का सोझाँ उनुकरा मत का विरोध में बहस कइल बाउर लागल आ हम संकोच में पर के उनुकरा किहाँ जाए का साहस ना कइ सकलीं। घचपच में किछु समय बीतत गइल आ हमं ढील परत गइलीं। ऊ शील संकोच हमरा संकल्प क फँसरी बन गइल। बाद में उनुकर संदेश पर संदेश आइल; बाकी हमना कनमनइलीं। ऊ हमरा जिनिगी क एगो बारी भूल रहे। कबो-कबो हम ओ भूल बदे पछताइलाँ । ए से का लाभ? पाछिलि बुध्धि गवाँरन क। हमरा पी.एच.डी. होखे में खाली आचार्य जी बाधक ना भइलन। ओनहूँ ले ढेर हम हो गइलीं। असल में गैस रोग से हमार भिडंत, पारिवारिक मुवन-जीयन से बदलत परिवार क ढाँचा, लइकी-फइकी का विवाह-शादी बदे दौड़-धूप, पी.एच.डी. कइला से आर्थिक संकठ आ साहित्यिक सेवा में मददि क कवनो आशा ना लउकल। आ आगरा विश्वविद्यालय से लम्मा परला से हमार सम्पर्क ना जोड़ पावल जइसन बटुराह कारन हमरा के ए मैदान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ले भाग ठाढ़ होखे बदे लाचार कइ दिहलभ। बाकी एह सबले जबरजंग कारन एगो अउरी रहे जेवन हमरा मुँह पर ताला लगावे आ कलमि से बरकत जाए में माहिर आ हम ओकर चलती कबो अपना बल बरियाई एकरा ले पहिले चलेना दिहलीं। हमरा बुझाता कि बुला हमरा जवानी का जोर उमिरि क चलीसा लगते ऊहे पाछे ले हमरा पीठि में छूरा घोंप दिहलस। हम अपना ओ बैरी के केहू का आगे चालीसन बारिस ले उघारना ना कइलीं हँ बाकी अब अस्सी क उमिरि लाँघ गइला पर ओके उधार कइके ओकरा करनी क मजा ओके चरवा दिहल हमरा के जरुरी बुझा गइल बा। ओके वे उघटल हमरा के अब कल ना भेंटाई। हमरा लइकपन में एगो हथदेखवा पंडी जी भखलन कि लरिका का हाथ में विद्या क लकीरि नइखे। हमरा माई क मन मसवाइल। लइकपन क खेले-खाए वाली अनबूझ जिनिगी क उमंग। हमरा ओकर कवनो गमि फिकिरि ना। हम पढ़े-लिखे का विपरीत परिस्थितियन में जीयत अपना धुन में बढ़त एम.ए. ले परीक्षन के पार करत गइलीं। हम अपना हाथ क विद्या क लकीरि ना निहारे गइलीं, तबो अपना पुरबही का करम क, विधाता का लिखल कर्म-लेखक किछु त महातिम होखे के चाही। हमरा बुझाता, पढ़ाई-लिखाई का पी. एच.डी. का सीढ़ी का पजराँ चोहँपत-चोहँपत ऊहे बेड़ डाल दिहलस हम छेंका गइलीं। ओपर चढ़ ना पवलीं आ एकर दुख कबो भइल ,आ न बा। हम सोचीलाँ, संतोष करी लाँ-चलऽ। एसे गली-गली घुमवइया हथदेखवा पंडित का भखला का सचाई के जीए-खाए के किछु न किछु अलम्म भेंटा जाई आ हमरा के आगे अउरी ना पढ़ला क एगो निम्मन बे जोड़ प्रामाणिक जबाब-भेंट को सके कुअंक भाल को।

माई जी का पूछला पर हमरा हस्त-रेखा का आधार पर पंडी जी बहुत किछु भाख गइल रहलन। ऊ कुल्ह हमरा चेत नइखे परत। खाली ई हे दुइगो हमरा चेत परत बा-लरिका का हाथ में विद्या क रेखा नइखे आ ई लइका अपना हाथ से बनावल मंडप में रही। ओघरी हम मिडिल स्कूल में पढ़त रहलीं। ओकराबाद जइसे-तइसे पढ़त हम एम.ए. हो गइलीं। अपना ए पढ़ाई-लिखाई का करतन उन्नतालीस बरिस अध्यापकी कइलीं हँ आ किछु साहित्यिक सेवो क अवसर पवलीं हँ। मुहम्मदाबाद का स्कूल में अध्यापकी करत सुविधा आ जरूरति से हम हरिहरपुर में एगो अपना के रहे बदे हलुकाहे मकान बनवा लिहलीं ओही में आपन गुजर-बसर होखे लागल समय पाइके मकान ठीक-ठाक आ फइलाँव हो गइल बा। ओही में आपन निजी परिवार रहत बा। पंडी जी का भाखल बातिन क हमरा चेत परला का मोताबिक ऊ पचास प्रतिशत सही बान आ पचास प्रतिशत दग-दग में उनुकरा बाति क पचास प्रतिशत क दग-दग में परल हमरा खातिर सोना हो गइल, ना त हमारि जिनिगी हेवाँ में पर गइलि रहिति आ एकरा वदे माई जी जिनिगी भर कलपति रहे जइतीं। ए हालति में हमार जनमल अकारथ हो जाइत। हमरा हाथ में विद्या क डँडारी न तब रहे आ न त अबले उगलि-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उभरलि, बाकी हमरा ए विद्या का डंड़ारी क,ए हस्त रेख क भा विधाता का ए अड़गुड़ लेखक कवनो पछतावा–सोच नइखे। एतना कहत हम ई कह दीहल चाहब कि हम कवनो अउरी देश क भरजे तरजे वाला ऊ सराहूँ सूरमा ना हईं जेवन शब्द कोश ले 'असम्भव' शब्द के निकाल फेंके क दावा करेला। हम भोजपुरिया एगो महमूली मरद हईं जेवन सोरि में गोड़ डाल के तोरल पसन्न ना करे। ऊ गों–विचार से आपन करतब–करनी करत जाला। ऊ भाल का कुअंक के मेटावे क हियाव करेला आ ना त तरनाइ के डंका पीटे ला।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः

बीसवीं सदी क छठवाँ दसक हमरा जिनिगी क कठिन संघर्ष काल रहे। हम अपना जवानी का जोर-जोम से पढ़ला-पढ़वला, घर-गिरहत्ती सम्हारला, आर्थिक दशा सुधरला, आ साहित्य-सेवा का दिशा में पावँ बढ़वलीं। ओघरी हमरा के अपना जवानी का मथारे चोहँपे में कोर-कसर ना रह गइल रहे। गदहपचीसी क अल्हड़ उड़ानि ए बन्ना का पीठ धूरि ना लगा पवलसि। हमरा कपारे आपनि जिनिगी बनावे-चोनावे आ आपन सम्मिलित परिवार के पाले-पोसे क धुनि सवार भइलि। ओघरी इंटर कालेज, मुहम्मदाबाद हमरा के भारी अलम्म रहे। ओहिजाँ जुमते महाठगिनी माया क बोझ हमरा कपार ले नापता हो जा आ हम अपना के सुखया पाईं। हमरा के पाँच-छव घण्टा ज्ञान-लोक में बिचरे क समय मिल जा। ओहिजाँ एक ले एक अलमस्त जियरा ज्ञान गंगा में बुड़की मारे वाला शिक्षक-शिक्षार्थी रहलन। जहवाँ लरिकन क संग तहवाँ बाजे मृदंग क ओहिजाँ मउज-मस्ती रहे। ओहिजां कबो बुढ़वन क संग तहवाँ खरची का तंग क कबो नउबाति ना आवे। नाया स्कूल आ करीब नाया-जवान शिक्षक रहलन। सभकरा दारही-मोंछि क बार करिआ-करिया आ सभकर सिर पर प्रकृति का हाथे धइलि ऊन क करिया-करिया टोपी। कंचित केहू केहू का कपार क बार तिलके लागल रहलन स। अध्यापकन में मेल जोल एकता रहे। अध्यापक का हित-गौरव बदे सभ एक साथ ठाढ़ होजा। पढ़ावे का विषय में शंका-संदेह भइला पर अहंकार शून्य रहके आपुस में विचार विमर्श कइके ओके मेटा डालल जा। अध्यापकन में पढ़ावे आ अनुशासन राखे क तत्परता रहे। ओ अध्यापकन में ले अपना पढ़ावे का विषय क अच्छा जानकार आ अध्ययनशील अध्यापक इतिहास क प्रवक्ता श्री राजेश्वर राय रहलन। हमरा आ उनुकरा में भाव-विचार क मेल बइठ गइल आ हमनी में बहुत घनिष्ठता हो गइलि। हम उनुकरा के मास्टर साहब कहत पहिली भेंट का दिने जेवन सम्बोधित करत पलग्गी कइलीं, ओही संबोधन से उनुकरा के बोलावत रह गइलीं, जले संग साथ रहे। मास्टर साहब दगदग लाल गोर, मांसल, सोझ-साझ, उत्तान, सुकुवार सुगठित, हँसमुख, संवेदनशील, व्यवहार-कुशल छव फुट्टा जवान रहलन।

ओघरी विद्यालय में राष्ट्रीय पर्व बड़ा उत्साह से मनावल जाँस। ओमे अध्यापक छात्र दिल खोल के सहयोग करसु। हम ओमे कविता सस्वर सुनाई। सन् १९४२ ले हम कविता बनावे लागल रहलीं। अलीगढ़ ले "शिक्षक" नाँव से एगो महावारी पत्रिका निकले ओमे 'शिक्षक' आ 'छात्र' शीर्षक से हमार कविता १९४५-४६ का आस-पास छपली स। राजस्थान का अध्यापकी जीवन में कवितन क एगो पोथी रच गलले रहली बाकी हम सन् १९५० ले पहिले "कवि जी" ना हो पावल रहलीं मास्टर साहब का सनेह का बोली-बानी का चलते हम "कवि जी" दिहल गइलीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९६०-६१ में हमरा कवितन क संग्रह 'युग-प्रदीप' छपल आ मास्टर साहब क कवि जी ओपर आपन उपनाम 'अचल' छपववलन हमरा 'कवि जी' क एतना धाकि जमलि कि मुहम्मदाबाद का अजराँ-पजराँ हमरा महतारी-बाप क धइल घरऊ आ विद्यालय का प्रमाण-पत्रन पर छपल नावँ क पाँव ना जमल। पता न कवना घरी-नक्षत्र में ई नाँव-धराइल ह कि जेंव केहूँ "कवि जी" गोहरावेला तेंव हम कनमनाइ जाईं लाँ आ मास्टर साहब क सुरता पर जाला आ हमरा के सुनाई परे लागेला-"कवि जी! कवि जी!! आई आई। कवि मनीषी परिभूः स्वयं भूः।" छात्र-अध्यापकन का भरलि भीड़ि में आ मय जनता का भीड़ि में एही नाँव से ऊ हमरा के बोलावसु। हमरा के कवि जी कहाए में ई रामबान बन गइल।

मास्टर साहब उत्साही आ हुरपेट्टा मरद रहलन। हिन्दी आ अंगरेजी दूनो में भरनाटिया, धारावाहिक भाषण देसु। इतिहास क प्रवक्ता भइला से ऊ इतिहास का जानल-मानल विद्वानन का ग्रंथन क अध्ययन करत रहसु। ऊ अच्छा पढ़ावसु आ अच्छा अनुशासन राखसु। ऊ अधिकारिन का जी हजूरी से लम्मा रहसु हमरा मतिन अल्पवयस्क आ अल्पज्ञ क कदर करसु। उनुकरा आत्मीयता का बानी-व्यवहार से उनुकर बहुत आदमी हेली-मेली होत गइल रहलन। ऊ हमरा से बेगर राइ-बाति कइल कवनो नाया काम ना करसु। काहें कि ऊ हमरा के "कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः" कहके बढ़ावा देसु।

मास्टर साहब मुहम्मदाबाद का विद्यालयीय जीवन में हमरा कन्हा से मिलाइके लड़े वाला मरद रहलन। जब उनुकरा डेरा पर मुहम्मदाबाद चोहपीं आ 'मास्टर साहब' कहके गोहराईं तब हमरा से धधाई के मिलसु कवि जी, कविं जी कहत। अब हमरा ओकर का बखान करे के बा? "जब-जब याद परे वा घर की नयनन से बहे पानी।" मास्टर साहब क करीब सात बरिस क साथ रहे। सन् १९५८ का जुलाई में विद्यालय के मुहम्मदाबाद तहसील का कार्यालय मा शहीद पार्क का पजराँ ले डाक बंगला का नजदीक का मैदान में बहरवाराँ बनल नाया भवन में ले आइल तय हो गइल रहे। सन् १९५८ क प्रजा-तंत्र-दिवस ए ही नाया भवन में मनावल गइल। ओघरी जुलाई अगस्त ले हिन्दी भाषा-शिक्षक ले हिन्दी प्रवक्ता बनावे बदे हमरा स्कूल का मैनेजर से मजे में विवाद भा संघर्ष चलत रहे। जब 26 जनवरी के राष्ट्रीय पर्व क कार्यक्रम समाप्त भइल तब हम मास्टर साहब के लिहले मैनेजर का डेरा पर जुमलीं। किछु बेरले मैनेजर साहब से एन्ने-ओन्ने क बाति चीति चलतिं रहलि। मास्टर साहब आ उनुकरा बहनोई का प्रभाव से धाकड़ मैनेजर का, उनसे भेंट कइला का कारन पूछला पर हम आपनि अरजि-गरजि निर्भयता से कह दिहलीं। जोरदार नाकर-नुकर करतो रहला पर हमनी का आग्रह कइला पर ऊ आपन जिद्द छोड़के हमरा के सन् १९५६ का अगस्त महीना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ले हिन्दी का प्रवक्ता पद पर प्रोन्नत कइदिहलन। मास्टर साहब के हमरा ए लाभ प्रसन्नता भइलि।

विद्यालय हर सालि मतिन 20 मई के बन्न हो गइल। ऊ आपन परिवार बन्न भइला ले अगतहीं भेज देले रहलन। स्कूल बन्न होते कहलन–"कवि जी! अजुबे चार बजे का बस से अपना गाँवें चल जाइब। चार बजे बस पर चढ़ावे बदे अइबऽ न?"

"हमहूँ अजुवे घरे भाग जाए क तइयारी कइले बानी। फेरू जइसन राउरि आज्ञा होखे?"

"हकनहाक आ जाइब। हमरा के बस पर बइठाइ के बिदा कइके तब अपना घरे चल जाइब।"

हम मास्टर का डेरा पर गइलीं आ ओहिजाँ ले चार बजत–बजत हमनी का सहनिन्ना बस स्टेशन पर चोहँप गइलीं जा। बस आइलि। हम उनुकरा के बस पर बइठवलीं। सीटी बाजलि। बस चले के भइलि। हम अपना ओ श्रद्धेय साथी का सोझाँ आपन माथा नवाइके पलग्गी कइलीं। ऊ सनेह से गदगद होइके हमरा कान्हा पर हाथ धरत हिरदया से असीसलन–"चिरंजीव, चिरंजीव। हमनी का मिली लें जा बिछुरे बदे आ बिछुरी लें जा मिले बदे। भगवत्कृपा होई त जुलाई में स्कूल खुलला पर मिलब जा। तोहरा से का कहे के बा?" तू कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः हउव। निम्मन कइलऽह, आ गइलऽह। जा, जा।

बस चललि आ आसरा देइके ऊ चल गइलन। ओ सालि गजब क धूपकाला तवँल, आगि बरिसलि। सुने में आइल, मास्टर साहव के लू मार दिहलसि। ओ दिग्गज मरद क छन भंगुरि विशाल काया झउँसा गइलि आ ऊ बिकराल काल क कवर बन गइलि। इतिहास क ऊ पंडित–प्रवक्ता ए दुनिया में खाली इतिहास बन के रह गइलन। जुलाई में विद्यालय खुलल आ उनुकरा से भेंटि होखे क आसरा बराबर खातिर धूर–माटी में गड़ा गइल। उनुकरि कइलि नेकी हमरा माथे आ उनुकर दिहल नावँ 'कवि जी' हमरा साथे रह गइल। जब अजुवो केहू हमरा के "कवि जी" कहेला तब कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः हमरा कान में गूँज जाला।'

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहिमन रहिला की भली जो परसे मनलाय

सन् १९५६ क बरिस रहे। विबाह-सादी क लगनि खूब चालू रहे। मुहम्मदबाद इंटर कालेज का शिक्षक आ अउरी कर्मचारिन के एके तिथि-तारीख के दुइगो तिलकोत्सव का जलपान आ भोज क नेवता मिल गइलन स। एगो रहे विद्यालय क पुरान वयोवृद्ध चपरासी नरसिंह राय क जेवन बाबू साहब कहासु। दुसरका रहे क्षेत्र क नामी-गरामी एगो प्रोफेसर साहब क। दूनो नेवतन क स्कूल का नेवतहरी कर्मचारिन खातिर महातिम रहे। बाबू साहब का लरिका कं उमिरि तीस-बत्तीस के हेले जाति रहे आ देहीं हरदी लागे क जोग ना बुझात रहे। उनुकर वंश-बरखा बूढ़े जात रहे। उनुकरा आगे अन्हार छवले रहे। ओ सालि कतहीं ले भुलाइल-भटकल तिलकहरू आ टपकलन। आतुर बाबू साहब किहाँ विवाह पट-पटा जाए में छनो ना लागल। उनुकरा बदे पत्थर पर दूबि जामि गइलि रहे। ऊ विवाह ठीक होते स्कूल का सभ कर्मचारिन के नेवत दिहलन। उंनुकरा लालसा रहे कि उनुकरा तिलक का परोजन का दिने उनुकरा दुवार पर प्रिंसिपल सहित सगोर शिक्षक पधारसु आ जूठन गिरावसु। एकरा बदे ऊ सभकरा से चेरउरी कइले रहलन आ सभ अपनइली जनावल उनुकर नेवता संकरले रहे। तिलकोत्सव ले एक दिन पहिले प्रोफेसर साहब क नाऊ भा बारी स्कूल का पुरहर कर्मचारिन का सहित प्रिंसिपल के नेवता दे गइल रहे।

ओ ही दिने स्कूल समय समाप्त भइला पर चार बजे बाबू साहब सभकरा के चेत परावे बदे सभकरा सोझाँ हाथ जोरलन। संजोग से सभ प्रिंसिपल का आफिस में बटुराइ गइल रहे। ऊचेरउरी कइलन-"काल्ही हमरा घरे तिलक क परोजन बा। रउरा सभे आ जाइब त हमारि एक मुट्ठी क ई काय आ इज्जति सइ मुट्ठी क हो जाई।"

ओ सभकर एके जबाब मिलल-"बाबू साहब! अमनख मति मनि ह। हम हकनहाक तोरहा किहाँ चलतीं; बाकी प्रोफेसर साहब क फेरु भेंटाइल काम राखी। तूँ त अपना घरे क बाड़ा एना पारी माफी चाहत बानी। आगे नाती भइला पर तोहरा किहाँ आशीर्वाद देबे हकनहाक चलल जाई।" ऊ प्रिसिंपल साहब क घरविद चपरासी रहलन। साहब का परिवार क सवाँग समझल जासु। उनुकर घर बाहर करे बदे एक गोड़ पर ठाढ़ रहसु। बड़ा आसरा लगाइके ऊ साहब का ओराँ तिकवलन-"बाबू साहब बड़ा भागि कि तोहरा लरिका का देहीं हरदी लागे जा रहलि बा। हमार पुरहर परिवार आ ए विद्यालय क सभ केहू के अपार खुशी बा। ए सभ क मनोरथ बा कि सादी सफल रहो आ तोहरा के नाती कं मुँह समय से देखे क भागि होखे। तोहरा किहाँ चलेक पूर मन रहल ह आ हम चले बदे कहतो रहलीं हँ। ना गइला पर मन कचोट के रह जाई; तबो ई हे कहब कि एनापारी हमरो के माफी द। तू आपन सवांग बाड़ऽ तोहरा किहाँ कबो चोहँप सकत बानी। प्रोफेसर साहब किहाँ बराबर ना जाइल जा सके। जब उनुकर नेवता आ गइल बा त हमरो के चल जाए द।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनते बाबू साहब ठक रह गइलन। उनुकरा से किछु कहा ते ना रहे। सोचत-समुझत उनुकर कंठ खुलल-"जइसन रउरा सभे क मरजी। हम रउरा सभे क तावेदार बानी। जेवना में रउरा सभे क भलाई-खुशी बा ओही में हमरो। जेवना में रउरा सभ के सुबेंवत बुझाई, ऊहे करब जा। हम त रउरा सभे क बाट जोहबे करब।"

सभ अपना-अपना डेरा-घर बदे चलता हो गइल। हमनी का स्कूल का फ़ाटक पर एगो आदमी से बतियावत अड़कल रहलीं जा। सभकरा के जात देखके हम आ मास्टर साहब दूनो जाना घर-मुँह भइल चाहत रहलीं जा कि बाबू साहब मन मरले हमनी का सोझाँ आइके हाथ जोरलन-"हमरा आसरा रहल ह कि काल्हि रउरा सभे अपना पाँव का घूरि से हमरा दुवार घर के पवित्र कइ देइब आ हमार दुवार आ बखरी गह-गहा जाई। बाकी अउरी सभ हमरा ए मौका पर जाए से जबाब दे दिहल। ऊ सभ प्रोफेसर साहब का दुवार क शोभा बढ़ावे क मन बना ले ले बा। अब रउरा सभे का कहत बानी।"

मास्टर साहब पूछलन-"प्रिंसिपल?" उत्तर आइल-"ऊ हो नाही" हमनी का दूनो जाना। चकचिहा गइलीं जा। काहें कि बाबू साहब बराबर उनुकरा डेरा पर ढहल रहसु। प्रिंसिपल-प्रिंसिपलाइन दूनो क टहल बजावसु। ओ बूढ़-ठेल बाबू साहब के अपना हिनाई के बोध होत आ असक्काँ परत देख के हमनी का दूनो जाना अबूहाँ पर गइलीं जा। अपने परिवार-समाज क ऊ उमिरि में जेठ बूढ़ा जामवन्त रुपया-पइसा, पढ़ाई-लिखाई आ सामाजिक प्रतिष्ठा में हीन भइला से अपना के हेठ समुझ के धूवाँ भइल रहे। एतने में मास्टर साहब "अब रउरा सभे का कहत बानी?" क उत्तर दिहलन-"ए बाबू साहब हम केहू किहाँ न जाइब न जइतीं, तोहरा किहाँ हकन हाके चलतीं। बाकी हमरा के एगो बिकठ दिकदारी बा कि हमरा मेहरारू ए घरी अहिजें बाड़ी। लम्मा गइला पर जो ना लवट पाइब त राति खानी ऊ अकससंवा पर जइहन। ऊ आजुले घर ले बाहर कबो भइबे ना कइली। ओहू पर उनुकरा बदे ई कस्बा हर तरे अजनबी बा। उनुकरा के राति क डेरा पर अकेल छोड़ के गइल हमरा के अबूह लागत बा। एतनो पर जेवन तूँ कहब, हम तेवने करब। हे कवी जी से पूछऽ, का कहत बानऽ। सब कछु काज भरत के हाथा।"

बाबू साहब क मन किछु हरियराइल। ऊ हमरा हाथ जोर के चेरउरी कइलन-कवि जी हम राउर हीत-परीत अपना के कहे क हियाब करत बानी। हमारि लरिकनी रउरा गावें बियहलि बा। हम जब ओहिजाँ जइलाँ तब राति खानी रउरे इहवाँठिहरी लाँ आ भोजन करीला। हम कई तोर रउवाँ के अपना घरे ले गइल चहली हँ आ रउवाँ बराबर ई हे कहत हमरा के टरकावत अइलीं हँ कि 'कवनो परोजन परे द।' "अब एकरा ले बोड़ कवन परोजन परी? हम खूबहीन बूझत बानी कि प्रोफेसर साहब अउरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभ मास्टर लोग ले राउर नजदीकी बानीं आ रउरा गाँव क बानी। रउवाँ एगो ए हीन बेकति के उठा लेई हमार पगरी रउवाँ पर बा। प्रोफेसर साहब से माफी माँग लेईब। चाहे रउवाँ पर कतनो भीरि आवो।"

बाबू साहब क हिया-परसी बाति सुन के हम किछु बेर ले सोच में परल उनुकरा मुँह का ओराँ टक-टकी लगवले रह गइलीं, ना त उनुकर बाति टारे क बेंवत हमरा कहवाँ रह गइल रहे। हमरा से हाली जबाब ना पाइके ऊ आपनि बाति आगे बढ़ा दिहलन। ऊ भींजलि बिलारि मतिन रोवाँ फोरलें कलपलन-हमरा के स्कूल क एगो महमूली चपरासी जान-बूझ के केहू हमरा किहाँ जाए के राजी ना भइल ह। हम अपना गाँवें बहुत लोगन से कहले रहलीं हँ कि हमरा तिलक-विवाह का परोजन का दिने हमरा स्कूल का प्रिंसिपल का सहित सभ शिक्षक का चपरासी लोग हकनहाक पधारी।

हालति ई बा कि हमरा किहाँ जाए के प्रिंसिपल आ शिक्षक केहू राजी ना भइल। खाली हमरा चपरासी भाई लोग हमरा दुवार पर दरसन देइ के आपन दसो नहँ जोर के हमार हुकुम बजावे खातिर हँसी-खुशी से तइयार बा। केहू मास्टर का ना चोहँपला पर सभ केहू कही कि बड़कवा बने बदे ई कहिले बमकत रहलन हँ। अब कलई खुलि गइलि। हम ओ आदमिन से काल्हि मुँह चोरावत फिरब। रउवाँ सभे काहे हमरा के अनगराहित बूझत बानी?

एतना कहत बाबू साहब क गर भर भइल आ आँखि ढब-ढबा भइली स। उनुकर ऊ दशा देख हमारि आँखि भर अइली स। नव परो भा छव हम उनुकरा किहाँ गइल मनहीं मन तय कइ लिहलीं। मास्टर साहब क मन जाने बदे उनुकरा ओराँ तिकवलीं। ऊ हो बाबू साहब क मन राखे क नीयति राखत पूछलन-"कवि जी! का सोचत बाड़ऽ। किछु इनकरा के तीहा देबे जोग बाति सोच-कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः।"

"हम का कहीं? बाबू साहब हमरा नैतिकता आ मानवता के खरसान पर चढ़ा दिहलन। अब हमरा कुल्ह माया-मोह छोड़ के इनिकरा किहाँ तिलकोत्सव में काल्हि शामिल होखे के बा। एसे केहू तरे मुरे के नइखे; ना त हम बतछोड़ आ कठकरेजी कहाइब। हमरा विश्वास बा कि रउवों बाबू साहब किहाँ हकनहाके चलब।"

"तोहार संग पा गइलीं त जरूर चलब। ना चलला पर जिनिगी भर मन कचोटत रही। कवि जी! रउवाँ हमरा डेरा का हालति के पुरहर जानत बानी। एघरी हम छान-पगहा से छना-बन्हा गइल बानी। राति खानी हम कतहीं रुक ना सकीं। खा-पी के साथे राती में लवट आवे के। बाबू साहब हमनी के खियाइ पियाइ के संकेरे छोड़ देव ना त रात बिराति क तोहरा किहाँ ले लवटे में हमनी के दिकदारी होई।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबू साहब क शरीर खुशी में दुनियाईं गइल। बिहँसत कहलन–"हम रउराँ सभे के कवनो दिकदारी ना होखे देइब। छनोभर खातिरदरसन दे देइब जा त हमरा माथा ऊँच हो जाई आ रउराँ सभे क ई गुन हमरा जिनिगी भर ना भुलाई।"

हमनी क इसारा पाइके ऊ अपना घर–गाँव का ओराँ आ हमनी का अपना–अपना डेरा का ओराँ चलता हो पाँव–गाड़ी कस दिहलीं जा। दुसरा दिने संझा में तीन–चार बजे का आस–पास मस्टर साहब का डेरा पर चोहँप गइलीं। ओहिजाँ ले हमनी का गल–चउरन करत रसे–रस चलत दिन अछइत बाबू साहब का गावें बालापुर जुम गइलीं जा। खबरि पवते हमनी का अगवानी में दुलुकलन आ भाव–भोराइल हमनी का आगे आइके हाथ जोरि के अपना दुआर पर ले जाइके तोसक–तकिया लगावल दुइगो पलंगरिन पर तिलकहरू लोग का अगिला मोहड़ा पर बइठवलन। लोटा में पानी भरले लेइ आइके हमनी क पाँव धोवे धोवावे बदे अपनहीं लपकलन। हमनी का उनुकरो हाथ ले लोटा छोरके आपन–आपन हाथ मुँह–पाँव धोंवली जा। ओघरी हमनी के उनुकरा नेह नदी में नहाए क सुख मिलल। हाथ मुँह पोंछे बदे आपनि अंगोछी पकड़ा दिहलन आ हमनी का फरिच होइ के पलंगरिन पर आसन जमा दिहलीं जा। तले उनुकरा मेहरारू क बिनलि रंगीन–कामदार डालिन में भरपेटावँ मिठाई ले आइके धरा गइलि। देखते मास्टर साहब पूछलन–"महाराज! ई भोजन ह कि जलपान?"

ऊ हाथ जोरलन –"जलपान।"

ई सुनते हम पूछ बइठलीं–"जब एतना–एतना लेड़ुवा–टिकरी आ पेड़ा गुलाब जामुन चाभ लेइब जा तब पूड़ी, कचउड़ी मालपूवा आ दही चीनी कवना पेट में समवाइब जा? एगो डाली हटाईं। एगो में हमनी क काम मजे में चल जाई।" मास्टरो साहब ए पर जोर दे दिहलन आ ऊ एगो डाली क मिठाई उठाइ ले गइलन।

रातिखानी सेकराहे तिलक चढ़ला क कुल्ह रसम–रवाज पूरा हो गइल। तिलकहरून का खास भोज क पाँति बइठि गइलि। ओपाँति में अगिला मोहँड़ा पर कमरा बिछाइ के बाबू साहब हमनी के बइठवलन। गरम–गरम, नरम–नरम सोहारी–कचउड़ी परोसाए लागलि। सुच्चा भइँसि का घीव में क छानल पंचमेवा से भरल माल–पूवा पत्तल में आ परोसाइल। पँजरा बइठल ऊ हमनी के परोसवावत जात रहलन। मटकियाइके पत्तल में पक्वान ढहवाइ देसु। दही–चीनी चले सुरुम भइलि। पहिलिए तोर सजाव निछान सार्‌ही वाला कठेर दही आ चीनी एतना परोसाइगइलि कि हमनी का दुसरी तोर लेबे क हियाब ना कइ सकलीं जा। बाबू साहब "लेईं जा लईं जा" कहत ललकार बान्हत रह गइलन, बाकी हमनी का एको ठोप लेबे क नाँव ना लिहलीं जा। हमनी से "देईं जा, दईं जा" क उत्तर ना दियाइ पावल। भोज–भट्टन का पाँति में अइसनि हारि क कबो मुहँ देखे क नउबति हमनी के ना आइलि रहे आ न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइ। एके हरका में हमनी का दही-चीनी ले बे से मुहँठ गइलीं जा। हमनी का खाइ-पी के तना गइलीं जा। खिवइयन क मन बाढ़ पर रहे। हाथ-मुँह धोवे में हमनी का सजाव, सारही मारदही चाखे क फल भोगे के परल। घीव हाथ-मुँह क संग छोड़े ना। ऊ पानी का आवँक में ना रहे। पानी के पानी-पानी कइ दिहलस हमनी क हयरानी देखके लुग्गा-फाटा बाबू साहब दिहलन। ओसे रगर-रगर हमनी का ओ मन सोख-खुराफाती जूठ संगी से हाथ-मुँह क गर छोड़वलीं जा। बाबू साहब आपन अंगोछी बढ़वलन। ओ से हाथ-मुँह पोंछ-पाँछ के पलंगरिन पर ओलर गइलीं जा आ मीठ पान क बीरा आ छोटकी लाची क दाना चुभलावे-चाभे लगलीं जा। गम्हीराह भोजन का अधिकाई आ नशा से हमनी क आँखि झये लगली स। चौंक के मास्टर साहब उठ बइठलन आ हमरा के खुदकवलन। अगुताइल दूनो जाना ओहिजाँ ले बिदा होखे बदे ठाढ़ हो गइलीं जा। खबरि पवते बाबू साहब हमनी किहाँ हाजिर हो गइलन आ लम्मा ले पहुँचावे बदे आगे बढ़त गइलन। जब कई तोर कहला पर ना लवटलन तब हमनी का ठाढ़ हो गइलीं जा।

मास्टर साहब कहलन-"बाबू साहब! रउवाँ लवटीं। परोजन का दिने राउर दुवार छोड़ल निम्मन नइखे। अकाज होई। हीतभीतन के देखीं। उनुकरा आव भगत में कवनो कमी न आवे।"

बाबू साहब एतना कहते उनुकर बाति ऊपरे-ऊपर लोक लिहलन-नाहीं नाहीं। कवनो हरज नइखे। हमरा स्कूल क संगी-साथी चपरासी लोग सबेरहीं ले हमार कुल्ह काम उठा बजा लिहले बा। हमरा के खरहो नइखे सरकावे देत। ई देख के गाँव के सभ दंग बा। काल्हि हमरा बुझाइल हमरा दुवार पर मास्टर क चरन परला क बाति का करे के बा, ओकर नावों ना सुनाई, बाकी रउरा सभे पधार के हमरा पानी राख दिहलीं। जो रउरा सभे का खातिरदारी में कवनो कोर-कसरि रह गइलि होई त माफ करब जा। जेवन हमरा जूरल-आँटल ह, ऊ लेइ के हम रउरा सभे का सेवा में हाजिर रहलीं हँ। ई रउरा सभे क हमरा पर मेहरबानी बा। हमरा गाँवें-घर क कारीगर लोग भोज रसद तइयार कइले रहल ह। हम कस्बा शहर का हलवाइन के ना ले आ पवलीं हँ। बताईं जा कि भोजन सर सामान काम चलाऊँ बनल बा?

"एतना सुनते मास्टर साहब बोल उठलन-काम चलाऊँ ना, अल बेला बनल बा एक ले एक बढ़के। ओकर एगो रवा पत्तल में छोड़ल ना बनत रहल ह। भोज अमृत बनल बा।"

बाबू साहब का अपना ओर तिकवते हमारिबानी फूट परलि राउर सगरो माल खाँटी बा। घीव क लड्डू टेढ़ो भलो। रसद जे बनवले होखे गजब उतरल बा। जो गाँवें क हलवाई बान त ऊ कमाल क बान। रउरि खातिरदारी त अजगुत बा। बुझाता कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना पहिले का कवनो जनम में रउवें कंविवर रहीम से भेंटाइ गइल रहलीं कि उनुकरा कवि क बानी फूट पड़लि – 'रहिमन रहिला की भली जो परसे मन लाइ। रउवाँ जो अपना हाथ से केहू के माहुरो खियाइ देइ त ऊ अमृत क मुँह मारी; मुवलो जी जाई। रउवो इहवाँ आइके हमनी केबड़ा सुख मिलल; निहाल बानी जा। जाई ना त राउर अकाज होई आ हमन के अबेर।

ऊ हाथ जोरलन आ हमनी का सादी का सफलता बदे मंगल कामना। ऊ अपना घर बदे आ हमनी का अपना डेरा बदे झंपटलीं जा।

रायबरेलियन हमनी क घटऊ बेकति हो गइल रहलन। ऊ सुख–दुख में हमनी का संगे बराबर ठाढ़ रहसु। ऊ अपना घाटा–नाफा से बेफिकिर रहलन। उनुकर जहवाँ राति तहवें बिहान होखे। ऊ नारद रहलन हमनी के चारू ओराँ क समाचार ऊ बराबर दिहलन करसु। दूसरा दिने मास्टर साहब का डेरा पर हम बइठल रहलीं कि तबे ऊ आइ जुमलन आ हमनी का पँजरा आइ बइठलन। खुश दिल भइल ऊ मजेदार सुर में अजगुत राग छेड़लन–"काल्हि जे प्रोफेसर साहब किहाँ जलपान भोजन करे बदे ना गइल ऊ हो पछताई, आ जे निम्मन खान–मान पावे बदे ओहिजाँ जाए बदे पेन्हाइल रकटत रहल ह ऊ हो पछतात बा।"

ई सुनते हमनी का उनुकर चुटकिला सुनें जाने बदे अधीर हो गइलीं जा। एतना कहते हमनी का पछताए क कारन जाने क अधीर हो गइलीं जा। हम उनुकरि रहस्य–भरलि बाति सुन के उनुकरा गणित से पछताए वाला मरदन ले पहिले अपना के बिलगवलीं–"रायबेरलियन बगमेली! मास्टर साहब का आपन डेरा छोड़ के राति खानी भोज खाए जाए क सवँहर–सवँसि ना रहलि ह। ईहाँ का बाबू साहब का बड़ा गोड़धरिया कइला पर हमरा संगे चल के राति खानी लवट आवे क संकल्प कइके गइल रहलीं। हम विद्यालय–परिवार के समंगर मिलल नेवता पढ़के ओपर खाली हस्ताक्षर कइ देइलाँ। ओ नेवता पर पूड़ी–मिठाई खाए ना जाई।"

"काहें?"

"बेजान–पहचान क भइलो पर अइसन नेवता एगो स्कूल क शिक्षक भइला का नाते आन का मने पवनी–पँजहर मतिन दिहल जाए क अनेसा रहेला। एमे जान आ न मानऽ; हम तोहार मेहमान होखे क खतरा रहाला। ओही नेवता पर हमार जाला सोहाला जेवन श्रद्धा–सनेह से दिहल होला। आपन पूर्वज लोग ईहे कहत चल आवत बा कि–

आवत ही हरसे नहीं, नयननि बहे सनेह।
रहिमन तहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब केहू आपन घनिष्ठ निजी रूप में हमरा नावें नेवता देले तबे जाए क मन करेला आ जाई लाँ।"

"तब रउवाँ प्रोफेसर साहब किहाँ ना जइतीं?"

"नाहीं हम उनुकरा किहाँ जइतीं। काहें कि उनुकर नेवता हमरा के गाँव घर आ भाई-भयवद का नाते मिलल रहल ह। हम भाई-भयवदन का संगे जइतीं, खइतीं आ आपन डेरा धरतीं। प्रोफेसर साहब से भेंट होइत त पलग्गी चिरंजी हो जाइति। हमरा कइसन पछतावा होइत। अब तूँ आपन रहस्य खोलऽ। हमनी के असमंजस में जनि डलले रहऽ।"

ऊ बड़ा रंग में आई के हँसत-बिहँसत मुँह खोललन - "का कहीं? कहल जात नइखे आ बेकहल कल परत नइखे। रहस्य कहीं भा कहनीं। हम तनिके में, संकेत में ओके बताइ-कह देत बानी कि प्रोफेसर साहब किहाँ मान-खान पान क भुखाइल प्रिंसिपल समेत जे मास्टर गइल रहल ह ओकर धरमो गइल ह आ तुम्मो फूटल रह। ऊ सभ मेउवाँ बनल दुवार का चउफाल का कोना-अंतराँ दबकल रहल ह। ओ लोग के केहू पूछे-पाछे वाला ना रहल ह। प्रोफेसर साहब एक ले एक जानल-मानल आदमिन का खातिरदारी में बाझल रहलन हँ। हमार ओ गाँव में घर-घर हेलीमेली बान। ओही लोग का संगे हम ठाट-बाट से जलपान-भोज में भाग लिहुईं। अपना स्कूल का मास्टर क अफनाइल, मुँह बिजुकावल, आ टिड़ुकल देखके हमरा न हँसत बने आ न रोवत। प्रोफेसर साहब किहाँ बड़ा भीड़ि रहे। खलक टूट परल रहे। ओ भीड़ि में केहू के केहू चिन्हेना। ओ लोग मतिन ओहिजाँ लेहँड़े बड़कवा झवान भइल रहलन। हमार हेल मेल ओहू लोग का कामे आइल। हमरा ले ढेर नामी गरामी आ जानल-पहचानल बने क ओ लोग क गुमान चकनाचूर हो गइल। हमरे हेली-मेली काल्हि ओ लोग तक जलपान पहुँचवलन आ भोजन करे का बेराँ पाँति में बइठा के भोजन करवलन; ना त लोग तकते रह गइल रहित। ओहिजाँ शहरि ले हलवाई आइल रहल। ऊ किसिम-किसिम क खोवा-छेना क एक से एक मिठाई आ अजगुत पक्वान बनवले रहल। ऊ मिठाई पक्वान कहवाँ केहूँ क मिलल रहे। सभ खाइ के मस्त हो गइल; बाकी ओ लोग बदे ऊ कुल्ह माहुर हो गइल रहे। ऊ लोग भोजन कइल आ ओहिजाँ ले अगुता इल-अउँजाइल अइसन भागल जइसे मधु-मारबी-पतया ओ सनगर मरदन के बिन्हत होखसु।"

हमनी का विद्यालय क ऊ नारद, रायबरेलियन ओ तिलकोत्सव का जलपान भोज के कहानी घंटाभर में मजेदार भाषा में रूचिकर ढंग से कहत रहगइलन। एकराबाद कहानी ओराइ गइलि आ बइठकी क जरूरति परा गइलि। हम आ ऊ नारद अपना-अपना डेरा का ओराँ टेघर परलीं जा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाथत बानंऽ गोहरा

जेवना सालि इण्टरकालेज मुहम्मदाबाद में हमारि नियुक्ति भइलि तवने बरिस लाइब्रेरियन पद पर रायबरेलियन बगमेली क। बगमेली तेज-तपाक लाइब्रेरियन साबित भइलन। ऊ पुस्तकन का वितरन में कोतहाई ना करसु। ओघरी हमरा के केहू अंगरेजी लेखक क एगो लेख पढ़े के मिलल रहे। जेवना में सुझाव दिहल गइल रहे कि विद्यालय में अइसन शिक्षक होखे के चहिहन जिनकरा पढ़वला का बाद छात्र पुस्तकालय का ओरों दउरे लागसु। हमरा ओ लेखक क सुझाव में ले काम-लायक उदाहरण-उद्धरण प्रसंग का अनुसार दिहल करीं। पूछला पर अउरी उपयोगी-मनोरंजक पुस्तक के हम छात्रन के रूचि लेइ के बताईं। एसे छात्र-पुस्तकालय का ओरों भागसु आ रायबरेलियन का सिर पर सवार हो जासु। ऊ जब कबो उबियाइ जासु तब हमरा के ओरहन देसु-"ए कवि जी! रउवाँ त छात्रन के पुस्तकालय क किताबि पढ़े बदे एतना उकसाइ देत बानी कि ऊ हमरा कपार पर चढ़ बइठत बान स। ओहन क लरी नइखे टूटति।"

हम हँसत कहीं-"बोलीं, हम छात्रन का ओ रेला के रोके छेंके क उपाय करीं?"

"नाहीं, नाहीं। ई हम ना कहब। जो ओ लोग का किताबिन के पढ़े क सउख चरचरात बा त किताबिन के बाँटे हमारि देहिं नइखे मरमराति। एमें हमरा घर ले कवन दाम लागत बा। हम एही काम बदे राखल बानी।" उनुकरा जमाना में पुस्तकालय में पढ़वइयन क जेवन भीड़ि भइलि, ऊ उनुकरा गइला का बाद कबो फेरु ना बहुरलि। ओघरी किताबि ओ पुस्तकालय ले निकलि के काशी, प्रयाग आ मथुरा तक क तीर्थ यात्रा कइली स आ दिल्ली, बम्बई आ कलकत्ता ले सफर। किछु लवटली स किछु जहवाँ गइली स तहवें बस गइली स। रायबरेलियन का जाते बेचारी किताबि लोहा का काल कोठरी में अइसन बन्न भइली स कि जिनिगी-जिनिगीभर खातिर कैद हो गइली स। बुझाला कि ऊ लोग अपना अवारागर्दी क फल पावल। किछु लोग के देवँका जइसन हतियार किरवना गतर-गतर काट-कतर के माटी कइदिहलन स।

रायबरेलियन से हमर एतना हेलमेल बढ़ल कि ऊ सुख-दुख क साथी हमार सवाँग हो गइलन। ऊ अपना घर-गिरहत्ती से निफिकिर मस्तमौला जीव रहलन। ऊ छट्टियों में मुहम्मदाबाद का नियराँ-पजराँ बिचरल हीरल करसु। छात्रन आ उनुकरा अभिभावकन से उनुकर बड़ा लगाव हो गइल रहे। ई सभ उनुकर बल रहे। ऊ अपना विद्यालय लोक क नारद रहलन आ मास्टर साहब राजेश्वर राय आ हमारि दाहिनी बाहिं। पता ना, ऊ कवना नक्षत्र में जामल रहलन कि ऊ मैनेजर, प्रिंसिपल, शिक्षक आ छात्र केहू के मसल में ना लिहलन। ऊ छवफुट्टा लमहर, बड़हनि मोंछि क झंडा बीसन-पचीसन बरिस ले फहरावत रह गइलन। उनुकरा देहीं केहूँ धूरिना लगावल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इंटर पास कइके ऊ विद्यालय का सेवा में लाग गइल रहलन। सभकरा देखादेखी ऊ हेंकड़ी जीयत मरद विश्व विद्यालय का ऊँच की डिग्रिन के लेइ-लेबे क ठान लिहलन। उनुकरा बदे ई संगे-संगे लँगड़ो देवालि फाने के रहे। काहे कि उनुकरा पढ़े-लिखे के ना रहे; खाली परीक्षा क आवेदन-पत्र भरे के रहे आ परीक्षा देबे के रहे। जो हो सकी त परीक्षे का दिन में अउरी परीक्षार्थिन से पूछपाछ कइके आ उनुकरि किताबि, नोटबुक के उलाट-पलाट के जानकारी उनुकरा करे के रहे। लागल-लागल ऊ दसन बरिस में एम.ए., बी.एड. होई के होंकड़लन। ऊ हो एल.टी. प्रवक्ता वेतन मान में काम करे जोग हो गइलन; बाकी उनुकरा एकर कवनो चिन्ता फिकिरि ना रहे।

बैगन केहू के पंथ आ केहू के बादी। जहवाँ रायबरेलियन बहुतन बदे बहुते प्रिय प्रानी रहलन तहवाँ किछु जाना का जीउ क गान्ही। ऊ गोइयाँ लोग अपना अजराँ-पँजरा ले लम्मा हटाके ठेकाये का नीयति से दौड़-धूप कइके गाँवे का एगो उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में एल.टी. वेतन मान में अध्यापक पद पर उनुकरा नियुक्ति क जोगाड़ बइठा दिहल। मुहम्मदाबाद क्षेत्र में उनुकर मन रम गइल रहे, ऊ ओ क्षेत्र के छोड़े क नावँ ना लेसु। उनुकर कान काट के ओहिजें गडा गइल रहे। ऊ कवनो हालति में इंटर कालेज मुहम्मदाबाद ले जाए के राजी ना होखसु। गोइयाँ लोग हार मान गइल रहे। गोइयाँ लोग का चाल्हाँकी क पारा, पस्त परत देख के हम एक दिन राय बरेलियन से पूछलीं-"एहिजाँ का स्कूल के छोड़के अपना गाँव का स्कूल में जाए का बारे में का सोचत बानी? अब एकरा निर्णय में ढेर देर ना होखे के चाही।"

"आप ए बारे में का सोचत बानी? हमार मन एहिजाँ का मउज मस्ती के त्यागल नइखे चाहत।"

मुहम्मदाबाद का विद्यालय-जीवन में मास्टर साहब आ रायबरेलियने हमार बल रहलन। मास्टर साहब एह लोक ले गुजर चुकल रहलन। अब खाली एगो राय बरेलियने हमारा हँसी-खुसी का हरला-खँगला हर मौका पर आँहे वाला रह गइल रहलन। उनुकरा जाते हमरा दाएँ-बाएँ केहू ना सूझत रहे; बाकी आपन स्वार्थ साधे बदे हम ओ सूरुवाँ मरद के भरसाई में कइसे झोंकती? अपना ना उनुकरा स्वार्थ क खियाल कइके राय दीहल हमरा के सौतुक लागल। हम उनुकरा हित-अहित के सोचत समुझत पूछलीं-"रायबेरलियन! ई बतावऽ कि तोहरा गाँव का विद्यालय में तोहारि नियुक्ति एल.टी. का वेतनमान में हो गइल पक्का बा या कि दगदग बा?"

"हम पता लगा ले ले बानी कि हम ओहिजाँ सहायक अध्यापक हकनहाक रखा जाइब।"

भयवा! तब आपन आग-पाछ सोच समुझ ले। अपना ए कीमती जिनिगी का संगे खेलवाड़ ना होखे के चाही। आपनि नाकि कटाई के आपन सगुन बिगारल समुझदारी ना कहाई, भारी ले भारी बेवकूफी कहाई। गोइयाँ लोग का भलाइयो क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम कइला पर जो तूँ भीरुखत बाड़ त ई सँहिए बा। अइसन होला। एही स कहल गइल बा–

बुरौ बुराई जो तजै, जौ चित्त खरो सकात।
ज्यौं निकलंक मयंक लखि गनत लोग उत्पात॥

"रायबरेलियन! तोहरा एहिजाँ ले गइला से हमरा के बड़ घाटा होत बा, बाकी हम तबो तोहरा के ईहे राय देइब कि जो एल.टी. मा प्रवक्ता का वेतन मान में कतहीं तोहारि नियुक्ति हो पावति बा तब तूँ आँखि मूँद के एहिजाँ ले निकल जा। एहिजाँ दाम–मान क ई अवसर पावे ले पहिलहीं तू स्कूल ले छुट्टी पाइ जइब। बुझात ई हे बा कि एहिजाँ हाली तोहरा खातिर सहायक अध्यापक मा प्रवक्ता होखे के नउबति नइखे। जो दइब बादरि फार के ई अवसर तोहरा के भेज दिहलन त एकर लाभ उठाइ ल। एहिजाँ ले जाइके शान–सम्मान क नौकरी करऽ आ अपना बाल बच्चन क देख–भाल करऽ। अकेला घर छकेला मारत रहला क बाति सोचत रहला से कहियो पाछे पछताए के परसेकला।"

रायबरेलियन का दिल–दिमाग में हमारि राय–बाति ढुकलि। ऊ मुहम्मदाबाद का धरती ले कान झार के निकल गइलन आ अपना गाँव का धरती पर चोहँप के ओहिजाँ का उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में सहायक अध्यापक होइके काम करे लगलन।

मुहम्मदाबाद क्षेत्र का उनुकरा संगी–साथिन का बिसवास रहे कि उनुकर मन अपना गाँव पर ना लागी। एकरा उल्टा ऊ गांव पर माई–मेहरारू, पूत–पतोहि, नाती–नातिन आ माई–बहिन का माया में अइसन अझुरइलन कि मुहम्मदाबाद का क्षेत्र बदे दुइज क चान हो गइलन।

हम जब मुहम्मदाबाद ले अपना गाँवे जाइलाँ तब उनुकर गाँव रास्ता में परेला। हम अपना ओ दिली–दोस्त से भेंटि करे बदे उनुकरा घर–दुआर पर जा हाजिर होइलाँ। खोजी लाँ, पता लगाई लाँ। ऊ गायब रहेलन। उनुकरा बइठका में भा घर–आँगन में एगो सत्यनारायन नावँ क सज्जन भेंटालन। ऊ बड़ा उत्साह हुलास़ से हमारि खातिरदारी करेलन। ऊ नौकरी ले छुट्टी पाइ गइल बान आ अपना बेकतिन का सेवा में आपनि बाँचलि जिनिगी खपाइ रहल बान। उनुकर कमाई काइ के किछु लरिका नाती अलगाई गइल बान आ केहू उनुकरा साथे बा। पूत–पतोहू नौकरी करेलन आ ऊ घर अगोरेलन। उमिरि अस्सी ले आगे फानि चललि आ बुढ़ापा चँपले बा। ऊ दमदार मरद अपना पहिले का मऊज–मस्ती के भुलाइ के ए दुनिया दारी का बिकठ मोरचा के चीरत–फारत घर गिरहत्ती का नून–तेल–लकड़ी क आरी बोझ माथा पर लिहले बेगम बढ़ल जा रहल बा। ऊ अजुओ अपना मुँह से ई माने के तइयार नइखे कि –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रंग रहे, रूवाब रहे 'उड़वली मउज चहरा।
रंग गइल, रूवाब गइल, पाथत बानी गोहरा॥

बाकी ई दुनियाँ ई हे मानति बा। का माने के चाही? केहू एकर का उत्तर देई? पाथतबानी गोहरा क भूत सभकरा माथा परसवार बा। हम देखतबानी राय बरेलियन क परछाहीं आपनि कमाई खाति बा, अपना संगे का बेकतिन के खियावति बा आ अउरी जे खा-पी के ओकरा ले लम्मा ठाढ़ हो गइल बा ओहू क आँखि ओकरा कमाई पर गड़लि बा। ऊ परछाही खटत-मरत जीयत बा, भलहिन ओकरा के भोजन-पानी देबे में केहू का तत्परता आ फुरसति न होखे। बाकी ओकरा आ लोग-बाग का पुरहर विश्वास बा, मुवला पर ओकर आपन सभ केहू ओ के श्रद्धा से पिन्डा पानी देई। ई हे ई लायक दुनियाँ ह। ऊ रायबरेलियन हमार दिली-दोस्त रहलन अबो हमरा दिल-दिमाग में बनल बान आ बनल रहिहन । जले ए आदमी क जिनिगी आ आपनि जिम्मेवारी निबाही तले ऊ गोहरा पथात जाई। एसे बरी भइल काम राखी। ई हे भवँजाल ह।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोमरस क मीठ माहुर

सन् १९५० में गांधी जयन्ती मनवला का बादे इंटरकालेज मुहम्मदाबाद का विद्यालय-पत्रिका का प्रकाशन क निश्चय हो गइल। विद्यालय क प्रधानाचार्य प्रधान सम्पादक बनलन आ हिन्दी-संस्कृत, अंगरेजी ऊर्दू भाषन, कला आ विज्ञान क धियान राखि के सम्पादक-मंडल बनल हिन्दी खातिर हम आ त्रिपाठी जी दुई जाना सम्पादक भइलीं जा। त्रिपाठी जी पत्रिका क संयोजको बनलन। काफी सामग्री जुट गइला से पत्रिका मोंट-झोंट करीब डेढ़ सइ पृष्ठन क गाजीपुर का 'लोक-सेवक' प्रेस में छपलि। विद्यालय का छात्रन आ शिक्षकन के आपनि रचनन के छपल देखके बड़हन उत्साह मिलल। कइगो छात्र का शिक्षक कविता बनावे का ओरा़ँ ओ लहरि में बह गइलन। जिनकरा अपने कविता रचे क न कवनो सोच रहे आ नात केहू अइसन अंदाज करत रहे ओइसनो शिक्षक 'रायबन्धु' आ 'दीनबन्धु' का उपनाम से अखाड़ा में उतर गइलन। हम कविता, कहानी, लेख-जोख लिखे का ओराँ छात्रन के बहुत ललकरलीं। हम केहू का चोरी का मालि के बेदर्दी से छाँटत गइलीं। हम छात्रन का स्वरचित रचनन के पत्रिका का स्तर ले निमहुर भइला पर स्तरीय बनावे में आपन समय-सिर भरपूर खपाईं। हमार श्रम-समय सुकुलान हो जा जब हमार बाल-किशोर कवि-लेखक अपना रचनन के छपल देख के निहाल होखसु।

त्रिपाठी जी अगत हीं ले दुब्वर-पातरी छितर कमजोर रहलन। ऊ करीब १९५६-५७ में बेमार परलन आ चोला बदल गइल। आगे विद्यालय का साहित्य परिषद् आ पत्रिका का संयोजन क कार्य-भार हमरे के सउँपाइल। हमहूँ ओके विद्यालयीय सेवा से मुक्त होखे का बेरा ले सम्हारत गइलीं। पत्रिका क जिम्मेवारी सोरहो आना अपना जिम्मा आ गइला पर हम ओकर नावं धरवावे में रुचि देखवलीं। साहित्य परिषद भा शिक्षकन का बइठक में एकरा बदे सुझाव दिहलीं। नाँव धरे क बाति संकारत एगो बरिष्ठ शिक्षक आपनि राइ दिहलन कि "नाँव स्त्रीलिंग होखे के चाही। काहें कि पत्रिकन क नाँव स्त्रीलिंग होला आ निम्मनोलागे ला, जइसे सरस्वती, माधुरी आ वीणा।" हम पत्रिका क नाँव पुलिंग में धरे का पक्ष में रहलीं। एसे उनुकर बाति काटे का नीयति से ना, बलुक आपन विचार जनावे खातिर हमरा मुँह से तुरंते निकल गइल-पत्रिकन क नाँव पुलिंगे में होला, जइसे विशाल भारत, साहित्य-संदेश आ जीवन साहित्य। बड़ा बेर ले महज्जर चलल। सूरज के विसवत होत देख के आगे एपर विचार कइल तय कइके बइठक खतम हो गइलि। एक-दुइ सालि ले नाँव धरे क मामिला खटाई में परल रह गइल। एक सालि पत्रिका क सामग्री बटुराइ गइलि आ पांडुलिपि लेइ के छपवावे बदे वाराणसी जाए लगलीं। प्रधानाचार्य आ प्रधान सम्पादक से राइ-बाति कइके गते से ओकर नाँव 'सोमरस' धइदिहलीं। समय से पत्रिका छपके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ गइलि आ छात्र-शिक्षकन में बँटाइ गइलि। केहू कवनो आपत्ति ना कइल। प्रधान सम्पादक का नाँव रुचल रहे आ ओकर ऊ सभकरा से बखान कइलन। आगे पत्रिका एही नाँव से छपति रह गइलि। हम विद्यालयीय सेवा ले निवृत्त होखे का बेराँ तक एकरा सम्पादन-संयोजन से जुड़ल रह गइलीं। आगे 'सोमरस' क 'गाजीपुर जनपद विशेषांक' हमरे विशेष सम्पादकत्व में सन् १९८९-९० में छपल। 'सोमरस' का देखा देखी अउरी कईगो विद्यालयन क पत्रिका प्रकाश में अइली स; बाकी सोन किरवा मतिन भुकभुकाई के असमय काल कवलित हो गइली स।

'सोमरस' का मीठ का बारे में मोंटे में एतने कहल जा सकल बा कि एमे स्वरचित कविता, कहानी, लेख-जोख देबे बदे किछु अइसन शिक्षक लेखनी उठाइ लेले रहलन, जेवन एह तरेक सोच कबो रखले ना रहलन आ ना त अउरियो केहू का अइसन अंदाज रहे। अपना विद्यालय का किछु होनहर प्रतिभा 'क धनी छात्रन के उनकरा विकास का प्रस्थान विंदु पर इ अइसन ताकतवर घूँट पीए बदे दिहलस कि अपना पढ़े-लिखे का दिशा में कुवति-हुनर बटोरे लगलन। ए प्रसंग में प्रो. राम प्रसिद्ध प्रधान, प्रो. राजमुनि शुक्ल, शारदाप्रसाद राय, डा. शौनक ब्रह्मचारी, डा. गंगा सागर राय, डा. अवध बिहारी राय, डा. अनिल कुमार 'आंजनेय', श्री देवशरण यादव, डा. अवधेश प्रधान, डा. अशोक द्विवेदी, प्राचार्य अंबिका राय 'अंबु', प्राचार्य परशुराम तिवारी, श्री कपिल मुनि 'पंकज', मा. शिक्षा-परिषद्, उत्तर प्रदेश के पूर्व सचिव श्री रामाज्ञा राय, प्रो. अनिरुद्ध प्रधान जइसे अउरी बहुत नाँवन के याद कइल जा सकेला जेवन शैक्षिक-प्राशासनिक पदन पर रह के आपन आ अपना जनपद क माथा ऊँच कइलन। डा. शौनक ब्रह्मचारी त्यागी-विरागी एगो अध्यात्म-जगत क साधु पुरुष हउवन। 'सोमरस' का सिलसिल में जब ए सभ संगी-साथी आ छात्रन क हमरा याद परेला तब हम सोमरस का मउज-मस्ती क घूँट पीए लागीलां।

'सोमरस' का संपादन-संयोजन का समय में माहुरो क घूँट लेबे क नउबति आवति रहलि। कल से केहू दाग दे एह अंक में फलां का बारे में किछु लिखाए-छपाए के चाहत रहल ह, बाकी नइखे, छपल। कबो केहू कतहीं मुनमुनाइ दे-एह सालि का अंक में हमरा रचना में ढेर काँट-छाँट हो गइल बा। कबो केहू के पत्रिका में चोरी क माल लउके लागे। केहू के पत्रिका क देर से छपल अखरे लागे। कबो केहू के अपना पर व्यंग्य बान बुझा जा। ए तरे क एक ले एक छीप कटात रहे। एकर दोषी हम रहीं; बाकी हम कान में तेल डाल लेईं। जब केहू हमरा से किछु कहे ना आवे तब हम काहें के उधरिहा जबाब देत फिरीं। घूरा मतिन चुप रहीं। सइवक्ता एक चुप हरावे। हम ओ पढ़ल-लिखल छीप कटवइन क भलमनसी आ उदारता कहब कि ऊ हमरा के कबो ना उबजियवलन। ए प्रसंग में प्रधान सम्पादक, प्राचार्य महोदय क नेकी ना संकारल नमक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरामी होई। ऊ अपना गला हकलाइट आ ठहाका मार हँसी से सहारा लेत छीप कटवइन पर अइसन जबाबी चोट करसु कि चारू खानाचीत होइके अगल-बगल झाँके लागसु। हमरा जो केहूक टीक-टिप्पणी बाउर लगबो कइल, त 'रहिमन निजमन की व्यथा मनहीं राखो गोइं' क नीति अपनवले रह गइलीं। काहें कि ओसे खाली शील टूटावँ होइत; कवनो गन्ह-सवाद ना मिलित। हम चुप रह के कबीर दास जी का ए कहला का हिसाब से किछु लाभ उठावे क कोशिश राखीं-

निन्दक नियरे राखिए आँगन कुटी छवाय।
बिनु पानी साबुन बिना निरमल करे सुभाय॥

बाकी हम कबो जोगी-जती ना रहलीं हँ आ न आजु बानी। जब एतनो पर केहू हमरा मुह में अँगुरी डाल के बोलवावे बदे तुल जा तब हमरा मुँह खुल जा चाहे ओके आह क पुकार कहल जा, चाहे फुँकार। बुला बीसवीं सदी सातवाँ आ आठवाँ दसक क बाति होई। एक सालि पत्रिका बदे सामग्री बटोरवावे, सम्पादकन से सुधरवावे, सँवारे आ सरियावे में एतना बेलम हो गइल रहे कि करीब जनवरी अधियाइ गइलि। हाईस्कूल आ इंटमीडिएट का छात्रन के बोर्ड का परीक्षा का प्रवेश-पत्र का संगे मार्च क महीना लगते-लगत पत्रिका दे दिहलि जा। एसे पत्रिका क पांडुलिपि प्रेस में हाली ले हाली देबे बदे हम अगुतइलीं। आ एकरा बदे प्राचार्य से आग्रह कइलीं दूसरा दिने वाराणसी जाइ के प्रेस में पांडुलिपि दे आइल तय हो गइल ओ दिने ऊ कवनो कारन से हमरा के वाराणसी आवे-जाए का भाड़ा का रुपया-पइसा क इंतजाम ना कइ पवलन आ कह दिहलन-"हो सके त अपना पास ले पइसा लगाइ के पांडुलिपि प्रेस में दे आइब आ भइला पर स्कूल से पइसा मिल जाई।" हम दूसरा दिन जाइ के प्रेस में ओके देइ अइलीं। लौटला पर कबो केहू भाड़ा का रुपया-पइसा के देबे क जिकिर ना कइल आ ओकरा बदे हमार अगुताइल छुदुरपना बुझाइल। हम पनरह-सोरह दिन ले ना सगबगइलीं। सुनले रहलीं कि लइका का रोवले पर महतारियो दूध पियावेले। इहे गुन के हम भाड़ा का रकमि के देवे वाला क्लर्क का कान में एके डाल दिहलीं। बनतू क्लर्क महाराज से उत्तर मिलल-"पत्रिका निधि से उतार के राउर भाड़ा क रकमि मिलि जाई।"

"तनी हाली कइल जाई।"

"ठीक बा। मिल जाई।"

एकरा बादे बोर्ड का हाईस्कूल आ इंटमीडिएट क परीक्षा चालू हो गइलि। ए दौरान के देला, आ के लेला। परीक्षा बीति गइलि। आनो का मने न क्लर्क आ ना त प्राचार्य ओकर कबो जिकिर कइलन जबकि एह बीच कतहीं आवे-जाए का आपन आपन किराया भाड़ा क भुगतान हकनहाक करत गइलन जा। ओ दूनो जाना क ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यवहार हमरा अवहे लागल रहे। स्कूल क गृह-परक्षा नवधाइ गइलि। अप्रैल क महीना बीते लागल। हियाब बान्ह के बनतू क्लर्क बाबू का दरबार में अपराधी मतिन ठाढ़ भइलीं। उनुकर दिमाग ठिकाने, मिजाज ठीक-ठाक आ काम-धाम से फुरसति देख के ओ भाड़ा क याद करवलीं। हम पत्रिका निधि से यात्रा-भत्ता कबो ना लिहलीं न त्रिपाठी जी लेसु। आन का मने ऊ फरमाइ दिहलन-"आजु पत्रिका-निधि से रुपया ना उतर पाई।"

"आजु ना उतर पाई त काल्हि देबे क मन बानाई आ कष्ट उठाईं?" दबले गरे जबाब दिहल-"का अगुताइल बानी?"

किछु हयरानी महसूस करत हमरा किछु कड़ेर सुरमें बोले के पर गइल-"महाराज! अढ़ाई-तीन महीना बीतल। अब का ब्रह्मा क बरिस-महीना बीतावे के परी। गरमी का छुट्टी क किछु दिन रह गइल। का गरमी का छुट्टी में एकरे बदे तोहार दरसन करत रहे के परी? सपरे त द, ना त निठाह जबाब दे द। तोहरा मतिन दाता ले सूम भला कि ठावें देई जबाब?"

"हमरा से कहवाँ सपरत बा?"

एतना सुनते हम उनुकरा पजराँ ले चल दिहलीं। ओही कमरा में आलमारिन का आड़ में थोरकी लम्मा बइठल प्राचार्य का लग्गीं चोहँपली। उनुकरा किछु कमतराह सुना। ऊ बड़की ऊँच की कुरुसी पर हाकिमी रोब-दाब में फूल के बइठल रहलन। आगे लमहर चाकर आ सुघर-साघर माछी के बिचलाइ-बिछलाइ देबे वाला टेबुल लागल रहे। बाहर ले घुसेवाली दुआरि पर परदा झूलत रहे। हम टेबुल का दूसरी ओर लागलि कुरुसी पर बइठ गइलीं। आ उनुकरा से भाड़ा ना मिले क कुल्ह माजरा बातई गइलीं। "ऊ हमरा पर बरस पड़लन- काहें के आपन पइसा लगाइके वाराणसी गइलीं?"

हमरा जरला पर नून छिरका गइल। हम चिल्हकलीं-रउवाँ कहला पर गइलीं। हम का जनलीं कि रउवां अपना मन-मुँह से नइखीं कहत? ई अउरी कतहीं ले कहल जात बा। रउरा कहला क कवनो कीमती नइखी उनुकरा हमारि बाति लागलि। ऊ बउखलइलन आ हकलात साँसि घींचल कहलन-"का कीमति राखी जब रउरा सभे अइसन बवाल करत रहब?"

हम कुरुसी से ठाढ़ होत हाथ जोरलीं-"जाए देईं, माफी देईं। आगे ले अइसनि गलती ना होई। हम भलीभांति बूझ गइली कि रउवाँ हाकिम का कहला पर अपना घर ले भाड़ा क रुपया लगाइ के वाराणसी परेस में पत्रिका क पांडुलिपि द आइ के आ ओके समय से छपवाइ के हम बहुत बेजायँ कइ देले बानी। हमरा के दुरुस्त करे बदे रउरा सभे जेवन एतना दिन ले तिकवलीं-दउरवलीं हँ ओकरा बदे रउरा आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रउरा गण के धन्यवाद। सच कहत बानी हमरा ओ भाड़ा का रुपया-पइसा क एको पाई अब मोह नइखे।"

एतना कहत हम ओ प्राचार्य का कार्यालय ले पल मारत मारत निकल गइलीं। प्राचार्य चिकरत-चिल्हिकत रह गइलन-"कवि जी, कवि जी ...।"

ओ भाड़ा-किराया का धन-राशि के लेइ बदे ऊ कई तोर आग्रह कइलन। ओकें अपने पास रखले रहलन। हम ना लिहलीं। ग्रीष्मावकाश बदे विद्यालय बन्न हो गइल। सभ दिनाँ मतिन जुलाई में खुलल। प्रवेश आ पढ़ाई-लिखाई क चरखा चालू हो गइल। जुलाई बीतति रहे कि एक दिन ऊ बरियाई से ओ रुपया-पइसा के हमरा पाकिट में डाल दिहलन। हम झटक के ओके लम्मा ना फेंक पवलीं। काहें? बुझाता, अपना हाकिम का सील-मुरवति से आ हाथे लागल पाकिट के गरम करत ओ लछमिनियाँ रुपइया का मोह से हम ठगा गइलीं। जान गइली, जान गइलीं-माया महाठगिनि हम जानी।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निज भाषा उन्नति अहैं, सब उन्नति को मूल

हिन्दी साहित्य रत्न का परीक्षा के देबे बदे ओकरा पाठ्यक्रम में 'बिहारी-रत्नाकर' क अध्ययन करत खानी जहवाँ हमरा मन में साहित्य पढ़े क रूझानि भइलि तहवाँ आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य क इतिहास' पढ़त खानी अपना में हिन्दी क शब्द-कोष बढ़ावे क भूखि आ हिन्दी भाषा-साहित्य आ नागरी लिपि का ओरॉँ प्रीति-पियासि बढ़लि आ इनकरि राष्ट्रीय आ सांस्कृतिक महिमा-उपयोगिता देख के हमरा बुझाए लागल-

निजभाषा उन्नति ऊहै सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा-ज्ञान के मिटत न हिय को सूल॥

मुहम्मदाबाद इण्टरकालेज में एक बरिस अध्यापकी कइला का बाद हमरा के जना गइल कि राष्ट्रभाषा हिन्दी आ राष्ट्रीय देव नागरी लिपि दूनो का ओराँ ले ई कस्बा-शहर आ एकरा अयड़ा-गोयड़ाँ क क्षेत्र उदासीन बा। ओघरी एहिजाँ का अदालत में उर्दूवे भाषा क रहतब-रवाज रहे। श्री श्रीपति नारायण राय एगो अइसन वकील रहलन जेवन हिन्दी भाषा आ नागरी लिपि में आपन सगरो काम करे क उतजोग करसु आ अउरियो सभकरा के अइसन करे बदे उकसावसु। अउरी वकील लोग खुदकवलो पर आपनि धइलि-रगराइलि डहरि छोड़के नवनूनि डहरि घरे क हियाब-तवालति ना करसु।

ओघरी कस्बा में मुशायरा दुइ उस्तादन का अगुवाई में खूब जमे। शायरन क दुइ अखाड़ा ओ उस्तादन का देख-रेख में चलसु। एगो मुहम्मदाबाद में आ एगो युसूफपुर में। मुशायरा में बेभेद-भाव क हिन्दू-मुसलमान दूनो भाग लेसु। हिन्दुन में श्री सूर्यनाथ पाण्डेय उमदा शायरी कइलेसु। ऊ हिन्दियो क कवि रहलन। श्रोतन में श्री रामवृक्षराय विशारद आ श्री वासुदेव राय अउरी शायरन के दाद देइ के उनुकरा के जोश से लबालब भर देसु। हमरा अचंरज भइल कि ए आजाद हिन्दुस्तान में ए कस्बा में मुशायरा का चलतो रहला पर कबो कवि सम्मेल क मंच ना बनल आ दरी ना बिछलि। राष्ट्रभाषा हिन्दी का ओराँ ई अनगराहिती हमरा अवहलि। हम सन् १९५२ में हिन्दी साहित्योद्यान नाँव से एगो संगठन बनवलीं। ओकरा देख रेख में महीना दुई महीना पर एक तोर कवि गोष्ठी भा विचार गोष्ठी हकनहाक होखे लागलि। एमे हिन्दू-मुसलमान दूनो दिल खोल के भाग लेसु। ए भाग लेवइयन में मुख्य रहलन-सर्व श्री सूर्य नाथ पाण्डेय, शमसुद्दीन अहमद 'शम्स', हनीफ खाँ, रमाशंकर राय, सर्वजीत राय, बैजनाथ मँगरैल, रामनारायण, रामविलास गुप्त, जगदम्बा सिंह, सत्यनारायण राय 'रायबरेलियन' काशीनाथ राय, कपिल मुनि 'पंकज' अउरी। पाण्डेय आ 'शम्स'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंजल कवि रहलन, आ रायबरेलियन हास्य'रस क, आ रमाशंकर राय प्रकृति-चित्रण क उभरत कवि/संयोजक भइला के नाते हमरा के गोष्ठिन में डटके भाग लेबे के परे। 'शम्स' राष्ट्रीय विचार क कवि रहलन आ मौका का मोताबिक हिन्दी क कविता सुनावसु। उनकर ई मुक्तक कईबार सुनल गइल रहे–

हिमालय की जब तक जवानी रहेगी,
ये गंगा-जमन की जवानी रहेगी
रहेंगे इसी तरह तुलसी भी जिन्दा
अमर उनकी चलती कहानी रहेगी।

हनीफ खाँ क कविता साम्यवाद का रंग में रंगल होखँस। पाण्डेय जी लोगन के स्वस्थ रहे बदे एक ले एक उपयोगी नुस्खा अपना कविता में पेश करसु आ पैरोडी लिखे में माहिर रहलन। 'वीरों का कैसा हो बसन्त' का उत्तर में उनकर "घोंघा बसन्त" श्रोतन के बहुत हँसावे। हम अन्योक्ति परक राष्ट्रीय युगानुरूप रचना सुनाईं जेवन 'युग-प्रदीप' में संग्रह कइल गइली स। सन् १९५६ में खूब जमकाऊँ कवि सम्मेलन महाकवि श्यामनारायण पाण्डेय का सभापतित्व में भइल। ऊ पहिले जेवनि कविता सुनवलन ओकरि पहिली पहिली डँडारी रहे–"नाचो, नाचो हो कन्हैया में बलैया लूँगी न।" एकरा बाद अपना 'जौहर' काव्य से महारानी पद्मिनी का जौहर भइला का बेराँ क मार्मिक दृश्य श्रोतन का आगे अपना प्रभावशाली आ भावानुसारी पढ़े-सुनावे का शैली में रख के भाव-विभोर कइ दिहलन। गाजीपुर, बलिया, आजमगढ़, गोरखपुर अउरी जनपद का कविन क कवि-सम्मेलन में भीड़ि उमड़ि परलि रहे। ओ कवि-सम्मेलन क श्रोतन पर अइसन असर परल कि ऊ कवि-दंगल कहाए लागल रहे। कवि सम्मेलन क ई क्रम कई बरिस ले चलत गइल। ओकर फल भइल कि आगे जब आ मुशायरो भइल त ओमे हिन्दियो क कवि बोलावल गइलन आ कवि-सम्मेलन का मुशायरा एक दूसरा से जुड़ गइलन। बाकी अब एहिजाँ कवि-सम्मेलन आ मुशायरा दूनो क रूरा-अकाल पर गइल बा।

सन् १९५६ में कवि सम्मेलन भइल तय हो गइला पर हम एक दुई मास्टरन का संगे चन्दा माँगे निकललीं। दिकदरी रहे कि लोग-बाग कवि-सम्मेलन से एकदम अनगइयाँ रहलन। ओकरा खरच-बरच बदे चन्दा मंगला पर ऊ पूछ बइठसु-"कवि-सम्मेलन का ह? एमे रुपया-पइसा का होई?"

हम बताईं-मुशायरा में उर्दू क कवि बुटराइ के आपनी शायरी सुनावेलन आ कवि-सम्मेलन में हिन्दी क कवि बटुराई के आपनि कविता। लम्मा क कवि अइहन उनुकरा के खाए पीए क, आवे-जाए का भाड़ा-भुत्ता क इंतजाम करे के परी। ऊ समझ-बूझ के खुश होइ के एकाद रुपया चन्दा देबे क हियाब करसु। जे पाँच रुपया दे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिहल ऊ हमनी के कुबेर-कर्ण बुझाइल। अठन्नी रुपया बटोरत हमनी के बड़ा धूरि फाँकि के परल। दूसरा बरिस चन्दा माँगे निकलला पर हमरा के बुझा गइल कि लोग-बाग कवि-सम्मेलन क अर्थ समुझ गइल बान आ एतना साफ कि ओतना हमनियों का जानत नइखीं जा। एकरा मिसाल में एगो दाता श्रोता क कथनी पेश करत बानी। दुसरा सालि जब उनकरा दुकानि पर चन्दा लेबे बदे जा चोहँपलीं तब ऊ पूछलन-'कइसे चलल गइल ह?'

"कवि सम्मेलन यानी मुशायरा का चन्दा बदे"

हमनी का 'यानी' के बेमानी कइके ऊ हम मास्टरन के बेपानी कइ दिहलन-'ऊहे न जेवन पछिली सालि शहीद पार्क में भइल रहे।'

"हँ, हँ।"

"तब ऊ मुशायरा ना ह।" हमनी का चिहाइ के उनुकर मुँह तिकवे लगलीं जा। ऊ आपनि बाति आगे बढ़वलन-"कवि सम्मेलन के मुशायरा कहके ना समझावल जा सके। मुशायरा में शायर आपनि शायरी सुनाइ के ओहन क शाबासी लूटे बदे भुखाइल रहेला। ओहिजाँ शाबासी क हल्ला मच जाला। कवि सम्मेलन में कवि कविता सुनावत खानी ओकरा रस-रंग में रम-रंग जाला आ श्रोता रस-विभोर हो जालन। बुला ओहिजाँ जो सूई गिरिजाई त ओहूक आवाजि सुना जाई।"

एतना कहत ऊ पछिली सालि मतिन एहू सालि पाँच रुपया चन्दा दे दिहलन। जबकि हमनी का उनुकरा से कवि सम्मेलन आ मुशायरा का अर्थ का भेद-बिलगाँव सुन के दंग रहलीं जा। ओकरा बाद का सालि में चन्दा माँगे क क्षेत्र निझाइ गइल रहे। टीप-टाप केहू दाता लउके त ओकरा से भेंटि होखे क उमेदि ना रहे। खरच-बरच का मोताबिक रुपया ना बटुराइ पावल रहे। चार बजे छुट्टी भइला पर हमनी का तीन जांना मास्टर कस्बा मुहें भइलीं जा। कहवाँ चलल जाऊ सोचत रहलीं जा कि एगो साथी बोललन-"चलीं जा। एगो बोड़ दरबार में ले चलीं। ऊ छोट-मोट ना, बोड़ सेठ हउवन। कस्बा क सभकरा ले धनी-मानी। उनुकर बाप आनरेरी मजिस्ट्रेट रहलन।"

ओ धनी-मानी सेठ का परिचय में कोतहाई कइल हमरा के उद्‌बेगलसि। हमरा ओ अन्हेरिहा मजिस्ट्रेट का साथ अन्याय कइल अखरल। हमरा बोले के पर गइल-"आपनि बाति एतना अउरी आगे बढ़ाइ देईं कि ऊ ए कस्बा क सभकरा ले नामी बेदाग कंजूस रहलन आ जिनिगी भर बेटिकठ रेल-जातरा कइलन। ए काम में गजब माहिर रहलन। गाड़ी ले उतरला पर घात पेंच से अउरी जातरिन क टिकठ बटोरले आवसु आ अपना घरे संचि के रखले रहसु। मौका पर ओहन के काम में लेइ आइके टिकठ का जाँच करवइया आ बटोरवइया अधिकारिन का आँखि में धूरि झोंकल करसु। अइसनो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नउबति आइलि रहे कि उनुकरा टिकठ चबाइके घोंट गाले के परल रहे। बेटिकठ रेल-जातरा करे में ओ कंजसू मरद के केतनो साँसति उठावे के परलि, बाकी अपना प्रन क पोढ़ ऊ मरद कबो हार ना मनलसि।''

एतना सुनते हमार ऊ दूनो साथी उनुकरा क दरसन करे से हिचकिचाए आ असकतियाए लगन। हम मन बहलाव का नियति से ओ कंजूस का लायक सपूत का दरबार में अपना ओ साथिन के ललकार के चढ़ाइले गइलीं। ऊ सोना चानी क गहना बेंचसु आ गरीबन के गहना बन्हकी धइके ओहन के सूदि पर रुपया-पइसा देबे क कारबार करसु। उनुकर लरिकनी हमनी का स्कूल में पढ़बो करे। गइला पर मुसकिया खुशी जाहिर करत अपना गद्दी पर आसन दिहलन आ पूछलन-''कहीं जा, रउरा सभे कइसे दर्शन दिहलीं हँ जा।''

गम्हीर होइके हम आपन मतलब अरथवलीं-''परसवें कवि-सम्मेलन होखे जा रहल बा। प्रबन्ध करे में काफी रुपया-पइसा क खरच-बरच बा। ओकरा बदे धावे-धूपे में हमनी क हँफरी छूट रहलि बा। जो रउरा मतिन मालधनी हाथ ना लगाई त बेड़ा पारना होई। तनी कस के हाथ लगाईं बेड़ा पार हो जा। हई हमनी क साथी आ राउर जानल-सुनल गहँकी बहुते राउस आसरा विसवास कइके हमनी के लिवा आइल बान। कृपा कइके आपनि थइली खोलीं। हमनी क मन टनमना जाऊ। दिल खोल के चन्दा देईं आ हई कवि-सम्मेलन क नेवता थाम्ही।''

एतना सुनते उनुकरा सीति गोत दिहलसि। मुँह पर हवाई उड़े लागलि। रोवाँ फोरले कंठ खोललन हमार परिवार अइसन कुल्ह खेल तमासा ना देखे ला आ ऊ हो राति खानी। रउरा सभे का कवि सम्मेलन का नेवता में ना आ पाइव जा।

उनुकरि मेहरारू, लरिका-लरिकनी लोग हवेली का दुबरि में ठाढ़ होई के सुनत रहे आ हमनी का ओकरा आगे का ओसारा का गद्दी पर उनुकरा सोझाँ बइठ के। उनुकरा कहला क हमरा पर कवनो असर ना भइल। हम सफा-सफी चन्दा क माँगि कइके उनुकरा कंजूस हिया पर बज्र-प्रहार कइलीं - हमनी के चन्दा देईं चली जा।

एतना कहते उ अपना मनहूस हँसी क अड़काव करत जबावी गोली छोड़लन-ए घरी बड़ा ठाला बा। बोहनी नइखे होति। घरहीं क आटा गील करे के बा। एह सालि हमरा के रहे देईं जा। आगे ले देइब।

दाँत तरे अँगुरी चाँति के कहलीं। ई का कहत हईं? सरलो हाथी त नौ लाख। एह सालि जेवन देबे के बा ओकरा बदे हऊ आपनि सुघर-साघरि सँदूकची खोलीं। राउर गिड़गिड़ाइल सोहत नइखे। हमनी का सभकर दरवाजा खटखटावे के बा आ एक ले एक छप्पन-घप्पन क मुँह निहारे के बा।

एतना कहला पर ऊ अपना संदूकची ले एगो अठन्नी निकालि के हमनी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओराँ बढ़वलन। हम कहलीं–जो रउरा नाँव क एक अठन्नी क रसीद कटी त ई दुनियाँ रउरा नाँव पर थूँकी। हमनी का ई बरदास्त नइखे। एगो लायक बाप के लायक बेटा होइके ई काम जनि करीं।

ऊ हाथ जोरलन–"ले जाई जा। रसीद मति काटब जा।"

"ई कइसे होई? रसीद त कटही के परी।"

"अच्छा, हई सोरह आना लेईं जा।"

भागत भूत क लंगोटिए लेई के हमनी का ओहि दरबार ले मनेमन कंजूस से भिडंत क मजा लेइके सड़कि पर सरकि अइलीं जा। हमरा संघतिहा लोग आगे बढ़े में कसरियाये लागल आ कहल–"बोहनी मनहूँस कंजूस का हाथे भइलि बा। लवट चले के घरे।"

"बोहनी–साइति का देखे के बा? आजु हमनी का दान बीरन क करनी देखे के बा। थोरे मेहनति आ समय अउरी लगाइ देईं जा। आई आम, नात जाई लबेदा। एक कृपनवीर से बहुत मिलल बा। निराश होख के नइखे।"

चउँक के ऊ लोग पूछल–"बहुत का मिलल बा। लथेरइ?"

नाहीं। जेब में धरे के सोरह आना आ मन में धरे के हई कहाउति–कंजूस आपनि चमड़ी जाये देई, बाकी दमड़ी ना जाये देई।

हमनी का आपनमन टाँठ कइके मुहम्मदाबाद कस्बा का बीचो–बीच सड़कि से युसूफपुर का ओराँ बढ़े लगलीं जा। कपिलमुनि 'पंकज' का मकान का पजराँ का चउरस्ता पर चोहँपत् चोहँपत हमनी के ओ कस्बा क सभकरा ले दीन–हीन–निर्धन करिया कलूट आदमी का सजीव मूरति क दर्शन भइल। ओहिजाँ का पजराँ का दूनो दुकानिन का मिठाई पर हाड़ा–हाड़ी लुझल रहलन आ ऊ आदमी घुनाइल–रगराइल जूता–चप्पल का मरम्मति में मुड़ियाइल। हम ओ रैदास भगत के कवि सम्मेलन के निमंत्रण पत्र देवे बदे हाथ बढ़वलीं। आगे ठाढ़ होई के हाथ बढ़ला पर ओ भगत क धियान टूटल। आपन हाथ चलावत मूँड़ी तनी ऊपर उठाइ के प्रेम–रस से सराबोर बानी में पूछलन – बाबू! का सेवा बा? आजु बहुत देर से अइलीं ह, किछु काम नइखे हो पावल। बइठते काम लगार आ गइल ह। ओही में अझुराइल बाझल आ मुड़ियाइल बानी। जो हाली–हबर हाथ पहुँचा ना चलाइब, त चार पइसा कहवाँ ले भेंटाई? हमरा ए ही पहुँचा क कमाई बा। रोज कमाए के बा आ खाए के बा, आपन पुरहर परिवार जियावे के बा। रउवाँ सभे आपन सामान धइ देईं।

हमनी का तोहरा के नेवता देबे आइल बानी जा। हई थाम्हऽ।

भगत कउवाइ के पूछलन–"केथुकर नेवता? भोज खाए क कि तमासा देखे क?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"तमासा देखे क।" ऊ आगे अउरी किछु जाने बदे तिकवलन। हम बतवलीं- "कवि सम्मेलन होखे जात बा।"

ऊ बड़ा धधाई के ओ निमंत्रण पत्र के थम्हलन आ खुशी में फूट परलन-"हम हर सालि कवि-सम्मेलन में लइका-बच्चन समेत चोहँपी लाँ। बड़ा मजा आवेला। जहवाँ न जाय रवि तहवा जाय कवि क करामाति देखे के मिलेले। हकनहाक हम असवो आइव आ अपना राष्ट्र भाषा का कविन क बानी सुनब। एतना कहत ऊ आपन टाट उलाट के टकटोरलन। एक रुपया हाथ में आइल। हमनी का ओरौं बढ़ावत, पछतात कहलन-"ए काम बदे एक रुपया देत लाजि लागति बा। मन पाँच रुपया देबे क होत बा, बाकी हमारि समाई नइखे। रउरा सभे में से केहू कहियो आजाई। हम एकर जोड़ा लगाइ देइब।"

हमहन का उनुकरा ले चन्दा लीहल ना चाहत रहलीं जा। बरियाई से हाथ में धराइ दिलहन। हम का, तीनू जाना फूट परलीं जा- "महादान, महादान; जै जजमान, होखो कल्यान।"

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगिली खेतीं आगे आगे

मिडिल स्कूल में पढ़त खानी जब हम कृषि-कक्ष में पढ़े गइलीं, तब मोट-मोट अक्षरन में लिखल मिलल-

उत्तम खेती मध्यम बान।
नीच नौकरी भीख समान॥

एके पढ़के हमरा मन में बड़ा हुलास भइल कि हमनी का बाप दादा आ परिवार क व्यवसाय खेती बा आ हमनी क कई पीढ़ी एही से गुजर-सफर करत आइलि ह। जनमते खेती-बारी से हमार लस्तगा लाग गइल। स्कूल का पढ़ाई से एकर विज्ञान आ गुन समुझे में हमरा के अउरी मददि मिललि। हमरा परिवार क खेती आगे जइसन रहल होखे; बाकी हमरा बाप-पितिया का समया में अइसनी रहलि कि जेवना से न मरे के रहे आ न मोटाए के। बाबू जी एतना असकतियाह रहलन कि ऊ अपना देहिं दिमाग पर भार ना परे दिहल चाहसु। खेतिहर भा गिरहत्त परिवार में जनमलो पर जोतला खेत में लात ना डालल ऊ बड़कवा क चिन्ह मानसु। एतना माने के परी कि ऊ भागि क चाँड़ रहलन। घरे परल रहे बदे उनुकरा के बझाव क बोड़ साधन ब्रांच पोस्ट मास्टरी भेंटाई गइलि रहे। सोझिया पितिया लोग खेती में लागल रहके खाली जाँगर ठेठावे जाने। लाभकारी खेती करे क सूझ-बूझि ओ लोग का ना रहे। सवांग आ अउरी साधन का रहलो पर हमरा खेती का काम में कवनो दम ना रहे। हम मिडिल स्कूल में पढ़ते खानी खेलला-कूदला का अलावा समय निकाल के डेरा पर चल जाई आ डेरा पजराँ बिखरलि छिंटाइलि परलि खादि आ गोबर के बटोर-सटोर के खेतन में फेंक देईं। नूनूँ (चाचा) डेरा पर बराबर रहल करसु। खाली रहला पर ऊ हो हमरा संगे लाग जासु। खेतन में खादि-गोबर परला क फल ओही सालि खेतन में उजागर होइ जा। गरमी का मौसम में बैसाख-जेठ का महीना में जब गाइ-बरध सरेहि ले आइके घर दुआर पर रहे लागसु तब बहुत तन देही से उनुकरा के खियाई-पियाई के मनगर कइ देईं। ई कुल्ह कइला से हम अपना गाँव-गिराँव का खेती क मरम समुझे बूझे लगलीं। ऊर्दू-अंगरेजी मिडिल, हिन्दी विशेष योग्यता आ हिन्दी विशारद क पढ़ाई कइला का बाद हम सयान हो गइलीं आ हमरा के बुझाए लागल रहे कि हम नौकरी चाकरी कइके जले अपना हाथ गोड़ पर ठाढ़ ना होई जाइब तले अपना खेती-बारी का बढ़न्ती बदे किछुना कइ पाइब। खेती का व्यवसाय के न सरे आ ना मोटाए वाला सउदा सुनलो-जनला पर हमरा ऐसे कबो अरूचि ना भइलि। हम बराबर में मेहनति कइके एके लाभकारी व्यवसाय बनावे के बाति सोचीं। काहें कि जेकरा खेती में हम श्रम, बुद्धि, तत्परता आ उत्साह क संजोग देखीं ओकर खेती घाटा क सउदा ना रहे। एकरा में स्वाधीनता, प्रकृति-बिहार आ अपना हाथ क उपराजल टाटक-ताजा साग सब्जी आ अन्न-फल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिले क जेवनि सुविधा हमरा के लउकति रहे ऊ अउरी कवनो व्यवसाय में ना रहे। एमे हाकिम-अधिकारिन का रोब-दाब आ दरभेर से लम्मा-लम्मा रहके सहज जीवन जीए क अवसर हमरा के लउकल करे।

कृषि व्यवसाय के निम्मन समुझलो पर हम जरुरति का मोताबिक नौकरी करे से कबो ना त भड़कलीं आ ना त भगलीं। "नीच नौकरी भीख समान" से हमरा समुझि में ई हे आइल कि कृषि-व्यवसाय मनुष्य का सहज आ स्वतंत्र जीवन बदे कमाए-खाए क अउरी पेशन से अधिक उपयोगी आ शानदार पेशा बा। आ नौकरी में ऊ मजा नइखे। नौकरिन में हमरा अध्यापकी क नौकरी पसन्न आइलि। प्रारम्भिक पाठशाला में पढ़त खानी ले एकरा बदे मन चलावे लागल रहलीं। एही नौकरी से लम्मा राजस्थान में जाइके हम अपना पढ़े-लिखे क डहरि बनवलीं आ मुहम्मदाबाद, गाजीपुर में कइके अपना घर-गिरहत्ती क दशा सुधरलीं मुहम्मदाबाद में एक बरस ले अध्यापकी करत हमरा के बुझाइ गइल कि हम खेती-बारी क मा़र अपना कपारे ढोई सकी लाँ, भलहिन हमरा के खटानि ढेर परी। हियाव कइके हम अपना खेती क योजना बनाइ के ओमे भिड़गइलीं। हमारा एकरा दे जमीनि आ सवाँग क कमी ना रहे। खाली कमी रहे खेती का बढ़न्ती बदे उत्साह से काम करे-करावे क आ समुझि-बूझि से समय-समय पर योजना बनावत रहे क। जेवनि खेती हमार होति रहे ओ से खाली परिवार का खाए पीए क काम चलत जा। बियाह सादी परला पर खेत रेहनि धइके करज लेबे क नउबति आ जा। बाबू ब्रांच पोस्टमाटरी का आमदनी का रहते, ऊ परिवार क एगोलरिका के कतो अन्ते भेज के हाईस्कूल तक ना पढ़ा सकत रहलन। हम दुसरा सालि का लगते असाढ़ का खेती सुरुम होखे ले अगतहीं दुई हर चलवावे क ठान के एगो बरियार बरध कीन लिहलीं आ अधिका खेत जोत बद राख लिहलीं। अउरी बाकी बाबू के असामी लगावे आ मलिकावँ करे बदे छोड़ दिहलीं। एक हर पर तीन बरध सावन ले जोतात-चलत रह गइलन स। ओ बरधन के रोजे बरसाती घासी चरे क सवँसि मिलति गइलि। ऊ चर-चोंथ के साड़ हो गइलन स। सावन का आखिरी सप्ताह में एगो बरध अउरी खरीद लिहलीं। आ दुइ हर ठाढ़ हो गइल। मघा नक्षत्र में कुल्ह खेतन क दोखार हो गइल। ओ सालि खेतन क जोताइ खूब भइलि। बरसाति भर जब बोवाई क चरचा चललि बाबू जरफेर बोवाई क गुन गान कइलन। कृषि विज्ञान का मोताबिक हम बराबर एकर हामी भरत गइलीं। हमरा खेतन में बारह-बारह बरिस ले एके अन्न क बीय बोवात आवत रहे। बोवाई क समय अइला पर बाबू से राइ-बाति कइ के तय हो गइल कि कवना खेत में कवन बीय बोवाई। बोवाई क देख रेख करे क काम ऊ हँसी-खुशी से अपना जिम्मा अपनहीं ले लिहलन। उनुकर हाथ-बाँहि कवनो मामिला में धरे क मन हमरा कबो ना रहे, चाहे हमरा पर नव परो भा छव। बोवावे क काम उनुकरा पर छोड़के हम पढ़े-पढ़ावे में लागल रह गइलीं। हम सुचित्ताह रहली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि बोवाई हमरा कहला का अनुसार होई। बाकी बाबू अपना आदति से बाज ना अइलन। ऊ आपनि ऊहे बेढंगी चालि चल दिहलन जेवन पहिले ले चलत आवत रहलन आ हमारि एक बरिस बरस ले बनावलि योजना के अपना जढ़ता से एक डेढ़ हफ्ता में एक दम कफना दिहलन। हम माथ धइके रह गइलीं। बाबू मतिन जढ़ी पर विसवास कइके भर परल हमरा के बहत अखरल। एतनो पर हम का करतीं? "पितृदेवो भव" क ताला हमरा मुँह पर लागल रहे। लइकइएँ ले उनुकरि चोट सहत-सहत हम घठाउर हो गइल रहलीं।

जोताइ कें हलब्बी भइल खेत समय पर बाबगि खुलते बोवाइ गइल रहलन स आ भरमराइके जमलन स। डिम्भी रुखगर लउकली स। फसलि मजिगर बढ़लि, फूललि आ फरलि। पैदावारि केहूले निमहुर ना रहे। हमरा के साफे बुझा गइल कि जहवाँ बुद्धिमानी का संगे पसेना गिरी ओहिजाँ फसलि सोना उगलबे करी। हमरा खुशी रहे कि खेती में लागल हमरा सोझिया-साधु सवाँगन के अपन पसेना बहावल, बरसाति जाड़ा धूप में खटल जूझल सफल लउकत रहे आ उनुकर मन टनमना गइल रहे।

हम पहिला बरस का अपना खेती क तजरबा लेइके ओने अउरी बधुवाइ के परलीं। अउरी फइलावँ खेती कइल हमरा के टँगफटावँ बुझाइल। अधिका ले अधिका फायदामंद बनावे क उतजोग कइलीं। आदरा नक्षत्र में कुल्हि खेतन में अवाइ चास लग गइल। मघा में कुल्हि खेतन क दोखार हो गइल। समय-समया पर खेतन क अवाइ-सेव जोताई होति गइलि। कवनो खेत में जोताई बावँ ना गइलि। जरूरति मोताबिक चारा-चरी आ भदईं अगहनी फासलि बोवाइलि। अउरी खेत पलिहर रह गइलन स खेतन में आन का गने बीया फेंक के कवनो खेत के बझावल-फँसावल ना गइल। ओ सालि अपने हाजिर रह के खेतन के बोवावल हम तय कइ ले ले रहलीं। दूध क जरल मंठो फूंक के पीए ला। खेत कोन होखे का दिने सरिसवो छिटावे बदे खेत में मौजूद रहे क जोगाड़ बन्हले रहीं। चित्रा नक्षत्र में बावगि खुलते हम हरहराइ के बोवावल सुरुम कइ दिहलीं। हम अपना अरियइ-करियइत से आपन बोवल खेत किछु उमराए का डरनी-दुक्खन आपनि बावगि-बोवाई ना पछुवाए दिहलीं। हम बाबू से बराबर राइ-बाति करत गइलीं। उनुकरा मन मलिकावँ के ठेस ना लागे दिहलीं। हमार खेतन में जेवनि मनगर डिम्मी फूटली स ऊ आरी-पास का खेतन के धाहते रह गइली स आ जरफेर बोवाई क कमाल लउकल। ओ सालि खेतन क लागलि फसलि देख के हमरा सवाँगन क छाती उत्तान हो गइलि रहे। ऊ लोग छतियाइके चइत-बइसाख में कटिया, दवँरी आ ओसवनि करावल। हमहूँ अपना अउरी कामन से बहुत किछु अवसर-अवकाश निकाल के मौकन पर मौजूद रहे क जोगाड़ बन्ह के मददि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करत रहीं। ओ सालि हमरा खेत खरिहान के बहुत सराहल गइल। ओसावनि का समय उकाईंन ले झरले अनाज का राशिन के देख के हमार अरियइत करियइत दाँत तरे अँगुरी चाँत लिहलन उनुकर कहनाम रहे-"ए सालि भागि आ कमाई रउरा सभे क पुरहर साथ देले बा। उकाइ ले खाली अनाजे अरत बा। रउरा सभे असों खेतन में कवनि खादि डलले रहलीं हँ जा?"

हम बताईं-"ई नात भागि क खेला ह आ ना त कवनो खादि क करामति। ई खेतन में कइल गइलि खाली कमाई-जोताई आ जरफेर समय प कइलि गइलि बोवाई क कमाल ह।"

सुनवइयन में ले केहू कहल-"मास्टर! तूँ हमनी ले आगे-आगे बोवाई कराइके एह सालि बाजी मार लिहलंऽ हऽ। अगली सालि ले हमनियों का ना चूकब जा। आगे का बोवाई क कवनो दाँजि ना ह अगिली खेती आगे-आगे पछिली खेती भागे-जोगे।"

अपना परिवार में परम्परा ले आवति खेती का लरखराति घिंचात जात व्यवसाय में गति प्रगति ले आवे क जेवनि इच्छा हमरा किशोरावस्था में जनमलि रहे ओकरा के पूरा करे बदे सन् १९५१-५२ में अपना जवानी में नौकरी करत खानी आत्म निर्भर, अपना गोड़े ठाढ़ हो गइला पर भरपूर जान-जाँगर लगाइके भिड़ गइलीं आ ओमें हमरा के पुरहरि सफलता मिललि। एमे हमरा बूढ़ बाबा राजा साहब क ललकार, शाबासी, सरेहि क साधु नूनूँ क उत्साह भरल सहयोग, हाथ बँटावल, हमरा अनुज क हमरा हाँ में हाँ मिलावल आ हमरा अरवला पर धावल धूपल आ हमरा मेहरारू क हमरा कहला के पूरा करे बदे एक गोड़ पर ठाढ़ रहल हमरा के बहुत बल दिहलस।

हम अपना बँसवारि ले काटलि निसध, लोहा का छड़ मतिन वजनी, आ पोरसाभर क लमहरि जेवनि लउरि अपना कन्हा पर धइलीं ओसे अपना परिवारिक पेशा खेती क पहरेदारी एक उमंग-तरंग में बड़ा मुस्तैदी से बारह तेरह बरस ले करत रह गइलीं। हम छनोभर खातिर कबो भर ना परलीं आ बिकठ-बिकठ मोरचन पर कबो पीठि ना देखवलीं। हम भरल सावन भादों में सरेहि सीवान का नारी भागड़न के बढ़ियइला पर राति-बिराति खानी हेलत, पवँरत आ लाँघत रह गइलीं। जाहके जाह ना बुझलीं। ओमे निडर पाँव बढ़ावत चलत गइलीं। काम परला पर लकड़ी क बान्हल हर कन्हा पर धइले हम अकेले बरधन के लिहले-हँकले मील भर चल के खेत में पहुँचाइ देईं जेठो क महीना में घूम फिर के आपन बाड़ का खेतन का हालति क जानकारी करत रहीं आ जेवन खेत खाली रहें ओके समय पर अधिका जोतवाइ दिहल करीं। हम बरधन-मरदन आ खेतन क हरि बनावे बदे एगो लमहिर अवधि ले जूझत रह गइलीं आ एमे हमरा के कामयाबी मिललि हमरा परिवार क प्रतिष्ठा बल धन का प्रभाव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बढ़ल। एह बीच में सन् १९५४-५५ का अयड़ा-गोयड़ा हमारि पीठि ठोके वाला बाबा राजा साहब का सन् १९५७-५८ का करीब पक्का डेरहा नूनूँ हमार संग छोड़के एह दुनिया ले चल दिहलन। ओ अपना पूजनीय आजा-पितिया क मरल हमरा बहुत अखरल आ खलल।

एही बीचे मूस महाराज लोगन का उद्दम का चलते बखरी का माटी का दुई घरन के ढहवाई के बनवावल ज़रूरी हो गइल। ओहनो के ईंट जोरवाइ के बनावल ठीक बुझाइल। तले आपनि सयान होति जेठकी लरिकनी का सादी क भीरि कपारे आ घहराइलि। ओहू के नीकहने से निपटवलीं। हम कबो भीरि के भीरि ना जनलीं। भीरि मरदे का कपारे आवेले, माई क ई कहल हमरा के बराबर ललकारत रहे। एतनो पर हमरा ई हकनहाक माने के परी कि ए भीरि में अपना शरीर के शरी ना जनला क कुफल हमरा भुगते के परल। ए शरीर का रूप रंग में एतना बदलाव आइल कि जेवन आदमी हमार के सन् १९५२ में देखले रहे, ऊ जब सन् १९६२ में देखलस तब हमरा के पहचान ना पवलस। ओभीरि में अंकुश कृमिन (हुकवर्म्स) का आँतन में हो गइला से हमरा पर गैस का रोग क धावा हो गइल रहे। हम अपना काम करे का सूह में आ स्वास्थ्य का हेंकड़ी में ओकर चार पाँच-बरस ले कवनो गम फिकिरि ना कइलीं। खर बीरवा आ स्थानीय डाक्टरन का दवा का बल से ओकरा चोट-चपेट के ओछराह करत गइलीं। अगतहीं मतिन खाईं-पीहीं आ कसरति करीं। हुक वर्म्स का बारे में अनजान रहला से ओके मारेवाली दवा ना खा सकलीं। हमरा मन क सनक कि हमरा ओघरी खाली घर गिरहत्ती लउकति रहे। हम ओ अपना सनक में स्वास्थ्य के गँवाइ के अपना पुरुखन क शान खेती बारी का मान के बढ़वलीं। माई अउरी का मुँहें सुनले रहलीं कि जगहि-जमीनि आ खेती बारी हमनी का खेतिहर ब्राह्मनन क जनेऊ ह। एकरा के खेवराइ के हमनी का बिलाइ जाइब जा। हमरा पुरनियन के ई भाव-विचार हमरा दिल-दिमाग ले कबो लम्मा ना गइल। अपना ओर ले एकर पहरे दारी करत रह गइलीं। हम लउरि, खुरुपी-हँसुवा, फरुसा-कुदारी आ टंगा-टांगी अउरी से पनरह बरस का उमिरि में इयारी कइलीं आ अबो अस्सी बरस ले ऊपर जाति उमिरि में टूटे ना दिहलीं। हम खेती का कुल्ह सैला में माहिर भलहिन न भइल होखी; बाकी एक दम निकम्मा आ अनगइयां ना हईं। हम खेती करे-करावे का बारे में जानल चहलीं हँ आ ओकरा मोताबिक मेहनति बुद्धिमानी करके कइलीं आ करवलीं हँ। हम खाली सुनबे जनब ना कइलींह कि अगिलि खेती आगे-आगे बलुक एकरा मोताबिक काम कइके लाभ उठवलीं हँ आ अउरियो सभ के एसे लाभ उठावे बदे उकसवली हँ।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अउरी बदे राजा साहब
हमरा बदे बाबा

जेकरा के हम जिनिगी भर आपन खास बाबा समुझत-बूझत रह गइलीं असल में ऊ हमरा खास बाबा क खास लहुर भाई रहलन आ हमार भलाई करे बदे ऊ उनुकरो ले बढ़के मरदाना साबित भइलन। ऊ हमरा के आ हमरा भाइए के आपन प्यार-दुलार लुटावत रह गइलन। बुला हमार खास बाबा हमार जनमला ले बीसन बरस अगतें गंगा-लाभ कइलेले रहलन। ऊ किछु बरस परिवार क मलिकावँ कइ सकलन। ऊ सखमस अपना पिता-पितिया के परल रहलन आ ओ ही लोग का नीति पर चलवइया रहलन। ओ लोग का नून चाट के गुजर कइलीहल कबूल रहे बाकी अपना बाप-दादा क थाती जमीनि बन्हकी धइके, कबला कइके जीभि चटक्का कइल मंजूर ना रहे। अपना जेठ भाई का सुतला का बाद बाबा, जेकरा के लोग-बाग राजा साहब कहलन, मलिकार हो गइलन। उनुकरा अपना जेठ माई का नीति पर चलल पसन्न ना परल। उनुकरा हिया में बड़कवा बने क टिसुन हिलकोरा मारति रहे। उनुकर मन-मतंग बदे कवनो आँकुस ना रह गइल रहे। ऊ अपना महातिम खातिर परिवार का सम्पत्ति के बेसी खरचे लगलन। उनुकरा समय में परिवार क माली हालति गड़बड़ाइलि। जो परिवार का अउरी केहू समुझदार बेकति क उनुकरा पर अँगुरी उठलि त ओकर ऊ गमि ना कइलन उनुकर मन-बढ़ू भइल उनुकरा मलिकावँ खातिर काल हो गइल।

बाबा अपना लइकाईं परिवार में सभकरा ले छोट भइला से सभकर दुलरूवा रहलन। उनुकरा के खाए-पीए, ओढ़े-पहिरे आ खेले-खाले क अधिका सुविधा मिले। हमरा बाबू का कहला का अनुसार ऊ अपना तब जवानी में सुनहुली, चकराहि पाढ़ि क, मेहीं सूत क आ धोवा धोती क चरना काछसु, अध्धी तनजेब क कुरुता पहिरसु आ उमदा चहकदार गमछा कन्हा पर धरसु। हमरा जब ले चेत भइल हम उनुकरा के पैरन में पूरा करिया बूटे क जोड़ी पहिरत देखली। ओघरी साधारन लोग बाग के मोटिए क गंजी, कुरता आ चदरा गमछा शरीर ढके के आ चमरउधा जूता पैरन क बचाव बदे जुरै। बाबा अपना लइकाई ले परिवार क धूरिहा मरद, पहलवान गनावे जाए लागल रहलन। सयान होत-होत घर का जरूरति आ मेहनति (व्यायाम) करे का सुतार से सेरहि में दूध का गाड़ि में राखल जाए लागल रहलन। ऊ अधिका ले अधिका दूध अवँट के मलाई-खोवा बनाइके खाइल पीयल करसु आ खुललि प्रकृति का गोदी में दण्ड बइठक लगाइके, दउर-कूदफान के आ बजनी बाज के शरीर के पोढ़िला बनावल करसु। बाबा अपना जवानी में मजिगर पट्ठा निकललन। ऊ नाग-पंचइयां का आस-पास होखे वाला झूमर का खेल में आ ऊढ़ा पर कूदे जाए वाली लम्मी कूद में गजब क फुरुती आ कुवति देखावसु ऊ अपना जवानी में झूमर क अच्छा हाथ फेंक के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कतने पट्ठन के धूरि चढ़वलन आ कूद में 'जेवनि ऊड़ी मरलन ओके केहू गाँव में मार ना पावल। ऊ दाव-पेंच का फुरुती-निर्भयता क मजिगर बजनी बाजसु। ऊ मन-सरहंग जवान रहलन। उनुकर समउरिया जवान लोग उनुकर लोहा माने। ऊ अपना फुरुती का करतन विशाल आसमान छूवत आम का फेड़ का पुलुई ले गिर डाढ़ि पात धरत धरती पर सीधे आ ठाढ़ भइल रहलन आ देहि पर तनिको रेप ना आइल रहे। उनुकरा ओही जवानी का समया में उनुकरा पिता-पितिया आ जेठ भाई क देहान्त होत गइल का एक दिन उनुकरे कपारे परिवार का मलिकावँ क जिम्मेवारी आ गइलि रहे। ऊ ओके थिर चित्त से, सूझ-बूझ से आ परिवार क आग-पाछ सोच के काम-धाम करवइया बेकतिन क राइ-बाति मान के ना निबुकवलन; बलुक उनुकर लिहाड़ी लेइके, हूँस के उनुकर बोलती बन्न करे लगलन। एकर फल भइल कि परिवार के ठीक-ठाक ढंग से चलावे क नीयति रखवइया अपना जेठ बेटा से उनुकर अनबन हो गइल। ऊ रोसियाइ के आ जिद्द कइके अपना भतीजन यानी हमरा बाबू आ पितिया के अपना पक्ष में फोर के परिवार के बँटवाइ दिहलन। हमरा अनुमान बा कि सन् १९२७-२८ में हमार परिवार हमरा तीन-चार बरस का उमिरि में बंटाइ गइल होई। ऊ मनबढ़ बाबा अपना मेहरारू आ बेटा-पतोहि के छोड़ि-छाड़ के भतीजन का संगे रहे लगलन आ अपना जिनिगी भर उनकरे साथे रहे क संकल्प कइ लहिलन। परिवार का मलिकावँ से उनुकर छुटकारा हो गइल।

एमे सुबहा ना रहे कि बाबा का करतन परिवार बँटाइ गइल रहे बाकी ऊ एकर बदे अपना के दोसिहा माने के कबो तइयार ना भइलन। उनुकर कहनाम रहे कि "हम अपना मलिकावँ का समय में अपना बेटा-भतीजा क बियाह धूमधाम से कइलीं, सीसो का सारिल का गढ़ाऊ खम्हन पर शानदार दुपलिया ओसारी बइठका बदे बनववलीं आ ओ में सीसवे का सारिल क पाटी-सिरई-पाया वाली सराहूँ पलंगरिन के बिछवा दिहलीं, हम मुवल-टूटल बरध न खरीदलीं आ न रखलीं, हम डहरि में छउकत चलवइया बरधन के दुवार पर बन्हलीं; सन् १९१६ का गंगा का बाढ़ि में मकान का धरन का भिहलइया-ढहला पर ओहन आ मरम्मति करवलीं आ बनवलीं, अपना लरिकनी क सादी-गवना कइलीं आ दयाद लोग से लड़े-भिड़के जमीनि क सरकारी बँटवारा करवलीं। ए ही जरूरी कामन में हमरा बहुत किछु रुपया-पइसा खरचे के पर गइल।" बुझाला कि बाबा जोसइल, हेंकड़ी,-हड़काऊँ आ नवँगर होखे क टिसुना राखे वाला मरद रहलन। ऊ नावँ कमाए आ बड़वरगी लूटे का फेर में परिवार क गाड़ी ओकरा विकास का डहरि पर ना घींच पवलन अ गच्चा खा गइलन।

बाबा बातिधर मरद आ अपना टेक पर अड़ान लेवइया जवान रहलन। बँटइले दस बरस हो गइल रहल होई। ऊ भजीतन का परिवार के आपन निजी आ खास बेटन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का परिवार के बँटाइल भतीजन भा केहू नजदीकी ले नजदीकी दयाद क परिवार समुझे लागल रहलन। एही हालति में एक दिन उनुकरा खाटी का पजराँ आइके, बइठ के उनुकर मेहरारू आ खास कहे वाली पतोहि–नातिन पतोहि उनुकर हाथ–गोड़ धइली, सुहुरवली–मिसली आ आपन माया–जाल पसारत चेरउरी कइली–"हमनी का राउर हईंजा? रउरा तन के जामल हईं जा। हमनी के बयबी जनि बूझीं। रउवाँ हमन क माथ हुईं। रउवाँ रहते राउर नाती "बाबा–बाबा" कहे बदे तरसत बान स। हमनी से जेवन भूल–चूकि भइलि बा ओ के माफ करी।" ऊ लोग आँखि ढब–ढबाइ के बड़ा देर ले कलपत रह गइल।

माया–मेहरारून क पवाँरा पसरल। बाबा राजा साहब क मन पसिजल। आँखि लोरियाई गइलीं स। गरभर आइल। किछु कहत ना बने। बुद्धि रहे। बेकलता में उठ के खाटी पर बइठ गइलन। उनुकरा के नियरे का पलंगरी पर सूतल हम आ हमरा छोट भाई लउके लगलीं जा थोरकिए लम्मा परल एगो बँसहट खाटी पर बाबू उनुकरा आँखि का सोझाँ देखाई परत रहलन आ बखरी का भीतर ले माई क किछु काम–धाम कइला क आ खोंखला–खँखरला क आहटि मिलति रहे। गोरू–गाइ आ घर–दुवार सभ किछु अपना आँखिन में निहारत रहलन।

उनुककरा चेत परत जात रहे उनुकरा सनेह से सउनाइलि–रचलि उनुकरि आपनि ई दुनिया। मन बड़ा वेग में मन–जात सृष्टि से काया–जात सृष्टि में आ काया–जात मन–जात सृष्टि में दउरे धावे लागल। ऊ बेकलता में उठके खाटी पर बइठ गइलन–कहवाँ जाई; कहवाँ रहीं? के–के छोड़ीं, के –के धरीं? हमरा के ई सभ अपने लउकत बा। हम एमे केकरा के आपन आ केंकरा के गैर समुझीं। एकरा में केकरा केबीछीं आ बराईं? यह मन गुनत राउ नहिं बोला, पीपर–पात सरिस मन डोला। ऊ किछु जबाब ना दे पवलन। माथा सोहरावत ढरक गइलन आ कुछ बेर ले चुपचाप परल रह गइलन। उनुकर नातिनपतोहि उटकेरली–"बाबा! हमनी के का कहतानी? बड़ा आसरा लगाइके आइल बानी जा। हमनी के दूध क माछी मतिन किरिछन जान के लम्मा जनि फेंकी। हमनी किहाँ चलीं। एहिजाँ आवत –जात रहब।"

बाबा भरभरात गरे सनेह–सनल· स्वर में गवें–गवें बोललन–बेटी हमरा के सोचे–समुझे बदे किछु मोहलति द जा। जल्दी क काम सइतान के होला। तूँ पढ़ल– लिखल बाड़ू। जनते बाड़ू कि बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताइ। हम दुइ ओर का माया–मोह में ए घरी पर के ऊभचूभ हो रहल बानी। कतहीं अइसनि नउबति न आ जा कि धोबी क कुकुर न घर क आ न घाट क रह जा। दुइनाइ पर चढ़ल निम्मन ना ह। हम बाति हार गइला बानी। हमरा के बेबाति क कइ के बेपानी मति करऽ जा। बाति क चूकल मरद आ डाढ़ि से चूकल बानर कवनो काम क ना रह जा। हम एघरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोहन लोग के किछु बचन ना देइब। हम तोहन लोग का आजु का बाति बेवहार से गदगद बानी आ तोहनि लोग का कुसल छेम बदे हिया से असीसत बानी। अब हमरा के समुझे-बूझे आ एक परिवार से राइ-बाति करे क मौका द जा। ए घरी जा, जाजा। ऊ लोग आसरा लगवले घरे चल गइल।

बाबा ओही रातीं समुजा करे बदे बाबू का खाटी पर जा बइठलन आ पूछलन-"आजु माया क जेवन·किछु तमासा भइल ह ऊ देखते-सुनबे कइल ह। हम रहीं कि जाईं? का करीं, हमरा समुझे में नइखे आवत।"

"अइसन भइल कवनो ताजुब नइखे। अब तोहार मन माने त रहऽ, आ न माने त जा। तोहरे जिद्दकइला पर हम बाँट के अलगां हो गइलीं आ तूँ अपना जिनिगी भर हमनी का संगे रहे क संकल्प लेइके रहे लगलऽ। हमनी कं आपन बाप-आजा बन के रहलऽ आ कतहीं रहऽ, हमनी खातिर ऊ हे रहबऽ। तोहरा जहवाँ रहे में सुबेवँत-सुरेब बुझा ओहिजाँ रहऽ। कहवाँ रहे-जाए के बा, ई एकाद दिन में अपन ही सोच-समुझ ल। ए बारे में हमरा से किछु मति कहवावऽ"

"तूँ ठीके कहताड़। बाकी ए घरी हमरा मन दुई ओर का माया में पर के अफनात बा। जे आगे ले धइले बा ओके छोड़ल नइखे बनत आ जे पाछे ले घींचत बा ओके झिझिकारल।" ई कहत बाबा अपना खाटी पर जाई के ओलर गइलन। उनुकर आँखि रातिभर ना लागलि। ऊ करवटे बदलत रह गइलन। मन में दुबिधा-द्वन्द रह गइल।

सबेर भइल बाबा मर-मैदान होइके अपना खाटी पर बइठलन आ हमरा के चिलम चढ़ावे बदे अरहवलन। हम चिलम बढ़वाइ के उनुकरा के लेइ आइके दे दिहलीं। ऊ अपना हुक्का पर ओके चढ़ाई के तमाखू पीयत खानी कहलन-"बच्चा? हमरा के अपना किहाँ लेई जा बदे ओघर क आपन सभ जनाना परानी आइल रहे। हम ओ लोग किहाँ रहे बदे जाई?"

हमरा ए तरे के कवनो उमेदि ना रहे कि बाबा हमरा से अइसन प्रश्न करिहन। उनुकरा रहे-जाए क जब ई मामला चलल तब हम जनलीं कि ऊ हमार खास बाबा ना हउवन, ऊ अलगाइल हमरा चचेरा भाइन क खास बाबा हउवन आ बँटवारा भइला पर ऊ हमनी का संगे रहे लागल बान। बाकी हमनी का संगे रहके ऊ हमनी के जेवन सनेह दिहलन ओसे ऊ हमरा हियरा में आपन खास बाबा बन के अड़ले रह गइलन। ओ से रंचो मात्र हमरा के चुप देख के बोले बदे उकसवलन-"बच्चा, बोलत नइखे? बोलु।"

हम किछु बेर ले बाबा के मुँह तिकवत रह गइलीं। बाबा का ए बिकठ तगादा पर का कहीं? आपनि सोच-समुझि काम ना देति रहे। आँखि ढब-ढबात आवत रहल स

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ गर मरमरात। बाबा क मोह हमरा कपरि सवार होइ के चाँतत जात रहे। मुँह ले लरखरात बानी निकललि बाबा! तोहार मन बा त जा। ऊ हो तोहरे न घर ह। बाकी अबले जइसे हमनी के आपन नाती बुझलऽ ह तइसहीं बूझिह; नात हमनी के अखरी। एतना कहके हम सुसुकत-हिंचकत बखरी में पइस के माई का लग्गीं चल गइलीं। बाबा आन का मने आपनि गुड़गुड़ी गुड़गुड़ावत तमाखू पीयतु रहलन। थोरकी देर बाद ऊ ढरक गइलन आ हम पढ़े चल गइलीं।

बाबा ओही दिने साँझि खानी झोल्हन्हारी का बाद अपना ओघर का पढ़ल-लिखल नाति पतोहि के बोलवाइके समुझाइ दिहलन-परिवार बँटइला का बाद ए परिवार का संगे रहत हमरा के दसन बरस अधिका हो गइल। एही परिवार क परानी हमार खास बेकति हो गइली आ हम इनकर। एह परिवार क लरिका-फरिका हमरा खास नाती हो गइल बान। इनकरा के छोड़ल नइखे बनत। तोहरा किहाँ चलला पर ई बड़ा हिरोहिहन स। एहन के अवहीं; एहन क रोवाँ टूटी आ कलपल हमरा पर परी। एहन क मन हमरा से लागल-बाझल बा। तोहन लोग क लरिका-फरिका हमरा ले लम्मा-लगत रह गइल बान। ऊ हमरा से पाँजल नइखन। नाया माया-मोह में डाल के हमरा आत्मा के एन्ने ले ओन्ने मति डहकावऽ जा। अब जिनिगी क बाँचल दस-पनरह बरस एहिजे काटलेबे द जा। हमरा एही लोग का संगे सुख-दुख चखे के बा आ एही लोग का जिम्मा हमारि सेवा-सुसुरुखा बा। जे वन सपरी तेवन ई लोग कही। हम एकरा ले अधिका किछुना कहब। तोहन लोग कुसल-कायम रहऽ जा। भगवान तोहन लोग के कल्यान करसु।

बाबा का एतना कहते उनुकरा नातिन पतोहिक लागलि आशा टूट गइलि आ ऊ उनुकर चरन छू के अपना घरे चल गइली। बाबा अपना टेक क पक्का रहलन आ हमनी का दूनो भाई बदे उनुकर नेह धनि रहे। बुझा कि हमनी का हित खातिर ऊ आपन खास कहाए वाला नातिन क अहित कइ सकत रहलन। सचमुच ऊ बाबा राजा हमनिएँ क खास बाबा रहलन। जब-जब हमरा अपना बचपन क, नवजबानी क चेत परेला तब-तब बाबा क सावँली सुरतिया हमरा सुरुता पर चढ़ जाले। माझिल कद क उनुकर छरकाह कसल मेहनतिहा सुघर-साँवर शरीर, उनुकर हेंकड़ी भरलि निर्भय बानी आ मौका-मौका पर केहू का सामने आपनि अरजि-गरजि कहे क रंग-ढंग हम सुमिरे लागी लाँ आ आखिंन ले आँसुक क बून्न टपके लागेलँस। बीतलि सदी का छठवां दसक का सुरुवे में बाबा संग छोड़के चल दिहलन; बाकी उनुकर नेकी हमरा सिर-माथे बा।

बाबा का भोजन क गुर रहे-गोहूँ, गुर आ गोरस। बे गोरस का भोजन के ऊ केहू तरे जोऽ जियावे वाला भोजन मानसु। उनुकरा गोहूँ क रोटी, चटकार चोखा-तरकारी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छौंकलि दालि, धान क भात आ मिट्ठा डालल अवँटल लाल दूध भा सजाव दही भोजन में पसन्न रहे। छिनुई दही भा मट्ठा देखते उनुकरा कपारे जर चढ़ बइठे। उनुकरा भाषा में अइसनि दही 'कनई' रहे। बाबा का खमीरा पियनी तमाखू पीए क बारमसिया नसा रहे आ फगुवासल मौसमी। जब ई मौसमी नसाउनुकरा कपारे चढ़े तब ऊ अकाज क फिंकिरिना करसु। ऊ फागुन में महाशिवराति के अपना दुवार पर फगुवा क गवनई रातिखानी हकनहाक बइठा देसु। तहिया ले ए गवनई क ढोल, डफ आ आलि-मजीरा बाकी फागुन भर बाजत रह जा। ओघरी फगुवा मनावे आ गावे-बजावे क लोगन् का बहुते सउख आ जोश रहे। गाँव में बीसन जगहाँ लोग केहू का दुवार पर बटुराइ जासु आ रातिभर गावसु। बाबा बारी-बारी से ओ गवइन का गोलन के एक दिन राति खानी हमरा दुवार पर आइके फगुवा क गीत गावे बदे चेरउरी करत नेवतसु। उनुकर नेवतल अकारथ ना जा। ऊ गोल आइ जाइल करसु आ अपना दुवार का गोल से हुम्मा-हुम्मी से उनुकर भिड़कन्त होखे आ हार-जीत क बाजी लगाइके गवनई चले। उगरह गांव जान जा कि कहवाँ फगुवा हो रहल बा। सम्मत जरे ले एक-दुई दिन पहिले तरे का कई गो गोलन के दुवार पर बटोर देसु। तरई मतिन आदमी दुवार पर छा जासु आ एक-एक ओर पचासन-पचासन गवइनया बइठि के ढोलक, डफ आ झालि-मजीरा का संगे हुम्मा-हुम्मी से गावसु आ उगरह गाँव गूंजे लागे। बाबा ओ गवइन क खमीरा तमाखू पान-बीड़ी, जयफर, कुलंजन नियर चीजुन से खातिरदारी करावे बदे एक गोड़ पर ठाढ़ रहसु। अपना टोल क गवइया बाबा क आथि रहलन आ अउरी टोलन क पाँच-छवगो गवइया करीब पनरह-सोरह दिन ले गाँव का अउरी गोलन से टक्कर लेत रहसु। राति-रातिभर गवना चिकरला से गर बइठ जा, बाकी मोरचा पर चढ़ला से पाछना देसु। गर साफ करे बदे ओ लोग के जयफर कुलंजन बाबा जुटवले रहसु।

हमरा दुवार क गवइन क गोल कबो-कबो गाँव का अउरी टोलन का फगुवा गवाए का अड्डन पर जाइके गावे क मन चलावे। बाबा अपना इहवाँ का गोल क कतहीं गइल पसन्न ना करसु। गवइया लोग के डाँट-डपट के, समुझाइ-बुझाई के मनालेसु। उनुकर कहनाम रहे "जब तोहन लोग किहाँ उगरह गाँव का गोलन के बोलाइ देतबानी तब गली-खोरी में बवँडियाए खातिर का बेकल बाड़ऽ जा। अपना दुवार पर इज्जत-पानी से गावत रहऽ जा। जो आन टोलर जाइके हलुक परलऽ जा आ बेवकड़ भइलऽ जा त बाड़ो-बाड़ो गइलीं अ नव हाथि क पगहो लिहले गइलीं टोल महाल क पानी उतरे क नउवति मति आवे द जा। जहिया हम आँखि मूंद देइब तहिए एह टोल ले एह तरे क फगुवो भइल खतम हो जाई। तोहन लोग दरे-दरे घूमत रहबऽ जा। तोहन लोग कतहीं पूछना होई।" एही तरे किछु रुखर बोल दीहला पर एक सालि अपना टोल क गवइया लोग रूठ-रोसियाइ के अलगाइ के टोल में आन जगहें फगुवा गावे बदे गोलिया गइल। बाबा केहू के मनावे ना गइलन। ऊ अपना कोलवारी का गवइयन के बले अपना दुआर पर फगुआ गवावत रह गइलन दुसरा सालि ले फेरू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभ अपन ही आइके मिल–जुल के गावे–बजावे लागल। आगे बाबा के मुवते अपना टोल क भगुआ क गवनई क रंगति लापता हो गइलि आ फागुन अइला पर बीसन बरिस ले लोगन के उनुकर अभाव अखरत रह गइल।

जेवना सालि आम क फसलि मजिगर आवे ओ सालि जब आम पाके लागँस तब बाबा क खाटी दलपत पुर का बगइचा में जाइके बिछ जा आ धाम–बरुखा से आड़ खातिर मँड़ई परि जा। बारी बहुत लमहरि–चाकरि रहे आ ओमे एक ले एक दिग्गज बीजू आम क पेड़ रहलन स। ओ बारी में बखरदार अउरी दयादनो क खाटी उनुकरा संगे बिछ जाँस। बाबा का खमीरा तमाखू क चिलमि चढ़ति रहे आ समकेहू पियत रहे। बाबा क गुड़गुड़ी गुड़ड़ाति रहे, गलचउरन होत रहे आ हँसी–ठट्ठा क आवाजि गूंजति रहे। ओघरी ससि सम्पन्न सोह महि कैसी, उपकारी की सम्पत्ति जैसी। आम का पेड़न पर फरन क चमकति झूमति घारि रहली स आ बारी में अगोरवइन बदे सातू–पन्ना क बहारि रहे। बारी ऊ मन सायन रहे कि ओकरा आगे नन्दन–कानन झूठ। जब पाकल आम फेड़न ले टपके लागँस तब अगोरवइन क मन पिहिके लागँ स। ओघरी बाबा एक दुइतोर राति खानी साज–बाज पर गावे बजावे वाला गवइन के नेवत के बटोरवासु। निचलावाँ ओ बारीमें मृदंग घुड़के लागे, हरमुनियाँ रूलमुनाए लागे, झालि, टुनटुनाए लागे, गइवया अलाप–अलाप के सुर मारे लागसु पेड़न से पाकल आम टपके लागें स, बारी में रस बरसे लागे आ सुनवइया झूमे लागसु। बाबा अपार सुख–सागर में गोता मारे लागसु। उनुकरा समया मं आम अगोरत खानी जेवन जलसा भइल तेवन फेरु कबो देखे में ना आइल। ऊ आपन रुपया–पइसा लगाइ के ओ सभ का खातिरदारी बदे उमदा खइनी–पियनी तमाखू, पान–बीड़ी–लाची, आ सोहारी–कंचउड़ी–तरकारी क उमराह इंतजाम करावसु आ सभकरा के बारी क निम्मन–निम्मन, बिछल मीठ–सबदगर आमन के भरपेट्टा चभावसु। सहकाइ–उकसाइ दिहला पर जब ऊ कबो–कबो पिहिकासु तब उनुकर सुर लम्मा ले चोहँपे आ बारी त गूँजे लागे–बस गइलन हरी, ना जइहों बृन्दाबन में, सखी।

ऊ बाबा राजा साहब अउरी सभकरा बदे जइसन रहल होखसु, बाकी हमरा बदे ऊ दइब होइके रहलन। का बचपन क खेलवाड़, का किशोरावस्था क पढ़ाई–लिखाई आ बियाह–सादी का नवजवानी का नोकरी–चाकरी क तलास आ का जवानी का गृहस्थी क जुध्ध, ए हर मोरचा पर जले ऊ रहलन तले हमार अजगुत, सहायक साबित भइलन। आजु ऊ हमार हितू बाबा नइखन। हमरा के अपना ए बुढ़वती में खाली उनुकर ऊ चमकत चनोल कपार आ उनुकार हमरा बदे कइलि करनी ने की लउक रहलि बा जेवना का कमाई क लाभ उठा रहल बानी।

धीर–पूर सीधवा–सरल पूजनीय नू नूँ परिवार बदे अपना के सउँप देले रहलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ निम्मन ओढ़े-पहिरे आ नीक-नोहर खाए-पीए बदे कबो अघातुर ना भइलन। घर ले जीवन किछु उनुकरा नेवरतीं चोहँपि जा ओ ही के अंगीकार कइके मगन रहसु। गाइ-गोरून क सेवा करत अपना मउज में सरेहि में बिचरत रहसु। 'कम खा, गम खा' उनुकरा जिनिगी क मूल मंत्र रहे। एतना गमखोर कि केहू टिसाई करें; हँसके लगाइ रहसु। केहूँ लागूँ बाति बोल दे, सुनके चुप रह जासु। ऊ केहू से खार खाए ना जनलन। थिरचित्त अपना डेरा पर रहके बराबर किछु न किछु खूर-खार करत रहसु। ऊ केहू के ऊरठ ना बोलसु। उनुकर गाँव महल्ला क मकड़जाल ना पसन्न परे। उनुकरा के सरेहि-सीवान क निरद्वन्द खुललिं, रमनीक आ रंग-बिरंगी क्रीड़ा-स्थली सोहावन लागे। असल में अपना बाप-दादा के रूप-रंग, बाति-व्यवहार आ रहनि-सहन में परल; मध्यम कद क सावँर रंग क, ठोस गँठिगर शरीर क आ हँसत मुख क खुसदिल सरेहि क संत ऊ नूनूँ ओ प्रकृति रानी का सीवान क संत रहलन।

नूँनूँ सयान होते हमस परिवार का खेती का घुरी बन गइलन। हमनी क सीवान लम्मा क रहल ह। बे डेरा-डन्जा क खेती मजा ना देत रहलि ह। निर्जन-निचलावाँ, अन्हाराँ-घुन्हाराँ आ भकसावनजीऊ-जन्तुन का दरमेराँ राति खानी रूखर-सूखल खाइ के डेरा पर परल रहल सभका बस क ना रहल ह। उनुकरे मतिन केहू-केहू जवान ओ साधना का मोरचा पर डँटत रहल ह। जब हम अपना खेती-गिरहत्ती का बिकास क बीड़ा उठवलीं तब उनुकरे मतिन मरद का अपना पजराँ ठाढ़ भइला पर हमार मन दून हो गइल आ पहिलिए सालि हम दुई हर ठाढ़ कइ दिहलीं। खेती क बढन्ती देख के ऊ एतना जोसियइलन कि उनुकरा खमरात शरीर में हनुमान क बल आ गइल। ऊ खेती का बिकठ मोरचनो पर न अँजलन-मँजलन आ न अमरलन। ऊ अपना सरेहि का खेती क सधल काम-करता मरद रहनल। ओ सधल मरद क मददि पा गइला से हमरा खेती में सुधार ले आवे में ढेर आहस ना आइल आ भरपूर सफल भइलीं। हमरा ले अगिली पीढ़ी क नूँनूँ आ बाबा हमरा ए खेती का जुझा काम में हमारि सहायता करे में तनिको असकति आ कसर-कोतहाई ना कइलन।

नूँनूँ स्वाभिमानी पुरुष रहलन खेती जोग जगहि-जमीनि का रहते अड़ोस-पड़ोस ले आपन काम-धाम हरहुन देख के उनुकरा हिनाई क अनुभव होखे। अपना ए पारिवारिक कारोबार का बढ़न्ती बदे हमरा भिड़ते उनुकर मन टनमना गइल आ आपन ई काम अउरी सभ ले बीस करे बदे उजग हो गइलन। हमरा पहिले ले एक हर क खेती होति आवति रहे। जेवना सालि हम खेती क भार सम्हरलीं ओही सालि अषाढ़ लगते तीन बरध कई दिहलीं आ सावन में बाजरा क बावग ले पहिलहीं एगो अउरी बरध कीन के चार गो बरियार बरधन क दुइ हर ठाढ़ कइ दिहलीं। जब रुपया पइसा के जोगाड़ कइके चउथा बरध के वाँगर ले खरीद सावन क बढ़ियाइल दरियाव फनावत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डेरा पर चोहँपलीं त ओघरी संजोग से ओहिजाँ बाबुंवो घर ले आ गइल रहलन। बरध के देखते उनकर थर्रा डोल गइल। ऊ महुराइ के अइसन बोललन कि हमरा काठ मार दिहलस। समुझि में ना आवे कि बरध लिहले हम कहवाँ जाईं। थाकल-खेदाइल चोहँपल रहलीं। हूम करत अइसन हाथ जरल कि होश ठेकाने ना रह गइल। नूँ नूँ हिसाव कइके हनुमानी जोश में हमरा ओ घाव पर संजीवनी मलहम लगवलन-का कठुवाइल बाड़ऽ ? दुई हर ठाढ़ कइदिहलऽ त कवन अनरथ हो गइल ? का देहिं के जोगवे क बा ? बड़ा भागि से बयल आइल बा। एहू के हो बरधन में खाली परल खूँटा में बान्हि द आ सुहुताइके मुँह में मिट्ठा डाल के पानी पीऽ। एहू के लेहन-पताई जुट जाई। जइसन छप्पन ओइसन घप्पन। बान्ह के हम दम लिहलीं आ बाबू क बकारि बन्न हो गइलि। ऊ मुँह बनवले घरे चल गइलन। दुइ हर क अउरी सरजाम जुटल रहे। बनिहार बाबुवे जोह दिहलन आ बरियार बरधन क दुइ हर चले लागल। खेत जोताइ के हलब्बी हो गइलन स आ ओही सालि खरीफ आ रबी क मजिगर उपज भइलि।

नूँनूँ हमरा जनमला का पहिले ले अपना परिवार का खेती का पल्ला में नधाइल चल आवत रहलन। ऊ ए काम में कबो नावँ न दिहलन। जब केहू का बियाह बाराति आ तिलक जइसन परोजन में सामिल होखे बदे भेजल जासु तबे डेरा पर ले टसकसु आ डेरा अगोरे बदे दूसरा के सरेखल जा। ऊ डेरा का अगोर-पछोर आ गोरून के लेहना-पताई जुटाइके गोसवारी करे में फरथ रहलन। अपना ओ मोवार से लम्मा परला पर गोरू उनुकरा खातिर चिल्लाए चिकरे लागँस।

नूँ नूँ अतिथि-भक्त रहलन। जब केहू अनगइयों डेरा पर चोहँप जा त मिट्ठा पानी आ साग सातू से ओकर सेवा करे में ना चुकसु। तर-तेवहार आ बियाह सादी का असरंन पर जेवन किछु नीक नोहर मिठाई पक्वान जइसनि जिनिस भेजलि जॉस ओही में एह नेवरती किछु बचाइ-सँचि के धइ देसु। उनुकरा अपना जेठ भाई का ओराँ सहज सरधा भगती रहे; बाकी ऊ नूँ नूँ के कबो-कबो बड़ा ऊरठ बोल देसु आ मेहनामारि के निहसावल करसु। एसे ऊ उनुकरा ले बरक के रहला में आपन कुसल समझसु। भाई का रवा ना रखला से एक तोर उनुकरा आस आ गइलि। आँखि पानी से छलछला गइली स। मुँह ले निकल परल 'परलन राम कुकुर का पाले।' एतना कहके माथा धइल दुखाइ के ऊ आपनि मूँड़ी गाड़ लिहलन। हम एकटक उनुकरा के निहारत रह गइलीं। अपना ओ भीष्मपितामह क एक ब एक ऊ दयनीय दस देख के हम ठक् दे रँह गइलीं। ओ मरद के कवनो दसा में कबो पस्त देखे क हमरा उमेदि ना रहे। हम डेरा पर होत उनुकरा से भेंटि कइके झट् से हरिहर पुर पहुँच जाए क मनसा राखत रहलीं। अब आगे क कार्यक्रम एकतोर ठप् कइके नूँ नूँ का पजराँ बइठ के उनुकर आँसू पोछलीं-"नूँ नूँ । तूहीं हमार मारी अलम्म बाड़ऽ जो तूहीं ए तरे अघीर होइबऽ आ देहिं छोड़बऽ त हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवना घाटे लागब? तोहरा के जेवन किछु अन्टस-तकलीफ होखे, जेवन किछु जरूरति होखे ओकरा के हमरा के बताव। हम तोहरा सेवा बदे हाजिर बानी। तोहरा पर कवनो ताप न आवे, एकरा बदे हम बराबर तन देही राखब।"

एतना सुनते ओ उत्साही मरद क तन-मन हरियराइ गइल। लुंड़ियाइके खाटी पर लुढ़कल सरीर में जान आ गइलि। उड़ बइठलन आ थिर चित्त होइके कहलन-"तोहरे के देख के हमरा तीहा बा‌आ एही तरेक तोहरा से आलम्म-आसरा बा। तूँ घर का बढ़न्ती बदे जेवन उतजोग करत बाड़ ओ में हम कबो पाछना देइब। तूँ हमार लायक संतान-संवाग हउबऽ। तूँ ना हमरा बादे ठाढ़ रहबऽत अउरी के रहीं? जा ठाट से आपन काम करऽ।" अपना समय के हरज जनि करऽ? नूँ नूँ के खुसदिल देख के आ उनुकर आज्ञा पाइके माथ पर गमछा क समगरदऊँ पगरी बन्हलीं, कन्हा पर लउरि धइलीं आ उनुकर गोड़ लाग के डेरा पर ले चल दिहलीं।

नूँ नूँ सुरुजनारायन के बेगर जल दिहल मुँह में अन्न क एगो फट्ठी ना जाए देसु। सबेरे फर-फराकित होइके हाथ मुँह धोइके गोरुवाई करसु आ गोरुन के लेहन-पताई ओहन का सोझाँ चरनि में डाल देसु। ओकरा बाद गुर जइसन मिट्ठा से खरमेहाव करसु। फेरू अपना ओ दिन का काम में भिड़ जासु। दुइपहर में जेवन किछु साग-सातू जुटल रहे ओ के नहाइ-धोइ के सुरुजनारायन के जल देइ क़े भगवन क प्रसाद समझ-बूझ के ग्रहन करसु। एकरा बाद तमाखु के चिलमि पी के तनी दम मारके ओ दिन क काम ओरखावे का फेर में पर जासु। अपना गाइ-गोरू-बछरून के भरपुर भरपेटावँ लेहना-पताई जुटाई के ऊ खुरुपी-हँसुआ धरसु आ चारपाई पर चूतर टेकसु। "जले जीए के तले सीए के" कहा उति के मानत ऊ जिनिगी भर मूए का दम ले जाँगर ठेठावत रह गइलन। केहूक कमाई खाइल आ काम करत क अगुताइल उनुकर स्वभावना ना रहे। काम करत रहे क अनुकरा बान पर गइलि रहे। मूए ले दुइ तीन बरिस अगतें ऊ अनमनाह भइलन। डेरा छोड़ के गाँव घरे रहे बदे हम उनकुरा ले बड़ा चेरउरी कइलीं। ऊ हमरा बिनती पर कान ना दिहलन। डेरा पर परल रहे क टेक धइले रह गइलन। किछु दिन बाद बहुत कह सुन के फुसिलाइ के हम उनुकरा कें अपना किहाँ हरिहर पुरलेइ आइके रखलीं आ दवा-बीरो करावे लगलीं। उनुकरा शरीर में सुधार भइल। ऊ बहाल हो गइलन; बाकी अपना जानल मानल डेरहन का समाज बेगर उनुकर मन रह-रह उदासे आ आदमी का गर्द-गुबार का एह दुनियाँ ले ओह रूख बिरिछ का दुनियाँ में भाग जाएँ बदे उनुकर मन बराबर कुलाँचत रहे। हमरा बार-बार मना करत रहला पर एक दिन उनुकरा धीरज क बान्ह टूट गइल। ऊ कड़ेर पर के एक दिन हमरा से बोल परलन-"हमरा के डेरा पर जाए द। ना जाइब त ऊ ऊजर जाई। एतना दिन क कुल्ह कइल-धइल रितिर-छितिर हो जाई। जीयेत अपना आँखी हम ई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखल नइखीं चाहत जो हम ओकर अगोर बछोर ना करब त के करी?" हम उनुकर ऊ माया-मोह देख के अचम्भो खा गइलीं आ उनुकर मुँह टकर-टकर तिकवे लगलीं। एतने में ऊ आपनि बाति फेरू दोहराइ दिहलन आ कहे के पर गइल-नूँ नूँ! तोहार कहल सही बा। तोहरा मतिन पक्का डेरहा हमरा परिवार के ना मिली। बाकी ई बताव कि जब तू ना रहबऽ भगवान का दरबार में चल जइबऽ तब डेरा पर के रही? का तू ए डेरा पर रहे खातिर अमर होइ के आइल बाड़ऽ? डेरा क मोह छोड़ऽ। अब आपन जी जाँगर देखऽ। एहिजें परल रहऽ। डेरा पर आवत-जात ओ एहिजां रहब आ समय से भोजन करत रहब आ जरुरति के मोताबिक दबा दारू होत रही त टाँठ रहबऽ आ हमनी क बहुत सेवा-सहायता करबऽ। डेरा पर रहबऽ त थउसी जइबऽ। डेरा का संगे सती जनि होखऽ।

"ठीके कहत बाड़। मउवति का पजराँ चलल जात बानी आ बाप गए परबाजा चल गए, तुम को ऐसहूँ जाना" क समझि-बूझि नइखे होति। मक्खर परो डेरा-डंडा। ना जाइब। बाकी एहिजाँ काटी तोरल हमरा के निम्मन नइखे लागत। जले जीए के तले सीए के चाही।"

नूँ नूँ किछु दिन ले हमरा संगे खात-पीयत परल रहलन। जेवन किछु उनुकरा से सपरे ऊ करबो करसु आ एहि बीच में डेरे पर अइलन-गइलन बाकी डेरा पर रहे बदे हिरोहत रहसु। जिनिगी भर डेरा-सरेहि का हवा-पानी क सवाद चखल उनुकर मन ओहिजां जाए बदे बगा जा। हम अपना ओ पुरनियाँ का मन-कुरंग के सील-मुरउवति का बान्ह में राखल ढिठाई समुझे लगलीं। छुट्टी पवते ऊ डेरा पर खुशी से रहे लगलन दुइ-तीन बरिस ले अगतहीं मतिन काम-धाम करत आ खटत रह गइलन। अपना तन दुरुस्ती क खियाल ना रखलन। खामर शरीर खँखड़ियाइ गइल, लरखराए लागल। गाँव घरे रहे बदे लाचार हो गइलन। गाँव घर क रहल उनुरा के भल ना बदवलस। एकादे हफ्ता बाद चलते फिरते एक दिन उनुकर प्रान-पखेरू उनुकरा तन का पुरान जर्जर पिंजरा ले फुचरऽ दे उड़गइल।

आजु नूँ नूँ नइखन, उनुकर संगी-साथी नइखन, उनुकर समउरिया आदमी नइखन आ उनुकरा ऊ डेरा खरिहान नइखन। दुनियाँ बहुत बदल गइलि बा। उनुकरा डीह पर रहवइया आ उनुकरा संचलि धरती-थाती क भोग करवइया उनुकर नाती-परनाती उनुकर नावों जाने क तवालति नइखन उठवले। बाहरे! नमक हराम संसार! तोहरा के सलाम। सनेह मुरति नूँ नूँ क पूज्यपितृव्य क भा ओ डेरहा काका-चाचा क सकलि-सूरति हमरा सुधि में बनलिबा आ सुच्चा सनेहसिर माथे बा।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोरह भइंसि क सोरह चभक्का

एक दिन एगो पैंतालिस साला धूरिहा पट्ठा भेंट होते पावलग्गी कइके कहलन– "गुरू जी आशीर्वाद देईं कि हमार जीउ खुलासा रहो। एघरी हमरा पेट में किछु अनखुन रहत बा।"

"जनात बा कि भोजन ढेर मकोसत बाड़। ए से पेट अनुखनाही करत बा।"

"ऊ चिहइलन–ढेर भोज कइसे करब? जेतना मन करी ओतने न करब?"

"मन बड़ा–चंचल आ खुरापाती हऽ। एकरा मोताबिक चलला क फल चटोर आदमी भोगेलन कि सवदगार ढेर भोजन कइके ओकालंन आ पोंछिंटा खोलत पाखाना का ओंरा धावेलन। ढेर भोजन क मारमन का नइखे उठावे–ढोवे के। एकरा खातिर केहू अउरिन का खटेके परेला। जो शरीर का एक पुरजन पर ढेर चाँड़ चढ़इब त का नतीजा होई?"

"टूट–काट के बिगर जइहन।"

"जब तोहार मन मतंगई–बउराही में पेट पर ढेर दबाब बनावत बा तब ओकरा अनखुन करे के पर जात बा। आगे जो एकरा के अउरी उद्‌बेगब त एकर तत्पात बढ़ी आ जेवन मुँह मिहें घोंटब ओके ओ ही मिहें उगिलबा मा पोंछिटा खोलत पाखाना का ओराँ बार–बार भगबऽ। ए से पेट का नकदम जनि करऽ; ना त तोहारि दुरगति होई आ दुनियां पेटू कहके तोहार हँसी उड़ाई। अति का अनेति मेवर ह।"

"रउवें कबो पढ़ावल खानी कवनो बाति का सिलसिला में सुनवले रहलीं कि सोरह भइँसि क सोंरह चभक्का, सोरह सेर घीऊ खाउँ रे; कहवाँ बान तोर बाघ मामा एक पकड़ लड़ जाऊँ रे।" हम एक अर्थ लगवलीं कि खूब कसदार खा आ खुब मेहनति कसरति कइके लड़–भिड़इया काम करऽ। राउर कहलि ई उकुती हमरा मन में बइठ गइलि ह। खाए–पीए आ काम करे में हम ललकार दीहला पर कबो पाछे पाँव ना दीहल–चाहीं, भलहिन भोजन–भट्ट कहा जाई।

"नाहीं, ई दुनियाँ बहुत बदलति गइलि बा। सोरह भइंसि क सोरह चभक्का आ सोरह सेर घीउ अगतें का जमाना का कुम्भकरन आ भीम मतिन मरदन खातिर रहे। अब ऊ मरद ना रह गइलन। आजु का चाय पिवइया मरदन का ऊ सरि–सक्ती नइखे कि कहँतरी–कहँतरी क दूध–दही खाइके पचा गलिहन। दुसरकी बाति बा कि जवानी का चढ़ानि पर चार कवर अधिको घींच के खाइ लीहला पर पचावल जा सकत बा बाकी ओकरा ढलानि पर अइसन कइला पर पेट अनखुन–अनशन करबे करी। एसे जो सजग होइके संजम–नेम से ना रही त अपना जीव्न–पुस्तक क 'शरीरम् खलु व्याधि मंदिरम्' क पाठ खोल देबे के परी। अब तोहार शरीर खमरात बा। सोरह भइंसि क सोरह चभक्का सोरह सेर घीउ खाउँ क पाठ बन्न करऽ; नात आगे का जिनिगी में रस सवाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना रह जाई, खाली साँसति भोगे के परी। चेत जा। बुध्धिमान के इसारा काफी ह। अनखुन ना तोहरा बदे पेट क ई इसारा ह।''

एतना कहके हम आपनि डहरि धइलीं आ ऊ आपनि डहरि। रह-रह के हमार मन अपना बीतल जीवन का कारदानी का बेर में समुझे गुने लागल। अपना चढ़ति जवानी का जोम में कहियो हमरो मन सोरह भइँसि क सोरह चभक्का सोरह सेर घीउ खाउँ रे क हेंकड़ी बघारत रहल ह, भलहिन एकरा डेढ़-दुइ सेर दूध आ दुई-तीन छटाँक घीऊ पचावे क सरि-गों रहल होखे। ई हमार हेंकड़ी सरासर झूठिया रहलि होखे; बाकी ईहे जवानी क शान बुझात रहलि हआ मन के परेशान करत रहलि ह। एही का सूह में हम एतरेय ब्राह्मन से चरैवेति-चरैवेति का पाठ पढ़े लागत रहलीं है :-

आस्ते भग, आसीनस्योर्ध्वस्तिष्ठतः।
शेते निपद्यमानस्य चरति चरतो भगः॥
चरैवति चरैवेति॥
कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठस्त्रेता भवति कृतं संपद्यते चरन्॥
चरैवेति चरैवेति॥

अर्थात् जे बइठल रहेला ओकरि भागि बइठल रहेले। जे ठाढ़ रहेला, ओकरि भागि ठाढ़ रहेले। जे सूतल रहेला, ओकरि भागि सूतल रहेले। जे चलत रहेला ओकर भागि चलत रहेले। एही से जतन करत रहऽ, जतन करत रहऽ।

सूतल कलि जुग ह, आलस छोड़ल द्वापर
उठल त्रेता ह आ पुरुषार्थ कइल सतजुग ह।
एसे पुरुषार्थ करत जा, पुरुषार्थ करत जा।

अपना ओघरी का हेंकड़ी में हमार मन एकर पद्यानुवाद हिन्दी भाषा में कइके गुनगुनाइल करे-

पुरुषार्थ करो, पुरुषार्थ करो,
नर! तूँ पुरुषार्थ करो, रे!
घरे हाथ पर हाथ बैठता, उसका भाग्य बैठता।
कसकर कमर खड़ा जो होता, उसका भाग्य चमकता।
इसका फल खोता जो सोता, बह पाता जो चलता।
अतः चाहते हो जो जीना पौरुष वरण करो रे।
पुरुषार्थ करो, पुरुषार्थ करो, नरातँ पुरुषार्थ करो, रे।
सोए रहना ही कलि युग है, जम्हाई है द्वापर।
उठना जगना है युग त्रेता, चल पड़ना सतयुगवर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगर चाहते उज्ज्वल जीवन, सत्पथ ग्रहण करो रे।
पुरुषार्थ करो, पुरुषार्थ करो नर! तूँ पुरुषार्थ करो, रे!

हमरा बुझाता कि हम अपना ओ उमिरिका हेंकड़ी से मजबूर रहलीं आ अपना लइकपन का रपटा-लममि क ताबेदार। हमरा लइकाई आदमी क धियान अपना देहिं के बरियार-बहाल राखे बदे गम्हीराह गरिष्ठ उमराह भोजन करे पर रहे। ओ घरी ए भोजपुरिहा क्षेत्र में भोजन् क नामि मा गूर रहे-गोहूँ, गोरस आ गूर! जेकरा के ई सभ मिले भरपूर ऊ होखे धूरिहा पट्ठा मशहूर। परिवार क बेकति जेकरा के धूरिहा डापुर जवान यानी माल बनावला चाहसु ओकरा खातिर एही कुल्ह क ठेलम ठेल कइ देसु। ओघरी भर पेट्टा भोजन करावे क लकमि डाललि जा। ओरवाह भोजन भइला पर लइका का करेज-टुट्टू भइला क महतारी-पितियाइन का डरि रहे। ऊ अपना लरिकन फरिकन के सीखि देसु कि कवरे का दवरि ह। कवनो सूरति में ऊ राति खानी लरिकन के उंपास ना करावसु; उनुकर मुँह जुठरवाइ देसु; ना त उनुकरा शरीर क चिरई भर मांस घटे क खुटुका रहे। हम एही तरे का सोच-समुझि का परानिन का मध्धे पलाइल-पोसाइल रहलीं। ओघरी हमरा जेवनि लकमि धराइलि ऊ टूटे ना चाहे। एकर फल भइल कि गोहूँ, गूर आ घीव-दूध से बनल व्यंजनन से अपना जीभि-मन के अघवावे लगली। भोज-भात में ललकार दीहला पर भोजन-भट्टन क पाछ पकड़े क मरदुम्मी करीं, बाकी ई हमरा मतिन पट्ठन बदे हींसिकइल मात्र रहे आ हमरा ओघरी का हेंकड़ी क बालू क भीति रहे। हम अपना कुवति का मोताबिक रसगर भोजन कइके पचावत जाईं। एही का बलें हम पढ़ल-पढ़ावल, लेखनी चलावल, खेती-गिरहत्ती क भीरि सम्हारल आ सामाजिक काम में हाथ बँटावल; ए कुल्हि मोरचन पर बेरेप लड़त जाईं। हमरा के बुझाला कि असकति ना कइके मेहनति से काम कइल हमर जन्म-जात गुन हे। ई हमरा के अपना माई जी से मिलल रहल। काहें कि कहल गइल बा कि जइसनि कंकरी ओइसन बीया आ जइसन माई ओइसनि धीया। हमरा घर क करीब कुल्हि बेकति खइनी-पियनी तमाखू खासु मा पियसु; बाकी हमरा ए तरे कवनो नशा से मोह ना भइल। हम एक बारे में कबो किछु सोचे ना गइलीं। किसोरावस्था में संगी लरिकन का सह में आइ के जेवन एक तोर धरावलि बीड़ी मुँह ले लगवलीं, घिंची आ ओकरा धूवाँ का बेगन्ह संवाद क तिक्खराह लगला पर फेंकलीं तेवन फेरु कबो अइसन नशा का बी जुन का ओरां तिकबहू ना गइलीं। मांस मछरी से बनल कवनो भोजन में न हमारि रुचि भइलि ह आ ना त खइलीं ह। हम मांसाहारी ना, स्वभाव से सुच्चा शाकाहारी रहलीं हँ। हम दूध, घीव भा तेल का मेल से बनल-छनल भोजन चखे में मजा लेत गइलीं ह। हम कबो चाय, बिसकुट भा पाव रोटी आ नमकीन क खरमेंटाव ना कइलीं हँ। हम एकरा बदे अपना जवानी में मौसम का मोताबिक मूँग, हरदी भा सोंठ का मगदल के जोगाड़ बइठा लेत रहलीं हँ आ बुढ़वती में अब तेजपात, हरदी भा सोंठ या मरीचि, गुलाब क फूल आ तुलसीदल क चीनी भा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गूर में बनल कार्हा चलत बा। हम अपनी जीवन में भोजन का माने में संजमी रहलीं हँ बाकी बहुत ना हीं।

हम अपना तनदुरुस्ती खातिर कबो-कबो लापरवाही आ सुस्तियो कइलीं हँ आ जवानी का जोस खरोस मे आइके "सोरह भईंसि क सोरह चभक्का, सोरह सेर घीव खाऊँ रे" क तनी-मनी हँकड़ियो देखाइ दिहलीं हँ। पूवा-पूड़ी, खीरि-मलाई खोवा-छेना क मरमिठाई जइसन खाजु हमरा के बहुत सचत् रहल ह। हमरा रूचि रखला से हफ्ता भा पनरह दिन पर अतवार के विशेष भोजन का रूप में एमें ले किछुन किछु बनत रहल ह। भोजन बनावे में हमारि गुनगरि-महगरि मेहरारू बड़ा रूचि देखावत रहलीं ह। विशेष भोजन बनावें में उनुकर उत्साह दुनियाई जात रहल ह आ रसगर भोजन का सवाद के कल्पना में चखत बनवावे में लरिकनी-लइका सभे झुँकि परत रहल ह। ओ दिन भोजन पेट-फरावँ, ना त भरपूर पेट भरावँ त हकनहाक होत रहल ह। एमे शक ना कि हम शाकाहारी रहलीं हँ बाकी गम्हीराह-गरिष्ठ भोजन करत रहलीं हँ आ नीक-नोहर रसगर भोजन बनला पर चार कवर घींच के खा गालत रहलीं हँ। पेट क तीनी हिस्सा भरे के चाही आ चउता साँसि-बोंसि आवे-जाए बदे खाली रहे के चाही, एकरा के ठीक-ठाक निभाइना पावत रहलीं हँ। ई बाति हमरे से ना सटत रहलि ह। हम अपना अड़ोस-पड़ोस अपना मतिन समगरदा जे बेकतिन के देखत रहली हँ ओ समकरा बारे में अइसन घटत पावत रहलीं हँ आ मुँह ले निकल जात रहल ह कि केकरि-केकरि कहीं बाति कमर ओढ़ले सगरो गाँव। अउरी सभ ले हमरा में एतने फरक रहल ह कि हमारि बुध्धि आगे ले अइसनि गलती करे से हरकत रहत रहलि ह आ मन पर किछु न किछु एकर आँकुस लागत रहत रहल ह।

बाकी बीसवीं सदी का छठवाँ दशक में हमरा पर काम भीरि बहुत बढ़ गइलि आ रसोई क कुल्ह सामान-सरजाम का अछइत से समय से सुपाच्य भोजन मिले क बेंवत सुधर ना बइठ पावल। घर-गिरहत्ती सम्हारे बदे हमरा मेहारारू गाँवे पर रहसु आ भयवहु का आ गइला पर जो ओहिजाँ ले किछु फुरसताह रहे लगली त लोक-लाजि बस हम उनुकरा के गाँव पर ले लेई आइके जहवाँ नोकरी चाकरी करत रहलीं ओहिजाँ राखे क हियाव ना कर सकत रहलीं। फल भइल कि हमारा अनजान में आजु क सरनामी गैस क रोग हमरा देहिं में घर करत गइल। जेबं कवनो ते हमारि मूँड़ी पाछे के लरके आ हम दाईं करवट सूतीं तेवँ हमार बदे ब्रह्मांड घूमे लागे। हम पाछे मूंड़ी लटकावे आ दाईं करवट सूते बाज आइके रोग का जुलमी चपेट से बँचत गइलीं आ एहूँ हालति में अपना ओघरी का जीवन जुध्ध में तनिको पाछना दिहलीं। हमरा विसवास रहे कि ई शरीर अपना के अपने ठीक कइ गाली एक दुइ बरिस बीत गइल तब खरबिरवा दवा चललि, आयुर्वेद क गोली आ चूरन चुभुलावल गइल, फेरू होमियोपैथक मिठकी गोली खाइलि गइलि। एतनो पर रोग आवँक में आवत ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनाइल। अन्त में एलोपैथ का स्थानीय डाक्टरन का सरन में गइलीं। ऊ हो लोग सभ दिनाँ खातिर रोग का चंगुल से हमार के ना छोड़ाइ पावे। रोग किछु बेर ले दबा का असर से दबदूब के पटा जा आ फिरू बार करे लागे। रोग से दुहात गइला से हमार रूप रंग मलगज परत जा। इतनो पर हम रोग का ओराँ ले अल गरजी रहीं। हमार हितू किछु बुद्धिमान संघतिया चेतवलन-रिपुरूज पावक पाप, प्रभु अहिगनि न छोटकरि।

ओघरी हमरा मेहरारू हमरा के ओरहन दिहली-"रउवाँ अपना शरीर पर तनिको खियाल नइखीं करत। बुझाता कि हमनी के गाँव छोड़ाइब। राउरि देहिं पहिले ले धूमिल परत जाति बा।" हम उनुकरा के समुझाइ दिहलीं-"हम अगतहीं मतिन खात-पीयत आ कसरति करत बानी। हम आपन अउरियों काम-धाम अगतहीं मतिन करत जात बानी। हमरा तनिको आहस नइखे आवत। एघरी बेसी काम का भीरि से शरीर दुबराइ, पतराई आ भँवराइ गइल बा। तूँ कवनो तरेक फिकिरि मति करऽ। हम ठाट से नौकरी कइके साठ साल में रिटायर होइब। हमरा ए होंकड़ दीहला से हमरा ओ मेहरारू का तीहा हो गइल आ किछु दिन खातिर उनुकर मुँह बन्न हो गइल। एही बीच में संजोग से हमरा छोट भाई का छाती में भा कोई में बहुते दर्द होखे लागल। जब स्थानीय डाक्टरन से उनुकरा के राहत ना मिललि तब हम उनुकरा के वाराणसी लेइ जाइके ओहिजाँ का ओ समया का एगो नामी-गरामी डाक्टर से इलाज करवलीं। ऊ बड़ा इतमीनान से रोग क पकड़ बहुते अच्छा कइलन आ उनुकरे दवा-दारू कइला से रोग जरि से ठीक हो गइल। उनुकरा इलाज कइला क हमरा मन पर बहुते असर परल आ हमरो उनुकरा से अपना रोग क दबा करा लेबे क मन चल गइल। हम अपना जवानी का हेंकड़ी में किछु ना त चार बरिस ले अपना ओ भारी दुसुमन के पटके-पछारे के दम भरत जात रहलीं आ सचमुच में ऊ हमरा के रंगर के हमारि देहिं माटी करत जात रहे। ई तमासा दुनियाँ देखति रहे आ एगो मदान्ध हम ना देखत रहलीं हमरा मेहरारू इके बतवली-देखवली; बाकी वाह रे मूढ़ता या मन की। वाह रे जवानी क अहंकार हेंकड़ी! तूँ हमार सत्यानास स करे पर एक दम उतारू हो गइल रहली कि हम अपना शरीर सत्यानास कर पर एक दम उतारू हो गइल रहली कि हम अपना शरीर का भारी दुसुमन रोग का ओराँ ले बेचेत परल रहलीं। दवा करावे का ओराँ मन का टुकटुकाते हमरा मेहरारू क खुदुकावल आ अउरी सभ क उकसावल बिजुली मतिन काम कइ गइल। हम असकति छोड़के आ काम-धाम क आव-ताव क फिकिरि ना कइके आपन झोरा-झक्कड़ सम्हरलीं आ वाराणसी चोहँपि के ओ डाक्टर साहब का औषधालय में हाजिर हो गइलीं। ऊ बहुत देर ले हमरा जाँच कइके बतवलन-"रउवाँ रसगर निम्मन भोजन करत बानी, बाकी ओकर वाजिब लाभ होत नइखे बुझात।" सुनके हम हामी भरलीं। ऊ आपनि बाति आगे बढ़वलन-"आँत बहुत कड़ेर हो गइल बाड़ी स। ऊ ठीक तरे से काम कई पावत नइखी स। रउवाँ अपना रक्त आ पाखाना क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाँच कराइ ले आई।'' दूनो क जाँच कराइ कै विवरण-पत्र उनुकरा किहाँ पेस कइलीं। देखते ऊ बतवलन- ''आँतन में अधिका ले अधिका हुकवर्म्स (अंकुश कृमि) हो गइल बान स। ऊ हे शरीर क रक्त चूसत जात बान स।'' डाक्टर साहब पहिले टेट्रा कैप सोल का रामबान से ओ सेना के बरबाद कइ दिहलन। ओकरा बाद दुइखोराक कवनो अउरियो दवा चललि जेवन पेट के साफ कर क काम कइलसि। एतने से अपना अ रोग से हमरा के बहुत आराम मिल गइल। ए दवन क दौर खाली दस दिन क रहल। एकरा बाद एगो बड़हन बोतल में एक महीना खातिर दिन में दुइतोर पीए बदे एगो तरल पदार्थ देबे लगलन वाराणसी क आइल-गइल हमरा के महँगा परे लागल। हमरा के ऊ आयुर्वेद क कवनो आसव-अरिष्ट बुझा। ऊ डाक्टर साहब पर्ची पर एतना घसीट के लिख देसु कि ओकरा के खाली उनुकर कम्पाउन्डरे पढ़ सकत रहे। डाक्टर साहब काशी हिन्दू विश्व विद्यालय का डाक्टरी पढ़वइया ओ छात्रन का समुदाय क रहलन जिनकरा के कवनो समय एलो पैथिक चिकित्सा पद्धति का साथे आयुर्वेदिको पद्धति पढ़ावलि जा। पर्ची पर रह-रह आँखि गड़ावत-गड़ावत दुसरा आ तीसरा महीना में किछु बह खुलल कि ओघसीट लिखावट आ बोतल का तरल दवा में दसमूलारिष्ट आ घृतकुमारी आसव क गलालिंगन रहे। फेरू त हम 'रसतंत्र-सार' पुस्तक से देखके ओ दूनो क गुन-लाभ पढ़-समुझ लिहलीं। ऊ दवा हमरा अनुकूल परति रहे। हम स्थानीय आयुर्वेदिक दवन का दुकानिन ले ओ आसव-अरिष्ट के खरीद मिलाई के पीए लगलीं आ छव-छव महीना पर दुई बरिस ले मल क जाँच करावत गइलीं। हुकवर्म्स जनमत ना मिललन। एतरे से अपना ओ रोग पर काबू पा गइलीं आ हफ्ता, महीना आ बरिस वरिस दिन का बाद वार करत उ हार माल गइल। हमरा के बुझा गइल कि हमरा ए रोग क मूल आँतन में मल क बटुराइल बा। एसे हम अइसनि नउबति ना आवे देबे बदे उजग रहे लगलीं आ अपना पाचन-क्रिया के बराबर ठीक राखे क उतजोग करत रही लाँ। हम अपना घुमरी का रोग से बहुत किछु छुटकारा पा गइल बानी; बाकी हमरा दिल-दिमाग पर ले ओकर आतंक डर एक दम भागल नइखे। एकरा से हमरा के लाभ बा। हम मौका-मौका से जरुरति वश दाईं अलंगें किछु बेर ले सूत सकत बानी आ पाछे मूंड़ी झुला सकत बानी। अब करीब उत्ताने सूतत बानी। जइसे कवन समय में असाध्य समुझे जो वाला दमा रोग से हमरा बाबू एकदम छुटकारा पा गइल रहलन ओइसहीं हम हूँ अब एकरा चंगुल में ना फँसब; त अइसन हमरा के बिसवास हो गइल बा। तर-त्योहार आ भोज-मात का मौकन पर हम कवनो तेल-घी.अउरी का संजोग से तलल-बनल व्यंजनन के तनी-मनी चीख के मजा लूट लेत बानी आ कवनो अटक-भटक पचावे में नइखे आवत। हे भगवान ए घुमरी का रोग से रच्छाकरऽ रच्छ करऽ कि ई फेरु न बहुर पावो ना त ए बुढ़वती में हमरा मन, रसना जिनिगी क कुल्हि मौज-मस्ती लापता हो जाई आ हम कुढ़-कुढ़ के, कलप-कलप के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ तरस-तरस के मर-मिट जाइब आ हँमार बेछपल लिखल साहित्य कतहूँ कोराँ-अँतरा चँतात-चँतात घूरा पर फैकाइ जाई।

घुमरी क रोग भलहिन कहियो हमार बैरी बन के बीसन बरिस सतवले होखे बाकी आजु ऊ हमरा के 'व्यक्तेन भुञ्जीथा' त्याग पूर्वक भोग क शिक्षा देत, भलाई करत रहेलां। भोज-भात आ तर-त्योहार का मौकन पर रसगर-चटकार खाजु भेंटइला पर ऊ हमरा के पेट-फरावँ भोजन का जीभि चटोई करे से हरके चेतावेला। कहियोक हमार ऊ दुसुमन रोग आजु हमार हीत-मीत बन के हमरा के बद हजमी-व्याधि से बच के रहे बदे उकसावत रहेला, जब कि आजु अनुज अंग्रज के 'मिले न जगत सहोदर भ्राता' क पाठ पढ़ाई के सुता देत बा आ गूवें-गूवें गररेत देत बा। आज बाप-बेटा, बितिया-भतीजा, मरद-मेहरारू भाई बिरादर क ई कुल्हि नाता कलह से सिसिकत-रोवत बाड़न। आदमी आदमी नइखे रह गइल। यार! तूँ ए मुतफन्नी नमक-हराम आदमी मतिन हमरा से सटके कबो लंगी अचके में मति लगाइ दीहऽ। हम ढह-ढमिलाइ जाइब आ हमार हाथ गोड़ टूट जाई आ मुँह फूट जाई। एघरी हमरा सोरह भइंसि क सोरह चक्का आ सोरह सेर घीव खाऊँ रे! का हेकड़ी क यानी जवानी क दिन बहुत पाछे छूट चुकल बा। जब हम अपनी जवानी का समय में कहियो एगो सराहूँ मोंचाड़ मरद से उनुकरा बुढ़उती में उनुकरा जवानी का बल-पौरुख का बारे में चरचा कइलीं, तब ऊ मुँह बनावत आन का मने जाने-बूझे का हमरा ओ मनसा के अनगराहित समुझत कहलन-'गइल बनल आ गइलि जवानी; का हम ओकरि कही कहानी।' ई कहत ऊ अपना ठेहुनन के बाहिन का घेरा में बान्हत पाछे लरक के बइठ गइलन।

हमरा बुझाइल कि हमारि बाति उनुकरा खमराइल ओहजल शरीर का मन के भावल नइखे। हम चुप लगा गइलीं। हमारि मौन मुद्रा उनुकरा के खटकलि। ऊ हमरा के खुदकवलन-काहें गुमसुम बइठल बाड़ऽ ?

"बहुत मनगर आ उत्सुक होइ के पूछलन- ऊ पढनिहार-लिखनिहार कवि जी का कहले वान।"

ऊ पूछलन कि हम बोल गइलीं -

जवानी की दुवा लड़कों को नाहक लोग देते हैं।
यही लड़के बिताते हैं जवानी को जवाँ होकर।

अपना कहाउति क किछु समर्थन पावत ऊ बाग बाग हो गइलंन-

"एक दम ठीक; सवा सोरह आना ठीक। ओ बल पौरुख आ जवानी क का गुन-गान जेवन आँधी-तूफान मतिन आइलि आ चल गइलि। तूँ का सोचत बाड़ऽ ? बतावऽ।"

"काका! तोहन लोग क कहाउति हमरा मन के नात रूचति बा आ ना त हमरा बुध्धि में ढुकति बा। ए धरती पर जे जनमत जात बा, ऊ मुवत जात बा। ई क्रम चलत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइल बा आ चलत जाई। तब को केहू एहिंजाँ ए जीवन के जीयल नइखे चाहत? ए मानुष का जीवन क महातिम सभ प्राणिन ले बढ़के ह। एकर कवनो दाँजिना ह। एही से धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष सभ मिल जाला आ ए जिनिगी क हीर जवानी ह। बचपन में ए शरीर क पालन–पोसन एही के पावे बदे होला। ई जवानी मरदन क शान ह– "पुरुषों की है शान जवानी।" आ एही उमिरि में पुरुष असम्भव के सम्भव कइ देखावेलन– पुरुष निज बाहु से मथकर जलधि को धरा की गोद रत्नों से सजाते।

जे ए जवानी का बल पौरुख से निम्मन काम करेला ऊ ए धरती पर देवता मतिन पुजाला। काका! एही क कमाई हमनी का अपना बुढ़वती में काम आवेले। ई जवानी अपना कुल परिवार, समाज आ राष्ट्र क धन ह। जे एकरा के अनगराहित बूझेला, बेकार गँवावेला आ अनर्थ में कतहीं खपावेला, ओकरा पर दुनियाँ थूँके ले, ऊ गारी सुनेला आ ओकर पिटाई धुनाई होले। बुढ़वती में ओकरि साँसति होले, ऊ मरतखानी पछताला आ ओकर जनम उमिरि क कमाई ह कि तूँ आजू ए बुढ़वती में दुवार पर बइठल मोंछि पर ताव देत माँगुर गावत बाड़। ओघरी क खाइल–बनावल तोहार ई शरीर ह कि जेवन अजुबो दमकत बा आ तोहार मोट्टे–मोट हाड़ काठ देख के ए चाय–जुग क जवान लोग दाँत तरे अँगुरी चाँतत बा।"

एतना कहते काका का देहिं में बिजुली दउरि गइलि। अंगिराइ–तरनाइ आ फँसड़ के ऊ दिग्गज मरद भइलन कि जोस में ऊपर के टँगात ओसारी का छाजन से जा ठेकिहन आ बइठका का खम्हन का दुवारी में अँड़स जइहन। हम चकमकाई, भीरुखाई आ भुकवाइ के उनुकरा देहिं क बढ़ाव फइलाव देखके हैरान हो गइलीं जइसे द्वापर क महारथी भीम महावीर हनुमान जी के उनुकरा जवानी का बिकठ–विशाल रूप में देखके तर–ऊपर होखे लगलन जब ऊ बूढ़ बानर ले ओ रूप में प्रगट भइल रहलन। काका हँकड़ के कहलन–बेटा! जवानी में हमरा बड़ा जाँगर रहल ह। हम अकेले जीव पर पाँच छव गो भँइसि आ दस–बारह गो गाइ राख के लमहरि सरेहि सीवान में डेरा डाल के बिहार करत रहलीं हँ। हम काम से ना डेरात रहलीं हँ; हमरा से काम डेरात रहल ह। हम भूत परेत आ सांड़–भइंसा से भय ना खात रहलीं हँ, ई सभ हमरा से भय खात रहल ह। हम हँकड़त–फिरत रहलीं हँ–

सोरह भइँसि क सोरह चक्का, सोरह सेर घीव खाउँ, रे!
कहवाँ बानऽ तोहार बाघ मामा एक पकड़ लड़जाउँ, रे!

ई कहत काका जवानी का आवेश में बड़ा गरब से कह गइलन–अबे हाल में चार–पाँच महीना पहिले पाँच–सात दिन का बोखार से उठला पर हम तावा–तावा भर क सोरह रोटी का फुलहिया चार आँगुरि ऊँच बारि का भरलि एक थारी दालि से जूस लिहले रहलीं हँ। जवानी में हमरा एक पसेरी भइँसि क दूध आ सेरभर घीव पचावे क सवँहर रहल ह। केहू मरद क गट्टा धइलेत रहलीं हँ त ओकरा छोड़ाइ लेबे क गों ना रह जात रहल ह। हम अनाज क भरल अढाई मन क बोरा माथ पर धइके डेरा परले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक डेढ़ मील चल के धइ आवत रहलीं हँ। जवानी का एक महीना का बल-पौरुख का करनी क दाँजि लइकपन आ बुढ़ापा का जीवनभर का करतब से ना होई।

एतना कहत काका हमारि कान्हि धइके कुल्हि देहिं झकझोर दिहलन आ हमरा दिल दिमाग के हिलकोर दिहलन। ओघरी हमरा ऊ महाराज भगीरथ चेत परलन जिनकरा यश धारा का रूप में भागीरथी कहाइ के देवनदी गंगा ए धरती का तवति काया के सींचल प्रानिन क्ने लोक-परलोक क सुख देबे लागल ह। हमसे ओ तपोवृद्ध विश्वमित्र क सुरुता परल जेवन ब्राह्मणत्व अपना तपस्या से पा गइलन आ ब्रह्मा का विरोध में एगो दूसर संसारे रच देबे क शंख बजा दिहलन। हमरा ओ पर तपोबली परशुराम क सुधि आइलि जेवन सहसाबाहुका हजारन भुजन आ ओकरा विशाल सेना के अकेले छिनिगाइ गललन खाली अपना फरुसा से। हमरा के चाणक्य चन्द्रगुप्त याद परलन आ महाराण प्रताप छत्रपति शिवाजी याद अइलन। हमार स्मृति पट खुल गइल। हमरा के लउके लगलन नाना साहब-लक्ष्मी बाई; लोकमान्य चाफेकर बन्धु-सावरकर; महात्मा गाधी का नेतृत्व में जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, राजेन्द्र प्रसाद अउरी; भगत सिंह चन्द्रशेखर आजाद अउरी; ऊ आजाद हिन्द सेना का सहित नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, किसान सभा सहित स्वामी सहजानन्द सरस्वती; समाजवादी पार्टी का बरगद तरे झंडा फहरावत जयप्रकाश-आचार्य नरेन्द्र देव लोहिया अउरी। अउरी केतने स्वतंत्रता-संग्राम सेनानिन क झलक मिलति रहे कि मरा के खुदुकावत कहलन - "का धियान लगाइ के मौनी बाबा बनल बाउऽ। हमरा के बकवाइ के अपना बारी चुप! ईना होई। थोरिके में किछु बोल द कि तोहरी जवानी केतना पानी बा एकर थाह हमरा के लाग जाउ आ तब उठ-पठ होखो।

जोसइल काका का हुकुम देत-देत मउज मस्ती का सुर में हम उनुकर हुकुम बजवलीं-

"सैर कर दुनियाँ की गाफिल, जिन्दगानी फिर कहा?
जिन्दगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ?"

ऊ उत्सुक होइ के पूछलन-"एकर मतलब?"

हम अरथवलीं-"ए दुनियाँ में मनुष्य क जनम बेर-बेर ना होखे एक तोर होला आई जवनीयों एके तोर मिलपावेले। ए से हे बेचेत सूतल परल जुवक असकति-आलस छोड़ के ए दुनियाँ में सुमार्ग से सैर सपाटा मारे बदे कमर कस ल। काहें कि ए जिनिगी क रण्को दिन क ठेकान ना आ जो एकर किछु ठेकान ना ह आ जो एकरकिछु ठेकान मानू लिहल जा त जवानी अब कहवाँ रूके वाली बा? एसे एकरा एको धन क अकाज जनि करऽ आ निम्मन काम कइके, पुरुषार्थ कइके जवानी के सुफल बना ल।"

खुश होइ के काका असीसलन-"जीयऽ, जागऽ, जतन करऽ, नवँगर बनऽ।"

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संक्षिप्त परिचय

"प्राध्यापक अचल"

जन्म : 1 जनवरी, 1925, गाजीपुर के रेवतीपुर गाँव में।

शिक्षा : स्नातक आगरा विश्वविद्यालय व
स्नातकोत्तर आगरा व गोरखपुर विश्वविद्यालय

अध्यापन :
- 1946-1950 जानकीदास केजरीवाल हाईस्कूल, अलसीपुर, जयपुर (राजस्थान)।
- 1950-1985 : इण्टर कालेज, मुहम्मदाबाद, गाज़ीपुर।

रचनायें : हिन्दी : युग प्रदीप, सौभद्र, गांगेय, विधाता की मूरतें, क्रान्तिकारी कबीर, प्रकृति पुत्र सुमित्रानन्दन पंत, किसान नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती, स्वाभिमान के संतरी, हमारा राष्ट्रीय स्वातंत्र्य समर में गाज़ीपुर के रणबांकुरे, हिन्दी साहित्य के सशक्त साधक गुरुदेव।

भोजपुरी रचनायें : माया मिललि न राम, को बड़ छोट कहत अपराधू, सुन्नर काका, महतारी ममता कऽ मूरति, कारी लउरिया चितकबरी हो

गोलोकवास : 14 अप्रैल 2011

design 'n print by : Golden Computer & Printers # 9838706367, 9335192200

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.